U.P. Series

हिन्दी

पाठ्यपुस्तक का संपूर्ण हल

कक्षा-9

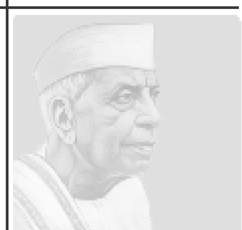

गद्य खंड

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गद्य किस प्रकार पद्य से भिन्न है? संक्षेप में लिखिए।

उ०– गद्य और पद्य की विषय-वस्तु, भाषा-शैली आदि में पर्याप्त अंतर है। वहीं गद्य- साहित्य की विषय-वस्तु प्राय: हमारी बोध-वृत्ति पर आधारित होती है और पद्य की हमारी संवेदनशीलता पर । विषय अधिकांशत: वही होते हैं, जिनके बारे में हम अधिक सोचते हैं। गद्य मस्तिष्क के तर्कप्रधान चिंतन की उपज है। इसके मुख्य विषय हमारे दैनिक कार्य-कलाप, ज्ञान-विज्ञान, कथा, वर्णन, व्याख्या आदि हैं। संक्षेप में, पद्य का संसार बहुत कुछ काल्पनिक है किन्तु गद्य का व्यावहारिक।

2. हिंदी गद्य का आविर्भाव किस शताब्दी में हुआ?

उ०– हिंदी गद्य के आविर्भाव के संबंध में विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ 10 वीं शताब्दी मानते हैं, कुछ 13 वीं शताब्दी। 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में हमें गद्य के प्राचीनतम प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय-सीमा ग्यारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तथा ब्रजभाषा गद्य की समय-सीमा चौदहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक मानी जाती है। माना जाता है कि दसवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी के मध्य ही हिंदी गद्य का आविर्भाव हुआ था।

3. हिंदी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग किस भाषा में मिलते हैं?

उ०– हिंदी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

4. गद्य की मध्यम स्थिति से क्या तात्पर्य है?

उ०– ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, इतिहास आदि की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे गद्य की मध्यम स्थिति कहा जा सकता है।

5. कथा साहित्य में प्रयोग की जाने वाली सामान्य भाषा कौन-सी है?

उ०– कथा साहित्य में प्रयोग की जाने वाली सामान्य भाषा खड़ीबोली गद्य है।

6. सृजनात्मक तथा उपयोगी गद्य की प्रमुख विधाओं के नाम बताइए।

उ०– निबंध, प्रबंध, आलोचना, कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी आदि सभी प्रचलित विधाओं से हिंदी गद्य का सृजनात्मक स्वरूप संपन्न है। उपयोगी साहित्य के अंतर्गत, दर्शन, इतिहास, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान आदि सभी विषयों से संबंधित विधाएँ आती हैं।

7. मनुष्य अपने विचारों को तत्काल अभिव्यक्त करने के लिए भाषा के किस रूप का प्रयोग करता है?

उ०– मनुष्य अपने विचारों को तत्काल अभिव्यक्त करने के लिए भाषा के गद्य रूप का प्रयोग करता है।

8. मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली खड़ीबोली का साहित्यिक रूप क्या कहलाता है?

उ०– मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली खड़ीबोली का साहित्यिक रूप शुद्ध परिनिष्ठित रूप कहलाता है।

9. राजस्थानी गद्य हमें किस प्रकार की रचनाओं में देखने को मिलता है?

उ०– राजस्थानी गद्य हमें दसवीं शताब्दी के दानपत्रों, पट्टे-परवानों, टीकाओं व अनुवाद ग्रंथों के रूप में देखने को मिलता है।

10. खड़ीबोली गद्य के प्रथम चार उन्नायकों के नाम व उनकी रचनाएँ लिखिए।

उ०– **खड़ीबोली गद्य के प्रथम चार उन्नायकों के नाम व उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–**

(अ) सदासुखलाल— सुखसागर

(ब) इंशा अल्ला खाँ— रानी केतकी की कहानी

(स) सदल मिश्र— नासिकेतोपाख्यान

(द) लल्लूलाल— प्रेमसागर

11. खड़ीबोली गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का क्या योगदान रहा?

उ०– ईसाई पादरियों का प्रधान उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना था और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने प्रेस की स्थापना की। उन्होंने हिंदी खड़ीबोली गद्य में 'बाइबिल' के अनेक अनुवाद प्रकाशित किए । स्कूलों में हिंदी माध्यम से पढ़ाने के लिए अनेक पाठ्य पुस्तकें तैयार की तथा भारतीय पुराणों आदि को गद्य में लिखवाकर छपवाया। इस प्रकार उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी गद्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

12. आर्य समाज के आंदोलन ने हिंदी गद्य के विकास में क्या भूमिका निभाई?

उ०– आर्य समाज के संस्थापक 'महर्षि दयानंद सरस्वती' ने अपने उपदेशों का प्रचार-प्रसार हिंदी भाषा में किया तथा अपने प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी हिंदी भाषा में की।

13. राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' तथा राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा-शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ०– राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' ने अपनी भाषा में अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का समावेश उचित समझा, जिससे उनकी भाषा बोझिल हो गई। राजा लक्ष्मण सिंह हिंदी उसी भाषा को मानते थे, जिसमें संस्कृत शब्दों की अधिकता हो । यही इन दोनों की भाषा-शैली का मुख्य अंतर था।

14. बीसवीं शताब्दी में किस व्यक्ति ने हिंदी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया?

उ०– बीसवीं शताब्दी में 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' ने हिंदी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया।

15. पूर्व भारतेंदु अथवा प्राचीन युग की समय-सीमा क्या है?

उ०– पूर्व भारतेंदु अथवा प्राचीन युग का समय 13 वीं शताब्दी से 1868 ई० तक का है।

16. भारतेंदु युग की दो मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उ०– भारतेंदु युग की दो मुख्य विशेषताएँ हैं—

(अ) इस युग में संस्कृत के सरल शब्दों के साथ-साथ सर्वसाधारण में प्रचलित विदेशी शब्दों को भी ग्रहण किया गया।

(ब) इन्होंने तद्भव व देशज शब्दों के साथ कहावतों और मुहावरों का प्रयोग कर भाषा को सजीवता प्रदान की।

17. भारतेंदु मंडल के लेखकों में से किन्हीं दो का नामोल्लेख कीजिए।

उ०– भारतेंदु मंडल के लेखकों में प्रतापनारायण मिश्र व बालकृष्ण भट्ट प्रमुख हैं।

18. द्विवेदी युग की समय-सीमा क्या है?

उ०– द्विवेदी युग की समय-सीमा 1900 ई० से 1922 ई० तक मानी जाती है।

19. द्विवेदी युग के दो महत्वपूर्ण गद्य लेखकों के नाम बताइए।

उ०– द्विवेदी युग के दो महत्वपूर्ण गद्य लेखक हैं— महावीर प्रसाद द्विवेदी व श्यामसुंदर दास।

20. हिंदी गद्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का क्या योगदान है?

उ०– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक के रूप में भाषा को शुद्ध, सुसंस्कृत व परिमार्जित बनाने में पूर्ण योगदान दिया तथा नवीन विषयों पर गद्य रचना के लिए लेखकों को प्रोत्साहित किया।

21. छायावादी युग के गद्य साहित्य की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उ०– छायावादी युग के गद्य साहित्य की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं— प्रतीकात्मकता व लाक्षणिकता।

22. विषय-वस्तु के आधार पर कहानी कितने प्रकार की होती हैं?

उ०– विषय-वस्तु के आधार पर कहानी चार प्रकार की होती हैं—

(अ)घटनाप्रधान, (ब) चरित्रप्रधान, (स) भावप्रधान, (द) वातावरणप्रधान

23. ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात कब हुआ?

उ०– ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात चौदहवीं शताब्दी से माना जाता है।

24. खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ कवि गंग की किस कृति से माना गया है?

उ०– खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ कवि गंग की 'चंद छंद बरनन की महिमा' से माना गया है।

25. ब्रह्म समाज के प्रवर्तक कौन हैं?

उ०– ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राजमोहन राय हैं।

26. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक कौन हैं?

उ०– 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

27. नाटक को रूपक क्यों कहा जाता है?

उ०– नाटक में पात्रों एवं घटनाओं को अन्य पात्रों व घटनाओं पर आरोपित किया जाता है, इसलिए इसे रूपक भी कहा जाता है।

28. 'अजातशत्रु' नाटक के रचयिता कौन हैं?

उ०– 'अजातशत्रु' नाटक के रचयिता जयशंकर प्रसाद जी हैं।

29. हिंदी के दो प्रगतिवादी लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– हिंदी के दो प्रगतिवादी लेखक हैं— (अ) विद्यानिवास मिश्र, (ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

30. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नंददुलारे वाजपेयी किस काल के लेखक हैं?

उ०– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नंददुलारे वाजपेयी छायावादी युग के लेखक हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कुछ रचनाओं में हमें छायावादोत्तर काल की विशेषताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।

31. किन्हीं तीन यात्रावृत्त लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– तीन यात्रावृत्त लेखक हैं— (अ) राहुल सांकृत्यायन, (ब) मोहन राकेश, (स) धर्मवीर भारती ।

32. 'एक घूँट' व 'अँधेर नगरी' किस विधा की रचनाएँ हैं?

उ०– 'एक घूँट' व 'अँधेर नगरी', क्रमश: एकांकी व नाटक विधा की रचनाएँ हैं।

33. उपन्यास किसे कहते हैं?

उ०– उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है— 'उप' अर्थात् निकट या सामने, 'न्यास' अर्थात् रखना; अर्थात् सामने रखना। अत: मानव जीवन, समाज या इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाओं पर आधारित चित्रण के माध्यम से पाठकों के सम्मुख यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने वाली विधा को उपन्यास कहा जाता है।

34. उपन्यास सम्राट किन्हें कहा जाता है?

उ०– मुंशी प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट कहा जाता है।

35. हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास किसे माना जाता है?

उ० लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षा गुरु' को हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है।

36. संस्मरण से आप क्या समझते हैं?

उ० 'संस्मरण' का अर्थ है— 'स्मृत' वस्तु अथवा व्यक्ति। लेखक द्वारा अपनी स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा विषय पर कोई लेख लिखा जाता है, उसे 'संस्मरण' कहा जाता है।

37. डायरी किसे कहते हैं?

उ०– लेखक द्वारा प्रतिदिन घटित होने वाली प्रमुख घटनाओं अथवा तथ्यों को दिनांक के क्रम में सुव्यवस्थित रूप से लिखा जाना 'डायरी' कहलाती है। यह लेखक के स्वयं के जीवन से संबंधित होती है। यह संक्षिप्त या विस्तृत किसी भी प्रकार की हो सकती है।

38. 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना किसने की?

उ०– सत्यार्थ प्रकाश की रचना महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने की।

39. जीवनी व आत्मकथा में मूलभूत अंतर क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– जीवनी में लेखक के द्वारा किसी महान या व्यक्ति के जीवन की जन्म से मृत्यु पर्यंत घटनाओं का वर्णन किया जाता हैं, जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा पाठकों के समक्ष आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करता है।

40. साहित्य में रेखाचित्र से क्या तात्पर्य है?

उ०– रेखाचित्र में शब्दों की कलात्मक रेखाओं के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप का वर्णन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाए। रेखाचित्र में चित्रकला तथा साहित्य का सुंदर समन्वय दिखाई पडता है। इसमें लेखक की निजी अनुभूति यथार्थ रूप से अभिव्यक्त होती है।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ब्रजभाषा का सूत्रपात माना जाता है–

(अ) संवत 1500 (ब) **सवंत 1400 के आस-पास**

(स) संवत 1543 के आस-पास (द) संवत 1600

2. शुक्ल युग की समय-सीमा है–

(अ) सन् 1868 से 1900 तक (ब) सन् 1900 से 1922 तक

(स) सन् 1938 से 1947 तक (द) **सन् 1919 से 1938 तक**

3. छंद, ताल, तुक व लय से मुक्त रचना कहलाती है–

(अ) काव्य (ब) **गद्य**

(स) श्लोक (द) कविता

4. भारतेंदु युग की समय-सीमा है–

(अ) सन् 1368 से 1600 तक
(ब) **सन् 1868 से 1900 तक**
(स) सन् 1400 से 1533 तक
(द) सन् 1900 से 1922 तक

5. सन् 1900 से 1922 ई० तक की अवधि कहलाती है–

(अ) भारतेंदु युग
(ब) शुक्ल युग
(स) **द्विवेदी युग**
(द) शुक्लोत्तर युग

6. स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना ____________ भाषा में की थी।

(अ) बंगला
(ब) **हिंदी**
(स) अंग्रेजी
(द) फारसी

7. सदासुखलाल ____________ शहर के निवासी थे।

(अ) मेरठ
(ब) कानपुर
(स) बरेली
(द) **दिल्ली**

8. हिंदी गद्य का जनक कहा जाता है–

(अ) बालकृष्ण भट्ट को
(ब) प्रेमचंद को
(स) पूर्णसिंह जी को
(द) **भारतेंदु हरिश्चंद्र को**

9. सन् 1900 से 1922 ई० तक की अवधि का नाम 'द्विवेदी युग' किसके नाम पर पड़ा?

(अ) श्यामसुंदर दास
(ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(स) भारतेंदु हरिश्चंद्र
(द) **महावीर प्रसाद द्विवेदी**

10. हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र था–

(अ) **उदंत मार्तंड**
(ब) धर्मयुग
(स) बंगदूत
(द) मर्यादा

11. 'चंद छंद बरनन की महिमा' के रचयिता हैं–

(अ) सूरदास
(ब) कबीरदास
(स) **गंग**
(द) सदासुखलाल

12. सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र प्रकाशित हुआ–

(अ) कानपुर से
(ब) **कोलकाता से**
(स) मुंबई से
(द) आगरा से

13. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं–

(अ) सदासुखलाल
(ब) लल्लूलाल
(स) **इंशा अल्ला खाँ**
(द) सदल मिश्र

14. लल्लूलाल की रचना है–

(अ) **प्रेम सागर**
(ब) सुखसागर
(स) पंचांग दर्शन
(द) नासिकेतोपाख्यान

15. 'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक हैं–

(अ) **प्रतापनारायण मिश्र**
(ब) प्रेमचंद
(स) जयशंकर प्रसाद
(द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

16. आर्य समाज के संस्थापक हैं–

(अ) **स्वामी दयानंद सरस्वती**
(ब) राजाराम मोहनराय
(स) नवीनचंद्र राय
(द) गुलाबराय

17. किस महान साहित्यकार के कारण सन् 1868 से 1900 ई० तक की अवधि को 'भारतेंदु युग' नाम दिया गया?

(अ) **भारतेंदु हरिश्चंद्र**
(ब) संपूर्णानंद जी
(स) प्रतापनारायण मिश्र
(द) प्रेमचंद

18. महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'गिल्लू' किस विधा की रचना है?

(अ) आत्मकथा (ब) **रेखाचित्र**

(स) संस्मरण (द) जीवनी

19. 'भारत दुर्दशा' नाटक के लेखक हैं–

(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) **भारतेंदु हरिश्चंद्र**

(स) गोविंद बल्लभ पंत (द) हरिकृष्ण प्रेमी

20. हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है–

(अ) नाटक (ब) उपन्यास

(स) रेखाचित्र (द) **कहानी**

21. संस्मरण विधा की रचना है–

(अ) **स्मृति की रेखाएँ** (ब) भारतीय संस्कृति

(स) ममता (द) नए मेहमान

22. 'राष्ट्रमत' नामक मराठी पत्र के संपादक हैं–

(अ) **काका कालेलकर** (ब) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(स) महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) प्रतापनारायण मिश्र

23. प्रेमचंद जी की पहली कहानी है–

(अ) नमक का दरोगा (ब) **सौत**

(स) बलिदान (द) ईदगाह

24. प्रेमचंद जी की आखिरी कहानी है–

(अ) ईदगाह (ब) बलिदान

(स) **कफन** (द) पंच परमेश्वर

25. 'गोदान' उपन्यास किस उपन्यासकार से संबंधित है?

(अ) शिवानी (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (द) **प्रेमचंद**

1. बात (प्रतापनारायण मिश्र)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आधुनिक कालीन हिंदी–साहित्य के रचनाकारों की वृहत्त्रयी में किन लेखकों की गिनती होती है?

उ०– आधुनिक कालीन हिंदी–साहित्य के रचनाकारों की वृहत्त्रयी में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र की गिनती की जाती है।

2. प्रतापनारायण मिश्र की जन्म–तिथि और जन्म–स्थान के बारे में बताइए।

उ०– प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 1856 ई० में उत्तर प्रदेश के बैजे (उन्नाव) नामक गाँव में हुआ था।

3. प्रतापनारायण मिश्र के पिताजी का क्या नाम था और वे मिश्र से किस तरह की अपेक्षा रखते थे?

उ०– प्रतापनारायण मिश्र के पिताजी का नाम संकटाप्रसाद था, जो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और वे मिश्र जी से अपेक्षा रखते थे कि वे भी ज्योतिषी बनें।

4. घर में रहकर ही मिश्र जी ने किन–किन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया?

उ०– मिश्र जी ने घर में रहकर ही हिंदी, उर्दू, बंगला, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

5. प्रतापनारायण मिश्र किस प्रकार साहित्य के संपर्क में आए?

उ०– मिश्र जी छात्रावस्था से ही 'कविवचन सुधा' के गद्य–पद्य–मय लेखों का नियमित पाठ करते थे, जिससे हिंदी के प्रति उनका अनुराग उत्पन्न हुआ। लावनी गायकों की टोली में आशु रचना करने तथा ललित जी की रामलीला में अभिनय करते हुए उनसे काव्य रचना की शिक्षा ग्रहण करने से वे स्वयं मौलिक रचना का अभ्यास करने लगे। इसी बीच वे भारतेंदु जी के संपर्क में आए। उनका आशीर्वाद व प्रोत्साहन पाकर वे हिंदी गद्य तथा पद्य रचना करने लगे।

6. मिश्र जी ने भाषा की किन शैलियों का प्रयोग अपने साहित्य में किया? किसी एक शैली का उदाहरण दीजिए।

उ०– मिश्र जी ने अपनी भाषा में वर्णनात्मक, विचारात्मक तथा हास्य-विनोद शैलियों का सफल प्रयोग किया है। इनकी शैली को दो प्रमुख प्रकारों में बाँटा जा सकता है—
विचारात्मक शैली तथा व्यंग्यात्मक शैली।
व्यंग्यात्मक शैली से संबंधित एक उदाहरण है— ''अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' पर हठ करने वाले को यह कह के बातों उड़ावेंगे कि' हम लूले-लँगड़े ईश्वर को नहीं मान सकते, हमारा प्यारा तो कोटि काम सुंदर श्याम वर्ण विशिष्ट है।''

7. समय अभाव और सुविधाओं का अभाव होने पर भी मिश्र जी का हिंदी साहित्य में क्या योगदान है?

उ०– मिश्र जी भारतेंदु मंडल के प्रमुख लेखकों में से एक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध रूपों में सेवा की। वे कवि होने के अतिरिक्त उच्चकोटि के मौलिक निबंध लेखक और नाटककार थे। हिंदी गद्य के विकास में मिश्र जी का बड़ा योगदान रहा है। आचार्य शुक्ल जी ने पं० बालकृष्ण भट्ट के साथ मिश्र जी को भी महत्व देते हुए अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में लिखा है-''पं०प्रतापनारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट ने हिंदी गद्य साहित्य में वही काम किया है, जो अंग्रेजी गद्य साहित्य में एडीसन और स्टील ने किया।''

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. प्रतापनारायण मिश्र के जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

उ०– जीवन परिचय – हिंदी गद्य साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 1856 ई० में उत्तर प्रदेश के बैजे (उन्नाव) नामक गाँव में हुआ। वे भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकार थे। उनके पिता संकटाप्रसाद एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और अपने पुत्र को भी ज्योतिषी बनाना चाहते थे। किंतु मिश्र जी को ज्योतिष की शिक्षा रुचिकर नहीं लगी, पिता ने अंग्रेजी पढ़ने के लिए स्कूल भेजा किंतु वहाँ भी उनका मन नहीं रमा। लाचार होकर उनके पिता जी ने उनकी शिक्षा का प्रबंध घर पर ही किया।

इस प्रकार मिश्र जी की शिक्षा अधूरी ही रह गई। किंतु उन्होंने प्रतिभा और स्वाध्याय के बल से अपनी योग्यता पर्याप्त बढ़ा ली थी। वह हिंदी, उर्दू और बंगला तो अच्छी तरह जानते ही थे, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत में भी उनकी अच्छी गति थी।

मिश्र जी छात्रावस्था से ही 'कविवचनसुधा' के गद्य-पद्य-मय लेखों का नियमित पाठ करते थे, जिससे हिंदी के प्रति उनका अनुराग उत्पन्न हुआ। लावनी गायकों की टोली में आशु रचना करने तथा ललित जी की रामलीला में अभिनय करते हुए उनसे काव्य रचना की शिक्षा ग्रहण करने से वह स्वयं मौलिक रचना का अभ्यास करने लगे। इसी बीच वह भारतेंदु जी के संपर्क में आए। उनका आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन पाकर वह हिंदी गद्य तथा पद्य रचना करने लगे। 1882 के आसपास उनकी रचना 'प्रेमपुष्पावली' प्रकाशित हुई और भारतेंदु जी ने उसकी प्रशंसा की तो उनका उत्साह बहुत बढ़ गया।

मिश्र जी भारतेंदु जी के व्यक्तित्व से प्रभावित थे तथा उन्हें अपना गुरु और आदर्श मानते थे। ये अपने हाजिरजवाबी एवं विनोदी स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे।

15 मार्च, 1883 को, ठीक होली के दिन, अपने कई मित्रों के सहयोग से मिश्र जी ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्र निकाला। यह अपने रंग-रूप में ही नहीं, विषय और भाषा-शैली की दृष्टि से भी भारतेंदु युग का विलक्षण पत्र था। सजीवता, सादगी, बाँकपन और फक्कड़पन के कारण भारतेंदुकालीन साहित्यकारों में जो स्थान मिश्र जी का था, वही तत्कालीन हिंदी पत्रकारिता में इस पत्र का था।

मिश्र जी परिहासप्रिय और जिंदादिल व्यक्ति थे, परंतु स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही के कारण उनका शरीर युवावस्था में ही रोग से जर्जर हो गया था। स्वास्थ्यरक्षा के नियमों का उल्लंघन करते रहने से उनका स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता गया। 1892 के अंत में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े और लगातार डेढ़ वर्षों तक बीमार ही रहे। अंत में 38 वर्ष की अवस्था में 6 जुलाई, 1894 को दस बजे रात में भारतेंदुमंडल के इस नक्षत्र का अवसान हो गया।

साहित्यिक योगदान– प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु के विचारों और आदर्शों के महान प्रचारक और व्याख्याता थे। वह प्रेम को परमधर्म मानते थे। हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान उनका प्रसिद्ध नारा था। समाज-सुधार को दृष्टि में रखकर उन्होंने सैकड़ों लेख लिखे हैं। बालकृष्ण भट्ट की तरह मिश्र जी आधुनिक हिंदी निबंधों की परंपरा को पुष्ट कर हिंदी साहित्य के सभी अंगों की पूर्णता के लिए रचनारत रहे। एक सफल व्यंग्यकार और हास्यपूर्ण गद्य-पद्य-रचनाकार के रूप में हिंदी साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है। मिश्र जी की मुख्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—

(अ) नाटक– भारत दुर्दशा, गौ-संकट, कलि कौतुक, कलि प्रभाव, हठी हम्मीर, ज्वारी खुआरी

(ब) निबंध संग्रह– निबंध नवनीत, प्रताप पीयूष, प्रताप समीक्षा

(स) अनुदित गद्य कृतियाँ– नीति रत्नावली, कथामाला, संगीत शाकुंतल, सेनवंश का इतिहास, सूबे बंगाल का भूगोल, वर्ण परिचय, शिशु विज्ञान, राजसिंह, राधारानी, चरिताष्टक

(द) **काव्य कृतियाँ–** प्रेम पुष्पावली, मन की लहर, ब्रैडला-स्वागत, दंगल-खंड, कानपुर महात्म्य, शृंगारविलास, लोकोक्ति-शतक, दीवो बरहमन (उर्दू) मिश्र जी भारतेंदु मंडल के प्रमुख लेखकों में से एक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध रूपों में सेवा की। वे कवि होने के अतिरिक्त उच्चकोटि के मौलिक निबंध लेखक और नाटककार थे। हिंदी गद्य के विकास में मिश्र जी का बड़ा योगदान रहा है।

2. पं० प्रतापनारायण मिश्र की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– भाषा– खड़ीबोली के रूप में प्रचलित जनभाषा का प्रयोग मिश्र जी ने अपने साहित्य में किया। प्रचलित मुहावरों, कहावतों तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग इनकी रचनाओं में हुआ है। भाषा की दृष्टि से मिश्र जी ने भारतेंदु जी का अनुसरण किया और जन साधारण की भाषा को अपनाया। भारतेंदु जी के समान ही मिश्र जी की भाषा भी कृत्रिमता से दूर है। वह स्वाभाविक है। पंडिताऊपन और पूर्वीपन अधिक है। उसमें ग्रामीण शब्दों का प्रयोग स्वच्छंदतापूर्वक हुआ है। संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी ग्रहण किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल है। मुहावरों का जितना सुंदर प्रयोग उन्होंने किया है, वैसा बहुत कम लेखकों ने किया है। कहीं-कहीं तो उन्होंने मुहावरों की झड़ी-सी लगा दी है।

शैली– मिश्र जी की शैली में वर्णनात्मक, विचारात्मक तथा हास्य-विनोद शैलियों का सफल प्रयोग किया गया है। इनकी शैली को दो प्रमुख प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

विचारात्मक शैली– साहित्यिक और विचारात्मक निबंधों में मिश्र जी ने इस शैली को अपनाया है। इस शैली में प्रयुक्त भाषा संयत और शिष्ट है। वस्तुत: मिश्र जी के स्वभाव के विपरीत होने के कारण इस शैली में स्वाभाविकता का अभाव है।

व्यंग्यात्मक शैली– इस शैली में मिश्र जी ने अपने हास्य-व्यंग्य पूर्ण निबंध लिखे हैं। यह शैली मिश्र जी की प्रतिनिधि शैली है। जो सर्वथा उनके अनुकूल है। वे हास्य और विनोदप्रिय व्यक्ति थे। अत: प्रत्येक विषय का प्रतिपादन हास्य और विनोदपूर्ण ढंग से करते थे। हास्य और विनोद के साथ-साथ इस शैली में व्यंग्य के दर्शन होते हैं। विषय के अनुसार व्यंग्य कहीं-कहीं बड़ा तीखा और मार्मिक हो गया है। इस शैली में भाषा सरल, सरस और प्रवाहमयी है। उसमें उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और ग्रामीण शब्दों का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियाँ और मुहावरों के कारण यह शैली अधिक प्रभावपूर्ण हो गई है।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. यदि हम वैद्य -------------------- करती रहती है।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' में संकलित एवं 'प्रतापनारायण मिश्र' द्वारा लिखित 'बात' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में बात के विभिन्न अर्थों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। प्रतापनारायण मिश्र ने बात के संबंध में बात करते हुए आयुर्वेद व भूगोल आदि की भी चर्चा की है।

व्याख्या– मिश्र जी कहते हैं कि यदि हम आयुर्वेद के आधार पर चिकित्सा करने वाले वैद्य होते तो कफ और पित्त से संबंधित बात की चर्चा करते, क्योंकि आयुर्वेद के अंतर्गत शारीरिक रोगों का प्रधान कारण - वात (वायु), कफ और पित्त का असंतुलित हो जाना है। इसी प्रकार भूगोल के ज्ञाता (जानने वाला) 'जलबात' की चर्चा करते हुए किसी देश की जलवायु का विवरण प्रस्तुत करते हैं। किंतु यहाँ बात का प्रयोजन न तो आयुर्वेद के वात-पित्त-कफ से है और न ही भूगोल के अंतर्गत अध्ययन की जाने वाली किसी देश की जलवायु से है। बल्कि यहाँ 'बात' का तात्पर्य उन वचनों या बातचीत से है, जो बातचीत करते समय हम लोगों के मुख से निकलती है और जिसके द्वारा हम अपने हृदय के भाव (विचार) प्रकट करते हैं अर्थात् पारस्परिक बातचीत के द्वारा ही हम दूसरों के भावों को समझते हैं और उन्हें अपने विचारों को समझाते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) लेखक यदि वैद्य होते तो वह किस बात की बात करते?

उ०– यदि लेखक वैद्य होते तो वह वात-पित्त-कफ की चर्चा करते।

(स) लेखक यदि भूगोल-वेत्ता होते तो वह किस विषय पर बात करते?

उ०– यदि लेखक भूगोल-वेत्ता होते तो वह किसी देश की जलवायु पर चर्चा करते।

(द) हम अपने भावों को किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं?

उ०– हम अपने भावों को बातचीत के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं।

2. सच पूछिए ------------ जाते हैं।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने प्राणि–जगत के समस्त जीवधारियों की सर्वोपरि जाति का उल्लेख किया है।

व्याख्या– लेखक के अनुसार बात का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह बात की ही महिमा है कि मनुष्य जाति को समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। समस्त प्राणियों में केवल मनुष्य ही भली–भाँति बातें कर सकता है। तोता, मैना आदि कुछ पक्षी भी अनुकरण कर कुछ बातें कर लेते हैं। इसी बात के कारण ही उनको भी अन्य पक्षियों की अपेक्षा श्रेष्ठ एवं आदरणीय माना जाता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) मानव जाति सभी जीवधारियों से श्रेष्ठतम क्यों है?

उ०– समस्त जीवधारियों में केवल मानव जाति ही बात के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति करने में समर्थ है, इसलिए वह समस्त जीवधारियों से श्रेष्ठतम है।

(स) कौन–से पक्षी अन्य नभचर से श्रेष्ठ हैं?

या

कौन–सा गुण उन्हें अन्य नभचारियों से श्रेष्ठ बनाता है?

उ०– तोता, मैना आदि पक्षी अन्य नभचर से श्रेष्ठ हैं। उनका मनुष्यों की तरह बात करने का गुण उन्हें अन्य नभचारियों से श्रेष्ठ बनाता है।

3. वेद, ईश्वर ---------- मान रखी है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में बात के महत्व को बताते हुए लेखक ने धर्म के क्षेत्र में बात का महत्व बताया है।

व्याख्या– वेद को उसी निराकार ईश्वर का 'वचन', कुरान शरीफ को 'कलाम' और बाइबिल को उसी निराकार का 'वर्ड' (शब्द) कहा जाता है। 'वचन', 'कलाम', और 'वर्ड', ये सभी बात के ही दूसरे नाम या समानार्थी तो हैं। इस प्रकार बात की महिमा के कारण ही हम आकाररहित ईश्वर को भी महत्व प्रदान करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने इसीलिए वाणीविहीन होने पर भी ईश्वर को श्रेष्ठ वक्ता और महान योगी कहा है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) इन पंक्तियों में कौन–से शब्द बात शब्द के पर्याय हैं?

उ०– वचन, कलाम और वर्ड इन पंक्तियों में बात शब्द के पर्याय हैं।

(स) 'बिन वाणी वक्ता बड़ जोगी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'बिन वाणी वक्ता बड़ जोगी' से तात्पर्य है— वाणीविहीन होने पर भी ईश्वर श्रेष्ठ वक्ता और योगी है।

4. जब परमेश्वर ------------ सब बात ही तो हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने 'बात' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए ईश्वर को भी बात से मुक्त नहीं माना है तथा बात के विविध रूपों का उल्लेख किया है।

व्याख्या– मिश्र जी का कथन है कि जब संसार का निर्माणकर्ता ईश्वर भी बात के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सका है तो उसके द्वारा बनाए गए साधारण मनुष्य में भला इतनी शक्ति कहाँ कि वह बात से प्रभावित हुए बिना रह सके। मनुष्य का शरीर ही वात; अर्थात् श्वास के कारण प्राणवान् है। हमारे देश में अनेक प्रकार के शास्त्रों, पुराणों, काव्यों, इतिहास–ग्रंथों एवं कोशग्रंथों की रचना की गई है। इन सभी ग्रंथों में बात का ही विस्तार किया गया है। पुराणों और शास्त्रों में विभिन्न प्रकार की कहानियाँ कही गई हैं तथा दर्शन के तत्वों का उल्लेख किया गया है। इतिहास–ग्रंथों में भी अनेक घटनाओं का वर्णन हुआ है। ये वर्णन भी बात के प्रयोग से ही संभव हुए हैं। काव्य की पुस्तकें भी बात के ही विविध रूपों को अपने में सँजोए हुए हैं।

इसके अतिरिक्त शास्त्रों और पुराणों में कही गई बातों को पढ़कर हमारी बुद्धि निर्मल होती है और मन शुद्ध होता है। इनके अध्ययन से चेतना जाग्रत होती है और चित्त ऐसी स्थिति में आ जाता है कि वह लोक और परलोक का चिंतन करने लगता है। इससे यह सिद्ध होता है कि बात का महत्व प्रत्येक क्षेत्र में है।

लेखक का कथन है कि बात के वास्तविक स्वरूप का वर्णन नहीं किया जा सकता। जब हम 'बात' के संबंध में चर्चा करते हैं तो यह बात पता चलती है कि ईश्वर के असंख्य रूपों की तरह बात के भी असंख्य रूप हैं। कोई बात बड़ी और महत्वपूर्ण होती है तो कोई छोटी और तुच्छ। बात मधुर और मन को छूने वाली भी होती है। इसी प्रकार कुछ बातें भली होती हैं तो कुछ बातें मन को चुभने वाली होती हैं। इस प्रकार बात के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) 'गात माँहि बात करामात है' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'गात माँहि बात करामात है' का तात्पर्य है कि मनुष्य के शरीर में तो बात की ही करामात (जादू) है अर्थात् मनुष्य का शरीर श्वास (वायु) के कारण ही प्राणवान् है।

(स) 'बड़ी बात' और 'छोटी बात' मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'बड़ी बात' का अर्थ है— इज्जत अथवा प्रतिष्ठावाला होना और छोटी बात का अर्थ है— गलत अथवा अनुचित वचन।

(द) क्या मनुष्य की पहचान बात से होती है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– मनुष्य की पहचान बात से ही होती है, क्योंकि बात ही कहने वाले और सुनने वाले दोनों के मस्तिष्क, बुद्धि और हृदय पर अनोखा प्रभाव डालती है।

5. हमारे तुम्हारे ------------- बन जाते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यह एक हास्य-व्यंग्यप्रधान निबंध है। लेखक ने इस गद्य-खंड में बात के विभिन्न रूपों की चर्चा करने के पश्चात् 'बात' के विभिन्न प्रभावों का रोचक वर्णन किया है।

व्याख्या– मिश्र जी कहते हैं कि बात का प्रभाव बहुत व्यापक होता है। बात कहने के ढंग से ही उसका प्रभाव घटता अथवा बढ़ता है। निश्चय ही हमारे बात करने के ढंग से हमारा प्रत्येक कार्य प्रभावित होता है। बात के प्रभावशाली होने पर कवि अथवा चारण, राजाओं से पुरस्कार में हाथी प्राप्त कर लेते थे किंतु कटु बात कहने से राजाओं द्वारा हाथी के पाँव के नीचे कुचलवा भी दिए जाते थे। यह बात भी सिद्ध है कि वात अर्थात वायु-प्रकोप से ' हाथी-पाँव ' नामक रोग भी हो जाता है। किसी की वाणी से प्रभावित होकर बड़े-बड़े कंजूस भी उदार-हृदय बन जाते हैं और अपनी संपत्ति परोपकार के लिए अर्पित कर देते हैं। इसके विपरीत कटु वाणी के प्रभाव से उदार-हृदय व्यक्ति भी अपने साधनों को समेट लेता है। युद्ध-क्षेत्र में चारणों की ओजपूर्ण वाणी सुनकर कायरों में भी वीरता का भाव उत्पन्न हो जाता है और यदि बात लग जाए तो युद्ध चाहने वाला व्यक्ति भी शांतिप्रिय बन जाता है। बात के प्रभाव से बुरे रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति सन्मार्ग पर चलने लगता है और बात की शक्ति द्वारा सन्मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति भी दुष्टों जैसा व्यवहार करने लगता है। तात्पर्य यह है कि बात कहने का ढंग और शब्दों के प्रयोग मनुष्य पर आश्चर्यजनक रूप से प्रभाव डालते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) 'मक्खीचूस' और 'कापुरुष' शब्दों के अर्थ लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उ०– 'मक्खीचूस' का अर्थ है— अत्यधिक कंजूस।

वाक्य प्रयोग – सेठ रतनलाल एक मक्खीचूस व्यक्ति है।

'कापुरुष' का अर्थ है— कायर।

वाक्य प्रयोग – वीरों की संगति से कापुरुष भी वीर बन जाते हैं।

(स) क्या बात के प्रभाव से कुमार्गी सुपथगामी हो सकता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उ०– हाँ, बात के प्रभाव से बुरे मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति सन्मार्ग पर चलने लगता है; जैसे— भगवान बुद्ध की बात की शक्ति के प्रभाव से ही बुरे मार्ग पर चलने वाला अंगुलिमाल अच्छे रास्ते पर चलने लगा।

(द) वह कौन-सी चीज है, जो अपनों को पराया कर देती है?

उ०– वह कटु बात है, जो अपनों को पराया कर देती है।

6. बात का तत्व ------------- कहना चाहिए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में बात के विभिन्न रूपों और उनके प्रभावों का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि बात को समझना और समझाना सरल नहीं है।

व्याख्या– बात के सार अथवा वास्तविक स्वरूप को प्रत्येक व्यक्ति नहीं समझ सकता । इसी प्रकार बात तो कोई भी कर सकता है, परंतु ऐसी बात कह देना कि वह दूसरे की बुद्धि पर अपना अधिकार जमा ले, सामान्य व्यक्तियों के वश की बात नहीं है। विलक्षण प्रतिभासंपन्न व्यक्ति ही किसी को अपनी बात से प्रभावित कर सकते हैं। वस्तुत: बात के मर्म या रहस्य को समझना अत्यंत कठिन है। बड़े-बड़े विद्वानों और महाकवियों का समग्र जीवन जीव, जगत् और परमात्मा संबंधी बातों को समझने और अपनी बात दूसरों को समझाने में ही व्यतीत हो जाता है। जो लोग सद्भावना वाले होते हैं; अर्थात् जिनके हृदय में प्राणियों के प्रति प्रेम, करुणा, स्नेह और सहयोग का भाव होता है, उनकी बातें अत्यधिक आनंददायी प्रतीत होती हैं। यहाँ तक कि उनकी बातों की तुलना में संसार का समस्त सुख और ऐश्वर्य तुच्छ लगने लगता है। इसी प्रकार बालकों की मन हर्षाने वाली तोतली बातें, सुंदर नारियों की प्रिय और मधुर बातें, श्रेष्ठ कवियों की मनोहारी काव्य-पंक्तियाँ तथा श्रेष्ठ वक्ताओं की प्रभावपूर्ण बातें भी व्यक्ति को आनंदित करती हैं। इस प्रकार की आनंददायी बातों से भी जिनका हृदय प्रभावित न हो, उन्हें तो पशु से भी हीन अथवा पत्थर का टुकड़ा ही कहना चाहिए।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र।

(ब) कवियों और विद्वानों का जीवन किस प्रकार व्यतीत होता है ?

उ०– कवियों और विद्वानों का जीवन संसार की गूढ़ बातों को समझने और दूसरों के जीवन को सफल बनाने वाली बातों को समझने में व्यतीत होता है।

(स) किन लोगों को पशु नहीं पाषाणखंड कहना चाहिए?

उ०– जिन लोगों के मन को बच्चों की मधुर तोतली बातें, स्त्रियों की प्यारी मीठी बातें, कवियों की रसपूर्ण बातें और विद्वान की प्रभावपूर्ण जीवनोपयोगी बातें आनंदित नहीं करती हैं, उन्हें पशु नहीं पाषाणखंड कहना चाहिए।

(द) ऐसों-वैसों का क्या साध्य नहीं है?

उ०– अपनी बातों से दूसरों की बुद्धि पर प्रभाव जमाकर उन पर अपना शासन करना ऐसों-वैसों का साध्य नहीं है।

7. हमारे परम पूजनीय -------------- लिखी रहेगी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में भारत के प्राचीन सांस्कृतिक गौरव का वर्णन किया गया है। मिश्र जी ने बताया है कि प्राचीनकाल में लोग वचन-पालन को सर्वाधिक महत्व देते थे परंतु वर्तमान युग में वचन का कोई महत्व नहीं रह गया है।

व्याख्या– हमारे पूर्वज अपने वचन के पक्के होते थे। अपने वचन से वह तनिक भी नहीं डिगते थे। वचन के सामने वे शरीर, स्त्री, पुत्र, धन, भूमि आदि सभी वस्तुओं को तिनके के समान तुच्छ समझते थे। अपने वचन का पालन करने के लिए आर्यगण इन सब वस्तुओं का मोह त्याग देते थे।

सत्यवादी हरिश्चंद्र ने अपने वचनों का पालन करने के लिए राज-पाट, पुत्र, स्त्री, स्वजन आदि का त्याग कर दिया था। वचन-पालन का महत्व समझाते हुए मिश्रजी ने एक काव्य-पंक्ति का प्रयोग किया है, जिसका तात्पर्य है कि पुत्र प्राणों से अधिक प्यारा होता है और प्राण पुत्र से भी अधिक प्रिय होते हैं किंतु राजा दशरथ ने अपने वचन का पालन करने के लिए दोनों का त्याग कर दिया था। उन्होंने अपने वचनों का पालन करने के लिए अपने प्राणों से भी प्रिय पुत्र को त्याग दिया था, क्योंकि उन्होंने अपने वचन को तोड़ना अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझा था। हमारा इतिहास इस प्रकार के अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है। अपने वचनों का निर्वाह करने के कारण ही हमारे पूर्वजों का यश सर्वत्र फैला हुआ है और उनकी कीर्ति संसार-पटल पर स्वर्ण-अक्षरों में अंकित है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) 'तन तिय तनय धाम धन धरनी। सत्यसंध कहँ तृन सम बरनी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ०– इसका अर्थ है कि हमारे पूर्वज आर्य अपने वचनों की रक्षा के लिए स्त्री, पुत्र, घर, धन, पृथ्वी को भी तृण के समान त्याग देते थे।

(स) दशरथ ने ऐसा क्या किया कि उनकी कीर्ति स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई?

उ०– दशरथ ने अपने प्राणों से प्रिय पुत्र और पुत्र से प्रिय प्राण दोनों को अपने वचनों की रक्षा के लिए त्याग दिया। उनकी यह कीर्ति स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

(द) प्राचीन काल में बात का क्या महत्व था? सोदाहरण बताइए।

उ०– प्राचीन काल में लोग अपने वचन का पालन करने के लिए प्राण भी न्योछावर कर देते थे। महाराज दशरथ के जीवन से यह बात स्पष्ट होती है।

8. पर आजकल -------------- पापी पेट के लिए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने स्पष्ट किया है कि प्राचीनकाल में हमारे पूर्वज अपने वचनपालन के लिए प्राणों की भी चिंता नहीं करते थे। इसी प्रसंग में लेखक ने आधुनिक युग के लोगों पर व्यंग्य भी किया है।

व्याख्या– आज कलियुगी लोग वचन पालन को उतना महत्व नहीं देते, जितना प्राचीनकाल में हमारे पूर्वज दिया करते थे। वचन पालन को गंभीरता से न लेने के लिए लोग यह तर्क देते हैं कि आदमी की जुबान और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही अच्छा लगता है। यह कथन उन्हीं स्वार्थी लोगों का है, जिनके लिए जाति, देश और संबंधों का कोई महत्व नहीं होता। महत्व होता है तो केवल धन का, जिसके लिए वे अपनी बात को हजार बार भी बदलें तो कम है। जिस देश की प्राचीन संस्कृति गौरवमयी हो उस देश के नागरिक अपने चरित्र से इतने गिर जाएँ कि वे प्रत्येक कार्य स्वार्थपूर्ति के लिए ही करें तो इससे अधिक लज्जा की बात और क्या हो सकती है। प्राय: अपने अधिकारी को प्रसन्न करने के लिए लोग अपनी बात को तुरंत बदल देते हैं। देशहित की कामना अथवा समाज-कल्याण के लिए कभी-कभी वचनों में की गई हेरा-फेरी भी बुरी नहीं है, क्योंकि इसके पीछे एक अच्छा उद्देश्य छिपा रहता है। इसके विपरीत अपने पेट के लिए अथवा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने वचनों का पालन न करना अत्यंत निंदनीय कार्य है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) 'मर्द की जबान और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता है' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– 'मर्द की जबान और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता है' से आशय है कि कुछ निम्नस्तरीय लोग परिस्थितियों के अनुरूप अपने स्वार्थ के लिए अपनी बातों को बदलते रहने अथवा कुछ भी उल्टा-सीधा कहते रहने में अपनी शान समझते हैं, भले ही वे अपने द्वारा कही गई बातों में से एक भी बात को पूरा न करते हों।

(स) बातों में मन के अनुसार परिवर्तन किस स्थिति में उचित नहीं है?

उ०– अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए मन के अनुसार बातों में परिवर्तन उचित नहीं है।

(द) 'जात्युपकार' तथा 'देशोद्धार' में संधि विच्छेद कीजिए।

उ०– जात्युपकार — जाति + उपकार

देशोद्धार — देश + उद्धार

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रतापनारायण मिश्र किस युग के लेखक हैं?

(अ) छायावादी युग (ब) **भारतेंदु युग**

(स) छायावादोत्तर युग (द) द्विवेदी युग

2. भारतेंदु हरिश्चंद्र को अपना गुरु मानते थे–

(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) **प्रतापनारायण मिश्र** (द) काका कालेलकर

3. मिश्र जी का प्रचलित कहावतों पर आधारित निबंध कौन-सा है?

(अ) बात (ब) दाँत

(स) **समझदार की मौत** (द) बुढ़ापा

4. प्रतापनारायण मिश्र ने किस पत्र का सफलतापूर्वक संपादन किया?

(अ) मर्यादा (ब) **ब्राह्मण**

(स) इंदु (द) सरस्वती

5. 'बात' मिश्र जी की किस शैली का निबंध है?

(अ) गंभीर विचारात्मक (ब) विवेचनात्मक

(स) विवरणात्मक और विवेचनात्मक (द) **हास्य व्यंग्यपूर्ण विनोदात्मक**

(ङ.) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित मुहावरों और कहावतों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

बात आ पड़ना (किसी कार्य का उत्तरदायित्व आना)– जब **बात आ पड़ी** तो मुझे मंच का संचालन सँभालना ही पड़ा।

बात जाते रहना (प्रतिष्ठा का समाप्त हो जाना)– अपने व्यवहार के कारण वर्तमान समय में नवाबों की **बात जाती रही।**

बात की बात (इज्जत के लिए किसी बात पर अटल रहना)– राम ने **बात की बात** में शिव का धनुष तोड़ डाला।

बात जमना (विश्वसनीयता स्थापित होना)– राम को श्याम की **बात जम गई**, इसलिए वह साझे में व्यापार करने के लिए तैयार हो गया।

बात का बतंगड़ बनाना (साधारण-सी बात को विवादास्पद बनाना)– **बात का बतंगड़** बनते देर नहीं लगती, अत: हमें सोच समझकर बोलना चाहिए।

बातें बनाना (बढ़-चढ़कर कहना)– आजकल के नेता चुनाव के समय बहुत **बातें बनाते** हैं, किंतु जीतने के बाद शक्ल भी नहीं दिखाते।

बात बनना (काम बनना)– यदि आप प्रधानाचार्य से मेरी सिफारिश कर दें तो मेरी **बात बन जाएगी।**

बात बिगड़ना (काम बिगड़ जाना)– आपस की फूट से निश्चित रूप से **बात बिगड़ ही जाती है।**

बातों में उड़ाना (गंभीरता से न लेना)– रावण ने राम की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया और उसे **बातों में उड़ा दिया।**

मक्खीचूस (कंजूस होना)– श्याम धनी व्यक्ति है परंतु वह अत्यावश्यक कार्यों के लिए भी धन खर्च नहीं करता क्योंकि वह बहुत **मक्खीचूस** है।

उँगलियों पर गिनने भर को (संख्या में कम होना)– रामप्रसाद की पुत्री के विवाह में **उँगलियों पर गिनने भर को** मेहमान पहुँचे।

बड़ी बात होना (बात का महत्वपूर्ण होना)– राधा का PCS की परीक्षा उत्तीर्ण करना एक **बड़ी बात** है।

हाथ समेट लेना (पीछे हट जाना)– धनीराम ने जगत सेठ की काफी मदद की थी। परंतु जब धनीराम को अपनी लड़की की शादी में धन की आवश्यकता पड़ी, तो जगत सेठ ने अपने **हाथ समेट लिए।**

2. निम्नलिखित पदों का समास विग्रह करके समास का नाम लिखिए–

समस्तपद	**विग्रह**	**समास का नाम**
कुमार्गी	गलत मार्ग पर चलने वाला	उपपद तत्पुरुष समास
सुपथ	सही मार्ग	कर्मधारय समास
कापुरुष	कायर है जो पुरुष	कर्मधारय समास
आजकल	आज और कल	द्वंद्व समास
अपाणिपाद	बिना हाथ-पैर वाला	तत्पुरुष समास
पाषाणखंड	पाषाण का खंड	तत्पुरुष समास
यथासामर्थ्य	सामर्थ्य के अनुसार	अव्ययीभाव समास

3. निम्नलिखित पदों का सनियम संधि विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**	**नियम**

धर्मावलंबी	धर्म + अवलंबी	अ + अ = आ
संधि शब्द	**संधि विच्छेद**	**नियम**
मनोहर	मन: + हर	न:+ ह = नोह
कवीश्वर	कवि + ईश्वर	इ + ई = ई
निराकार	नि: + आकार	नि: + आ = निरा
शुकसारिकादि	शुकसारिका + आदि	आ + आ = आ
जात्युपकार	जाति + उपकार	इ + उ = यु
युद्धोत्साही	युद्ध + उत्साही	अ + उ = ओ
निरवयव	नि: + अवयव	नि: + अ = निर
परमेश्वर	परम + ईश्वर	अ + ई = ए
विदग्धालाप	विदग्ध + आलाप	अ + आ = आ

(च) पाठ्येतर सक्रियता–

2. मंत्र

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रेमचंद जी की जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान के बारे में बताइए। उनके बचपन का क्या नाम था?

उ०– प्रेमचंद जी का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। इनके बचपन का नाम धनपतराय था।

2. प्रेमचंद जी को किस-किस नाम से जाना जाता है? उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें किस नाम से संबोधित किया?

उ०– प्रेमचंद जी को नवाबराय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उपन्यासकार शरतचंद्र चट्‌टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहकर संबोधित किया।

3. प्रेमचंद जी की कौन-सी कृति अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त कर ली गई?

उ०– प्रेमचंद जी की कृति 'सोजे वतन' अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त कर ली गई थी।

4. प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी कौन-सी थी और वह कब प्रकाशित हुई?

उ०– प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' थी और वह 'जमाना' पत्रिका के दिसबंर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई।

5. प्रेमचंद जी के किस उपन्यास को उनके पुत्र ने पूरा किया?

उ०– प्रेमचंद जी के उपन्यास 'मंगलसूत्र' को उनके पुत्र ने पूरा किया।

6. प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं में किसके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है?

उ०– प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं में तत्कालीन निम्न एवं मध्यम वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट की है।

7. 'हंस' पत्रिका के संपादक कौन है?

उ०– हंस पत्रिका के संपादक प्रेमचंद जी हैं।

8. प्रेमचंद जी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कौन-सा है?

उ०– प्रेमचंद जी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' है।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. प्रेमचंद जी का संक्षिप्त जीवन परिचय देकर उनकी कृतियों का वर्णन कीजिए।

उ०– **जीवन परिचय–** प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनंदी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन-यापन का अध्यापन से। पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही था। 13 साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्मे होशरूबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिरजा रुसबा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी।

1910 में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास विषय से इंटर पास किया और 1919 में बी०ए० पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ, जो सफल नहीं रहा। वे आर्य समाज से प्रभावित रहे, जो उस समय का बहुत बड़ा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन था। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और 1906 में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संतानें हुई - श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1910 में उनकी रचना 'सोजे-वतन' (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया। सोजे-वतन की सभी प्रतियाँ जब्त कर नष्ट कर दी गईं। कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा।

इस समय तक प्रेमचंद, धनपतराय नाम से लिखते थे। सन् 1915 ई० में इन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा पर 'प्रेमचंद' नाम धारण करके, हिंदी-साहित्य जगत में पदार्पण किया। जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। अक्टूबर 1936 में उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' उनके पुत्र अमृत ने पूरा किया।

कार्यक्षेत्र– प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं। वैसे तो उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था, पर उनकी पहली हिंदी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में, 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई और 1936 में अंतिम कहानी 'कफन' नाम से। बीस वर्षों की इस अवधि में उनकी कहानियों के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। भारतीय साहित्य का बहुत-सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा, चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य, उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं।

प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी', 'जमाना' पत्रिका के दिसंबर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुई। कथा सम्राट प्रेमचंद का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गाँधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन भार सँभाला, छह साल तक 'माधुरी' नामक पत्रिका का संपादन किया, 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र 'हंस' शुरू किया और 1932 के आरंभ में 'जागरण' नामक एक साप्ताहिक पत्र और निकाला। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की।

रचनाएँ– प्रेमचंद ने कथा-साहित्य के क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन किए और एक नए कथा-युग का सूत्रपात किया। जनता की बात जनता की भाषा में कहकर तथा अपने कथा-साहित्य के माध्यम से तत्कालीन निम्न एवं मध्यम वर्ग की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करके वे भारतीयों के ह्दय में समा गए और भारतीय साहित्य जगत में 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित हुए।

प्रेमचंद ने कहानी, नाटक, जीवन-चरित और निबंध के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का अभूतपूर्व परिचय दिया।

(अ) उपन्यास– कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम, वरदान, सेवासदन, रंगभूमि, गबन, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)

(ब) कहानी संग्रह– नवनिधि, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, प्रेरणा, कफन, कुत्ते की कहानी, प्रेम-प्रसून, प्रेम-पचीसी, प्रेम-चतुर्थी, मनमोदक, मानसरोवर (दस भाग), समर-यात्रा, सप्त-सरोज, अग्नि-समाधि, प्रेम-गंगा और सप्त-सुमन

(स) नाटक– कर्बला, प्रेम की वेदी, संग्राम और रूठी रानी

(द) जीवन-चरित– कलम, तलवार और त्याग, दुर्गादास, महात्मा शेखसादी और राम-चर्चा

(य) निबंध-संग्रह– कुछ विचार

(र) संपादित– गल्प-रत्न और गल्प-समुच्चय

(ल) अनूदित– अहंकार, सुखदास, आजाद-कथा, चाँदी की डिबिया, टॉलस्टाय की कहानियाँ और सृष्टि का आरंभ

2. प्रेमचंद जी की भाषा-शैली की विशेषता बताइए।

उ०– भाषा शैली– प्रेमचंद जी की भाषा के दो रूप हैं— एक रूप तो जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है और दूसरा रूप जिसमें उर्दू, संस्कृत और हिंदी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी भाषा का प्रयोग इन्होंने अपनी श्रेष्ठ कृतियों में किया है। यह भाषा अधिक सजीव, व्यावहारिक और प्रवाहमयी है। यही भाषा प्रेमचंद जी की प्रतिनिधि भाषा है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य की रचना जनसाधारण के लिए की। इसी कारण उन्होंने सरल, सजीव एव सरस शैली में ही अपनी रचनाओं का सृजन किया। वे विषय एवं भावों के अनुरूप शैली को परिवर्तित करने में दक्ष थे। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है—

(अ) **वर्णनात्मक शैली–** किसी पात्र, वस्तु, घटना आदि का वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया गया है। नाटकीय सजीवता इनके द्वारा प्रयुक्त इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

(ब) **विवेचनात्मक शैली–** प्रेमचंद जी ने अपने गंभीर विचारों को व्यक्त करने के लिए विवेचनात्मक शैली को अपनाया है। इस शैली में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग अधिक किया गया है।

(स) **मनोवैज्ञानिक शैली–** प्रेमचंद जी ने मन के भावों तथा पात्रों के मन में उत्पन्न अंतर्द्वंद्वों को चित्रित करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

(द) **हास्य-व्यंग्यात्मक शैली–** सामाजिक विषमताओं का चित्रण करते समय इस शैली का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया गया है।

(य) **भावनात्मक शैली–** काव्यात्मक एवं आलंकारिकता पर आधारित इनकी इस शैली के अंतर्गत मानव जीवन से संबंधित विभिन्न भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

3. प्रेमचंद जी का साहित्य में क्या योगदान है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– साहित्यिक योगदान– कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद युगांतकारी परिवर्तन करने वाले कथाकार तथा भारतीय समाज के सजग प्रहरी व एक सच्चे प्रतिनिधि–साहित्यकार थे। डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है— ''हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। उनकी कहानियों में ऐसी घोर यंत्रणा, दुःखद गरीबी, असप्त दुःख, महान स्वार्थ और मिथ्या आडंबर आदि से तड़पते हुए व्यक्तियों की अकुलाहट मिलती है, जो हमारे मन को कचोट जाती है और हमारे हृदय में टीस पैदा कर देती है।''

तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौंप गए, जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित।

एक श्रेष्ठ कथाकार और उपन्यास सम्राट के रूप में हिंदी–साहित्याकाश में उदित इस 'चंद्र' को सदैव नमन किया जाता रहेगा।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. मोटर चली गई ------------- लौट आने की आशा थी।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' में संकलित एवं 'प्रेमचंद जी' द्वारा लिखित 'मंत्र' नामक कहानी से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में वर्तमान युग की शहरी सभ्यता पर कटाक्ष करते हुए भगत जैसे ग्रामीण सभ्यता के लोगों में विद्यमान मानवीय संवेदनाओं पर प्रकाश डाला गया है एवं भगत की डॉक्टर चड्ढा के चले जाने के बाद मनोदशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– भगत की मानसिक दशा का चित्रण करते हुए लेखक कहता है कि भगत डॉक्टर चड्ढा के गोल्फ खेलने के लिए चले जाने के बाद भी यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो किसी के प्राण निकलते हुए देखकर भी अपने मनोरंजन को ही प्राथमिकता देते हैं। डॉक्टर चड्ढा भगत के मरणासन्न पुत्र को इसलिए नहीं देखता, क्योंकि उसके मनोरंजन का समय हो गया था। वह एक मरते हुए मनुष्य के प्राणों की रक्षा करने से ज्यादा महत्व गोल्फ खेलने को देता है। वह भगत के पुत्र का इलाज नहीं करता और गोल्फ खेलने चला जाता है। डॉक्टर चड्ढा का अमानवीय व्यवहार उसके लिए अभी भी अविश्वसनीय बना हुआ था। भगत को आधुनिक युग के सभ्य कहे जाने वाले लोगों की ऐसी निर्ममता का कोई पूर्व अनुभव नहीं हुआ था। वह तो उस मानसिकता वाले व्यक्तियों में से था, जो सदा

किसी मुर्दे को कंधा देने, किसी के गिरे हुए घर को फिर से खड़ा करने, किसी के घर में लगी हुई आग को बुझाने या हो रहे कलह को शांत करने आदि परहित के कार्यों के लिए सदैव तत्पर रहते थे। भगत को जब तक मोटर जाती दिखाई दी वह टकटकी (एकटक नजर) लगाकर उसी मार्ग को देखता रहा। शायद उसे अभी तक कहीं-न-कहीं यह उम्मीद थी कि डॉक्टर साहब वापस आएँगे और उसके लड़के को देखेंगे।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) भगत को किस बात पर विश्वास न आता था?

उ०– संसार में कोई मनुष्य ऐसा भी हो सकता है, जो अपने मनोरंजन के आगे किसी के प्राणों की चिंता न करे, भगत को इस बात पर विश्वास न आता था।

(स) भगत को कैसा अनुभव अब तक न हुआ था?

उ०– संसार में जिन लोगों को सभ्य कहा जाता है, वे इतने निर्मम और कठोर होते हैं कि किसी के निकलते हुए प्राण भी उनमें दया अथवा करुणा नहीं उपजा सकते, इस बात का अनुभव भगत को अब तक न हुआ था।

(द) भगत पुराने जमाने के कैसे लोगों में से था?

उ०– भगत पुराने जमाने के लोगों की तरह अत्यंत दयालु और परोपकारी था। वह दूसरों के घरों में लगी आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने अथवा किसी के आपसी विवाद को सुलझाने आदि के लिए सभी प्रकार की सहायता करने को तैयार रहता था।

(म) भगत को किस बात की आशा थी?

उ०– भगत को आशा थी कि डॉक्टर चड्ढा वापस आकर उसके लड़के को देख लेंगे।

2. प्राणिशास्त्र के -------------- ध्यान न आया।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कैलाश के सर्प प्रेम और उनके बारे में उसकी जानकारी व उसके जुनून के बारे में बताया गया है।

व्याख्या– कैलाश के सर्पों से प्रेम को बताते हुए लेखक कहता है कि उसके द्वारा विद्यालय में साँपों पर एक मार्के का जो व्याख्यान दिया गया था उसको सुनकर जीव विज्ञान के बड़े-बड़े विद्वान भी अचंभित रह गए थे। साँपों की यह विद्या उसने एक बूढ़े सपेरे से सीखी थी। उसे साँपों की जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने का भी शौक था।

अगर उसे पता चल जाता कि किसी व्यक्ति के पास कोई अच्छी जड़ी-बूटी है, तो जब तक वह उसे प्राप्त नहीं कर लेता था उसे शांति नहीं मिलती थी। यह एक प्रकार की लत थी। जिस पर वह काफी धन खर्च कर चुका था। उसकी मित्र मृणालिनी कई बार उसके घर आ चुकी थी, परंतु वह जब उसके जन्मदिन पर आई तो वह साँपों को देखने के लिए इतनी उत्सुक थी जितना कि पहले कभी नहीं हुई थी। यह नहीं कह सकते कि उसकी उत्सुकता सचमुच जाग गई थी या वह यह उत्सुकता दिखाकर कैलाश पर अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहती थी, परंतु उसका साँपों को देखने का निवेदन समय के अनुरूप नहीं था। उस कमरे में कितने लोग जमा होंगे और इतने लोगों को देखकर साँपों की क्या प्रतिक्रिया होगी और रात के समय उन्हें छेड़ा जाना कितना खतरनाक होगा उसे जरा भी ध्यान नहीं था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।

उ०– **पाठ–** मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) साँपों के बारे में ज्ञान कैलाश ने कहाँ से सीखा था?

उ०– साँपों के बारे में ज्ञान कैलाश ने एक बूढ़े सपेरे से सीखा था।

(स) अचानक साँपों को देखने की जिज्ञासा मृणालिनी के अंदर क्यों जाग उठी?

उ०– कैलाश पर अपने अधिकार का प्रदर्शन करने के लिए मृणालिनी के अंदर साँपों को देखने की जिज्ञासा जाग उठी थी।

(द) मृणालिनी ने साँपों को देखने के आग्रह में किस बात का ध्यान नहीं रखा?

उ०– मृणालिनी ने साँपों को देखने के आग्रह में इस बात का भी ध्यान न रखा कि रात के समय साँप भीड़ को देखकर बिगड़ भी सकते थे और किसी को नुकसान भी पहुँचा सकते थे।

3. अरे मूर्ख ------------------- जो न होना था, वह हो गया।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– डॉक्टर चड्ढा के युवा पुत्र कैलाश को उसके बीसवें जन्मोत्सव पर अत्यधिक जहरीले साँप ने डँस लिया । इस दुर्घटना से डॉक्टर चड्ढा का हृदय चीत्कार कर उठा। एक मित्र के कहने पर उन्होंने किसी झाड़ने वाले को बुलाया। कैलाश की गंभीर दशा देखकर झाड़ने वाले ने निराश भाव से कहा कि जो कुछ होना था, हो चुका, अर्थात् अब कुछ भी संभव नहीं है। झाड़ने वाले की यह बात सुनकर डॉक्टर चड्ढा के मित्रों ने अपने मन की पीड़ा और क्रोध को इन पंक्तियों में प्रकट किया है।

व्याख्या– डॉक्टर चड्ढा के मित्रों ने झाड़-फूँक करने वाले से कहा - अरे मूर्ख, तू यह क्या कह रहा है कि जो कुछ होना था, हो चुका। वास्तव में इस समय तो वह घटित हो गया है, जिसे घटित नहीं होना चाहिए था। अभी तो इसके माता-पिता ने अपने लाडले बेटे के माथे पर सेहरा भी न बँधा देखा। कैलाश की प्रेयसी मृणालिनी के हृदय में पल्लवित होनेवाला इच्छारूपी वृक्ष नए पत्तों तथा सुंदर-सुंदर फूलों से कहाँ सुशोभित हो सका; अर्थात् मृणालिनी की अभिलाषाएँ कहाँ पूरी हो पाई?

मृणालिनी के हृदय की समस्त इच्छाएँ पूरी हुए बिना ही समाप्त हो गईं। वह अभी केवल बीस वर्ष का ही तो था। जीवन का विशाल सागर अभी उसके सामने था, जिसमें खुशियों की लहरें उठ रही थीं। उन लहरों पर झिलमिलाते तारों अर्थात् मन की अभिलाषाओं का प्रकाश पड़ रहा था। उनके प्रकाश को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे अनगिनत तारे आनंदमग्न हो जल के ऊपर नृत्य कर रहे हों। कैलाश उस आनंद-सागर में नौका-विहार करता हुआ अचानक अपनी नैया जीवन-सागर में डुबा बैठा। अत: इस समय वह सब-कुछ हो गया जो नहीं होना चाहिए था अर्थात् वह युवा पुत्र, जिसे अभी जीना चाहिए था, जिसे जीवन के सुख-ऐश्वर्य भोगने चाहिए थे, अनहोनी के कारण मृत्यु कर शिकार हो गया।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) 'जो कुछ न होना था, हो चुका' इस पंक्ति से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उ०– इस पंक्ति से लेखक का तात्पर्य है कि ऐसा युवक (कैलाश) जिसे अभी जीवन के सुखों का आनंद लेने के लिए जीना चाहिए था, वह एक अनहोनी का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया था, जो नहीं होना चाहिए था।

(स) 'जो कुछ होना था वह कहाँ हुआ?' यह किसने कहा?

उ०– यह डॉक्टर चड्ढा के मित्र ने कहा।

(द) लेखक के अनुसार माँ-बाप और मृणालिनी ने क्या खोया?

उ०– लेखक के अनुसार माँ-बाप ने अपने पुत्र से संबंधित सभी खुशियाँ खो दी और मृणालिनी ने अपने विवाह व भावी जीवन से संबंधित सभी स्वप्न खो दिए।

4. भगवान बड़ा कारसाज है------------------ बात न पूछता।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– भगवान सबके साथ पक्षपातरहित न्याय करता है।

व्याख्या– बूढ़ा भगत, डॉक्टर चड्ढा के पुत्र को साँप द्वारा डस लिए जाने पर प्रतिक्रिया स्वरूप कहता है कि भगवान बड़ा न्यायी है। वह सबका काम बनानेवाला है। जब मेरा बेटा मृत्यु से संघर्ष कर रहा था तो इसी डॉक्टर को जरा-सी भी दया नहीं आई थी। रोगी को देखने के स्थान पर खेलने के लिए चला गया था। आज मैं वहाँ होता तो भी मैं बिलकुल भी दु:ख प्रकट न करता।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) लेखक ने किस बात के लिए भगवान को कारसाज कहा है?

उ०– लेखक ने भगवान को सभी के काम बनाने और सभी के साथ न्याय करने के लिए कारसाज कहा है।

(स) भगत के आँसू कब निकले थे?

उ०– जब भगत अपने बेटे को डॉक्टर चड्ढा को दिखाने लाया था, किंतु डॉक्टर चड्ढा उसके बेटे को देखे बिना गोल्फ खेलने चले गए और उसका बेटा मर गया था। उस समय भगत के आँसू निकले थे।

(द) 'भगवान बड़ा कारसाज है।' यहाँ इस कथन का क्या आशय है?

उ०– यहाँ इस कथन का आशय है कि भगवान बड़ा न्यायी है। वह सभी का काम बनाने वाला है।

5. बुढ़िया फिर सो गई -------------- धातक था।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस अवतरण में वृद्ध भगत के हृदय के अंतर्द्वंद्व को अत्यंत ही सजीव ढंग से चित्रित किया गया है।

व्याख्या– बूढ़ा भगत अपनी पत्नी के सो जाने पर दरवाजा बंद करके लेट गया। उसके मन की दशा ठीक वैसी थी, जैसी संगीत के शौकीन किसी व्यक्ति की उपदेश सुनने पर होती है। उपदेश सुनते समय जब वाद्य-यंत्रों की आवाज उसके कानों में पड़ती है तो उसकी बार-बार इच्छा होती है कि वह किसी तरह उस मधुर ध्वनि को सुनने के लिए वहाँ से निकलकर चला जाए। शारीरिक रूप से भले ही वह उपदेशक के सामने बैठा रहे, पर उसक मन संगीत की स्वर-लहरियों में खो जाता है। यद्यपि ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों की शर्म करके वहाँ से उठ नहीं पाता है, किंतु उसका मन बराबर उठने के लिए तत्पर रहता है। लेखक कहता है कि यदि भगत के अंदर विद्यमान बदले की भावना को उपदेशक मान लिया जाए तो उसका हृदय वह वाद्ययंत्र था, जिसकी झंकार उस युवक के पक्ष में गूँज रही थी। भगत की परोपकारी भावना उसकी बदले की भावना पर हावी होने लगती है। उसके आदर्श और उसकी मानवीयता के गुण उसे डॉक्टर के लड़के के प्राण बचाने के लिए तीव्रता से प्रेरित करते हैं, किंतु उसका मस्तिष्क उससे अपने लड़के की मौत का बदला लेने को कहता है। उसका मन बार-बार उस अभागे युवक की ओर खिंचा जा रहा था, जो मृत्यु के निकट चला जा रहा था और जिसके लिए एक-एक पल की देर भी प्राण लेने वाली सिद्ध हो रही थी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ व लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) भगत की उस समय मनोदशा कैसी हो रही थी?

उ०– उस समय भगत की मनोदशा ठीक वैसी थी जैसी संगीत के शौकीन किसी व्यक्ति की उपदेश सुनने पर होती है।

(स) लेखक के अनुसार उपदेश सुनने वाले व्यक्ति की संगीत सुनने पर कैसी मनोदशा होती है?

उ०– उपदेश सुनने वाले संगीत प्रेमी के कानों में जब वाद्य-यंत्रों की आवाज पड़ती है, तो उसकी बार-बार इच्छा होती है कि वह उस मधुर ध्वनि को सुनने के लिए वहाँ से निकलकर चला जाए।

(द) कौन-सा अभागा युवक इस समय मर रहा था?

उ०– वह अभागा युवक कैलाश था, जिसे साँप ने काट लिया था तथा वही इस समय मर रहा था।

(य) एक-एक पल किसके लिए घातक हो रहा था?

उ०– डॉक्टर चड्ढा के इकलौते पुत्र कैलाश के लिए एक-एक पल घातक हो रहा था।

6. चौकीदार चला गया ---------------- उठते ही नहीं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में बूढ़े भगत की मानसिक और शारीरिक स्थिति के मध्य व्याप्त तारतम्यहीनता की स्थिति का चित्रण किया गया है।

व्याख्या– चौकीदार के द्वारा कैलाश की मरणासन्न स्थिति की बात सुनकर भगत की स्थिति ऐसी हो गई, जैसे वह नशे में हो। नशे में डूबे हुए व्यक्ति का अपने शरीर पर कोई नियंत्रण नहीं रह जाता। वह चलना किसी ओर को चाहता है तथा उसके पैर पड़ते कहीं ओर हैं, वह कहना कुछ चाहता है किंतु उसकी जिह्वा से निकलता कुछ और ही है। यही दशा इस समय साँप का विष उतारने में सिद्धहस्त बूढ़े भगत की हो रही थी। उसके मन में डॉक्टर चड्ढा से बदला लेने की भावना

प्रबल थी। वह चाहता था कि वह कैलाश का विष उतारने डॉक्टर चड्ढा के घर न जाए, पर दूसरी ओर उसकी परोपकारी कर्मनिष्ठा पर उसके मन का अधिकार नहीं था। इसी विचलित मन:स्थिति में उसके पैर डॉक्टर चड्ढा के घर की ओर बढ़े चले जाते थे। लेखक कहता है कि जिसने कभी तलवार न चलाई हो, वह अवसर आने पर निश्चय करके भी तलवार नहीं चला सकता। तलवार हाथ में लेते ही उसके हाथ काँपने लगते है। भगत भी ऐसे ही व्यक्तियों में से था, जिसने कभी बदला लेने की भावना से कोई कार्य किया ही नहीं था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) नशे में आदमी का शरीर कैसा हो जाता है?

उ०– नशे में आदमी का अपने शरीर पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। वह चलना किसी ओर चाहता है तथा उसके पैर कहीं ओर पड़ते हैं, वह कहना कुछ चाहता है किंतु उसकी जिह्वा से निकलता कुछ और ही है।

(स) भगत का मन कुछ और कह रहा था और जबान कुछ, इसका क्या कारण था?

उ०– भगत का मन कुछ और कह रहा था और जबान कुछ, इसका प्रमुख कारण उसकी मनोदशा थी। उस समय उसकी दशा नशे में लिप्त व्यक्ति के समान थी।

(द) 'सेवक स्वामी पर हावी था' कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उ०– इस कथन में लेखक का सेवक से अभिप्राय भगत के 'अवचेतन मन' से है और स्वामी से आशय 'चेतन मन' से। सामान्यतया चेतन मन का अवचेतन मन पर नियंत्रण होता है। लेकिन भगत की स्थिति इसके विपरीत थी। उसका चेतन मन उसे डॉक्टर चड्ढा के यहाँ जाने से रोकता है परंतु अवचेतन मन प्रेरित करता है। इसलिए 'सेवक स्वामी पर हावी था।

(य) 'चेतना रोकती थी, पर उपचेतना ठेलती थी।' इस कथन के माध्यम से कवि का इशारा किस ओर है?

उ०– इस कथन से लेखक का इशारा भगत के चेतन और अवचेतन मन की ओर है।

7. एक बार --------------- मेरे सामने रहेगा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में डॉक्टर चड्ढा के मन में उत्पन्न उस समय की ग्लानि को स्पष्ट किया गया है जब भगत उसके मृतप्राय पुत्र को सर्प विष से मुक्त कर, बिना कुछ लिए चुपचाप चला जाता है।

व्याख्या– मरते हुए पुत्र के जीवित हो जाने के बाद उत्पन्न हर्ष एवं उल्लास के वातावरण से मुक्ति पाकर डॉक्टर चड्ढा भगत को ढूँढ़ते हैं किंतु वह किसी से बिना कुछ कहे चला गया था। भगत के प्रति किए गए अपने कृत्य के प्रति ग्लानि को अनुभव करते हुए डॉक्टर चड्ढा कह रहे हैं कि भगत जैसे व्यक्ति का जन्म यश की वर्षा करने के लिए ही होता है। यद्यपि वे यह जानते हैं कि वह उनसे कुछ लेगा नहीं, किंतु वे उसके पैरों पर गिरकर उससे अपने उस अपराध की क्षमा-याचना करेंगे, जो उन्होंने एक डॉक्टर होते हुए भी उसके मरणासन्न पुत्र को न देखकर किया था। डॉक्टर चड्डा कहते है कि उस बूढ़े की सज्जनता ने उनके मन में ऐसे आदर्श का बीजारोपण किया है, जो शेष जीवन में सदैव उनके सम्मुख रहेगा। इन पंक्तियों में डॉक्टर चड्डा की ग्लानि, पश्चाताप एवं उनके हृदय-परिवर्तन की अभिव्यक्ति मिली है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मंत्र **लेखक–** प्रेमचंद

(ब) भगत को देखकर डॉ० चड्ढा को किस बात का अहसास हुआ?

उ०– भगत को देखकर डॉ० चड्ढा को भगत के मरणासन्न पुत्र को न देखने के कारण उसके प्रति किए गए अपने कृत्य का अहसास हुआ।

(स) डा० चड्ढा को अब किस बात की ग्लानि हो रही है?

उ०– डा० चड्ढा को उस घटना का स्मरण हो जाता है जब बूढ़ा अपने इकलौते पुत्र को मृतप्राय अवस्था में लेकर आया था और वह उसे देखे बिना गोल्फ खेलने चले गए थे। आज बूढ़े के द्वारा अपने ऊपर किए गए उपकार के कारण उन्हें अपने उस दिन के व्यवहार पर ग्लानि हो रही है।

(द) वह कौन सा आदर्श है, जिसे डा० चड्ढा जीवनभर अपने सामने रखना चाहते हैं?

उ०– वह भगत द्वारा किए गए नि:स्वार्थ मानव-सेवा का आदर्श है, जिसे डॉक्टर चड्डा जीवनभर अपने सामने रखना चाहते हैं।

(य) भगत की किस चारित्रिक विशेषता को उजागर किया गया है?

उ०– भगत की नि:स्वार्थ, निष्काम मानव-सेवा की चारित्रिक विशेषता को यहाँ उजागर किया गया है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद जी का जन्म हुआ था–

(अ) सन् 1805 में | (ब) **सन् 1880 में**

(स) सन् 1856 में | (द) सन् 1982 में

2. प्रेमचंद किस युग के लेखक हैं?

(अ) प्रगतिवादी युग के | (ब) **शुक्ल युग के**

(स) भारतेंदु युग के | (द) छायावादी युग के

3. प्रेमचंद जी की कृति है–

(अ) कुटज | (ब) दाँत

(स) मन की लहर | (द) **सेवासदन**

4. प्रेमचंद जी का उपन्यास है–

(अ) मंत्र | (ब) कफन

(स) **गोदान** | (द) रूठी रानी

5. किस महान साहित्यकार को 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया गया?

(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी | (ब) **प्रेमचंद**

(स) गुलाबराय | (द) प्रतापनारायण मिश्र

6. हंस पत्रिका के संपादक थे–

(अ) महादेवी वर्मा | (ब) धर्मवीर भारती

(स) **प्रेमचंद** | (द) काका कालेलकर

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद करते हुए संधि का नाम बताइए–

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**	**संधि का नाम**
निश्चल	नि: + चल	विसर्ग संधि
निष्काम	नि: + काम	विसर्ग संधि
नि: स्वार्थ	नि: + स्वार्थ	विसर्ग संधि
नि: शब्द	नि: + शब्द	विसर्ग संधि
सज्जन	सत् + जन	व्यंजन संधि
औषधालय	औषध + आलय	दीर्घ संधि

2. निम्नलिखित समस्त पदों मे समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए–

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
कामना तरु	कामना रूपी वृक्ष	कर्मधारय समास
मित्र समाज	मित्रों का समाज	संबंध तत्पुरुष समास
जलमग्न	जल में मग्न	अधिकरण तत्पुरुष समास
जीवन पर्यंत	जीवन भर	अव्ययीभाव समास
करुण क्रंदन	करुण विलाप	कर्मधारय समास
महाशय	सज्जन पुरुष	कर्मधारय समास

समस्त पद	समास विग्रह	समास का नाम
माता-पिता	माता और पिता	द्वंद्व समास
आत्मरक्षा	आत्म के लिए रक्षा	संप्रदान तत्पुरुष समास
कला प्रदर्शन	कला के लिए प्रर्दशन	संप्रदान तत्पुरुष समास
सावन-भादों	सावन और भादों	द्वंद्व समास
जीवनदान	जीवन का दान	संबंध तत्पुरुष समास

3. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए–

शब्द-रूप	उपसर्ग
आमोद	आ
अवसर	अव
उपदेशक	उप
प्रदर्शन	प्र
निवारण	नि
प्रतिघात	प्रति
निर्दयी	निर्

4. पाठ में से वे कथन छाँटिए या चुनिए, जिसमें भगत की मानसिक स्थितियों का चित्रण हुआ है–

ईश्वर की शक्ति में विश्वास– भगवान् बड़ा कारसाज है, मुरदे को भी जिला सकता है।

झेंप– 'नहीं री, ऐसा पागल नहीं हूँ कि जो मुझे काँटे बोए, उसके लिए फूल बोता फिरूँ।'

अंतर्द्वंद– मन में प्रतिकार था, पर कर्म मन के अधीन न था। जिसने कभी तलवार नहीं चलाई, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता। उसके हाथ काँपते हैं, उठते ही नहीं ।

कायरता– कहीं नहीं, देखता हूँ कितनी रात है।

कातरता– 'दुहाई है सरकार की, लड़का मर जाएगा। हुजूर! चार दिन से आँखें नहीं -----

धैर्य– न देगा, न सही। घास तो कहीं नहीं गई है। दोपहर तक क्या दो आने की भी न काटूँगा?

स्वाभिमान– 'अभी तो यहीं बैठे चिलम पी रहे थे। हम लोग तमाखू देने लगे तो नहीं ली; अपने पास से तमाखू निकालकर भरी।'

आत्मसंतोष– 'अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, बाबूजी! वह नारायण चाहेंगे तो आधे घंटे में भैया उठ बैठेंगे। आप नाहक दिल छोटा कर रहे है। जरा कहारों से कहिए, पानी तो भरें।'

प्रतिकार और प्रतिहिंसा– कलेजा ठंडा हो गया, आँखें ठंडी हो गई। लड़का भी ठंडा हो गया होगा। तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊँगा (बुढ़िया से) जरा तमाखू दे दे। एक चिलम और पीऊँगा। अब मालूम होगा लाला को! सारी साहिबी निकल जाएगी, हमारा क्या बिगड़ा?

5. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

हाथ से चला जाना (अवसर / नियंत्रण खो देना) अथक प्रयास के पश्चात् जब कार का नियंत्रण उसके **हाथों से चला गया**, तब उसके दुर्भाग्य की कौन कहे दुर्घटना तो घटनी ही थी।

मिजाज करना (टालमटोल करना) राहुल की पत्नी बहुत सीधी और भोली है तभी वह इतना **मिजाज करता** रहता है।

किस्मत ठोकना (भाग्य को दोष देना) बहुत परिश्रम करने के बाद भी परीक्षा में प्रथम श्रेणी न आने पर उसने अपनी **किस्मत ठोक ली।**

आनन-फानन में (बिना किसी देर के) रमेश ने **आनन-फानन में** एक मीटर गहरा गड्ढा खोद दिया।

कलेजा ठंडा होना (शांति मिलना) राम के दिवालिया हो जाने पर श्याम का **कलेजा ठंडा हो गया।**

सूरत आँखों में होना फिरना (व्यक्ति का बार-बार स्मरण आना) जबसे बहन विदेश गई है, उसकी सूरत मेरी **आँखों में फिर रही है।**

सन्नाटा छा जाना (अचानक शांति हो जाना) झगड़ा हो जाने पर शहर में **सन्नाटा छा गया।**

शंका निवारण करना (संदेह दूर करना) यदि आप अपनी **शंका का निवारण** करना चाहते हैं, तो कृपया कल आइए।

चैन की नींद सोना (निश्चिंत होना) विनोद तो अब बेटी का विवाह करके **चैन की नींद सोएगा।**

आँखें पथरा जाना (आँखों का क्रियाहीन होना) श्याम का विदेश से लौटने का इंतजार करते-करते उसके पिता की **आँखें पथरा गई।**

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

3. गुरु नानकदेव (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म-स्थान एवं जन्म-तिथि लिखिए।

उ०– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 में बलिया जिले के दुबे का छपरा नामक ग्राम में हुआ था।

2. द्विवेदी जी के माता-पिता का क्या नाम था?

उ०– द्विवेदी जी की माता का नाम श्रीमती ज्योतिकली और पिता का नाम पं० अनमोल द्विवेदी था।

3. 'विश्व भारती' का संपादन द्विवेदी जी ने कहाँ रहकर किया?

उ०– 'विश्व भारती' का संपादन द्विवेदी जी ने शांति निकेतन में रहकर किया।

4. 'कुटज' और 'कल्पलता' के लेखक का नाम बताइए।

उ०– 'कुटज' और 'कल्पलता' के लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

5. द्विवेदी जी की आरंभिक शिक्षा कहाँ हुई तथा उन्होंने ज्योतिषाचार्य और साहित्य की परीक्षा कहाँ से उत्तीर्ण की?

उ०– द्विवेदी जी की आरंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई तथा उन्होंने ज्योतिषाचार्य और साहित्य की परीक्षा 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' से उत्तीर्ण की।

6. भारत सरकार ने द्विवेदी जी को किस सम्मान से अलंकृत किया और कब?

उ०– भारत सरकार ने सन् 1957 ई० में द्विवेदी जी को 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया।

7. 'सूर साहित्य' पर द्विवेदी जी को क्या सम्मान मिला और किसके द्वारा मिला?

उ०– सूर साहित्य पर द्विवेदी जी को इंदौर-साहित्य समिति से स्वर्ण पदक मिला।

8. द्विवेदी जी ने अपने निबंधों में किन-किन शैली का प्रयोग किया है?

उ०– द्विवेदी जी ने अपने निबंधों में गवेषणात्मक, वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक और व्यास शैली का प्रयोग किया है।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की संक्षिप्त जीवनी लिखते हुए उनकी गद्य शैली की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

जीवन परिचय– आधुनिक युग के मौलिक निबंधकार, उत्कृष्ट समालोचक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 में बलिया जिले के दुबे का छपरा नामक ग्राम में हुआ था। उनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध था। उनके पिता पं० अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई और वहीं से उन्होंने मिडिल की परीक्षा पास की। इसके पश्चात् उन्होंने इंटर की परीक्षा और ज्योतिष विषय लेकर आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् द्विवेदी जी शांति निकेतन चले गए और कई वर्षों तक वहाँ हिंदी विभाग में कार्य करते रहे। शांति-निकेतन में रवींद्रनाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रभाव से साहित्य का गहन अध्ययन और उसकी रचना प्रारंभ की। द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और उनका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था। वे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के विद्वान थे। भक्तिकालीन साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट. की उपाधि देकर उनका विशेष सम्मान किया था।

द्विवेदी जी की साहित्य-चेतना निरंतर जागृत रही, वे आजीवन साहित्य-सृजन में लगे रहे। हिंदी साहित्याकाश का यह देदीप्यमान नक्षत्र 19 मई सन् 1979 को सदैव के लिए इस भौतिक संसार से विदा हो गया।

गद्य शैली की विशेषताएँ– उनकी गद्य शैली की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) द्विवेदी जी की भाषा को 'प्रसन्न भाषा' कहा जा सकता है।

(ब) उनकी भाषा में तत्सम, तदभव तथा उर्दू शब्दों का मिला-जुला रूप मिलता है।

(स) उनकी भाषा अभिव्यक्ति प्रवाहपूर्ण है, जिसमें सरसता, रोचकता तथा गतिशीलता आदि गुण मिलते हैं।

(द) द्विवेदी जी ने अपनी रचनाओं में गवेषणात्मक, वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक और व्यास शैली का प्रयोग किया है।

2. द्विवेदी जी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– **भाषा-शैली–** द्विवेदी जी की भाषा को 'प्रसन्न भाषा' कहा जा सकता है। वे गहरे-से-गहरे विषय को मौज ही मौज में लिख डालते हैं। वे तत्सम, तद्भव तथा उर्दू शब्दों का मिला-जुला प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त वे नए शब्द गढ़ने में भी कुशल हैं। उनकी अभिव्यक्ति प्रवाहपूर्ण है। सरसता, रोचकता तथा गतिशीलता उनके अन्य गुण हैं।

द्विवेदी जी की शैली में उनकी शैली के निम्नलिखित रूप मिलते हैं—

(अ) गवेषणात्मक शैली– द्विवेदी जी के विचारात्मक तथा आलोचनात्मक निबंध इस शैली में लिखे गए हैं। यह शैली द्विवेदी जी की प्रतिनिधि शैली है। इस शैली की भाषा संस्कृत प्रधान और अधिक प्रांजल है। कुछ वाक्य बड़े-बड़े हैं। इस शैली का एक उदाहरण देखिए— 'लोक और शास्त्र का समन्वय, ग्राहस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्व ज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चांडाल का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय, रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय का काव्य है।'

(ब) वर्णनात्मक शैली– द्विवेदी जी की वर्णनात्मक शैली अत्यंत स्वाभाविक एवं रोचक है। इस शैली में हिंदी के शब्दों की प्रधानता है, साथ ही संस्कृत के तत्सम और उर्दू के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। वाक्य अपेक्षाकृत बड़े हैं।

(स) व्यंग्यात्मक शैली– द्विवेदी जी के निबंधों में व्यंग्यात्मक शैली का बहुत ही सफल और सुंदर प्रयोग हुआ है। इस शैली में भाषा चलती हुई तथा उर्दू, फारसी आदि के शब्दों का प्रयोग मिलता है।

(द) व्यास शैली– द्विवेदी जी ने जहाँ अपने विषय को विस्तारपूर्वक समझाया है, वहाँ उन्होंने व्यास शैली को अपनाया है। इस शैली के अंतर्गत वे विषय का प्रतिपादन व्याख्यात्मक ढंग से करते हैं और अंत में उसका सार देते हैं।

3. 'गुरु नानकदेव' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– हिंदी गद्यकारों में विशिष्ट स्थान रखने वाले महान साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'गुरु नानकदेव' एक संस्मरणात्मक निबंध है। इस निबंध में द्विवेदी जी ने सिक्ख धर्म के प्रवर्तक और महान संत गुरु नानकदेव के जीवन, चिंतन, सामाजिक कार्यों एवं आदर्श आचरण की झलक प्रस्तुत की है। द्विवेदी जी ने इस निबंध के माध्यम से महान् संत गुरु नानकदेव के आदर्श जीवन का अनुकरण करने और मानवतावादी मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। लेखक कहते हैं कि भारतवर्ष में कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन पूरे भारत में कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है। इस दिन शरद् ऋतु में चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं सहित पूरे वैभव पर होता है। इसी दिन महान् संत गुरु नानकदेव का जन्म उत्सव मनाया जाता है। भारतीय जनता ने बहुत समय से कार्तिक पूर्णिमा से ही गुरु नानकदेव के जन्म का संबंध जोड़ दिया है। गुरु किसी एक ही दिन भौतिक शरीर में अवतरित हुए होंगे परंतु श्रद्धालुओं के मन में वे प्रतिक्षण प्रकट होते हैं। गुरु जिस क्षण भी मन में प्रकट हो जाएँ, वही उत्सव का क्षण होता है। चंद्रमा के साथ महान पुरुषों जैसे राम व कृष्ण के साथ 'चंद्र' जोड़कर जनता खुशी प्रकट करती है, उसी प्रकार नानकदेव के साथ पूर्णचंद्र जोड़कर जनता खुश होती है। भारत की मिट्टी में महापुरुषों को जन्म देने का विशेष गुण है। आज से पाँच सौ साल पहले जब देश में अनेक कुसंस्कार व्याप्त थे और देश जातिवाद, संप्रदाय, धर्म व संकीर्ण विचारों वाले घमंडी व्यक्तियों के कारण खंडित हो रहा था, उस समय गुरु नानकदेव का जन्म हुआ। ऐसी कठिन स्थिति में इन सड़ी-गली रूढ़ियों, दूषित संस्कारों आदि को दूर करने के लिए अनेक संतों ने जन्म लिया। इन संतों मेें नानकदेव ऐसे संत थे जो शरद्काल के चंद्रमा की तरह शांत थे। इनके मधुर वचनों ने विचार और आचरणों की बहुत बड़ी क्रांति ला दी। ये किसी का मन दु:खी किए बिना कुसंस्कारों को छिन्न करके श्रद्धालुओं के मन में विराजमान हो गए। नानकदेव जी ने प्रेम का उपदेश दिया क्योंकि

मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य प्रेम है, वही उसका साधन व मार्ग है। प्रेम से ही मान-अभिमान, छोटे-बड़ों का भेद समाप्त हो जाता है। इनकी वाणी में एक अद्भुत शक्ति थी, जो सहज रूप से हृदय से निकलती थी। इसी मीठी वाणी से गुरु नानकदेव ने भटकती हुई जनता को मार्ग दिखाया। लेखक कहते हैं कि गुरु नानकदेव ने क्षुद्र अहंकार व छोटी मानसिकता के लिए शास्त्रार्थ को गलत बताया है। उन्होंने जनता के समक्ष सत्य को प्रत्यक्ष कर देना उचित मार्ग बताया है। भगवान जब भलाई करते हैं तो गुरु नानकदेव जैसे संतों को उत्पन्न कर देते हैं, जो नैतिकता से गिरे हुए लोगों के मन में भी प्रेम की भावना जगा देते हैं। आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व भी ऐसी ही एक भलाई भगवान ने की जो आज भी क्रियाशील है। हे महागुरु, आपके चरणों में हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे अंदर आशाओं का संचार करो, मित्रता व प्रेम की अविरल धारा में हमें डुबो दो अर्थात् हमारे हृदय में मित्रता व प्रेम की भावना का संचार करो। हम उलझे हुए व भटके हुए हैं पर अभी भी उपकार मानने का गुण हमसे दूर नहीं हुआ है। हम आपकी अमृतमयी वाणी को अभी तक भूले नहीं हैं। अत: हमें आप उचित मार्ग दिखाएँ तथा ऋणी भारत का प्रणाम स्वीकार करें।

4. द्विवेदी जी की प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए।

उ०- **रचनाएँ-** द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे निबंधकार, उपन्यासकार, साहित्य-इतिहासकार तथा आलोचक थे। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-

(अ) **आलोचना-** सूर साहित्य, हिंदी साहित्य की भूमिका, प्राचीन भारत में कलात्मक विनोद, कबीर, नाथ संप्रदाय, हिंदी साहित्य का आदिकाल, आधुनिक हिंदी साहित्य पर विचार, साहित्य का मर्म, मेघदूत— एक पुरानी कहानी, लालित्य मीमांसा, साहित्य सहचर, कालिदास की लालित्य योजना, मध्यकालीन बोध का स्वरूप

(ब) **निबंध संग्रह-** अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितरक, विचार प्रवाह, कुटज, आलोक पर्व

(स) **उपन्यास-** बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु-चंद्र लेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा

(द) **अन्य-** संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, संदेश रासक, मृत्युंजय रवींद्र, महापुरुषों का स्मरण

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. आकाश में ------------- क्षण उत्सव का है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' में संकलित 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' द्वारा लिखित 'गुरु नानकदेव' नामक निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग- इस गद्यांश में आचार्य द्विवेदी ने गुरु नानकदेव के जन्मदिन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं और कहा है कि इस पवित्र तिथि को परम ज्योति से युक्त महामानव गुरु नानकदेव इस पावन भूमि पर अवतरित हुए थे। उनके शारीरिक रूप से अवतरित होने का इतना महत्व नहीं है, जितना भक्तों के हृदयों में उनके अवतार का है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं कि जिस प्रकार आकाश में पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से पूर्ण कोमल व शांत किरणों के साथ प्रकाशित होता है उसी प्रकार श्रद्धालुओं के मन में भी ऐसी शांत किरणों का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। गुरु नानकदेव चंद्रमा के समान ही सोलह कलाओं से युक्त मानव थे।

भारतीय जनता के मानस में यह बात बहुत समय से समाई हुई है कि गुरु नानकदेव का जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा को हुआ था। यह बात भले ही कसौटी पर खरी न उतरती हो, फिर भी भारतीय कार्तिक पूर्णिमा को ही गुरु नानक के जन्मदिन के रूप में स्वीकार करते आ रहे हैं। वैसे तो गुरु नानकदेव का पंचतत्व से बना हुआ भौतिक शरीर किसी एक दिन ही प्रकट हुआ होगा, लेकिन श्रद्धालु भक्तजनों के हृदय में उनका जन्म प्रत्येक क्षण होता रहता है; अर्थात् भक्तों के हृदय में वे आज भी प्रतिपल अवतार लेते रहते हैं।

इस दृष्टि से उनका पार्थिव जन्मदिन इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि आध्यात्मिक। अतः गुरु नानकदेव के पार्थिव जन्मदिन की तुलना में आध्यात्मिक जन्मदिन को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इतिहासकारों में इस बात पर मतभेद हो सकता है कि गुरु नानकदेव के भौतिक शरीर ने पृथ्वी पर कब जन्म लिया; परंतु भारतीय जनमानस इस बात को कोई महत्व नहीं देता क्योंकि भक्त-हृदय में गुरु किसी भी क्षण अवतरित हो सकता है। गुरु किसी भी क्षण या पल में उत्पन्न हो जाए, वह क्षण उत्सव मनाने योग्य ही होता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) आकाश में चंद्रमा कितनी पूर्ण कलाओं से पूर्ण होकर चमकता है?

उ०– आकाश में चंद्रमा सोलह कलाओं से पूर्ण होकर चमकता है।

(स) लेखक ज्योतिपुंज में किसकी कल्पना कर रहा है?

उ०– लेखक ज्योतिपुंज में गुरु नानकदेव की कल्पना कर रहा है।

(द) कार्तिक पूर्णिमा के साथ किसका संबंध जोड़ दिया गया है?

उ०– कार्तिक पूर्णिमा के साथ गुरु नानकदेव के जन्म का संबंध जोड़ दिया गया है।

(य) इतिहास के पंडित किस विषय पर वाद-विवाद करते रहे हैं?

उ०– इतिहास के पंडित गुरु नानकदेव के पार्थिव जन्मदिन के विषय में वाद-विवाद करते रहे हैं।

(र) कौन-सा क्षण उत्सव का है?

उ०– गुरु जिस किसी भी शुभ क्षण में चित्त में आविर्भूत हो जाएँ, वही क्षण उत्सव का है।

2. भारतवर्ष की मिट्टी ----------------- समर्थ हुए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस गद्य खंड में द्विवेदी जी ने गुरु नानकदेव के जन्म की परिस्थितियों का चित्रण किया है। इसके साथ ही उन्होंने गुरु नानकदेव एवं भारतवर्ष की महानता का उद्घाटन भी किया है।

व्याख्या– द्विवेदी जी ने स्पष्ट किया है कि भारतवर्ष की मिट्टी में युग के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्‌भुत गुण है। आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व हमारा देश अनेक प्रकार के कुसंस्कारों से भरा हुआ था। जातियों, संप्रदायों, धर्मों और संकीर्ण वंशों के अभिमान से वह खंडित हो रहा था। देश में नए धर्मों के आगमन के कारण ऐसी समस्या उत्पन्न हो गई थी, जो भारत भूमि के हजारों वर्षों के लंबे इतिहास से अपरिचित थी।

ऐसे कठिन समय में हमारे देश की मिट्टी में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ। इन महापुरुषों ने दूषित संस्कार, सड़ी-गली परंपराओं, अनुपयोगी एवं अहितकार विचारों और संकुचित दृष्टिकोण को समाप्त करने के लिए पूरा-पूरा प्रयास किया। बाधाओं के कारण वे भयभीत नहीं हुए। इन महान पुरुषों ने जर्जर और खंडित विचारधारा को समाप्त करके एक ऐसी विराट् जीवन-दृष्टि को प्रतिष्ठित किया, जिसके कारण जन-जन का मन नई ज्योति, नई दीप्ति, नई आभा और नए प्रकाश से जगमग हो गया। सबको नया जीवन मिला। गुरु नानकदेव ऐसे ही महापुरुषों में से एक थे, जिन्होंने इस संक्रमण-काल को विराट्-दृष्टि प्रदान की और सुप्त राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक भावनाओं में नवजीवन का संचार किया।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) भारतवर्ष की मिट्टी में क्या अद्‌भुत गुण है?

उ०– भारतवर्ष की मिट्टी में समय के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्‌भुत गुण है।

(स) पाँच सौ वर्ष पहले भारतवर्ष किन-किन समस्याओं से उलझा हुआ था?

उ०– पाँच सौ वर्ष पहले भारतवर्ष अनेक कुसंस्कारों में उलझा हुआ था। जातियों, संप्रदायों, धर्मों और संकीर्ण कुलाभिमानों से वह खंड विच्छिन्न हो गया था।

(द) महापुरुष क्या करने में कुंठित नहीं हुए?

उ०– महापुरुष देश-समाज की सड़ी रुढ़ियों, मृतप्राय आचारों, बासी परंपरागत विचारों एवं निरर्थक संकीर्णताओं पर प्रहार करने में बिल्कुल भी कुंठित नहीं हुए।

(य) अपने प्रयासों के माध्यम से महापुरुष किन कार्यों में सफल हुए?

उ०– अपने प्रयासों के माध्यम से महापुरुष समाज को नई दिशा (ज्योति) और नया जीवन प्रदान करने में सफल हुए।

3. यह आश्चर्य की बात है---------------- प्रेम और मैत्री है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में गुरु नानकदेव के महान् व्यक्तित्व और उनकी महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या– गुरु नानकदेव एक महान् संत थे। उनके समय के समाज में अनेक प्रकार की बुराइयाँ विद्यमान थीं। समाज का आचरण दूषित हो चुका था। इन बुराइयों को दूर करने और सामाजिक आचरणों में सुधार लाने के लिए गुरु नानकदेव ने न तो किसी की निंदा की और न ही तर्क-वितर्क द्वारा किसी की विचारधारा का खंडन किया। उन्होंने अपने आचरण और मधुर वाणी से ही दूसरों के विचारों और आचरण में परिवर्तन करने का प्रयास किया और इस दृष्टि से आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की। बिना किसी का दिल दु:खाए और बिना किसी को किसी प्रकार की चोट पहुँचाए, उन्होंने दूसरों के बुरे संस्कारों को नष्ट कर दिया। उनकी संत वाणी को सुनकर दूसरों का हृदय हर्षित हो जाता था और लोगों को नवजीवन प्राप्त होता था। लोग उनके उपदेशों को जीवनदायिनी औषध की भाँति ग्रहण करते थे। मध्यकालीन संतों के बीच गुरु नानकदेव इसी प्रकार प्रकाशमान् दिखाई पड़ते हैं, जैसे आकाश में आलोक बिखेरनेवाले नक्षत्रों के मध्य; शरद पूर्णिमा का चंद्रमा शोभायमान् होता है। विशेषकर शरद् पूर्णिमा के अवसर पर ऐसे महान् संत का स्मरण हो आना स्वाभाविक है।

द्विवेदी जी कहते हैं कि गुरु नानकदेव प्रत्येक दृष्टि से अलौकिक थे। उन महान संत ने मानवमात्र की पीड़ा को दूर करने के लिए प्रेम और मित्रता की चिकित्सा-पद्धति को अपनाया था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) क्रांति लाने वाले किस संत की बात गद्यांश में की गई है?

उ०– क्रांति लाने वाले संत गुरु नानकदेव की बात यहाँ की गई है।

(स) संत की वाणी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– संत की वाणी मधुर, स्निग्ध और अत्यधिक मोहक थी, जो भारतवासियों के तत्कालीन जीवन में क्रांति लाने में सहायक सिद्ध हुई।

(द) गुरु नानकदेव ने कुसंस्कारों को किस प्रकार छिन्न-भिन्न किया?

उ०– गुरु नानकदेव ने कुसंस्कारों को बिना किसी का दिल दु:खाए और बिना किसी पर आघात किए छिन्न-भिन्न किया।

(य) लोकोत्तर किन्हें कहा गया है?

उ०– गुरु नानकदेव को लोकोत्तर कहा गया है।

4. उसका शास्त्र --------------- नत हो जाने की इच्छा होती है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस अवतरण में आचार्य द्विवेदी ने गुरु नानकदेव की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या– द्विवेदी जी कहते हैं कि गुरु नानकदेव प्रत्येक दृष्टि से अलौकिक थे। उस महान् संत ने मानवमात्र की पीड़ा को दूर करने के लिए प्रेम और मित्रता की चिकित्सा-पद्धति को अपनाया। तात्पर्य यह है कि गुरु नानकदेव प्राणियों की पीड़ा और उनके कष्टों को दूर करने के लिए उनसे प्रेम और मित्रता का भाव रखते थे, आलोचना का नहीं। इस अलौकिक संत के पास सहानुभूति का ऐसा दिव्य शस्त्र था, जिसके आधार पर वे सबके कल्याण की कामना करते थे। उनका मन सदैव इसी चिंता में लगा रहता था कि समस्त प्राणियों का कष्ट कैसे दूर किया जाए। प्राणियों का हित-चिंतन ही उनके लिए शास्त्र और उपनिषद् थे और वे हर समय उन्हीं में डूबे रहते थे।

गुरु नानकदेव की स्नेह-ज्योति का हल्का सा स्पर्श भी मनुष्य के दुर्गणरूपी अंधकार को नष्ट करके उसके मन को दिव्यज्योति से प्रकाशित कर देता था। अलौकिक संत मृत्यु की ओर बढ़ रहे प्राणी पर अपने प्रेम का अमृत-पात्र उड़ेल देता है, जिसे पाकर व्यक्ति की प्राणधारा नवीनगति से प्रवाहित हो उठती है। गुरु नानकदेव भी ऐसे ही अलौकिक संत थे। वे समस्त संसार को एक ही दृष्टि से देखते थे। उनकी दृष्टि में न कोई छोटा था न बड़ा; न निर्धन था न धनवान्; न कमजोर था न बलवान् तथा न स्त्री था न पुरुष। गुरु नानकदेव विभिन्नता में भी एकता देखते थे। उनकी दृष्टि समस्त संसार में एक ही तत्व की उपस्थिति देखती थी। वे कहते थे कि हमें भी अनेकता में एकता की खोज करनी चाहिए। वास्तव में उस दिव्य पुरुष की हर बात विचित्रित थी, हर चीज अद्भुत थी। लेखक कहते हैं कि इस कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को उन महान संत के चरण कमलों में अर्पित होने की भावना जाग्रत होती है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) गुरु नानकदेव कुसंस्कारों का अँधेरा कैसे दूर करते थे?

उ०– गुरु नानकदेव कुसंस्कारों का अंधेरा अपने स्नेहरूपी प्रकाश से दूर करते थे।

(स) वह (गुरु नानकदेव) किस प्रकार से निराला है?

उ०– गुरु नानकदेव सभी से निराले थे क्योंकि उनकी दृष्टि में छोटे–बड़े, धनी–निर्धन, निर्बल– सबल अथवा स्त्री– पुरुष का को भेद नहीं था।

(द) वह (गुरु नानकदेव) किस प्रकार मुमूर्षु प्राणधारा को प्रवाहशील बनाता है?

उ०– गुरु नानकदेव अपनी मधुर–वाणी के द्वारा मुमूर्षु प्राणधारा को प्रवाहशील बनाते हैं।

5. गुरु नानक ने ------------------ विराजमान है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस गद्यांश में लेखक ने गुरु नानकदेव की प्रेम संबंधी भावनाओं को चित्रित किया है।

व्याख्या– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि गुरु नानकदेव प्रेम को मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे। उन्होने सारे संसार को प्रेम का दिव्य संदेश दिया है। उनके अनुसार मानव–जीवन का सर्वप्रमुख लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है। ईश्वर स्वयं प्रेममय है। प्रेम ईश्वर का स्वरूप है और प्रेम ही उसका स्वभाव। ईश्वर को प्राप्त करने का एकमात्र साधन भी प्रेम ही है। अत: उसे पाने के लिए मनुष्य को अनंत प्रेम का पाठ सीखना चाहिए। वे कहते हैं कि, हे मोह में पड़े हुए मनुष्य! तुझे यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि तेरे मन में जो अभिमान एवं घमंड भरा हुआ है, वह सच्ची प्रीति और निष्काम प्रेम से ही दूर होगा। निष्काम प्रेम से ही तेरा अहंकार नष्ट होगा तथा मन निर्मल हो सकेगा और तुम्हारी क्षुद्रता (अर्थात लघुता) की सीमाएँ टूट जाएँगी तथा तुम असीम और अनंत हो जाओगे। इसी के द्वारा तुम्हें मंगलमय शिव की प्राप्ति होगी। वह उठकर उस ईश्वर की प्रेम–साधना में लीन हो जाएगा। वस्तुत: यदि जीवन का अंतिम लक्ष्य उसे प्राप्त करना है तो सच्चे प्रेम का तत्व प्राप्त करना होगा।

लेखक कहते हैं कि बाहरी आडंबर धर्म नहीं है। धर्म तो आत्मा के रूप में व्यक्ति के अंदर है, जिसे अहंकार को नष्ट करके ही जाना और पाया जा सकता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारीप्रसाद द्विवेदी

(ब) नानकदेव के अनुसार मानव का चरम प्राप्तव्य क्या है?

उ०– नानकदेव के अनुसार मानव का चरम प्राप्तव्य ईश्वर है, जो प्रेम स्वरूप है और जिसे प्रेम से ही पाया जा सकता है।

(स) गुरु नानक जी ने प्रेम का क्या संदेश दिया है?

उ०– गुरु नानकदेव के अनुसार प्रेम के द्वारा ही छोटे–बड़े, मान–अभिमान का भेद समाप्त हो जाता है। यही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है।

(द) मनुष्य को मंगलमय शिव की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

उ०– सच्ची प्रीति के द्वारा मनुष्य को मंगलमय शिव की प्राप्ति हो सकती है।

(य) धर्म किस रूप में मनुष्य के अंदर विराजमान है?

उ०– धर्म प्रेम रूप में मनुष्य के अंदर विराजमान है।

6. धन्य हो -------------- उद्भासित हो रही हो?

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने गुरु नानकदेव की समान दृष्टि, प्रत्येक वस्तु में ईश्वर–ज्योति की प्रत्यक्ष अनुभूति तथा उससे प्रेम करने के संदेश की व्याख्या की है।

व्याख्या– प्रस्तुत पंक्तियों में आचार्य द्विवेदी ने गुरु नानकदेव के उस दृष्टिकोण को सामने रखा है, जिसमें उन्होंने प्रत्येक

मनुष्य एवं प्राणी में उसी अगम, अगोचर, अलख कहलाने वाले ईश्वर की ज्योति देखी है, जो स्वयं उनके हृदय में भी विराजमान है। नानकदेव मनुष्यमात्र के लिए यही संदेश देते हैं कि उस ईश्वर की ज्योति घट-घट अर्थात् प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है, जो स्वयं प्रत्येक मनुष्य के हृदय एवं उसकी चेतना का प्रदर्शन किया है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) प्रस्तुत गद्यांश में प्रयुक्त घट-घट शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'घट-घट' का अर्थ है— प्रत्येक हृदय अथवा प्रत्येक प्राणी का शरीर

(स) गुरुदेव की लीला कहाँ-कहाँ व्याप्त है?

उ०– गुरुदेव की लीला जल में, स्थल में, पृथ्वी पर जहाँ तक दृष्टि जाती है, वहाँ तक व्याप्त है।

7. अद्‌भुत है--------------- शैली है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस गद्यांश में द्विवेदी जी ने गुरु नानकदेव की सहज स्वाभाविक वाणी के प्रभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या– आचार्य द्विवेदी जी ने गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व की महानता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि गुरु नानकदेव की वाणी में अद्‌भुत प्रभाव था। उनकी वाणी का एक-एक शब्द स्वाभाविक रूप से हृदय को प्रभावित करता था। उसमें विचित्र मर्मभेदी शक्ति थी। उनकी वाणी में कृत्रिमता नहीं थी और उसमें किसी प्रकार का शब्दाडंबर भी नहीं था। वह उनके हृदय से स्वाभाविक रूप में प्रकट होती थी और श्रोता के हृदय को पूरी तरह से अपने वश में कर लेती थी। सहज और स्वाभाविक जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन होता है, परंतु ऐसा जीवन ही अधिक प्रभावपूर्ण होता है। इसी प्रकार सहज और स्वाभाविक भाषा में भी अद्‌भुत और विश्वसनीय शक्ति होती है। द्विवेदी जी का कथन है कि जिस प्रकार सीधी लकीर खींचना कठिन होता है, उसी प्रकार सरल और स्वाभाविक जीवन भी बहुत कठिन होता है किंतु गुरु नानकदेव ने बिना किसी आडंबर और बनावट के बड़े स्वाभाविक ढंग से अपनी भावनाओं और विचारधारा को जन-सामान्य तक पहुँचाया। उनकी वाणी सहज, स्वाभाविक एवं सीधी-सादी थी। वह प्रत्येक की समझ में आ जाती थी। उनकी भाषा की शैली बहुत अद्‌भुत व मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) लेखक ने गुरु की बानी को सहज बेधक क्यों कहा है?

उ०– गुरु की बानी में किसी प्रकार का आडंबर नहीं है, न ही उसमें कोई छल-छद्‌म है, इसलिए वह कैसे भी कठोर हृदय को बड़ी सरलता से बेधकर उसमें अपनी पैठ बना लेती है, इसीलिए लेखक ने उसे सहज बेधक कहा है।

(स) कठिन साधना क्या है?

उ०– आडंबरहीन सरल-जीवन जीना ही कठिन साधना है।

(द) गुरु नानकदेव की वाणी की शक्ति का वर्णन कीजिए।

उ०– गुरु नानकदेव की वाणी में अद्‌भुत शक्ति थी। उनकी वाणी हृदय पर सीधा असर करती थी। उसमें कहीं कोई दिखावा और कृत्रिमता नहीं थी। वह हृदय से स्वाभाविक रूप से प्रकट होती थी और श्रोता के हृदय को वश में कर लेती थी।

8. किसी लकीर --------------- फीके पड़ गए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में लेखक ने व्यक्त किया है कि गुरु नानकदेव ने चरम सत्य का उद्‌घाटन करके संसार की भौतिक वस्तुओं को सहज ही तुच्छ सिद्ध कर दिया है।

व्याख्या– यदि हम किसी रेखा को मिटाए बिना उसे छोटा करना चाहते हैं तो उसका एक की उपाय है कि उस रेखा के पास उससे बड़ी रेखा खींच दी जाए। ऐसा करने पर पहली रेखा स्वयं छोटी प्रतीत होने लगेगी। इसी प्रकार यदि हम अपने

मन के अहंकार और तुच्छ भावनाओं को दूर करना चाहते हैं, स्वयं को संकीर्णता के जाल से मुक्त करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी हमें महानता की बड़ी लकीर खींचनी होगी। अहंकार, तुच्छ भावना, संकीर्णता आदि को शास्त्रज्ञान के आधार पर वाद-विवाद करके या तर्क देकर छोटा नहीं किया जा सकता उसके लिए व्यापक और बड़े सत्य का दर्शन आवश्यक है। ऐसा करने पर ये अपने आप तुच्छ प्रतीत होने लगेंगे। इसी उद्देश्य से मानव-जीवन की संकीर्णताओं और क्षुद्रताओं को छोटा सिद्ध करने के लिए गुरु नानकदेव ने जीवन की महानता को प्रस्तुत किया। इससे लोगों को बड़े सत्य का दर्शन हुआ। गुरु की वाणी ने साधारण जनता को परमसत्य का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। परमसत्य के ज्ञान एवं प्रत्यक्ष अनुभव से अहंकार और संकीर्णता आदि इस प्रकार तुच्छ प्रतीत होने लगे, जैसे महाज्योति के सम्मुख छोटे दीपक आभाहीन हो जाते हैं। गुरु की वाणी ऐसी महाज्योति थी, जिसने जनसाधारण के मन से अहंकार, क्षुद्रता, संकीर्णता आदि के अंधकार को दूर कर उसे दिव्य ज्योति से आलोकित कर दिया।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) किसी लकीर को मिटाए बिना छोटा कैसे किया जा सकता है?

उ०– किसी लकीर को मिटाए बिना छोटा बना देने का उचित उपाय यह है कि उसके सामने बड़ी लकीर खींच दी जाए।

(स) गुरु नानक जी ने जनता को किसके सामने रखा?

उ०– गुरु नानक जी ने जनता को सत्य के सामने रखा, जिससे लोगों को सत्य का दर्शन हुआ।

(द) 'हजारों दिये उस महाज्योति के सामने फीके पड़ गए' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०– इस वाक्यांश का आशय है कि नानकदेव के समय के हजारों बड़े-बड़े संत भी गुरु नानकदेव की महानता को स्वीकार करने के लिए विवश हो गए।

9. भगवान जब ----------------- अनुग्रह कहते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस अवतरण में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि गुरु नानक जैसे महान् संतों में ईश्वर अपनी ज्योति अवतरित करते हैं और ये महान् संत इस ज्योति के सहारे गिरे हुए लोगो को ऊपर उठाते हैं। इसी को भगवान् का अनुग्रह या अवतार कहा जाता है।

व्याख्या– आचार्य द्विवेदी का मत है कि जब संसार पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है तो उसकी अलौकिक ज्योति किसी संत के रूप में इस संसार में अवतरित होती है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर अपनी दिव्य ज्योति को किसी महान् संत के रूप में प्रस्तुत करके उसे इस जगत् का उद्धार करने के लिए पृथ्वी पर भेजता है। वह महान् संत ईश्वर की ज्योति से आलोकित होकर संसार का मार्गदर्शन करता है। ईश्वर निरीह लोगों के कष्टों को दूर करना चाहता है, इसलिए उसकी यह दिव्य-ज्योति मानव-शरीर प्राप्त कर चैन से नहीं बैठती, वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तुरंत सक्रिय हो उठती है। यह ज्योति पतितों तथा पापियों को ऊपर उठाती है और उनका उद्धार करती है। मानवरूप में जब भी ईश्वर अवतार लेता है, तभी इस विश्व का उद्धार तथा कल्याण होता है। प्राचीन भक्ति-साहित्य में ईश्वर की दिव्य-ज्योति का मानव रूप में जन्म 'अवतार और उद्धार' कहा गया हैं। इस दिव्य-ज्योति का 'अवतार' अर्थात् उतरना होता है और सांसारिक प्राणियों का 'उद्धार' अर्थात् ऊपर उठना होता है। आचार्य द्विवेदी अन्त में कहते हैं कि ईश्वर का अवतार लेना और प्राणियों का उद्धार करना ईश्वर के प्रेम का सक्रिय अथवा क्रियात्मक रूप है। भक्तजन इसे ईश्वर की विशेष कृपा मानकर 'अनुग्रह' की संज्ञा प्रदान करते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) ईश्वर संसार पर अपना अनुग्रह किस प्रकार करते हैं?

उ०– ईश्वर अपनी दिव्य-ज्योति को किसी संत में उतारकर उसके द्वारा संसार का उद्धार कराकर उस पर अपना अनुग्रह करते हैं।

(स) यह ज्योति किस प्रकार क्रियात्मक होती है?

उ०– यह ज्योति नीचे गिरे हुए लोगों को ऊपर उठाती हुई उनका उद्धार करती है। यह चुपचाप नहीं बैठती बल्कि मानव के कल्याण में क्रियाशील रहती है।

(द) संसार का उद्धार कब होता है?

उ०– मानवरूप में जब ईश्वर अवतार लेता है तब संसार का उद्धार होता है।

(य) 'अवतार' एवं 'उद्धार' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'अवतार' शब्द का अर्थ है— नीचे उतरना और 'उद्धार' शब्द का अर्थ है— ऊपर उठाना।

10. महागुरु नई आशा --------------- अंगीकार करो।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति श्रद्धा का भाव व्यक्त किया है और उनसे भारतीय समाज में आशा, मैत्री, प्रेम आदि गुणों को प्रवाहित करने के लिए आशीर्वाद की इच्छा व्यक्त की है।

व्याख्या– लेखक इस महान् गुरु से प्रार्थना करते हैं कि वे भटके हुए भारतवासियों के हृदय में प्रेम, मैत्री एवं सदाचार का विकास करके उनमें नई आशा, नए उल्लास व नई उमंग का संचार करें। इस देश की जनता उनके चरणों में अपना प्रणाम निवेदन करती है। लेखक का कथन है कि वर्तमान समाज में रहनेवाले भारतवासी कामना, लोभ, तृष्णा, ईर्ष्या, ऊँच-नीच, जातीयता एवं सांप्रदायिकता जैसे दुर्गुणों से ग्रसित होकर भटक गए हैं, फिर भी इनमें कृतज्ञता का भाव विद्यमान है। इस कृतज्ञता की भावना के कारण ही आज भी ये भारतवासी आपकी अमृतवाणी को नहीं भूले हैं और आपकी महानता के आगे अपना सिर झुकाते हैं; अत: हे गुरु! आप कृतज्ञ भारतवासियों के प्रणाम को स्वीकार करें।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गुरु नानकदेव **लेखक–** हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) लेखक भारतवासियों की ओर से क्या कहना चाहता है?

उ०– लेखक भारतवासियों की ओर से गुरु नानकदेव से कहना चाहता है कि यद्यपि भारतवासी अनेक दुर्गुणों से ग्रसित होकर भटक चुके हैं तथापि उनमें कृतज्ञता की भावना अभी भी विद्यमान है। इस कृतज्ञता की भावना के कारण ही आज भी ये भारतवासी आपकी अमृतवाणी को भूले नहीं हैं और आपकी महानता के आगे अपना सिर झुकाते हैं। अत: हे गुरु। आप कृतज्ञ भारतवासियों के प्रणाम को स्वीकार करें।

(स) 'कृतज्ञता' किसे कहते हैं?

उ०– 'कृतज्ञता' का अर्थ है— किए हुए उपकार को मानने की भावना।

(द) कृतज्ञ भारत का प्रणाम किसके प्रति है?

उ०– कृतज्ञ भारत का प्रणाम गुरु नानकदेव के प्रति है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1.हजारी प्रसाद द्विवेदी का जीवन काल है–

(अ) सन् 1920 - 1980 ई० (ब) **सन् 1907 - 1979 ई०**

(स) सन् 1900 – 1979 ई० (द) सन् 1907 – 1978 ई०

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी एवं संस्कृत के अध्यापक के रूप में शांति निकेतन गए–

(अ) सन् 1960 ई० में (ब) सन् 1956 ई० में

(स) सन् 1946 ई० में (द) **सन् 1940 ई० में**

3. हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास है–

(अ) कबीर (ब) संदेश रासक

(स) कल्पना (द) **अनामदास का पोथा**

4. 'कुटज' के लेखक हैं–

(अ) संपूर्णानंद (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) **हजारी प्रसाद द्विवेदी** (द) महावीर प्रसाद द्विवेदी

5. **द्विवेदी जी को किस कृति के लिए मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया?**

(अ) अशोक के फूल (ब) **कबीर**

(स) पुनर्नवा (द) कुटज

6. **भारत सरकार ने द्विवेदी जी को हिंदी की महती सेवा के लिए पद्मभूषण का अलंकरण प्रदान किया–**

(अ) सन् 1968 ई० में (ब) **सन् 1957 ई० में**

(स) सन् 1955 ई० में (द) सन् 1940 ई० में

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. **निम्नलिखित में प्रकृति-प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–**

शब्द-रूप	**प्रकृति-प्रत्यय**
अवतार	आर
अनुग्रह	ग्रह
प्रहार	आर
पांडित्य	त्य
स्वाभाविक	इक
उल्लसित	इत
महत्व	त्व

2. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग को पृथक करके लिखिए–**

शब्द-रूप	**उपसर्ग**
अवतार	अव
अनुभूत	अनु
अनुग्रह	अनु
सम्मुखीन	सम्
विच्छिन्न	वि
प्रतिक्षण	प्रति
संजीवनी	सम्
संकीर्ण	सम्
दुर्धर	दुर
संबंध	सम्
उद्भासित	उद्

3. **निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद करते हुए संधि का नाम भी लिखिए–**

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**	**संधि का नाम**
अनायास	अन + आयास	दीर्घ संधि
लोकोत्तर	लोक + उत्तर	गुण संधि
कुलाभिमान	कुल + अभिमान	दीर्घ संधि
सर्वाधिक	सर्व + अधिक	दीर्घ संधि
अमृतोपम	अमृत + उपम	गुण संधि

4. **निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–**

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
अर्थहीन	अर्थ से हीन	अपादान तत्पुरुष समास
महापुरुष	महान पुरुष	कर्मधारय समास

समस्त पद	समास-विग्रह	समास का नाम
ज्योतिपुंज	ज्योति का पुंज	संबंध तत्पुरुष समास
व्यंग्यबाण	व्यंग्य रूपी बाण	कर्मधारय समास
प्राणधारा	प्राण की धारा	संबंध तत्पुरुष समास
स्वर्णकमल	स्वर्ण रूपी कमल	कर्मधारय समास
आप्लावित	आ + प्लावित	अव्ययीभाव समास
सुधा-लेप	सुधा का लेप	संबंध तत्पुरुष समास

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

4. गिल्लू (महादेवी वर्मा)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

2. महादेवी वर्मा को और किस नाम से जाना जाता है?

उ०– महादेवी वर्मा को 'आधुनिक मीरा' के नाम से जाना जाता है।

3. महादेवी जी के जीवन परिचय और शिक्षा पर प्रकाश डालिए।

उ०– **जीवन परिचय–** महादेवी जी का जन्म 26 मार्च, 1907 को प्रात: 8 बजे फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कालेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। जिनका महादेवी जी पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। महादेवी वर्मा के मानस बंधुओं में सुमित्रानंदन पंत एवं निराला का नाम लिया जा सकता है। इनका विवाह 1916 में बरेली के पास नवाबगंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ। 11 सितंबर 1987 को इलाहाबाद में इनका देहांत हो गया।

शिक्षा– महादेवी जी की शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई, साथ ही संस्कृत, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती थी। 1919 में इन्होंने क्रॉस्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया। 1921 में इन्होंने आठवीं कक्षा में प्रांत भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया और 1925 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इन्होंने संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

4. 'दीपशिखा' काव्य में इन्होंने (महादेवी) अपनी पीड़ा को कैसे व्यक्त किया है?

उ०– 'दीपशिखा' काव्य में महादेवी जी ने अपने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाकर व्यक्त किया कि वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई।

5. महादेवी जी को कौन-कौन से सम्मान से अलंकृत किया गया?

उ०– महादेवी जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार, सेकसरिया एवं मंगलाप्रसाद पुरस्कार, डि० लिट की उपाधि और पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया।

6. महादेवी जी ने कब अपने काव्य की शुरूआत की?

उ०– महादेवी जी ने 1921 से अपने काव्य जीवन की शुरूआत की।

7. छायावादी युग की सुप्रसिद्ध लेखिका कौन हैं?

उ०– छायावादी युग की सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा जी हैं।

8. भारत सरकार द्वारा महादेवी जी को कौन-से सम्मान से नवाजा गया?

उ०– भारत सरकार द्वारा महादेवी जी को 'पद्मभूषण' की उपाधि से नवाजा गया।

9. व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन महादेवी जी के किस निबंध में होते हैं?

उ०– 'शृंखला की कड़ियाँ' निबंध में महादेवी जी की व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी जी के जीवन परिचय एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– महादेवी वर्मा हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती' भी कहा है। महादेवी जी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं, जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाज–सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और श्रृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन–जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं अपितु समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

जन्म और परिवार– महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को प्रात: 8 बजे फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अत: बाबा बाबू बाँके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी – महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। हेमरानी देवी बड़ी धर्म परायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थीं। विवाह के समय अपने साथ सिंहासनासीन भगवान की मूर्ति भी लाई थीं। वे प्रतिदिन कई घंटे पूजा–पाठ तथा रामायण, गीता एवं विनय पत्रिका का पारायण करती थीं और संगीत में भी उनकी अत्यधिक रुचि थी। परंतु उनके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा सुंदर, विद्वान, संगीत प्रेमी, नास्तिक, शिकार करने एवं घूमने के शौकीन, मांसाहारी तथा हँसमुख व्यक्ति थे। महादेवी वर्मा के मानस बंधुओ में सुमित्रानंदन पंत एवं निराला का नाम लिया जा सकता है, जो उनसे जीवन–पर्यंत राखी बँधवाते रहे। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी पुष्ट कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

शिक्षा– महादेवी जी की शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई; साथ ही संस्कृत, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह आने पर शिक्षा स्थगित कर दी गई।

विवाहोपरांत महादेवी जी ने 1919 में क्रॉस्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रांत भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरूआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कॉलेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं— "सुनो, ये कविता भी लिखती हैं।" 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम०ए० पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह 'नीहार' तथा 'रश्मि' प्रकाशित हो चुके थे।

वैवाहिक जीवन– सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके बिहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नवाब गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इंटर करके लखनऊ मेडिकल कॉलेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी उस समय क्रॉस्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में थीं। श्रीमती महादेवी वर्मा को विवाहित जीवन से विरक्ति थी।

महादेवी जी का जीवन एक संन्यासिनी का जीवन था। 1966 में पति की मृत्यु के बाद वह स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं। 11 सितंबर 1987 को इलाहाबाद में इनका देहांत हो गया।

कृतित्व– महादेवी वर्मा की गणना हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवियों एवं गद्य–लेखकों में की जाती है। महादेवी जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) निबंध संग्रह– श्रृंखला की कड़ियाँ, साहित्यकार की आस्था, क्षणदा, अबला और सबला। इन रचनाओं में इनके विचारात्मक और साहित्यिक निबंध संगृहीत हैं।

(ब) संस्मरण और रेखाचित्र– स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, मेरा परिवार। इन संस्मरणों में इनके ममतामय हृदय के दर्शन होते हैं।

(स) **आलोचना–** हिंदी का विवेचनात्मक गद्य

(द) **काव्य रचनाएँ–** सांध्यगीत, नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, दीपशिखा। इन काव्यों में पीड़ा एवं रहस्यवादी भावनाएँ व्यक्त हुई हैं।

2. महादेवी वर्मा की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

उ०– **भाषा-शैली–** महादेवी वर्मा की कविताओं में कल्पना की प्रधानता है परंतु गद्य में इन्होंने यथार्थ के धरातल पर स्थित रहकर ही अपनी रचनाओं का सृजन किया है।

महादेवी जी की भाषा अत्यंत उत्कृष्ट, समर्थ तथा सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इन्होंने संस्कृतप्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा को ही अपनाया है। इनकी रचनाओं में कहीं-कहीं पर अत्यंत सरल और व्यावहारिक भाषा के दर्शन होते हैं। मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। लक्षणा और व्यंजना की प्रधानता इनकी भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता है। महादेवी जी की भाषा में चित्रों को अंकित करने तथा अर्थ को व्यक्त करने की अदभुत क्षमता है। महादेवी जी की गद्य शैली बिलकुल अलग है। ये यथार्थवादी गद्य लेखिका थीं। इनकी गद्य शैली में मार्मिकता, बौद्धिकता, भावुकता, काव्यात्मक सौष्ठव तथा व्यंग्यात्मकता विद्यमान है—

(अ) **चित्रोपम वर्णनात्मक शैली–** महादेवी जी चित्रोपम वर्णन करने में सिद्धहस्त हैं। वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना का वर्णन करते समय इनकी लेखनी तूलिका बन जाती है, जिससे सजीव शब्दचित्र बनते चले जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में संकलित 'गिल्लू' रेखाचित्र महादेवी जी की कृति 'मेरा परिवार' से लिया गया है।
इनके निबंधों और रेखाचित्रों में अधिकतर इसी शैली का प्रयोग हुआ है। महादेवी जी की मुख्य शैली भी यही है।

(ब) **विवेचनात्मक शैली–** गंभीर और विचारप्रधान विषयों में महादेवी जी ने इस शैली का प्रयोग किया है। इसकी भाषा गंभीर और संस्कृतनिष्ठ है।

(स) **भावात्मक शैली–** महादेवी जी भावुक हृदया होने के साथ-साथ भावमयी कवयित्री भी थीं। हृदय का आवेग जब रुक नहीं पाता, तब उनकी शैली भावात्मक हो जाती है।

(द) **व्यंग्यात्मक शैली–** नारी जीवन की विषमताओं और उन्हें दुःखी देखकर उनकी कोमल लेखनी से तीक्ष्ण व्यंग्य निकलने लगते हैं। 'शृंखला की कड़ियाँ', निबंध में इस व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

3. हिंदी गद्य-साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान स्पष्ट कीजिए।

उ०– हिंदी गद्य-साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान अतुलनीय है।'शृंखला की कड़ियाँ' में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए महादेवी जी ने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज उठाई है और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निंदा की है, उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज सुधारक भी कहा जाता है। उनके संपूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष, समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है।

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपने अभूतपूर्व योगदान के कारण महादेवी वर्मा चिरकाल तक स्मरणीय रहेंगी। हिंदी साहित्य जगत सदैव उनका आभारी रहेगा।

4. 'गिल्लू' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'गिल्लू' रेखाचित्र विधा पर आधारित एक अनुपम रचना है। यह रेखाचित्र उनकी प्रसिद्ध कृति 'मेरा परिवार' से संकलित है। प्रस्तुत रचना में गिलहरी जैसे एक अतिसाधारण एवं उपेक्षित प्राणी की चेष्टाओं का सजीव चित्रण करते हुए उसे एक स्मरणीय व्यक्तित्व प्रदान किया गया है। लेखिका लिखती हैं कि पीली जुही के बेल पर लगी कली को देखकर उसे अचानक उस छोटे जीव गिलहरी की याद आ गई, जो कि इस बेल की हरियाली में रहता था और लेखिका को घायल अवस्था में मिला था। उस गिलहरी के बच्चे को लेखिका उठाकर कमरे में ले आई और रूई से उसका रक्त पोंछकर उसके घाव पर पेंसिलीन का मरहम लगाया और रूई की बत्ती से उसे दूध पिलाने का प्रयास किया। तीन दिनों के उपचार के बाद वह इतना स्वस्थ हो गया कि उसने अपने दोनों पंजों से लेखिका की उँगली पकड़ ली। तीन-चार महीनों बाद वह एक वयस्क गिलहरी बन गया और लेखिका ने उसे 'गिल्लू' नाम दिया। लेखिका ने उसके रहने की व्यवस्था एक डलिया में रूई बिछाकर कर दी। जहाँ गिल्लू दो वर्ष तक रहा। लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह विभिन्न उपाय करता था। भूख लगने पर वह चिक-चिक करके लेखिका को

सूचना देता था। गिल्लू के जीवन के प्रथम वसंत में लेखिका ने उसके लिए खिड़की की जाली का कोना खोल दिया था। लेखिका के बाहर से आने पर वह उसके सिर से पैर तक दौड़ लगाता था। गिल्लू लेखिका को जगह-जगह छिपकर चौंकाता था और लेखिका की थाली में से सफाई के साथ खाना उठाकर खाता था। जब लेखिका को मोटर दुर्घटना में घायल होने के कारण अस्पताल में रहना पड़ा, तब गिल्लू अपना प्रिय पदार्थ काजू भी नहीं खाता था। वह लेखिका की बीमारी में परिचारिका के समान उसका ध्यान रखता था। गिल्लू नए-नए उपाय खोजकर लेखिका के पास ही रहता। सामान्यत: गिलहरियों का जीवनकाल दो वर्ष का होता है। अपने अंत समय में गिल्लू अपने झूले से उतरकर लेखिका के पास आया और लेखिका की उँगली पकड़ ली जैसे कि उसने अपने बचपन में पकड़ी थी, जब वह लेखिका को मिला था। गिल्लू के चिर निद्रा में सोने पर लेखिका ने गिल्लू को उसी सोनजुही की बेल के नीचे समाधि दी, जो उसे बहुत प्रिय थी। लेखिका को उसका, जुही के पीले फूल के रूप में खिलने का विश्वास है, जो उसे संतोष देता है।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. सोनजुही ------------ ऊपर आ गया हो।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' में संकलित 'महादेवी वर्मा' द्वारा लिखित 'गिल्लू' नामक रेखाचित्र से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने गिलहरी के बच्चे 'गिल्लू' की स्मृतियों का वर्णन किया है।

व्याख्या– महादेवी जी ने गिलहरी के एक घायल बच्चे के प्राण बचाये। वह दो वर्ष तक महादेवी जी के पास रह कर उन्हें अपने क्रिया-कलाप से चौंकाता रहता था। जब वह मर गया तो महादेवी जी ने सोनजुही की लता के नीचे उसे समाधि दे दी। एक दिन सोनजुही की लता में एक पीली कली को देखकर महादेवी जी को उस छोटे जीव गिल्लू की याद आ गई, जो इस लता की हरियाली में छिपकर बैठा करता था और जब महादेवी जी उस लता के पास पहुँचती थी तो वह (गिल्लू) उनके कंधे पर कूद जाया करता था। जिससे लेखिका चौंक जाती थी। उन दिनों महादेवी जी अपनी सोनजुही की लता में किसी कली को ढूँढ़ती थीं। पर इसके विपरीत आज वे कली को नहीं, अपितु उस छोटे से जीव को ढूँढ़ती हैं, जो इसमें छिपा रहता था और उनके कंधे पर कूदकर उन्हें चौंकाया करता था। परंतु वह तो इस सोनजुही की बेल की मिट्टी में अब मिल गया होगा और महादेवी जी को विश्वास था कि वह किसी दिन सुनहरी (पीली) कली बनकर उन्हें चौंकाने के लिए ऊपर आ चुका होगा।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखिका का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** गिल्लू **लेखिका–** महादेवी वर्मा

(ब) सोनजुही क्या है?

उ०– 'सोनजुही', जुही नामक बेल की एक किस्म है, जो पीली होती है।

(स) सोनजुही में पीली कली को देखकर लेखिका को किसकी याद आ गई?

उ०– सोनजुही में पीली कली को देखकर लेखिका को गिलहरी के बच्चे (गिल्लू) की याद आ गई।

(द) प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका किसकी बात कर रही है और वह किसे खोज रही है?

उ०– प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका गिलहरी के बच्चे (गिल्लू) की बात कर रही है और उसे ही सोनजुही की कली के रूप में खोज रही है।

2. अचानक -------------- प्रयक्त करते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– 'गिल्लू' रेखाचित्र में लेखिका ने कोमल और लघुप्राण गिलहरी का मानवीय संवेदना और ममता के आधार पर हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। एक बार वे सुबह के समय अपने घर के बाहर कुछ कौओं को काँव-काँव करते देखती हैं और अचानक उनके मन में कुछ विचार उठने लगते हैं। उन्हीं विचारों को प्रस्तुत पंक्तियों में दर्शाया गया है।

व्याख्या– लेखिका कहती हैं कि एक दिन सुबह जब वह कमरे में से बरामदे में आई तो उन्होंने देखा कि दो कौए एक गमले के चारों तरफ अपनी चोंचों से खेल रहे थे।

कौआ; जिसे भारतीय (प्राचीन) ग्रंथों में कागभुशुण्डि के रूप में प्रसद्धि मिली है, बहुत ही विचित्र पक्षी है। कारण यह है

कि भारतीय समाज में कौओं की स्थिति अत्यधिक विषम है। कौए के प्रति परस्पर दो विरोधी भाव लोगों के मन में हैं। कौए का आदर भी बहुत होता है तथा उसे अपमानजनक दृष्टि से भी देखा जाता है। इसलिए लेखिका ने कौए को एक साथ अत्यधिक सम्मानित और अत्यधिक अवमानित भी कहा है।

हम भारतवासियों की यह धारणा है कि पितृ पक्ष (श्राद्ध के दिनों) में हमारे पूर्वजों की आत्माएँ कौए के रूप में पृथ्वी पर आती हैं। इसी कारण पितृ पक्ष में कौए का सम्मान सबसे अधिक किया जाता है। श्राद्ध के दिनों में अपने पितरों की तृप्ति के लिए लोग कौओं को भोजन कराते हैं। कौए के अतिरिक्त और भी तो पक्षी हैं; जैसे गरुड़, मोर, हंस; परंतु इनमें से कोई भी रूप हमारे पितरों को पसंद नहीं आया। इसके अतिरिक्त कौए का मान हम दूसरे रूप में भी करते हैं। घर की मुँडेर पर बैठकर जब कौआ अपनी कर्कश वाणी में काँव-काँव करता है तो यह समझा जाता है कि कोई प्रियजन आनेवाला है। हमें ऐसा लगता है कि कौआ हमारे उस प्रिय के आगमन का संदेश लेकर आया है, जो हमसे दूर रह रहा है।

किसी के घृणात्मक आचरण अथवा काले रंग को देखकर व्यक्त करते हुए हम उसे 'कौआ' कह देते हैं तथा किसी की कर्कश वाणी सुनकर - 'क्या काँव-काँव की रट लगा रखी है?'- कह देते हैं। ये दोनों बातें अपमानसूचक हैं। इस प्रकार भारतीय समाज में कौए की स्थिति अत्यधिक सम्मानित तथा अत्यधिक अपमानित; दोनों ही प्रकार की है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखिका का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गिल्लू **लेखिका–** महादेवी वर्मा

(ब) गद्यांश के अनुसार पुरखों को हमसे कुछ पाने के लिए क्या करना पड़ता है?

उ०– गद्यांश के अनुसार पुरखों को हमसे कुछ पाने के लिए कौए के रूप में पृथ्वी पर आना पड़ता है।

(स) लेखिका ने बरामदे में कौओं को क्या करते देखा?

उ०– बरामदे में लेखिका ने कौओं को छुवा-छुवौवल जैसा खेल खेलते देखा।

(द) कागभुशुण्डि कौन हैं?

उ०– पाठ में कागभुशुण्डि का अर्थ 'कौए' से है। कागभुशुण्डि तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' के पात्र हैं, जो किसी शाप के कारण कौआ हो गए थे। उन्होंने गरुड़ को श्रीराम की कथा सुनाई थी।

(य) कौआ समादरित कैसे होता है?

उ०– पितृपक्ष में हम अपने पितरों की तृप्ति के लिए जब कौओं को भोजन कराते हैं तो उन्हें अत्यधिक श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखते है। इस प्रकार कौआ समादरित होता है।

(र) गद्यांश के अनुसार दूर स्थित प्रियजनों का संदेश हमें किसके द्वारा प्राप्त होता है?

उ०– दूर स्थित प्रियजनों के आने का संदेश हमें कौए की कर्कश वाणी (काँव-काँव) के द्वारा मिलता है।

3. मेरी अस्वस्थता ---------------- ठंडक में भी रहता।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखिका को गिल्लू द्वारा किया गया स्पर्श अत्यंत ही सुखदायी लगता है।

व्याख्या– गिल्लू काफी कुछ आत्मीयता का अनुभव करता है। जब लेखिका का शरीर रोगी होता है अथवा वह विषादग्रस्त होती है, तो गिल्लू उसके समीप रहता है। उसके सिरहाने आकर वह अपने मुलायम और छोटे-छोटे पैरों से लेखिका के बालों को सहलाता है। ऐसा किए जाने पर लेखिका अतीव सुख का अनुभव करती है। जब गिल्लू वहाँ से चला जाता है तो लगता है कि किसी सेविका का अभाव हो गया है। लेखिका कहती है कि गर्मियों की दोपहर में जब वह काम कर रही होती थी तो गिल्लू न तो खिड़की से बाहर जाता था और न अपने झूले में बैठता था। उसने लेखिका के समीप रहने का एक उपाय खोज निकाला था। वह लेखिका के पास रखी पानी की सुराही पर लेटा रहता था जिससे वह लेखिका के समीप भी रहता था और ठंडक में भी रहता था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखिका का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गिल्लू **लेखिका–** महादेवी वर्मा

(ब) परिचारिका किसे कहते हैं?

उ०– परिचारिका से तात्पर्य रोगी की देखभाल करने वाली सेविका से है।

(स) महादेवी जी की अस्वस्थता में उनके बालों को हौले-हौले कौन सहलाता रहता था?

उ०– महादेवी जी की अस्वस्थता में गिल्लू उनके बालों को हौले-हौले सहलाता रहता था।

(द) गर्मियों की दोपहर में गिल्लू की क्या चर्या थी?

उ०– गर्मियों की दोपहरी में गिल्लू घर के बाहर नहीं जाता था। वह अपने झूले में भी नहीं बैठता था। वह लेखिका के पास रखी सुराही पर लेटा रहता था। इस तरह से वह लेखिका के समीप भी रहता था और ठंडक में भी।

4. गिलहरियों के जीवन ----------------- पकड़ा था।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में लेखिका ने अपने प्यारे जीव गिल्लू के अंत समय की गतिविधियों का मार्मिक चित्रण किया है।

व्याख्या– लेखिका बताती हैं कि गिलहरियों का जीवनकाल बहुत लंबा नहीं होता, बल्कि बहुत छोटा होता है। गिलहरियाँ दो साल से अधिक जीवित नहीं रहतीं और गिल्लू को भी उनके पास लगभग दो साल हो गए थे। इस प्रकार उसके इस लोक को छोड़कर परलोक जाने का समय आ गया था। उस दिन गिल्लू ने सारा दिन कुछ भी नहीं खाया और न ही अपने घोंसले को छोड़कर घर से बाहर गया। रात्रि में जब वह मृत्यु की पीड़ा झेल रहा था, तब वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर आ गया और लेखिका के प्रति अपनी ममता के कारण वह लेखिका की उसी उँगली को पकड़कर उसके हाथ से चिपक गया, जिस उँगली को उसने अपने बचपन में मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था। इस समय उसके पंजे अत्यधिक ठंडे हो गए थे। आशय यही है कि इस समय गिल्लू की चेतना धीरे-धीरे समाप्त हो रही थी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखिका का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गिल्लू **लेखिका–** महादेवी वर्मा

(ब) लेखिका को कैसे अहसास हुआ कि गिल्लू का अंत आ गया है?

उ०– गिल्लू ने न दिनभर कुछ खाया और न ही अपने घोंसले को छोड़कर बाहर गया, वैसे भी उसे लेखिका के पास रहते लगभग दो वर्ष हो गए थे; अत: उसकी आयु को पूर्ण हुआ देखकर लेखिका जान गई कि गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ गया है।

(स) गद्यांश के आधार पर बताइए कि गिल्लू को लेखिका के पास रहते हुए कितना समय हो गया था?

उ०– गिल्लू को लेखिका के पास रहते लगभग दो वर्ष का समय हो गया था; क्योंकि लेखिका को गिल्लू नवजात शिशु के रूप में घायलावस्था में प्राप्त हुआ था और गिलहरियों का जीवनकाल दो वर्षों से अधिक नहीं होता। गिल्लू अब मरणासन्न अवस्था में है; अत: स्पष्ट है कि गिल्लू को लेखिका के पास रहते दो वर्ष बीत गए।

(द) अंत समय में झूले से उतरकर उँगली पकड़कर हाथ से चिपक जाना, गिल्लू की किस भावना को प्रदर्शित करता है?

उ०– गिल्लू का अपने अंत समय में लेखिका की उँगली पकड़कर उसके हाथ से चिपक जाना यह प्रदर्शित करता है कि गिल्लू को लेखिका से अत्यधिक प्रेम है।

5. उसका झूला ---------------- संतोष देता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में लेखिका ने पालतू गिलहरी 'गिल्लू' की मृत्यु पर अपनी ममतामयी संवेदना प्रकट की है।

व्याख्या– लेखिका ने अपनी पालतू गिलहरी गिल्लू के लिए फूल रखने की डलिया में रूई बिछाकर तथा उसे तार से खिड़की पर लटकाकर एक झूला-सा बना दिया था। दो वर्ष की अपनी संपूर्ण आयु व्यतीत कर 'गिल्लू' की मृत्यु हो गई। गिल्लू की मृत्यु के पश्चात् लेखिका ने उसका प्रिय झूला उतारकर रख दिया और खिड़की की जाली को खोलकर गिल्लू के बाहर जाने का जो रास्ता बनाया था, उसे भी बंद कर दिया; क्योंकि अब उससे होकर जानेवाला इस संसार से विदा ले चुका था। यद्यपि गिल्लू इस संसार को छोड़कर जा चुका था। परंतु उसकी नई पीढ़ी की गिलहरियाँ उस खिड़की की जाली

के बाहर से चिक-चिक की आवाज करके इधर-उधर कूद-फाँद करती रहती हैं, जिस जाली के पास गिल्लू का झूला लटका रहता था। सोनजुही पर भी वंसत आता ही रहता है, पर गिल्लू अब वसंत का आनंद लेने के लिए इस संसार में नहीं है। उसकी स्मृति लेखिका के मन में किसी-न-किसी रूप में बनी ही रहती है।

लेखिका अंत में कहती हैं कि गिल्लू को उसी जगह दफना दिया गया है, जो स्थान उसे अत्यंत प्रिया था। वह प्रिय स्थान है— सोनजुही की लता। उसका विश्वास है कि गिल्लू का वह छोटा-सा शरीर किसी-न-किसी वसंत में सोनजुही के पीले फूलों के रूप में विकसित होकर अपनी आभा बिखरेगा। यह विश्वास ही लेखिका को संतोष देता रहता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखिका का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– गिल्लू **लेखिका–** महादेवी वर्मा

(ब) गिल्लू के न रहने पर लेखिका ने क्या किया?

उ०– गिल्लू के न रहने पर लेखिका ने गिल्लू के प्रिय झूले को उतारकर रख दिया और खिड़की की उस जाली को भी बंद कर दिया, जिससे गिल्लू खिड़की के बाहर आता जाता रहता था।

(स) 'सोनजुही पर वसंत आता ही रहता है' से लेखिका का क्या अभिप्राय है?

उ०– 'सोनजुही पर वसंत आता ही रहता है।' से लेखिका एक तो यह कहना चाहती है कि यह संसार अथवा जीवन गतिशील है। किसी की मृत्यु पर यह ठहर नहीं जाता, वरन् अपनी गति से चलता रहता है। यही कारण है कि जूही के वसंत का आनंद लेने वाला गिल्लू अब नहीं रहा, फिर भी उस पर वसंत आता रहता है। इस पंक्ति के द्वारा लेखिका यह भी कहना चाहती है कि गिल्लू आज भी उनकी स्मृति में पूर्ववत् बसा है। जब-जब जूही पर वसंत आता है, तब-तब उसकी स्मृति और गाढ़ी हो जाती है।

(द) लेखिका ने गिल्लू की समाधि कहाँ बनाई?

उ०– लेखिका ने गिल्लू की समाधि सोनजुही की लता के नीचे बनाई।

(य) कौन-सा विश्वास लेखिका को संतोष देता है?

उ०– लेखिका का यह विश्वास उसे संतोष देता है कि एक दिन गिल्लू सोनजुही के फूल के रूप में खिलकर उसे अवश्य चौंकाएगा।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. महादेवी वर्मा का जन्म हुआ था–

(अ) सन् 1897 में (ब) **सन् 1907 में**

(स) सन् 1902 में (द) सन् 1900 में

2. निम्न में से महादेवी वर्मा की काव्य रचना है–

(अ) पथ के साथी (ब) अबला और सबला

(स) क्षणदा (द) **नीरजा**

3. 'गिल्लू' रेखाचित्र महादेवी वर्मा की किस कृति से लिया गया है?

(अ) रश्मि (ब) **मेरा परिवार**

(स) पथ के साथी (द) दीपशिखा

4. हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक है–

(अ) कबीरदास (ब) बिहारी

(स) **महादेवी वर्मा** (द) भारतेंदु हरिश्चंद्र

5. महादेवी वर्मा को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा किस 'कृति' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया?

(अ) पथ के साथी (ब) नीरजा

(स) मेरा परिवार (द) **यामा**

6. **महादेवी वर्मा को किसके द्वारा पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया?**
   (अ) काशी विद्यापीठ द्वारा (ब) **भारत सरकार द्वारा**
   (स) कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा (द) नागरी प्रचरिणी सभा द्वारा

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों और प्रत्ययों पर ध्यान दीजिए। विचार कीजिए कि इससे अर्थ में क्या परिवर्तन हो गया है। इसी प्रकार तीन अन्य शब्दों के उदाहरण दीजिए–**
   उपसर्ग– सम्मान, अवमान, सम्मानित, अपवाद, अनायास
   प्रत्यय– हरीतिमा, स्वर्णिम, दूरस्थ

उ०– **उपसर्ग–** सम्मति, अवगुण, अपमान
प्रत्यय– बुद्धिमान, धनवान, शारीरिक

2. **'हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के' लेखिका के इस कथन का क्या अभिप्राय है?**

उ०– लेखिका के इस कथन का अभिप्राय है कि हम भारतवासियों की यह धारणा है कि हमारे पूर्वजों की आत्माएँ पितृपक्ष (श्राद्ध के दिनों) में कौए के रूप में पृथ्वी पर आती हैं। कौए के अतिरिक्त दूसरे और भी तो पक्षी हैं, जो सुंदर हैं— जैसे— गरुड़, मयूर और हंस, वे इन पक्षियों के रूप में पृथ्वी पर अवतीर्ण नहीं होते। वे तो केवल कौए के रूप में ही आते हैं।

3. **वाक्य-विश्लेषण कीजिए–**
   निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो सम्भवत: घोंसले से गिरा पड़ा है और अब कौए जिसमें सुलभ आहार खोज रहे थे।
   वाक्य– विश्लेषण– लेखिका के अनुसार जब वह अपने बरामदे में सुबह के समय टहल रही थी तो अचानक उसकी नजर बरामदे में रखे गमले पर पड़ी जिसमें एक गिलहरी का बच्चा किसी घोंसले से गिर गया था। जिस पर कौओं की नजर पड़ चुकी थी और अब वे उसे अपना भोजन बनाने ही वाले थे।
   अत: उपर्युक्त वाक्य में लेखिका द्वारा एक गिलहरी के बच्चे को कौओं का आहार बनने से बचाने के विषय में बताया गया है।

(च) पाठ्येतर सक्रियता
विद्यार्थी स्वयं करें।

5. स्मृति (श्रीराम शर्मा)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **श्रीराम शर्मा के जन्म-स्थान एवं जन्म-तिथि के बारे में बताइए।**

उ०– श्रीराम शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में मक्खनपुर के समीप किरथरा नामक गाँव में 1896 ई० को हुआ था।

2. **शर्मा जी ने बचपन की शिक्षा एवं उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?**

उ०– शर्मा जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मक्खनपुर में ही की। इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की।

3. **सर्वप्रथम रेखाचित्र के लेखक होने का गौरव किनको प्राप्त हुआ?**

उ०– सर्वप्रथम श्रीराम शर्मा को रेखाचित्र के लेखक होने का गौरव प्राप्त हुआ।

4. **शर्मा जी लंबे समय तक किस पत्रिका के संपादक रहे?**

उ०– शर्मा जी लंबे समय तक 'विशाल भारत' पत्रिका के संपादक रहे।

5. **जंगल की रोमांचकारी घटनाओं के चित्रण शर्मा जी की किस रचना में मिलते हैं?**

उ०– श्रीराम शर्मा जी की रचना 'शिकार' में उनकी जंगल की रोमांचकारी घटनाओं का चित्रण मिलता है।

6. 'सन बयालीस के संस्मरण' किस शैली की रचना है?

उ०– 'सन बयालीस के संस्मरण' आत्मकथात्मक शैली की रचना है।

7. 'स्मृति' में लेखक ने किसका वर्णन करके पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है?

उ०– 'स्मृति' में लेखक ने अपने बचपन की एक रोमांचकारी घटना का वर्णन करके पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।

8. श्रीराम शर्मा की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– सेवाग्राम की डायरी और जंगल के जीव।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. श्रीराम शर्मा जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं का वर्णन कीजिए।

उ०– श्रीराम शर्मा केवल एक व्यक्ति ही नहीं थे, वे एक संस्था भी थे, जिससे परिचित होना हिंदी साहित्य के गौरवशाली अध्याय से परिचित होना है। स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी पं० श्रीराम शर्मा ने शुक्लोत्तर युग में लेखन कार्य करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल की। सर्वप्रथम आपको रेखाचित्र लेखक होने का गौरव प्राप्त है।

जीवन परिचय– शिकार-साहित्य के प्रणेता पं० श्रीराम शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में मक्खनपुर के समीप किरथरा नामक गाँव में 1896 ई० को हुआ था। अपनी प्रारंभिक शिक्षा इन्होंने मक्खनपुर में ही की थी। इसके बाद इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। ये बचपन से ही साहसी और आत्मविश्वासी थे। देश-प्रेम की भावना इनके अंदर कूट-कूट कर भरी हुई थी। कुछ अवसरों पर इन्होंने अपने गुणों का परिचय भी दिया था। ये शिकार-साहित्य के सर्वाधिक प्रसिद्ध लेखक हैं। वास्तव में इनका इस दिशा में किया गया लेखन सर्वप्रथम किंतु सफल प्रयास था।

महात्मा गाँधी के साथ असहयोग-आंदोलन में भाग लेने वाले तथा महान् देशभक्त श्रीराम शर्मा लंबी बीमारी के चलते सन् 1967 में सदा के लिए इस संसार से विदा हो गए।

साहित्यिक सेवाएँ– श्रीराम शर्मा ने आरंभ में शिक्षण का कार्य किया परंतु उनका झुकाव लेखन और पत्रकारिता की तरफ था। श्रीराम जी ने लंबे समय तक 'विशाल भारत' पत्रिका का संपादन किया।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने श्री गणेश शंकर के दैनिक पत्र 'प्रताप' में भी सह-संपादक के रूप में कार्य किया। हिंदी साहित्य में शिकार-साहित्य का प्रारंभ इन्हीं के द्वारा हुआ है। शिकार-साहित्य से संबंधित लेखों में घटना विस्तार के साथ-साथ पशुओं के मनोविज्ञान का सम्यक् परिचय देते हुए इन्होंने उन्हें पर्याप्त रोचक बनाने में सफलता प्राप्त की है। इन्होंने ज्ञानवर्द्धक एवं विचारोत्तेजक लेख भी लिखे हैं, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं।

श्रीराम शर्मा जी की रचनाओं में सेवाग्राम की डायरी, सन् बयालीस के संस्मरण, जंगल के जीव, प्राणों का सौदा, बोलती प्रतिमा, शिकार आदि प्रमुख हैं। जीवनी, संस्मरण व शिकार साहित्य आदि विधाओं पर लेखनी चलाने वाले श्रीराम शर्मा साहित्य जगत में अपनी उपलब्धियों के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे।

2. श्रीराम शर्मा जी की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

उ०– **भाषा-शैली–** श्रीराम शर्मा की भाषा सहज, सरल, बोधगम्य एवं प्रवाहगम्य है। भाषा की दृष्टि से इन्हें प्रेमचंद के निकट कहा जा सकता है। अपनी भाषा को सरल बनाने के लिए इन्होंने उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी एवं लोक-प्रचलित शब्दों का भी यथास्थान प्रयोग किया है। मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में और भी अधिक रोचकता व व्यावहारिकता उत्पन्न हुई है।

इनकी रचनाओं में निम्नलिखित शैलियों के दर्शन होते हैं–

(अ) **चित्रात्मक शैली–** इस शैली के माध्यम से इन्होंने अपने बचपन के दिनों और शिकार की घटनाओं पर आधारित चित्र प्रस्तुत किए हैं।

(ब) **आत्मकथात्मक शैली–** शर्मा जी ने इस शैली का प्रयोग अपने संस्मरण-साहित्य में किया हैं। 'सन् बयालीस के संस्मरण' और 'सेवाग्राम की डायरी' में इस शैली का प्रयोग है।

(स) **वर्णनात्मक शैली–** शर्मा जी ने इस शैली का प्रयोग शिकार-साहित्य में किया है। इस शैली की भाषा सरल और सुबोध है।

(द) **विवेचनात्मक शैली–** गंभीर और विचारपूर्ण निबंधों में शर्मा जी ने इस शैली का प्रयोग किया है। इसमें संस्कृतनिष्ठ एवं अपेक्षाकृत बड़े वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

3. 'स्मृति' पाठ का सारांश अपने शब्दों मे लिखिए।

उ०– पं० श्रीराम शर्मा द्वारा रचित लेख 'स्मृति' एक संस्मरणात्मक लेख है, जो साहसिक एवं शिकार कथा पर आधारित है। यह पं० श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित 'शिकार' नामक पुस्तक से संकलित है जिसमें लेखक ने अपने बचपन की रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। सन् 1908 ई० में दिसंबर या जनवरी के महीने में शाम के साढ़े तीन या चार बजे जब लेखक अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी से बेर तोड़कर खा रहा था, उन्हें (लेखक को) उनके बड़े भाई ने बुलवाया। लेखक पिटाई के भय से डर गया, परंतु भाई साहब ने लेखक को मक्खनपुर डाकखाने में पत्र डालने के लिए दिए जो बहुत आवश्यक थे। लेखक अपने छोटे भाई के साथ अपने-अपने डंडे लेकर व माँ के दिए चने लेकर चल दिए। लेखक ने पत्रों को अपनी टोपी मेें रख लिया क्योंकि उनके कुर्ते में जेबें न थी। मार्ग में दोनों भाई उस कुएँ के पास पहुँचे जो कच्चा था तथा जिसमें एक अतिभयंकर काला साँप था। प्रतिदिन लेखक व उसके मित्र कुएँ में ढेला फेंककर साँप की क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाते थे। आज भी लेखक के मन में साँप की फुसकार सुनने की इच्छा जाग्रत हुई। लेखक ने एक ढेला उठाया और एक हाथ से टोपी उतारकर कुएँ में गिरा दिया। लेखक के टोपी हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ जो टोपी में रखी थीं चक्कर काटती हुए कुएँ में गिर गई। निराशा व पिटने के भय से दोनों भाई कुएँ के पाट पर बैठकर रोने लगे। लेखक का मन करता कि माँ आकर गले लगाकर कहे कोई बात नहीं या घर जाकर झूठ बोल दे, परंतु लेखक झूठ बोलना नहीं जानता था तथा सच बताने पर उसे पिटाई का भय था, तब लेखक ने कुएँ मे घुसकर चिट्ठियाँ निकालने का दृढ़ निश्चय किया। लेखक ने अपनी व भाई की धोतियाँ तथा रस्सी बाँधी और रस्सी के एक सिरे पर डंडा बाँधकर कुएँ में डाल दिया तथा दूसरा सिरा कुएँ की डेंग से बाँध दिया और स्वयं धोती के सहारे कुएँ मे घुस गया। कुएँ में धरातल से चार-पाँच गज की ऊँचाई से लेखक ने देखा कि साँप उसका मुकाबला करने के लिए फन फैलाकर तैयार था। लेखक को साँप को मारने व चिट्ठियाँ लेने के लिए कुएँ के धरातल पर उतरना ही था क्योंकि चिट्ठियाँ वहीं गिरी हुई थी। जैसे-जैसे लेखक नीचे उतरता वैसे-वैसे उसका चित्त एकाग्र होता जाता। कच्चे कुएँ का व्यास कम होता है इसलिए डंडा चलाने के लिए पर्याप्त स्थान न था। तभी लेखक ने साँप को न छेड़ने का निर्णय लिया। लेखक ने डंडे से चिट्ठियाँ सरकाने का प्रयास किया और साँप की फुसकार से लेखक के हाथ से डंडा छूट गया। लेखक ने दूसरा प्रयास किया और साँप डंडे से चिपट गया। डंडे के लेखक की ओर खिंच आने से साँप की मुद्रा बदल गई और लेखक ने लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए। लेखक ने चिट्ठियों को धोती से बाँध दिया, जिसे छोटे भाई ने ऊपर खींच लिया तथा डंडा उठाकर हाथों के सहारे ऊपर चढ़ गया। ऊपर आकर वह थोड़ी देर पड़ा रहा तथा किशनपुर के जिस लड़के ने उसे ऊपर चढ़ते देखा था उसे कहा कि इस घटना के बारे में किसी से न कहे। सन 1915 में मैट्रीक्युलेशन उत्तीर्ण करने के बाद लेखक ने यह घटना अपनी माँ को बताई और माँ ने लेखक को अपनी गोद में छुपा लिया।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. हमें देखकर भाई साहब ---------------- कुर्ते में जेबें न थी।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' में संकलित 'श्रीराम शर्मा' द्वारा लिखित 'स्मृति' नामक निबंध से अवतरित है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में लेखक ने अपने बचपन की एक रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। लेखक ने यहाँ स्पष्ट किया है कि बचपन के उन दिनों में वह डंडा चलाकर साँप को मारने में अत्यंत कुशल था।

व्याख्या– लेखक अपने बचपन की रोमांचकारी घटना का वर्णन करते हुए कहता है कि जब वह और उसका छोटा भाई जंगल में झरबेरी के पेड़ से बेर तोड़कर खा रहे थे तब लेखक के बड़े भाई ने उन्हें बुलाया एवं उन्हें कुछ महत्वपूर्ण पत्र देकर पत्रों को मक्खनपुर डाकखाने में डालकर आने के लिए कहा। साथ ही भाई साहब ने उन्हें तेजी से जाने को कहा जिससे पत्र समय से डाक में गिर जाए तथा शाम की डाक से ही निकल जाए। जाड़े के दिन थे तथा हवा के प्रकोप के कारण शरीर में कँपकँपी लग रही थी। हवा इतनी ठंडी थी कि जो शरीर को अंदर तक चीर रही थी। इसलिए दोनों भाइयों ने अपनी धोती को कानों से बाँध लिया था। लेखक की माँ ने चबाने के लिए थोड़े चने बाँध दिए थे। लेखक और उसका छोटा भाई दोनों अपने-अपने डंडे लेकर मक्खनपुर जाने के लिए घर से निकल पड़े। लेखक का डंडा बबूल का था। उस डंडे से उसे इतना प्यार अथवा लगाव था कि आज प्रौढ़ावस्था में भी लेखक को रायफल से उतना लगाव नहीं है। अर्थात् अपनी रक्षा के लिए लेखक को अपने डंडे पर अत्यधिक भरोसा था कि डंडे के साथ वह स्वयं को इतना सुरक्षित समझता था, जितना कि रायफल के साथ व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित समझता है। उसका डंडे पर यह भरोसा यूँ ही नहीं था, वह डंडा चलाने में अत्यधिक निपुण था, इसका प्रमाण यह था कि उसने डंडे से अनेक साँपों को मार डाला था। उसका वह डंडा

साँपों के लिए विष्णु की सवारी गरुड़ के समान साक्षात् यमराज था। जैसे गरुड़ देखते-ही-देखते पलभर में साँप को मार डालता है, वैसे ही लेखक डंडे से पलक झपकते ही साँप को मौत के घाट उतार देता था। वे उस डंडे से हर साल स्कूल जाते समय गाँव और मक्खनपुर के बीच में पड़ने वाले आम के पेड़ों से खूब आम झाड़ते थे। इसलिए वह बिना जुबान का डंडा लेखक के लिए लकड़ी का एक टुकड़ा मात्र न था, बल्कि वह तो जीता-जागता एक बहादुर साथी था। लेखक और उसका भाई दोनों अत्यधिक प्रसन्नता के साथ मक्खनपुर की ओर तेजी से जाने लगे; क्योंकि उन्हें दिन छिपने से पहले चिट्ठियाँ डाकखाने में डालकर घर वापस आना था। लेखक के कुर्ते में जेबें नहीं थी; अत: उसने चिट्ठियों को सिर पर अपनी टोपी के नीचे सुरक्षित रख लिया।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** स्मृति **लेखक–** श्रीराम शर्मा

(ब) भाई साहब ने पत्रों को डाकखाने में जल्दी डालने के लिए क्यों कहा?

उ०– भाई साहब ने पत्रों को डाकखाने में जल्दी डालने के लिए इसलिए कहा जिससे पत्र शाम की डाक से चले जाएँ क्योंकि वे बहुत महत्वपूर्ण थे।

(स) बबूल के डंडे की तुलना किससे की गई है?

उ०– बबूल के डंडे की तुलना रायफल और विष्णु के वाहन गरुड़ से की गई है।

(द) ठंड से बचने के लिए लेखक ने क्या कहा?

उ०– ठंड से बचने के लिए लेखक ने अपनी धोती को कानों से बाँध लिया।

(य) 'नारायण-वाहन' का क्या आशय है?

उ०– 'नारायण-वाहन' का अर्थ यद्यपि विष्णु की सवारी (गरुड़) है, किंतु यहाँ उसका आशय 'यमदूत' अथवा 'यमराज' है।

(र) मूक डंडे का सजीव प्रतीत होने से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उ०– लेखक का मूक डंडा हर साल उसे सजीव साथी की तरह आम के पेड़ों से आम तोड़कर उपलब्ध कराता था, इसलिए लेखक को अपना डंडा सजीव-सा प्रतीत होता था।

2. कुएँ की पाट पर ---------------- सिसक रहा था।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– बड़े भाई द्वारा दी गई चिट्ठियाँ कुएँ में गिर जाने पर लेखक और उसके छोटे भाई की क्या स्थिति हुई, इसका मार्मिक वर्णन यहाँ किया गया है।

व्याख्या– चिट्ठियाँ कुएँ में गिर जाने पर लेखक और उसका छोटा भाई कुएँ के किनारे बने चबूतरे पर बैठकर रोने लगे। छोटा भाई तो जोर-जोर से दहाड़े मार-मारकर रो रहा था, जबकि स्वयं लेखक चुपचाप अपनी आँखों से आँसू बहाता था। रोते हुए लेखक के मुख से यद्यपि कोई आवाज न निकलती थी, किंतु उसकी आँखों में रह रहकर आँसू भर आते थे और फिर वे आँसू चुपचाप उसके गालों पर ऐसे ढुलक जाते थे, जैसे चूल्हे पर रखी पतीली में उफान आने पर उसका ढक्कन थोड़ा ऊपर उठ जाता है और उससे पानी की बूँदें बाहर की ओर टपककर पतीली पर ढुलक जाती हैं। पत्रों के न पाने की निराशा, बड़े भाई द्वारा पिटाई का डर और घबराहट के कारण लेखक की स्थिति ठीक चूल्हे पर रखी पतीली की भाँति थी। भय और घबराहट के कारण मन में रुक-रुककर रोने का उफान आता था और उसकी आँखों की पलकों के ढक्कन उस उफानरूपी भावों को भीतर-ही-भीतर रोकने की कोशिश करते। उफान की तीव्रता पलकों के ढकने को ऊपर उठा ही देती थी और उसकी आँखों में उमड़े आँसू उसके गालों पर ढुलक जाते थे। उस समय उसे माँ की बहुत याद आ रही थी। यदि माँ वहीं-कहीं आस-पास ही होती तो लेखक उसकी गोद में जाकर छिप जाता। लेखक का मन करता था कि इस मुसीबत की घड़ी में आकर माँ अपनी छाती से लगाकर खूब लाड़-प्यार करे और यह कहकर उन्हें भय से मुक्त कर दे कि चलो चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई तो कोई बात नहीं, उन्हें दुबारा लिखकर डाकखाने में डाल दिया जाएगा।

लेखक का मन करता था कि कुएँ में मिट्टी डाल दी जाए और घर जाकर झूठ बोल दे कि चिट्ठियाँ डाकखाने में डाल दी परंतु उस समय लेखक झूठ बोलना नहीं जानता था। लेखक को डर था कि घर लौटकर सच बोलने पर उसकी उसी तरह पिटाई होगी जिस तरह रूई को पिनते समय उसकी होती है। मार खाने की कल्पना से लेखक का शरीर ही नहीं मन भी

काँप गया था। सच बोलकर पिटने के भय और झूठ बोलने के कारण चिट्ठियों के न पहुँचने की ग्लानि के बोझ से वह बैठा आँसू बहा रहा था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– स्मृति **लेखक–** श्रीराम शर्मा

(ब) दोनों भाइयों के रोने में क्या अंतर था?

उ०– लेखक चुपचाप रोता था, उसकी आँखों में रह-रहकर आँसू उमड़कर उसके गालों पर ढुलक जाते थे, किंतु छोटा भाई दहाड़े मार-मारकर जोर-जोर से रोता था।

(स) रोने का उफान आने का क्या कारण था?

उ०– चिट्ठियाँ न मिलने की निराशा, बड़े भाई द्वारा पिटाई का डर और घबराहट रोने के उफान आने का कारण था।

(द) लेखक द्वारा माँ की गोद की याद आने का क्या कारण था?

उ०– लेखक को माँ की गोद की याद इसलिए आई; क्योंकि ऐसे भय के समय में वही एक आश्रय हो सकता था, जो सांत्वना देकर उसे उस भय से मुक्त कर सकती थी।

(य) लेखक उस समय किस बोझ से दबा हुआ था?

उ०– लेखक उस समय सच बोलकर पिटाई के भय तथा झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा हुआ था।

3. दृढ़ संकल्प से ------------------ घुसने की ठानी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस कथा में लेखक ने अपने बचपन की एक रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। बाल-सुलभ चेष्टाओं का चित्रण भी इसमें विशेष रूप से द्रष्टव्य है। प्रस्तुत अंश में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि दृढ़-निश्चय से मनुष्य सबकुछ कर सकता है।

व्याख्या– जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने का दृढ़-निश्चय कर लेता है, तब उसके मन की उलझन स्वयं ही समाप्त हो जाती है। मन में दुविधा की स्थिति समाप्त हो जाने से उसे किसी भी बात का भय नहीं रह जाता है। लेखक कहता है कि मैंने भी दृढ़-निश्चय कर लिया था कि अंधे कुएँ में मेरे हाथ से जो चिट्ठियाँ गिर पड़ी हैं, उन्हें मैं कुएँ में घुसकर निकालूँगा। इस सूखे कुएँ में एक साँप रहता था। साँप के रहते कुएँ में मेरा प्रवेश करना बड़ा दुष्कर और संकटपूर्ण कार्य था; पर जो लोग अपने प्राण हथेली पर रख लेते हैं, उनके लिए कोई भय शेष नहीं रह जाता।

लेखक आगे कहता है कि जब कोई व्यक्ति मूर्खता या अत्यधिक बुद्धिमत्ता के कारण जान-बूझकर अपने आपको मौत के मुँह में ढकेल दे, तब ऐसा व्यक्ति पूरे संसार से अकेला ही टक्कर लेने के तैयार हो जाता है। इस संघर्ष के परिणाम की चिंता उसे नहीं रहती। कर्म करना मनुष्य का कार्य है और फल देना ईश्वर के अधीन है। मैंने भी यही सोच लिया और कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने और साँप से भिड़ने का निर्णय कर लिया। लेखक ने अपना निर्णय कर लिया था, भले ही उसकी मृत्यु हो जाए अथवा साँप से बचकर उसका दूसरा जन्म हो इसकी उसे कोई परवाह न थी। परंतु लेखक को यह विश्वास था कि वह अपने डंडे से साँप को मारकर फिर चिट्ठियों को उठा लेगा और इसी पक्के विश्वास के कारण ही उसने कुएँ में घुसने का निश्चय किया था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– स्मृति **लेखक–** श्रीराम शर्मा

(ब) किस प्रकार दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं?

उ०– जब व्यक्ति किसी कार्य के विषय में दृढ़-निश्चय कर लेता है तो उस कार्य को करने अथवा न करने की दुविधारूपी बेड़ियाँ कट जाती हैं।

(स) लेखक ने क्या करने का निश्चय किया?

उ०– लेखक ने कुएँ में घुसकर चिट्ठियाँ निकालने का निश्चय किया।

(द) क्या निकालने के लिए लेखक विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया?

उ०– लेखक चिट्ठियाँ निकालने के लिए विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया।

(य) 'मौत का आलिंगन' और 'साँप से बचकर दूसरा जन्म' इनमें लेखक के कहने का क्या अभिप्राय है?

उ०– 'मौत का आलिंगन' और 'साँप से बचकर दूसरा जन्म' से लेखक का अभिप्राय 'मृत्यु' तथा 'मृत्यु का सामना करके उसे बचने से है।'

4. छोटा भाई रोता था ....छोटा भाई भी नंगा हुआ।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में लेखक ने अपने बचपन की एक रोमांचकारी स्मृति-कथा का वर्णन किया है। जब लेखक ने कुएँ के भीतर से चिट्ठियाँ निकालने का दृढ़ निश्चय कर लिया, अर्थात् जब वह दुविधा मुक्त हो गया, उसी के बाद की स्थिति का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या–श्रीराम शर्मा कहते हैं कि जब उन्होंने चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरने का संकल्प कर लिया, तो उनके साथ आने वाला उनका छोटा भाई रोने लगा। कुएँ में नीचे साँप था और उसके रोने का अर्थ स्पष्ट था कि साँप बड़े भाई को (लेखक को) काट लेगा और वह मर जाएगा। लेकिन इस बात को छोटा भाई स्पष्ट रूप से कहता नहीं था।

लेखक कहता है कि नीचे साक्षात् मौत नग्नरूप में तैयार बैठी थी और उससे लड़ने के लिए लेखक को भी नग्न होना पड़ा; अर्थात् उन्हें अपनी तथा अपने छोटे भाई की धोती उतारकर, उन्हें आपस में जोड़कर रस्सी का रूप देकर कुएँ में उतरने की तैयारी करनी पड़ी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– स्मृति **लेखक–** श्रीराम शर्मा

(ब) मौत किस रूप में कुएँ में बैठी थी?

उ०– मौत साँप के रूप में कुएँ में बैठी थी।

(स) मौत सजीव और नग्न कैसे है?

उ०– कुएँ में बैठे साँप के काटने पर मौत निश्चित थी; इस प्रकार से मौत साँप के रूप में सजीव थी। साँप किसी आवरण के भीतर नहीं छिपा था, बल्कि नग्न रूप में था; जैसे ही लेखक वहाँ पहुँचता, वह सीधा उसके संपर्क में आता और उसके काटने से उसकी मौत हो जाती; अत: मौत सजीव के साथ-साथ नग्न भी थी।

(द) 'नग्न मौत के मुठभेड़ के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– यहाँ लेखक का आशय यह है कि उसे साँप का सामना करने के लिए अपनी धोती उतारकर नंगा होना पड़ा।

5. मनुष्य का अनुमान ------------------ मुझे भी ले जाता।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इसमें लेखक ने उस स्थिति का वर्णन किया है, जब वह कुएँ में गिर पड़ी चिट्ठियों को निकालने के लिए कुएँ में उतर गया था। कुएँ में साँप का सामना करते समय उसके मन में क्या-क्या भाव उत्पन्न हुए, उन्हीं का वर्णन यहाँ किया गया है।

व्याख्या– लेखक ने इन पंक्तियों में वर्णन किया है कि मुझे अपना कार्य, जिसके लिए मैं कुएँ के धरातल पर पहुँचा था, असंभव-सा लगने लगा। मेरे मन में विचार आया कि मनुष्य सोचता तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें हैं, परंतु समय आने पर उसकी सारी योजनाएँ और उम्मींदें झूठी सिद्ध होती हैं। साँप का सामना होते ही मुझे अपनी आशा और योजना का पूरा होना असंभव लगने लगा। मुझे प्रतीत होने लगा कि साँप के समीप पड़ी हुई चिट्ठियाँ उठाने का मेरा दुस्साहस सफल नहीं हो सकेगा क्योंकि कुएँ में डंडा चलाने का स्थान नहीं था और लेखक डंडे से साँप को मारने के विश्वास पर ही कुएँ में आया था। कुआँ कच्चा था, जिसका व्यास कम था और डंडा या लाठी चलाने के लिए पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। साँप के फन को डंडे से दबाया जा सकता था परंतु ऐसा करना मौत को पुकारना था क्योंकि अगर साँप का फन या उसके पास का भाग डंडे से न दबता तो वह पलटकर वार जरूर करता और अगर वह फन को दबा भी देता तो वह उसके पास पड़ी चिट्ठियों को कैसे उठाता क्योंकि दो चिट्ठियाँ साँप के पास सटी पड़ी थी। साँप और लेखक दोनों अपने-अपने मोरचे पर डटे थे। कुएँ में खड़े हुए लेखक को चार या पाँच मिनट का समय हो गया था। लेखक कहता है कि उसका

मोरचा कमजोर था क्योंकि साँप के आक्रमण पर यदि वह साँप को मार भी देता तो वह अपने दाँतों द्वारा विष लेखक के शरीर में उड़ेलकर उसे भी अपने साथ काल का ग्रास बना देता।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– स्मृति **लेखक–** श्रीराम शर्मा

(ब) 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं।' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– यहाँ लेखक का आशय है कि मनुष्य की भावी योजनाएँ और अनुमान सदैव सफल और सही नहीं होते, बल्कि अनेक बार तो इसके ठीक विपरीत होता है।

(स) लेखक को अपनी योजना असंभव क्यों प्रतीत हो रही थी?

उ०– लेखक को कुएँ में नीचे उतरकर साँप को मारकर चिट्ठियाँ प्राप्त करने की अपनी योजना असंभव होती प्रतीत हुई; क्योंकि चिट्ठियाँ साँप के बिल्कुल समीप पड़ी थीं और साँप को मारने के लिए कुएँ में स्थान कम होने के कारण डंडा नहीं चलाया जा सकता था।

(द) कुएँ में चिट्ठियों के पड़े होने की स्थिति क्या थी?

उ०– कुएँ में दो चिट्ठियाँ साँप के पास सटी हुई पड़ी थी तथा एक चिट्टी लेखक की ओर थी।

(य) क्या कुएँ में डंडा चलाने का स्थान था?

उ०– कुएँ में डंडा चलाने का पर्याप्त स्थान नहीं था क्योंकि कुआँ कच्चा था और कच्चे कुएँ का व्यास कम होता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्रीराम शर्मा का जन्म हुआ था–

(अ) **सन् 1896 में** (ब) सन् 1874 में

(स) सन् 1751 में (द) सन् 1879 में

2. श्रीराम शर्मा द्वारा संपादित पत्र है–

(अ) ब्राह्मण (ब) मर्यादा

(स) माधुरी (द) **विशाल भारत**

3. श्रीराम शर्मा ने बी०ए० की परीक्षा किस विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की?

(अ) काशी विद्यापीठ (ब) लखनऊ विश्वविद्यालय

(स) **इलाहाबाद विश्वविद्यालय** (द) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

4. श्रीराम शर्मा जी की कृति 'सेवाग्राम की डायरी' किस विधा की रचना है?

(अ) जीवनी (ब) कथा-साहित्य

(स) **संस्मरण** (द) शिकार-साहित्य

5. 'सन् बयालीस के संस्मरण' में किस शैली के दर्शन होते हैं?

(अ) चित्रात्मक शैली (ब) वर्णनात्मक शैली

(स) **आत्मकथात्मक शैली** (द) विवेचनात्मक शैली

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए–

समस्त पद	**समास विग्रह**
भयंकर	बहुत डरावना
वानर-टोली	वानरों की टोली
विषधर	विष को धारण करने वाला
मृगसमूह	मृगों का समूह

समस्त पद	समास विग्रह
चक्षु:श्रवा	चक्षुओं से सुनने वाला
मृगशावक	मृग का शावक
प्रसन्नवदन	प्रसन्न मुख से

2. श्रीराम शर्मा के 'शिकार-साहित्य' की कोई अन्य रचना पढ़िए और उसके रोमांचकारी स्थलों को रेखांकित कीजिए।

विद्यार्थी स्वयं करें।

3. अपने शिकार साहित्य में श्रीराम शर्मा ने दृश्यों के चित्र-से-खींच दिए हैं। 'स्मृति' पाठ के कुछ शब्द-चित्रों का चयन कीजिए।

उ०– 'स्मृति' पाठ में श्रीराम शर्मा ने निम्नलिखित दृश्यों का चित्रण किया है—

(अ) दिसंबर का आखिर या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो-चार दिन पूर्व कुछ बूँदा-बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी।

(ब) कुआँ कच्चा था और चौबीस हाथ (36 फुट) गहरा था। उसमें पानी न था।

(स) कुएँ के धरातल से जब चार-पाँच गज रहा होगा, तब ध्यान से नीचे को देखा। अकल चकरा गई। साँप फन फैलाए धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था।

(द) कच्चे कुएँ का व्यास बहुत कम होता है। नीचे तो वह डेढ़ गज से अधिक होता ही नहीं।

(य) तनिक झूलकर मैंने अपने पैर कुएँ की बगल से सटाए और कुछ धक्के के साथ अपने प्रतिद्वंद्वी के सम्मुख कुएँ की दूसरी ओर डेढ़ गज पर कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया।

(र) धीरे-धीरे डंडा चिट्ठी की ओर बढ़ा और ज्यों ही चिट्ठी के पास पहुँचा कि फुँकार के साथ काली बिजली तड़पी और डंडे पर गिरी। हृदय में कंप हुआ और हाथों ने आज्ञा न मानी। डंडा छूट पड़ा। मैं तो न मालूम कितना ऊपर उछल गया।

(ल) उस ग्यारह वर्ष की अवस्था में मैं 36 फुट चढ़ा। बाँहे भर गई थी। छाती फूल गई थी। धौंकनी चल रही थी।

4. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए–

आँखें चार होना– (निगाह मिलाना) बातों ही बातों में राजू व आशा की **आँखें चार हो गई।**

बेहाल होना– (बुरी दशा होना) पुत्र की आकस्मिक मृत्यु पर उसके माता-पिता का हाल **बेहाल हो गया।**

बेड़ियाँ कट जाना– (स्वतंत्र हो जाना) 15 अगस्त 1947 को भारतमाता की **बेड़ियाँ कट गईं।**

पैंतरे पर डटना– (मुकाबले में रहना) भारतीय क्रिकेट टीम दिग्गज खिलाड़ियों के आउट होने के बाद भी **पैंतरे पर डटी रही।**

पीठ दिखाना– (युद्ध से भाग जाना) भारतीय वीर लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गए, परंतु उन्होंने कभी युद्ध में **पीठ नहीं दिखाई।**

कलेजे पर फिरना– (आघात पहुँचना) विजय के अपने माता-पिता के लिए अपमानजनक शब्द उसके **कलेजे पर फिर गए।**

दुधारी तलवार– (दोहरा संकट) रामप्रसाद के सिर पर **दुधारी तलवार** लटक रही थी कि वह अपने पुत्र को व्यापार के लिए कुछ धन दे या पुत्री का विवाह करें।

मेरी तो जान निकल गई– (बहुत घबरा जाना) सड़क पर होने वाली मोटर दुर्घटना को देखकर **मेरी तो जान ही निकल गई।**

मोरचे पर पड़े होना– (घात-प्रतिघात के लिए उद्यत होना) सीमा पर दोनों ओर के सैनिक **मोरचे पर पड़े हैं।**

आकाश कुसुम होना– (असंभव होना) रवि मैट्रिक परीक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण हो चुका है। लगता है इस बार भी उसके लिए मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण होना **आकाश कुसुम होना** है।

नारायण-वाहन हो चुकना (मौत का साधन बनना) अवांछित जगहों पर बने अत्यधिक ऊँचे गति-अवरोधक लोगों के लिए **नारायण-वाहन हो चुके** हैं।

बिजली-सी गिरना (मानसिक आघात लगना) आतंकवादी हमले में अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर सुनीता पर **बिजली-सी गिर पड़ी।**

दिन का बुढ़ापा बढ़ता जाता (दिन छिपने के समीप होना) **दिन का बुढ़ापा बढ़ता देखकर** शिकारी दल ने अपना सामान समेटकर शिविर की ओर प्रस्थान किया।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

6. निष्ठामूर्ति कस्तूरबा (काका कालेलकर)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. काका कालेलकर जी की जन्म-तिथि एवं जन्म-स्थान बताइए।

उ०– काका कालेलकर जी का जन्म 1 दिसंबर सन् 1885 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था।

2. काका जी का परिवार मूल रूप से कहाँ का निवासी था?

उ०– काका जी का परिवार मूल रूप से कर्नाटक के करवार जिले का रहने वाला था।

3. काका जी की मातृभाषा कौन-सी थी?

उ०– काका जी की मातृभाषा कोंकणी थी।

4. कालेलकर जी 'काका' नाम से कब जाने गए?

उ०– कालेलकर जी जब गाँधी जी के निकटतम सहयोगी रहे तब से काका के नाम से जाने गए।

5. काका जी को किस पत्र के संपादक होने का गौरव प्राप्त हुआ?

उ०– काका जी को 'सर्वोदय पत्रिका' का संपादक होने का गौरव प्राप्त हुआ।

6. भारत सरकार द्वारा काका जी किस उपाधि से अलंकृत हुए?

उ०– भारत सरकार द्वारा काका जी 'पद्मभूषण' उपाधि से अलंकृत किए गए।

7. काका जी ने हिंदी के प्रचार को किसका दर्जा दिया तथा किस ओर प्रचार कार्य किया?

उ०– काका जी ने हिंदी के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम का दर्जा दिया तथा दक्षिण में सम्मेलन की ओर से प्रचार किया।

8. काका जी किस-किस भाषा के ज्ञाता थे?

उ०– काका जी कोंकणी, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती और बांग्ला आदि भाषाओं के ज्ञाता थे।

9. गुजरात में हिंदी प्रचार में जो सफलता मिली, उसका श्रेय किसे जाता है?

उ०– गुजरात में हिंदी प्रचार में जो सफलता मिली, उसका श्रेय काका कालेलकर को जाता है।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. काका कालेलकर का जीवन परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– काका कालेलकर भारत के स्वाधीनता संग्राम के निर्भीक सेनानी, संत पुरुष तथा गाँधी जी के अनुयायी थे। हिंदी के मूक साधक काका कालेलकर का एक साहित्यिक संत के रूप में और दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

जीवन परिचय– काका कालेलकर का जन्म 1 दिसंबर सन् 1885 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। इनके पिता का नाम बालकृष्ण कालेलकर था। इन्होंने बी०ए० की उपाधि मुंबई विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा बड़ौदा के गंगानाथ भारतीय सार्वजनिक विद्यालय में आचार्य पद को सुशोभित किया।

काका कालेलकर के नाम से विख्यात दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर भारत के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, पत्रकार और स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी थे। उनका परिवार मूल रूप से कर्नाटक के करवार जिले का रहने वाला था और उनकी मातृभाषा कोंकणी थी। लेकिन सालों से गुजरात में बस जाने के कारण गुजराती भाषा पर उनका बहुत अच्छा अधिकार था और वे गुजराती के प्रख्यात लेखक समझे जाते थे।

काका कालेलकर साबरमती आश्रम में प्रधानाध्यापक के पद पर सुशोभित थे और अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की

स्थापना में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधी जी के निकटतम सहयोगी होने के कारण ही वे काका के नाम से जाने गए। वे 'सर्वोदय पत्रिका' के संपादक भी रहे। 1930 में पूना की यरवदा जेल में गाँधी जी के साथ उन्होंने महत्वपूर्ण समय बिताया।

कार्यक्षेत्र– काका कालेलकर सच्चे बुद्धिजीवी व्यक्ति थे। लिखना सदा से उनका व्यसन रहा। सार्वजनिक कार्य की अनिश्चितता और व्यस्तताओं के बावजूद यदि उन्होंने बीस से ऊपर ग्रंथों की रचना कर डाली तो इस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इनमें से कम-से-कम 5-6 ग्रंथ उन्होंने मूल रूप से हिंदी में लिखे। यहाँ इस बात का उल्लेख भी अनुपयुक्त न होगा कि दो-चार को छोड़ बाकी ग्रंथों का अनुवाद स्वयं काका साहब ने किया, अत: मौलिक ग्रंथ हो या अनूदित, वह काका साहब की ही भाषा-शैली का परिचायक है।

आचार्य काका साहब कालेलकर जी का नाम हिंदी भाषा के विकास और प्रचार के साथ जुड़ा हुआ है। 1938 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अधिवेशन में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था, 'राष्ट्रभाषा प्रचार हमारा राष्ट्रीय कार्यक्रम है।' अपने इसी वक्तव्य पर दृढ़ रहते हुए उन्होंने हिंदी के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम का दर्जा दिया।

उन्होंने पहले स्वयं हिंदी सीखी और फिर कई वर्ष तक दक्षिण में सम्मेलन की ओर से प्रचार-कार्य किया। अपनी सूझ-बूझ, विलक्षणता और व्यापक अध्ययन के कारण उनकी गणना प्रमुख अध्यापकों और व्यवस्थापकों में होने लगी। हिंदी-प्रचार के कार्य में जहाँ कहीं कोई दोष दिखाई देते अथवा किन्हीं कारणों से उसकी प्रगति रुक जाती, गाँधी जी काका कालेलकर को जाँच के लिए वहीं भेजते। इस प्रकार के नाजुक काम काका कालेलकर ने सदा सफलता से किए।

साहित्य अकादमी में काका साहब गुजराती भाषा के प्रतिनिधि रहे। गुजरात में हिंदी-प्रचार को जो सफलता मिली, उसका मुख्य श्रेय काका साहब को है। निरंतर हिंदी साहित्य की सेवा करते हुए 21 अगस्त 1981 को इनकी मृत्यु हो गई।

कृतियाँ– काका कालेलकर जी की भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट आस्था थी। इनकी रचनाओं में भी भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों की झलक दिखाई देती है। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) निबंध संग्रह– जीवन-साहित्य एवं जीवन-काव्य

(ब) यात्रावृत– हिमालय प्रवास, यात्रा, लोकमाता, उस पार के पड़ोसी

(स) संस्मरण– बापू की झाँकियाँ

(द) आत्मचरित– सर्वोदय, जीवन लीला

2. भाषा-शैली की दृष्टि से काका कालेलकर का मूल्यांकन कीजिए।

उ०– भाषा-शैली का मूल्यांकन– काका कालेलकर की भाषा शुद्ध परिष्कृत खड़ीबोली है। उसमें प्रवाह, ओज तथा अकृत्रिमता है। काका जी अनेक भाषाओं को जानते थे, जिसके कारण उनके पास शब्दों का विशाल भंडार था। तत्सम, तद्भव आदि इनकी भाषा में एक साथ देखे जा सकते हैं। इनकी रचनाओं में गुजराती व मराठी शब्दों का प्रयोग व मुहावरे और कहावतों का प्रयोग देखने को मिलता है। यद्यपि काका जी अहिंदी भाषी थे, फिर भी हिंदी के प्रति उनके समर्पण ने उनकी भाषा को सशक्त एवं प्रौढ़ बना दिया है। इन्होंने भाव, विषय एवं प्रसंग के अनुसार विभिन्न शैलियाँ अपनाई हैं।

(अ) परिचयात्मक शैली– किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का परिचय देते समय इन्होंने इस शैली को अपनाया है। इस शैली पर आधारित इनकी भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहमयी है। प्रसाद गुण इस शैली की मुख्य विशेषता है।

(ब) विवेचनात्मक शैली– जहाँ भी गंभीर विषयों की विवेचना करनी पड़ी है, वहाँ काका साहब ने इस शैली का प्रयोग किया है। इस शैली के प्रयोग से भाषा गंभीर तथा संस्कृतनिष्ठ हो गई है। विचार-तत्व प्रधान हो गया है। तार्किकता इस शैली की मुख्य विशेषता है।

(स) आत्मकथात्मक शैली– काका कालेलकर ने अपने संस्करणात्मक निबंधों और आत्मरचित में इस शैली का प्रयोग किया है।

(द) विवरणात्मक शैली– इस शैली का प्रयोग इनके यात्रावृत्तों में हुआ है। इनके द्वारा प्रस्तुत यथार्थ विवरणों में चित्रोपमता और सजीवता विद्यमान है।

(य) हास्य-व्यंग्यात्मक शैली– सामयिक समस्याओं पर लिखते समय इस संत की शैली में कहीं-कहीं पर बहुत ही शिष्ट हास्य और चुभता हुआ व्यंग्य भी उभरकर आता है। इस शैली की भाषा चुलबुली तथा मुहावरेदार हो गई है।

3. काका कालेलकर का हिंदी साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उ०– हिंदी साहित्य में स्थान– काका साहब मँजे हुए लेखक थे। किसी भी सुंदर दृश्य का वर्णन अथवा पेचीदा समस्या का

सुगम विश्लेषण उनके लिए आनंद का विषय रहे। उन्होंने देश, विदेशों का भ्रमण कर वहाँ के भूगोल का ही ज्ञान नहीं कराया, अपितु उन प्रदेशों और देशों की समस्याओं, उनके समाज और उनके रहन-सहन, उनकी विशेषताओं इत्यादि का स्थान-स्थान पर अपनी पुस्तकों में बड़ा सजीव वर्णन किया है। वे जीवन-दर्शन के जैसे उत्सुक विद्यार्थी थे, देश-दर्शन के भी वैसे ही शौकीन रहे।

हिंदी के मूक साधक काका कालेलकर का एक साहित्यिक संत के रूप में और दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक और सदैव अध्ययनरत रहने वाले साहित्यकार थे। इनकी रचनाओं में प्राचीन भारत की झलक देखने को मिलती है। किसी भी घटना का सजीव चित्र उपस्थित करने में ये बहुत कुशल थे। काका साहब महान देशभक्त, उच्चकोटि के विद्वान, विचारक थे। हिंदी जगत उनकी नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा।

4. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' श्री काका कालेलकर द्वारा रचित एक संस्मरणात्मक निबंध है। प्रस्तुत निबंध में राष्ट्रमाता कस्तूरबा के पतिव्रत धर्म, त्याग व सेवापरायणता जैसे महान् गुणों का वर्णन किया गया है। यह निबंध भारतीय नारियों को एक आदर्श जीवन की प्रेरणा प्रदान करता है। लेखक कहते है कि कस्तूरबा महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष की पत्नी थी। जिसे राष्ट्र ने आदर से 'बापूजी' कहा। उसी प्रकार कस्तूरबा को 'बा' का उपनाम दिया। परंतु कस्तूरबा ने यह उपाधि अपने सद्गुणों के आधार पर प्राप्त की। कस्तूरबा के गुणों के कारण ही राष्ट्र उनका आदर करता है। उन्होंने राष्ट्र के सामने आदर्श की एक जीवित प्रतिमा प्रस्तुत की। लेखक कहते हैं कि कस्तूरबा निरक्षर थी। दक्षिण अफ्रीका में रहने के कारण वह कुछ अंग्रेजी शब्द बोल और समझ सकती थी और विदेशी मेहमानों के आगमन पर उन्हीं शब्दों के द्वारा उनका आतिथ्य करती थी। कस्तूरबा को गीता और रामायण पर अपार श्रद्धा थी। वह उन्हें पढ़ने का प्रयास करती थी। लेखक कहते हैं कि भले ही कस्तूरबा सती सीता का वृत्तांत न पढ़ सकी, परंतु यथार्थ जीवन में उन्होंने सीता का ही अनुसरण किया। कस्तूरबा ने दुनिया की दो अमोघ शक्तियों शब्द और कृति में से कृति की नम्र उपासना करके अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया। कस्तूरबा अपने निर्णय पर अटल रहती थी। वह अपनी धर्मनिष्ठा पर स्थायी थी भले ही इसके लिए कुछ भी सहन क्यों न करना पड़े। कस्तूरबा सहनशील थी। लेखक कस्तूरबा से प्रथम बार शांति निकेतन में मिले। लेखक को लगा उसे आध्यात्मिक माता-पिता प्राप्त हो गए हैं जब सरकार ने कस्तूरबा को सभा में जिसमें महात्मा जी बोलने वाले थे, न जाने के लिए कहा, उन्होंने बिना किसी डर के अपना जाने का निर्णय सुना दिया। कस्तूरबा एक सादा जीवन व्यतीत करती थी। उनके लिए परतंत्रता का विचार असहनीय था। इसी परतंत्रता के बंधन से मुक्त होने के लिए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। कस्तूरबा को अपना कर्तव्य ज्ञान था, वह दो शब्दों में अपना फैसला सुना देती थी। आश्रम में कस्तूरबा सभी के लिए माँ के समान थी। वह छोटे व बड़े सभी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करती थी। कस्तूरबा में आलस्य नहीं था। वृद्धावस्था में भी वह रसोई में जाकर कार्य किया करती थी। अध्यक्षीय भाषणों के समय उनके विशिष्ट गुण प्रकट होते थे। इन्हीं गुणों के कारण राष्ट्र ने इनका आदर किया। ये गुण कस्तूरबा को अपने परिवार से प्राप्त हुए, जिनके बल पर वह असाधारण परिस्थितियों का सामना कर लेती थी। आज राष्ट्र के सभी लोग- हिंदू, सिक्ख, मुस्लिम सभी उनकों याद करते हैं और उनके जैसे गुण अपनाने की प्रेरणा लेते हैं।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. उनकी निष्ठा ------------------ जीवनसिद्धि प्राप्त की।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी के 'गद्य खंड' के 'काका कालेलकर' द्वारा लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' नामक निबंध से अवतरित है।

प्रसंग– इस अवतरण में लेखक ने कस्तूरबा के पढ़े-लिखे न होने पर भी उनकी रामायण के प्रति-अगाध श्रद्धा के बारे में बताया है। लेखक ने महात्मा गाँधी व कस्तूरबा का उदाहरण देते हुए शब्द (वचन) और कर्म में से कर्म को अधिक महत्वपूर्ण बताया है।

व्याख्या– काका जी कहते है कि कस्तूरबा को गीता पर अपार श्रद्धा थी तथा दूसरा ग्रंथ जिसके प्रति उनकी श्रद्धा थी, रामायण था। कस्तूरबा जी को दोपहर में जो समय मिलता उसमें वह चश्मा लगाकर मोटे अक्षरों में छपी रामायण के दोहे पढ़ने बैठ जाती। अर्थात फुरसत के समय में वह आराम न करके रामायण के दोहे पढ़ती थी। वह दृश्य देखकर लेखक व उसके मित्रों को बड़ा आनंद आता था। कस्तूरबा निरक्षर होने के कारण रामायण का सही पाठ नहीं कर पाती थी। लेखक कहते हैं कि कस्तूरबा भले ही सही रूप से तुलसीदास जी कृत रामायण में सती-सीता का वृत्तांत न समझ पाई, परंतु उन्होंने साक्षात रूप में सती सीता का उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत किया। वे सीता के समान कर्तव्यनिष्ठ, पतिव्रता, शीलवती नारी थी। जिनका अनुसरण कर कोई भी नारी महान बन सकती है।

संसार में दो अचूक शक्तियाँ हैं— एक है वचन तथा दूसरी है कर्म। ये शक्तियाँ अचूक इसलिए हैं कि ये कभी निष्फल नहीं होती। कुछ व्यक्ति अपने वचन (शब्द) से संसार का मार्गदर्शन करते हैं, किंतु शब्दों का इतना महत्व होते हुए भी कोरे शब्द तब तक बिल्कुल बेकार होते हैं, जब तक कि शब्द के साथ कर्म जुड़ा हुआ न हो। कर्म के बिना वचन और व्यवहार के बिना सिद्धांत खोखले सिद्ध होते हैं। उनका कोई महत्व नहीं होता, अत: लेखक ने कर्म या व्यवहार को अंतिम शक्ति कहा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपने जीवन में वचन तथा कर्म दोनों को ही अपनाया, अर्थात् जो कुछ उन्होंने कहा, उसे व्यवहार में भी कर दिखाया। उनके वचन और कर्म में कोई भेद नहीं था। 'शब्द' की तुलना में भी 'कृति' (कर्म) अधिक श्रेष्ठ है। कस्तूरबा ने इसीलिए कर्म की साधना की। उन्होंने अपने दैनिक जीवन में कर्म को महत्व दिया। उन्होंने शब्दों की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास किया। उन्होंने शास्त्रीय तथा सैद्धांतिक शब्दावली नहीं सीखी; अर्थात् किसी कार्य को दिखावा करके नहीं किया। वे जीवनभर विनम्रता के साथ 'कर्म-साधना' में लगी रही। इसी कर्म-साधना ने उन्हें राष्ट्रमाता के गौरवपूर्ण उच्च-सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** निष्ठामूर्ति कस्तूरबा **लेखक–** काका कालेलकर

(ब) लेखक ने कस्तूरबा की तुलना किससे की है?

उ०– लेखक ने कस्तूरबा की तुलना सती सीता से की है।

(स) शब्द की शक्ति के बारे में बताइए।

उ०– शब्द की शक्ति से आशय मनुष्य के वचनों की शक्ति से है। जिससे वे संसार का मार्गदर्शन करते हैं।

(द) संसार में कौन-सी दो महान शक्तियाँ हैं?

उ०– संसार में दो महान् शक्तियाँ हैं— शब्द की शक्ति और कर्म की शक्ति।

(य) कस्तूरबा ने जीवनसिद्धि को किस प्रकार प्राप्त किया?

उ०– कस्तूरबा ने कृति की विनम्र उपासना करके जीवनसिद्धि प्राप्त की।

(र) महात्मा जी ने किसकी उपासना की?

उ०– महात्मा गाँधी अपने मुख से जो वचन कह देते थे, फिर कर्म से उसका पालन भी करते थे। इस प्रकार उन्होंने शब्द और कृति दोनों की असाधारण उपासना की।

2. सरकार ने ------------------माँ के समान थीं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कस्तूरबा की कर्मनिष्ठा और कर्तव्यों के संदर्भ में उनके स्पष्ट दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या– काका कालेलकर जी कस्तूरबा की कर्मनिष्ठा और स्वाभिमान का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब आगा खाँ महल में सरकार ने उन्हें कैद किया हुआ था तब सभी सुविधाओं और महात्मा जी का साथ होते हुए भी वह परतंत्रता का अनुभव करती थी। सरकार ने उनके शरीर को कैद कर लिया था परंतु उनकी आत्मा यह कैद स्वीकार नहीं कर पाई और सारे बंधन तोड़कर उसी प्रकार स्वतंत्र हो गई जिस प्रकार से किसी पिंजड़े में बंद पक्षी पिंजड़े से स्वतंत्र होने के लिए अपने प्राणों का त्याग कर देता है। उसी प्रकार कस्तूरबा भी सरकार का यह बधंन तोड़ स्वतंत्र हो गई। उनके इस मौन त्याग ने भारत के स्वतंत्रता के आंदोलन में तेजी ला दी और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। इनके इस अभूतपूर्व बलिदान के कारण भारत में अंग्रेजी शासन की भारत पर हुकूमत कमजोर हो गई।

कस्तूरबा ने अपने सद्‌गुणों और कर्मनिष्ठा के कारण अपार ख्याति प्राप्त की। उन्होंने अपनी कर्मनिष्ठा के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि छोटे से कार्य को भी यदि पूर्ण निष्ठा के साथ किया जाए, तो उसका महत्व अधिक हो जाता है। बहुत-सी पुस्तकों को पढ़ लेने मात्र से ही कोई महान् नहीं बन सकता, वरन् अपने प्रत्येक कार्य को लगन, रुचि, तत्परता और निष्ठा के साथ संपन्न करने वाला व्यक्ति ही महान् बन सकता है। कस्तूरबा की कर्मनिष्ठा इसका स्पष्ट प्रमाण है। जिन लोगों को केवल पुस्तकीय ज्ञान होता है, वे कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के संबंध में प्राय: भ्रमित हो जाते हैं। उन्हें स्पष्ट रूप में यह ज्ञात नहीं हो पाता कि उन्हें किसी स्थिति विशेष में क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इसके विपरीत कर्मनिष्ठ लोगों के सामने इस प्रकार की संदेहजनक स्थिति कभी भी उत्पन्न नहीं होती। कस्तूरबा की कर्म में प्रबल निष्ठा थी, इसलिए उन्हें भी अपने किसी कर्त्तव्य

का निर्धारण करने में किसी भी प्रकार की दुविधा का सामना नहीं करना पड़ता था। अंधकार में दीपक के प्रकाश की भाँति, उन्हें अपने कर्त्तव्यों का स्पष्ट ज्ञान हो जाया करता था। किसी भी परिस्थिति में वे निश्चयपूर्वक यह निर्णय सुना दिया करती थी कि वे क्या कर सकती हैं और क्या नहीं। लेखक कहते हैं कि आश्रम में कस्तूरबा उनकी माँ के समान ही देखभाल करती थी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** निष्ठामूर्ति कस्तूरबा **लेखक–** काका कालेलकर

(ब) 'पिंजड़े का पक्षी' और 'सरकार की कैद' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– 'पिंजड़े का पक्षी' और 'सरकार की कैद' से लेखक का आशय परतंत्रता से है, जिसमें किसी की स्वतंत्रता को बाधित किया जाता है।

(स) कस्तूरबा कैसे स्वतंत्र हुई?

उ०– कस्तूरबा अपने प्राणों को त्याग कर स्वतंत्र हो गई।

(द) कृति का एक कण किससे अधिक मूल्यवान होता है?

उ०– कृति का एक कण शुद्ध और रोचक साहित्य के पहाड़ों से अधिक मूल्यवान होता है।

(य) शब्द शास्त्र में निपुण व्यक्तियों को कैसी दुविधा का सामना करता पड़ता है?

उ०– शब्द शास्त्र में निपुण अर्थात् जिन लोगों का पुस्तकीय ज्ञान विस्तृत है, उन्हें अनेक बार 'क्या करना चाहिए और क्या नहीं' की दुविधा का सामना करना पड़ता है।

(र) लेखक के अनुसार आश्रम में कस्तूरबा उन लोगों के लिए किसके समान थी?

उ०– लेखक के अनुसार आश्रम में कस्तूरबा उन लोगों के लिए माँ के समान थी।

3. आज के जमाने में ------------------ काफी मजबूत हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– स्त्री जीवन के संबंध में परिभाषा बदल जाने के पश्चात् आज भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर चहुँ ओर बिखरी पड़ी है।

व्याख्या– आज स्त्रियों के जीवन संबंधी प्रतिमान (आदर्श) बदल गए हैं। पुराने जमाने में स्त्री-शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता था, बल्कि जो स्त्री अधिक लज्जाशील और घरेलू होती थी, उसे ही सद्गृहणी माना जाता था। इसीलिए कस्तूरबा अशिक्षित थीं। आज सभी के लिए स्कूली पढ़ाई आवश्यक हो चुकी है। कस्तूरबा गाँधीजी की तरह घर पर ही रहकर गृहस्थी में रहने वाली नारी स्फूर्तिहीन और दक्षता से विरत मानी जाएगी। लेकिन कस्तूरबा ने अशिक्षित और महत्वाकांक्षारहित होने पर भी अपने आचरण से अनूठे आदर्श प्रस्तुत किए। जब अनूठे आदर्शों में एकांकी इस नारी की मृत्यु हुई तो स्मारक बनवाने हेतु आशा से कहीं अधिक धन एकत्रित कर लिया गया। यह इस बात का प्रमाण है कि नारी का प्राचीन रूप आज भी सार्वभौमिक है अर्थात् सब जगह उसी रूप को पूजनीय माना जाता है। निश्चित रूप से हमारी वैदिक संस्कृति आज भी हमारे संस्कारों मे सुवासित हो रही है। हमारे पुरातन संस्कार आज भी हमारे मानस में गहराई तक जुड़े हुए हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।

उ०– **पाठ–** निष्ठामूर्ति कस्तूरबा **लेखक–** काका कालेलकर

(ब) आज के जमाने में अशिक्षित स्त्री का जीवन यशस्वी या कृतार्थ क्यों नहीं कहा जा सकता?

उ०– आज के जमाने में अशिक्षित स्त्री का जीवन यशस्वी या कृतार्थ इसलिए नहीं कहा जा सकता; क्योंकि उसमें किसी तरह की महत्वाकांक्षा का उदय नहीं दिखाई देता।

(स) आज के जमाने के स्त्री के आदर्श और पुराने जमाने के स्त्री के आदर्श कैसे भिन्न हैं?

या

नए व पुराने जमाने की स्त्रियों के आदर्शों में क्या अंतर है?

उ०– आज उच्चशिक्षा-प्राप्त और अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील स्त्री को यशस्विनी और कृतार्थ

माना जाता है, जबकि पुराने जमाने में स्त्री के आदर्श इसके विपरीत थे। स्त्री-शिक्षा को अच्छा नहीं माना जाता था। महत्वाकांक्षिणी स्त्री को भी उच्छृंखल माना जाता था। उस समय लज्जाशीलता, संकोची, महत्वाकांक्षारहित घरेलू स्त्री को आदर्श माना जाता था।

(द) कस्तूरबा के मृत्योपरांत पूरे देश ने क्या तय किया?

उ०– कस्तूरबा के मृत्योपरांत पूरे देश ने उनका स्मारक बनाने का निश्चय किया।

(य) कस्तूरबा का स्मारक बनाने के लिए एकत्रित हुई बड़ी धनराशि क्या सिद्ध करती है?

उ०– कस्तूरबा का स्मारक बनाने के लिए स्वेच्छा से एकत्र हुई बड़ी निधि यह सिद्ध करती है कि स्त्री-विषयक हमारा प्राचीन तेजस्वी आदर्श आज भी देश को मान्य है।

4. यह सब ---------------- करने का होता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस अवतरण में लेखक ने कस्तूरबा के चारित्रिक गुणों पर प्रकाश डाला है। अशिक्षित होते हुए भी कस्तूरबा के चरित्र में श्रेष्ठता दिखाई देती है। लेखक इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहता है—

व्याख्या– काका जी कहते हैं कि कस्तूरबा जी निरक्षर थी फिर भी, उनमें सद्‌गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे जिनसे वह अपनी जीवन की तपस्या को साक्षात रूप दे पाई। यह सब सद्‌गुण और महानता कस्तूरबा ने कहाँ से ग्रहण की जबकि उन्होंने शिक्षा के द्वारा तो कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं किया था।

'राष्ट्रमाता कस्तूरबा' ने किसी शिक्षा-संस्था में जाकर सदाचार तथा महान् जीवन की शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। उनमें पारिवारिक संस्कारों के फलस्वरूप विकसित ऐसे श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे, जो आर्य-जाति में आदर्श माने जाते हैं। उनके पारिवारिक संस्कार बहुत दृढ़ थे। असामान्य परिस्थितियों का सामना करने के लिए वे अपने पारिवारिक संस्कारों को विस्तार दे देती थीं। अपने इन्हीं सदगुणों के बल पर वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त करती रही। उनकी इस सफलता का रहस्य यह भी है कि उनका हृदय शुद्ध था। जब कोई व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में भी शुद्ध भाव से साधना करता है, तो उस साधना की शक्ति अलौकिक होती है। साधना के लिए मन, वचन और कर्म की शुद्धता बहुत ही आवश्यक है। छोटी-छोटी बातों में शुद्ध भावना से साधना करने वाले व्यक्ति के सम्मुख चाहे कोई बड़ी बात ही क्यों न आ पड़े, उसका तेज व्यापक होकर कार्य करने लगता है। लेखक का मत है कि छोटी-छोटी बातों में सदाचारी रहने वाले व्यक्ति को बड़ी बात करने पर अपने सद्‌गुणों का केवल विस्तारभर करना होता है; अत: असाधारण परिस्थिति का सामना करने में भी उसे कोई कठिनाई नहीं होती। यही गुण माता कस्तूरबा में विद्यमान थे; अत: वे अपने सद्‌गुणों के विस्तार से प्रत्येक कठिनाई का सामना कर लेती थीं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– निष्ठामूर्ति कस्तूरबा **लेखक–** काका कालेलकर

(ब) कस्तूरबा को ये श्रेष्ठ गुण कहाँ से मिले थे?

उ०– कस्तूरबा को ये श्रेष्ठ गुण अपने परिवार से मिले थे।

(स) असाधारण मौका आने पर कस्तूरबा ने कैसे जीवनसिद्धि हासिल की?

उ०– असाधारण मौका आने पर कस्तूरबा ने अपने स्वाभाविक कौटुंबिक सदगुणों को विस्तार देकर जीवनसिद्धि हासिल की।

(द) चरित्रवान् मनुष्य की विशेषता पर प्रकाश डालिए।

उ०– चरित्रवान् व्यक्ति की यह विशेषता होती है कि वह कितना भी गंभीर प्रसंग आ जाए अथवा जीवन की परीक्षा का प्रश्न उपस्थित होने पर विचलित नहीं होता, बल्कि अपने चारित्रिक सद्‌गुणों को विस्तृतभर करता है और वह अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त कर लेता है।

(य) कस्तूरबा जी में किस प्रकार के सद्‌गुण थे?

उ०– कस्तूरबा जी में कर्मनिष्ठ, चरित्रवान, पतिव्रता आदि सद्‌गुण थे।

(र) किस पैमाने पर साधना का तेज लोकोत्तरी होता है?

उ०– छोटी-छोटी बातों में भी शुद्ध भाव से जो साधना की जाती है, उसका तेज लोकोत्तरी होता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. काका कालेलकर जी का जीवन काल है–

(अ) **सन् 1885-1981** (ब) सन् 1897-1976
(स) सन् 1870-1981 (द) सन् 1891-1970

2. काका कालेलकर का पूरा नाम था–

(अ) बालकृष्ण कालेलकर (ब) दत्तात्रेय कालेलकर
(स) काका जी (द) **दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर**

3. काका कालेलकर जी ने प्रधानाध्यापक के पद को सुशोभित किया–

(अ) गुजरात विद्यापीठ में (ब) इलाहाबाद विश्वविद्यायल में
(स) काशी विद्यापीठ में (द) **साबरमती आश्रम में**

4. काका कालेलकर जी बड़ौदा के 'गंगानाथ भारतीय सार्वजनिक विद्यालय' में किस पद पर नियुक्त हुए?

(अ) कोषाधिकारी (ब) **आचार्य पद पर**
(स) प्रधानाध्यापक के पद पर (द) अंग्रेजी विभाग के आचार्य

5. काका कालेलकर जी को पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया–

(अ) **भारत सरकार द्वारा** (ब) कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा
(स) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा (द) लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए और संधि का नाम लिखिए–

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**	**संधि का नाम**
निस्तेज	नि: + तेज	विसर्ग संधि
एकाक्षरी	एक + अक्षरी	दीर्घ संधि
महत्वाकांक्षा	महत्व + आकांक्षा	दीर्घ संधि
गुणाकार	गुण + आकार	दीर्घ संधि
सत्याग्रह	सत्य + आग्रह	दीर्घ संधि
प्रत्युत्पन्न	प्रति + उत्पन्न	यण संधि
निर्भर्स्तना	नि: + भर्त्सना	विसर्ग संधि
स्वागत	सु + आगत	यण संधि
लोकोत्तर	लोक + उत्तर	गुण संधि
कृतार्थ	कृत + आर्थ	दीर्घ संधि

2. निम्नलिखित शब्दों में समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए–

समस्तपद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
राष्ट्रमाता	राष्ट्र की माता	संबंध तत्पुरुष समास
जीवनसिद्धि	जीवन की सिद्धि	संबंध तत्पुरुष समास
प्राणघातक	प्राणों के लिए घातक	संप्रदान तत्पुरुष समास
शब्द-शास्त्र	शब्दों का शास्त्र	संबंध तत्पुरुष समास
बंधनयुक्त	बंधन से मुक्त	अपादान तत्पुरुष समास
देशसेवा	देश की सेवा	संबंध तत्पुरुष समास
माँ-बाप	माँ और बाप	द्वंद्व समास
धर्मनिष्ठा	धर्म में निष्ठा	अधिकरण तत्पुरुष समास

3. **निम्नलिखित विदेशी शब्दों के लिए हिंदी शब्द लिखिए–**

विदेशी शब्द	**हिंदी शब्द**
कतई	बिलकुल
कायम	स्थायी
जिद	हठ
खुद	स्वयं
हासिल	प्राप्त
आबदार	कांतिमान
अमलदार	कर्मचारी

4. **'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा' ये दो वाक्य उनके (कस्तूरबा जी के) किस गुण को प्रकट करते हैं?**

उ०– 'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा' कस्तूरबा जी के दृढ़ निश्चयी होने के गुण को प्रकट करते हैं।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

7. ठेले पर हिमालय (डॉ० धर्मवीर भारती)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **धर्मवीर भारती की जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान के बारे में बताइए।**

उ०– धर्मवीर भारती जी का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में हुआ था।

2. **धर्मवीर जी की स्कूली शिक्षा तथा उच्च शिक्षा कहाँ हुई? उन्होंने पी०एच०डी० किसके निर्देशन में की?**

उ०– धर्मवीर जी की स्कूली शिक्षा डी०ए०वी० हाईस्कूल में हुई और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में। उन्होंने डॉ० धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में पी०एच०डी० की।

3. **धर्मयुग के संपादक कौन थे?**

उ०– डॉ० धर्मवीर भारती धर्मयुग के संपादक थे।

4. **धर्मवीर जी की कौन-सी रचना पर आधारित श्याम बेनेगल ने फिल्म बनाई?**

उ०– धर्मवीर जी के 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' नामक उपन्यास पर श्याम बेनेगल ने फिल्म बनाई।

5. **साहित्य लेखन के अतिरिक्त भारती जी के और कौन-से शौक थे?**

उ०– भारती जी को साहित्य लेखन के अतिरिक्त अध्ययन और यात्रा का शौक था।

6. **1972 में भारती जी को किस सम्मान से सम्मानित किया गया?**

उ०– 1972 में भारती जी को भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया।

7. **भारती जी को और कौन-कौन से पुरस्कार प्राप्त हुए?**

उ०– भारती जी को हल्दीघाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता, भारत भारती, सर्वश्रेष्ठ नाटककार, महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन, व्यास सम्मान, के०के० बिड़ला फाउंडेशन, महाराष्ट्र गौरव आदि पुरस्कार प्राप्त हुए।

8. **कौन-सा उपन्यास लिखकर भारती जी अमर हो गए?**

उ०– भारती जी 'गुनाहों का देवता' उपन्यास लिखकर अमर हो गए।

9. **'ठेले पर हिमालय' का वर्ण्य-विषय क्या है?**

उ०– 'ठेले पर हिमालय' का वर्ण्य-विषय हिमालय की रमणीय शोभा है। इसमें कौसानी में हिमालय की सुंदरता का अद्‌भुत वर्णन है।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. धर्मवीर भारती के जीवन का परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।

उ०– डॉ० धर्मवीर भारती आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे। वे एक समय की प्रख्यात साप्ताहिक पत्रिका 'धर्मयुग' के प्रधान संपादक भी थे।

डॉ० धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' सदाबहार रचना मानी जाती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उनका दूसरा अनुपम उपन्यास है, जिस पर श्याम बेनेगल ने इसी नाम की फिल्म बनाई।

जीवन परिचय– डा० धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का श्रीमती चंदादेवी था। इनकी स्कूली शिक्षा डी०ए०वी० हाईस्कूल में हुई और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में। प्रथम श्रेणी में एम०ए० करने के बाद डॉ० धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध-प्रबंध लिखकर उन्होंने पी-एच०डी० प्राप्त की।

घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन सबने उन्हें अतिसंवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे – अध्ययन और यात्रा। भारती जी के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा-अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज जिन लोगों का है उनमें मैं अपने को पाता हूँ।

आलोचकों में भारती जी को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना जाता है। उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। परंतु उसके साथ-साथ इतिहास और समकालीन स्थितियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि रही है, जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, आलोचना तथा संपादकियों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं उनकी कहानियों व उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ के चित्र हैं। 'अंधा युग' में स्वातंत्र्योत्तर भारत में आई मूल्यहीनता के प्रति चिंता है। उनका बल पूर्व और पश्चिम के मूल्यों, जीवन-शैली और मानसिकता के संतुलन पर है, वे न तो किसी एक का अंधा विरोध करते हैं न अंधा समर्थन। परंतु क्या स्वीकार करना और क्या त्यागना है, इसके लिए व्यक्ति और समाज की प्रगति को ही आधार बनाना होगा—

पश्चिम का अंधानुकरण करने की कोई जरूरत नहीं है, पर पश्चिम के विरोध के नाम पर मध्यकाल में तिरस्कृत मूल्यों को भी अपनाने की जरूरत नहीं है।

1997 ई० में धर्मवीर भारती जी का देहावसान हो गया।

रचनाएँ– कहानी, निबंध, एकांकी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, संपादन व काव्य सृजन के क्षेत्र में इन्होंने अपनी विलक्षण सृजन-प्रतिभा का परिचय दिया। वस्तुत: साहित्य की जिस विधा का भी इन्होंने स्पर्श किया, वही विधा इनका स्पर्श पाकर धन्य हो गई। 'गुनाहों का देवता' जैसा सशक्त उपन्यास लिखकर ये अमर हो गए।

डॉ० धर्मवीर भारती ने विविध विधाओं में साहित्य रचना की है, उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं—

(अ) उपन्यास– सूरज का सातवाँ घोड़ा, गुनाहों का देवता

(ब) काव्य– कनुप्रिया, सात गीत-वर्ष, अंधा युग, ठंडा लोहा

(स) कहानी संग्रह– मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग

(द) नाटक और एकांकी– 'नदी प्यासी थी' इनका प्रसिद्ध नाटक है। 'नीली झील' संग्रह में इनके एकांकी संकलित हैं।

(य) निबंध-संग्रह– कही-अनकही, ठेले पर हिमालय, पश्यंती

(र) आलोचना– मानव-मूल्य, साहित्य

इन रचनाओं के अतिरिक्त इन्होंने विश्व की कुछ प्रसिद्ध भाषाओं की कविताओं के अनुवाद भी किए हैं। यह संग्रह 'देशांतर' नाम से प्रकाशित हुआ है।

2. भारती जी का हिंदी साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उ०– हिंदी साहित्य में स्थान– भारती जी की दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दुःख दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है। दुःख तो उन्हें इस बात का है कि आज 'जनतंत्र' में 'तंत्र' शक्तिशाली लोगों के हाथों में चला गया है और 'जन' की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। अपनी रचनाओं के माध्यम से

इसी जन की आशाओं, आकांक्षाओं, विवशताओं, कष्टों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास उन्होंने किया है। भारती जी ने सामाजिक विषमताओं पर अपनी लेखनी से तीखे प्रहार किए और आधुनिक भारतीय समाज के यथार्थ रूप को अनावृत करके रख दिया। इनका एक कवि, नाटककार, कथाकार, निबंधकार और पत्रकार के रूप में हिंदी-गद्य साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है। गद्य साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही 'नई कविता' क्षेत्र को भी समृद्ध करने वाले डॉ. धर्मवीर भारती का साहित्य जगत सदैव ऋणी रहेगा।

3. भाषा-शैली की दृष्टि से धर्मवीर भारती का मूल्यांकन कीजिए।

उ०– **भाषा-शैली–** भारती जी की भाषा प्रवाहपूर्ण, सशक्त और प्रौढ़ है। इनकी रचनाओं में परिष्कृत और परिमार्जित भाषा का प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा में सरलता, सहजता, सजीवता और आत्मीयता का पुट है तथा देशज, तत्सम और तद्भव सभी प्रकार के शब्दों के प्रयोग हुए हैं। मुहावरों तथा कहावतों के प्रयोग से भाषा में गति और बोधगम्यता आ गई है।

विषय और विचार के अनुकूल भारती जी की रचनाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग हुआ है।

(अ) **भावात्मक शैली–** भारती जी मूलत: कवि थे। अत: इनका कवि-हृदय इनकी गद्य रचनाओं में भी मुखर हुआ है। ऐसे स्थलों पर इनकी शैली भावात्मक हो गई है।

(ब) **समीक्षात्मक शैली–** अपनी आलोचनात्मक रचनाओं में भारती जी ने समीक्षात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस शैली में गंभीरता है और भाषा तत्समप्रधान है।

(स) **चित्रात्मक शैली–** भारती जी शब्दचित्र अंकित करने में विशेष दक्ष हैं। जहाँ इन्होंने घटनाओं और व्यक्तियों के शब्दचित्र अंकित किए हैं, वहाँ इनकी शैली चित्रात्मक हो गई है।

(द) **वर्णनात्मक शैली–** जहाँ घटनाओं, वस्तुओं या स्थानों का वर्णन हुआ है, वहाँ इनकी वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

(य) **व्यंग्यपूर्ण प्रतीकात्मक शैली–** भारती जी ने अपनी रचनाओं में यथास्थान हास्य और व्यंग्य का भी प्रयोग किया है। ऐसे स्थलों पर इनकी शैली में प्रतीकात्मकता आ गई है।

4. 'ठेले पर हिमालय' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– ठेले पर हिमालय डॉ० धर्मवीर भारती द्वारा लिखित यात्रावृत्तांत श्रेणी का संस्मरणात्मक निबंध है। इसमें लेखक ने नैनीताल से कौसानी तक की यात्रा का रोचक वर्णन किया है। इस निबंध के माध्यम से लेखक ने जीवन के उच्च शिखरों तक पहुँचने का जो संदेश दिया है, वह भी अभिनंदनीय है। लेखक एक दिन जब अपने गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ पान की दुकान पर खड़े थे तब ठेले पर लदी बर्फ की सिल्लियों को देखकर उन्हें हिमालय पर्वत को ढके हिमराशि की याद आई क्योंकि उन्होंने उस राशि को पास से देखा था, जिसकी याद उनके मन पर एक खरोंच सी छोड़ देती है। इस बर्फ को पास से देखने के लिए ही लेखक अपनी पत्नी के साथ कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत व मझकाली के भयानक मोड़ों को पारकर वे कोसी पहुँचे। कोसी में उन्हें उनके सहयात्री शुक्ल जी व चित्रकार सेन मिले जो हृदय से बहुत सरल थे। कोसी से कौसानी के लिए चलने पर उन्हें सोमेश्वर घाटी के अद्भुत सौंदर्य के दर्शन हुए। जो बहुत ही सुहाने थे, परंतु मार्ग में आगे बढ़ते जाने पर यह सुंदरता खोती जा रही थी, जिससे लेखक के मन में निराशा उत्पन्न हो रही थी क्योंकि लेखक के एक सहयोगी के अनुसार कौसानी स्विट्जरलैंड से भी अधिक सुंदर था तथा महात्मा गाँधी जी ने भी अपनी पुस्तक अनासक्तियोग की रचना यहीं की थी। कौसानी सोमेश्वर घाटी की ऊँची पर्वतमाला के शिखर पर बसा हुआ है, जो एक वीरान व छोटा सा गाँव था तथा वहाँ बर्फ के दर्शन कहीं नहीं थे। हमें ऐसा लगा जैसे हमारे साथ धोखा हुआ हो। जिससे लेखक उदास हो गए और बेमन से बस से उतरे परंतु वह जहाँ खड़े थे वहीं जड़ हो गए। कौसानी की पर्वतमाला में स्थित कत्यूर की घाटी का अद्भुत सौंदर्य उनके सामने बिखरा पड़ा था। लेखक को लगा जैसे वह दूसरे लोक में पहुँच गए हों और इस धरती पर पाँव को साफ करके आगे बढ़ना चाहिए। लेखक को क्षितिज के धुँधलेपन में कुछ पर्वतों का आभास हुआ जिसके पीछे बादल थे। अचानक लेखक को बादलों के बीच नीले, सफेद व रूपहले रंग का टुकड़ा दिखाई दिया जो कत्यूर घाटी में स्थित पर्वतराज हिमालय था। परंतु एक क्षण बाद ही उसे बादलों ने ढक लिया जैसे किसी बच्चे को खिड़की से अंदर खींच लिया हों परंतु उस क्षण भर के हिम दर्शन ने लेखक के मन की निराशा, उदासी व थकावट को दूर कर दिया था। शुक्ल जी शांत थे जैसे कह रहे थे यही है कौसानी का जादू। धीरे-धीरे बादलों के छँटने के बाद हिमशिखरों के अनावृत रूप के उन लोगों को दर्शन हुए। उस समय उन लोगों के मन की क्या दशा थी उसका वर्णन करना असंभव था अगर लेखक उसका वर्णन कर पाता तो उसके मन में वर्णन न कर पाने की पीड़ा न रह गई होती। हिमालय की शीतलता से अपने दु:खों को नष्ट करने के लिए ही तपस्वी यहाँ आकर साधना करते थे। सूरज के अस्त के समय कत्यूर घाटी का

सौंदर्य अद्‌भुत था। रात में चाँद के आगमन पर ऐसा लगा जैसे हिम निद्रा में मग्न है। हिमालय के दर्शन से लेखक स्वयं को कल्पनाहीन और छोटा महसूस कर रहा था। उसे लगा जैसे हिमालय उसे उसके समान ऊँचा उठने की चुनौती दे रहा हो। सेन एक मनोरंजक व्यक्ति था जो हर दृष्टिकोण से हिमालय को देखना चाहता था। अगले दिन लेखक और उसके सहयात्री 12 मील की यात्रा के बाद बैजनाथ गए जहाँ गोमती नदी अपनी मधुरता के साथ बहती है और जिसमें हिमालय अपनी छाया से तैरता हुआ प्रतीत होता है। आज भी लेखक को उसका स्मरण हो आता है। ठेले पर हिमालय कहकर लेखक उन बर्फ की स्मृतियों को भुलाने की कोशिश करता है जो लेखक को बार-बार अपनी ओर आकर्षित करती है। लेखक का मन होता है कि वह हिमालय को संदेश भेजे कि वह लौटकर अवश्य आएगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर उनका मन लगता है जिसकी स्मृति उसके मन में बार-बार उठती है।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. छोटा सा --------------- आगे बढ़ना चाहिए।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी के 'गद्य खंड' के 'डॉ० धर्मवीर भारती' द्वारा लिखित 'ठेले पर हिमालय' नामक निबंध से अवतरित है।

प्रसंग– अवतरण में लेखक ने कौसानी के सौंदर्य को देखने की अपनी उत्सुकता व कौसानी में स्थित कत्यूर घाटी के सौंदर्य का अनुपम वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक अपनी उत्सुकता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब हम कौसानी पहुँचे, जो एक छोटा सा बिलकुल वीरान सा गाँव था और जहाँ पर बर्फ दूर दूर तक नहीं थी। वहाँ पहुँचकर हमें लगा कि हमारे साथ धोखा हुआ है। मैं बहुत निराश और अनचाहे मन से बस से नीचे उतरा परंतु बस से उतरकर मैं जहाँ पर खड़ा था वहीं निष्प्राण मूर्ति की भाँति स्तब्ध रह गया। लेखक कहता है कि मैंने कौसानी के सौंदर्य के बारे में जो वर्णन सुना था मार्ग में तथा कौसानी पहुँचने पर उसे न पाकर बहुत निराश हो गया था। परंतु कौसानी के सामने की घाटी के सौंदर्य और उसके आकर्षण से खिंचा हुआ मैं मंत्रमुग्ध-सा उसे देखता रहा। वह कत्यूर घाटी थी, जिसमें अनंत सौंदर्य बिखरा पड़ा था। जिस प्रकार कोई सुंदरी अपने सौंदर्य को अपने आँचल में छिपाकर रखती है, उसी प्रकार कौसानी की इस पर्वत-शृंखला ने कत्यूर घाटी के सौंदर्य को छिपा रखा था। कत्यूर घाटी के सौंदर्य में जो आकर्षण है, उससे आकर्षित होकर निश्चय ही प्रेम, सौंदर्य तथा संगीत के उपासक यक्ष और किन्नर यहाँ रहते होंगे। तात्पर्य यह है कि इस कत्यूर घाटी के सौंदर्य से आकर्षित होकर देवता भी यहाँ आने के लिए उत्सुक रहे होंगे। यह घाटी लगभग पचास मील चौड़ी है। इस घाटी में हरे-भरे खेत भी हैं, जो हरी मखमली चादर के समान प्रतीत होते है। यहाँ गेरू की लाल-लाल शिलाएँ काटकर रास्ते बनाए गए हैं, जो लाल रंग के हैं और अत्यंत आकर्षक लगते हैं। इन लाल-लाल रास्तों के किनारे सफेद पर्वत खड़े हैं, जो ऐसे लगते हैं मानो सफेद रंग की कोई रेखा खींच दी गई हो। उलझी हुई बेलों की लड़ियों के समान नदियाँ वहाँ गुँथी हुई प्रतीत होती हैं। इस सौंदर्य ने मेरा मन मोह लिया और सहसा मेरे मन में यह विचार आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर अपनी कलाई में लपेटकर आँखों से लगा लूँ। तात्पर्य यह है कि इसकी सुंदरता आँखों में बसाने योग्य है। यह सौंदर्य आत्मविभोर कर देने वाला है। सजे हुए सुंदर तथा पवित्र सौंदर्य वाली इस कत्यूर घाटी को देखकर मन करता है कि इसकी पवित्रता बनाए रखने के लिए मंदिर अथवा आराधना-स्थल की भाँति जूते उतारकर और फिर पैर पोंछकर ही आगे बढ़ना चाहिए, जिससे कि इसकी पवित्रता पर पैरों की धूल आदि का कोई धब्बा न लगे।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ठेले पर हिमालय **लेखक–** धर्मवीर भारती

(ब) लेखक पत्थर की मूर्ति की भाँति क्यों खड़े रह गए?

उ०– कौसानी के सामने कत्यूर की घाटी का सौंदर्य देखकर लेखक पत्थर की भाँति खड़े रह गए।

(स) कत्यूर की घाटी कहाँ स्थित है?

उ०– कत्यूर घाटी कौसानी की पर्वतमाला के मध्य स्थित है।

(द) कौसानी की पर्वतमाला में कौन-कौन वास करते होंगे?

उ०– किन्नर और यक्ष कौसानी की पर्वतमाला में निवास करते होंगे; क्योंकि यहाँ का प्रकृति-सौंदर्य अत्यंत मोहक और रमणीय है। किन्नर और यक्ष प्रेम सौंदर्य और संगीतप्रिय जाति मानी गई हैं तो निश्चय ही वे ऐसे ही सौंदर्य-संपन्न स्थान पर निवास करती होगीं।

(य) कत्यूर की घाटी का सौंदर्य वर्णन कीजिए।

उ०– कत्यूर की घाटी को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस घाटी में किन्नर और यक्ष (मानव से इतर योनि) निवास करते होंगे क्योंकि इन्हें प्रेम सौंदर्य और संगीतप्रिय जाति माना जाता है। नदियाँ वृक्ष की लंबी बेलों के समान लगती हैं। इन्हें देखकर इनको कलाई में लपेटकर आँखों से लगाने की इच्छा जाग्रत होती है। पवित्र सौंदर्य वाली कत्यूर की घाटी में आगे बढ़ने के लिए किसी पवित्र स्थल के समान जूते उतारकर और पैर पोंछकर आगे बढ़ने की इच्छा होती है।

(र) 'पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए' लेखक ऐसा क्यों कह रहा है?

उ०– लेखक ऐसा इसलिए कह रहा है क्योंकि उसे कत्यूर घाटी बहुत पवित्र लगती है। उसकी पवित्रता बनाए रखने के लिए वह पैर पोंछकर आगे बढ़ने के लिए कह रहा है।

2. पर उस एक क्षण ---------------------- मुँह लटका लिया।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– उत्तराखंड स्थित कौसानी के प्राकृतिक सौंदर्य का वास्तविक चित्रण किया गया है, जहाँ जीवन की समस्त कलुषिता धुल जाती है और मन पवित्रता व शीतलता से भर जाता है।

व्याख्या– हिमालय की घाटियों तथा हिमशिखरों पर प्रकृति का विराट् अनुपम सौंदर्य बिखरा पड़ा है। अचानक ही बादलों के बीच से प्रकट हुई हिमशिखरों पर चमकती सफेद चाँदी-सी बर्फ ने सभी के दिल को तरोताजा कर दिया था। एकक्षण के पश्चात् उस बर्फ को फिर से बादलों ने ढक लिया। मगर उस एक क्षण के दृश्य ने यात्रा की थकावट तथा मन की खिन्नता को मिटा दिया था। जीवन प्रकृति-सुषमा को देखकर फूल की तरह खिल उठा था। मन एक बार फिर से उस सौंदर्य को देखने के लिए व्याकुल हो उठा। मन में एक आशा जगी कि अभी कुछ देर में ये बादल हट जाएँगे और हिमालय का वह पवित्र सौंदर्य एक बार फिर से हमारे सामने उपस्थित हो जाएगा बिल्कुल स्पष्ट और बेपर्दा। मन कल्पना करने लगा कि हिमालय की अपार सुंदरता से सजी दुल्हन मानो हमारे सामने बादलों का घूँघट अपने मुख पर डाले खड़ी है। बस वह अभी धीरे से अपना घूँघट पीछे को सरका देगी और हमारा मन उसके सौंदर्य को देखकर आनंद से भर उठेगा। उस घूँघट के सरकने और मन के आनंदित हो उठने की अत्यधिक उत्सुकीय प्रतीक्षा ने हमारे दिल की धड़कने बढ़ा दीं कि वह घूँघट अब हटा और तब हटा। लेखक कहते हैं कि हम सब उस सौंदर्य को देखने के लिए बहुत आतुर थे परंतु शुक्ल जी को बिलकुल भी आतुरता न थी वे मेरी ओर देखकर कभी-कभी मुस्कुराते जिसका तात्पर्य था यही है कौसानी का जादू। यह जादू क्षण-क्षण में बदलता रहता है और पर्यटकों को विस्मित कर देता है। लेखक के मन में कौसानी तक पहुँचे बिना ही जो निराशा व्याप्त हो गई थी, वह यह जादू देखकर गायब हो गई थी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– ठेले पर हिमालय **लेखक–** धर्मवीर भारती

(ब) क्या देखने के लिए सभी व्याकुल हो रहे थे?

उ०– बादलों से ढकी हिमाच्छादित पर्वत चोटी का सौंदर्य देखने के लिए सभी व्याकुल हो रहे थे।

(स) बादलों से ढके हिमालय के सौंदर्य की तुलना किससे की गई है?

उ०– बादलों से ढके हिमालय के सौंदर्य की तुलना मुख पर घूँघट डाले नई-नवेली दुल्हन से की गई है।

(द) लेखक के दिल की धड़कन क्यों बढ़ी हुई थी?

उ०– हिमाच्छादित पर्वत-चोटी के सौंदर्य-दर्शन की उत्सुकता के कारण लेखक के दिल की धड़कन बढ़ी हुई थी।

(य) शुक्ल जी लेखक को देखकर बार-बार क्यों मुस्कुरा रहे थे?

उ०– शुक्ल जी लेखक को देखकर बार-बार इसलिए मुस्कुरा रहे थे क्योंकि वह लेखक को यह दर्शाना चाहते थे कि बिना कौसानी तक पहुँचे ही उनके मन में जो निराशा व्याप्त हो गई थी, वह यहाँ पहुँचते ही कहाँ गायब हो गई। यही तो कौसानी का जादू है।

3. हमारे मन में --------------------- चिरंतन हिम।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक अपने मित्रों के साथ हिमालय की गोद में स्थित कौसानी की यात्रा पर गया। वहाँ पर डाकबँगले में ठहरने

के पश्चात् उसने वहाँ बैठे-बैठे हिमालय की जिस सुंदरता को देखा, उसी का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– लेखक जिस समय डाकबँगले में पहुँचा था, उस समय आसमान में बादल छाए थे, जिस कारण पर्वतीय सौंदर्य कहीं दिखाई न देता था। फिर एकाएक बादल पहाड़ों के पीछे, नीचे को उतरते गए और उनके बीच से बर्फ से ढके पहाड़ों की शृंखलाएँ दिखाई देने लगी। हिमाच्छादित पर्वत-शिखरों की बादलों के मध्य से झाँकती ऊबड़-खाबड़ शृंखलाएँ जितनी मोहक और रहस्यमयी लग रही थी, उनका वर्णन करना लेखक को अपने लिए संभव नहीं दिखता। अपनी इसी असमर्थता को व्यक्त करता लेखक कहता है कि उस रहस्यमय पर्वतीय सौंदर्य को देखकर हम सबके मन में जो भावनाएँ उठ रही थीं, शब्दों में उनका वर्णन करने में मैं स्वयं को असमर्थ पा रहा हूँ। उस असमर्थता की टीस आज तक मेरे मन को व्यथित करती है। उस पल के आत्मानुभाव को मैं एक प्रतीक के रूप में इस प्रकार व्यक्त कर सकता हूँ कि उस समय मन को वैसा आनंद, वैसी शीतलता का अनुभव हो रहा था जैसी शीतलता का अनुभव हम बर्फ की सिल्लियों के सामने खड़े होने पर करते हैं। जैसे बर्फ की सिल्लियों से उठती ठंडी भाप हमारे अंतर्मन तक को शीतलता का अनुभव कराती है, कुछ इसी तरह हिमालय की शीतलता हमारे माथे को स्पर्श करके हमारे मन-मस्तिष्क के समस्त संघर्षों, अंतर्द्वंद्वों और दु:खों को नष्ट कर रही थी। लेखक यहाँ ऋषि-मुनियों द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं भौतिक आदि सभी प्रकार के दुःखों को ताप कहे जाने पर अपना मत व्यक्त करता हुआ कहता है कि मैं इस रहस्य को आज पहली बार ठीक प्रकार से समझ पाया हूँ कि हिमालय पर निवास करके तपस्या करने वाले क्यों दु:खों को ताप कहते थे। कारण स्पष्ट है कि तन-मन को शीतल और शांत बनाने वाली हिमालय की शीतलता का अनुभव वे लोग कर चुके थे, अत: दु:खों (ताप) के संताप से छुटकारा पाने के लिए ही वे हिमालय में तपस्या करने आते थे। तभी अचानक उनके मन में एक प्रश्न उठा कि बर्फ का यह अतुलनीय भंडार कितना पुराना है। अनंत काल से कभी ना नष्ट होने वाला यह बर्फ इन शिखरों पर विराजमान है। इसलिए कुछ विदेशी पर्यटकों ने हिमालय की इस बर्फ को 'पुरातन बर्फ' की संज्ञा दी है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– ठेले पर हिमालय **लेखक–** धर्मवीर भारती

(ब) लेखक ने 'खरोंच' और 'पीर' किसे कहा है?

उ०– हिमालयी सौंदर्य को देखकर लेखक के मन में जो भावनाएँ उत्पन्न हो रही थीं, लेखक उनको शब्दों में व्यक्त कर पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा है, अपनी इसी असमर्थता को उसने खरोंच और पीर कहा है।

(स) लेखक की उस समय मनोदशा कैसी थी?

उ०– लेखक की हिमालय दर्शन के बाद मनोदशा बड़ी विचित्र थी। हिमालय के सौंदर्य का वर्णन करने के लिए उसके पास शब्द ही नहीं थे। उस सौंदर्य सुख का वर्णन न कर पाने के कारण उसे पीड़ा का अनुभव हो रहा था।

(द) पुराने साधक हिमालय पर क्या करने जाते थे?

उ०– पुराने साधक हिमालय पर साधना करने जाते थे। क्योंकि उन्हें यहाँ आकर अपने सभी शारीरिक, मानसिक और भौतिक दु:खों से छुटकारा मिल जाता था, इसका कारण यह था कि वे सौंदर्य में इतने डूब जाते थे कि अपने सभी दु:खों को भूल जाते थे और उनके मन को अपार शांति मिलती थी।

(य) लेखक ने हिमालय की शीतलता की तुलना किससे की है?

उ०– लेखक ने हिमालय की शीतलता की तुलना बर्फ की सिल्लियों से उठने वाली ठंडी भाप से की है।

4. इसी हिमालय को देखकर -------------------- ऊँचे उठोगे?

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में भारतीजी ने अपनी कौसानी यात्रा के दौरान हुए अनुभवों के माध्यम से हिमालय का सजीव वर्णन किया है तथा हिमालय को समीप से देखने पर अपने मन में उत्पन्न भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है।

व्याख्या– लेखक अपने मनोभावों को प्रकट करते हुए कहते हैं कि दूसरे कवियों ने इस पवित्र हिमालय की सुंदरता को देखकर बहुत कुछ लिखा है लेकिन वह स्वयं को इस हिमालय के आगे इतना तुच्छ समझ रहे हैं कि उनके मन में इसके लिए कविता तो दूर कविता की एक पंक्ति या एक शब्द भी नहीं आ रहा है। कौसानी में रात के समय चाँद निकलने पर जब भारती जी ने हिमालय की गगनचुंबी बर्फ से ढकी चोटियों को देखा तो वे अपने मन के अंदर अपनी चेतना के विराट होते हुए स्वरूप की अनुभूति करने लगे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनके अंतर्मन में छाए अज्ञानरूपी बादल भी छँट रहे हैं और

कुछ ऐसा उभरकर सामने आ रहा है; जिसकी प्रकृति हिमालय के इन शिखरों के समरूप है। उनकी चेतना हिमालय की चोटियों के समान ही ऊँचा उठने की चेष्टा करने लगी, जिससे उन चोटियों से उनके स्तर पर ही मिला जा सके। उनके मन में ऐसी अनुभूति होने लगी, मानो हिमालय उनका बड़ा भाई हो और वह स्वयं ऊँचे चढ़कर एवं उन्हें कुंठाग्रस्त व लज्जानुभूति की मनोदशा में नीचे देखकर स्नेहपूर्ण चुनौती देते हुए कह रहा हो - ''हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?''

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ठेले पर हिमालय **लेखक–** धर्मवीर भारती

(ब) लेखक के मन में हिमालय को देखकर क्या भावनाएँ उठ रही हैं?

उ०– लेखक की चेतना हिमलाय की चोटियों के समान ही ऊँचा उठने की चेष्टा करने लगी। उनके मन में यह भावना उठी कि मानो हिमालय उनका बड़ा भाई हो जो उन्हें ऊँचा उठने के लिए प्रेमपूर्ण चुनौती दे रहा है।

(स) हिम के समक्ष आकर लेखक अपने आप को कैसा महसूस कर रहा है?

उ०– हिम के समक्ष आकर लेखक अपने आप को छोटा महसूस कर रहा है।

(द) लेखक को हिमालय एक बड़े भाई की तरह क्यों लगा?

उ०– बड़े भाई का कर्त्तव्य होता है कि वह पहले उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत करके छोटे भाई का हाथ पकड़कर उसे भी अपने बराबर लाकर खड़ा कर दे। हिमालय बहुत ऊँचा उठ गया है, लेखक उसके सामने अपने आपको बहुत छोटा अनुभव कर रहा है। उसे लग रहा है कि मानो हिमालय बड़े भाई की तरह उससे कह रहा है कि आओ मेरे समान ऊँचे उठकर मेरे बराबर में आकर खड़े हो जाओ।

(य) हिमालय क्या चुनौती दे रहा है?

उ०– हिमालय लेखक की हिम्मत अथवा साहस को प्रेमपूर्ण चुनौती दे रहा है कि यदि हिम्मत रखते हो तो मेरे बराबर उँचा उठकर दिखाओ।

5. आज भी उसकी याद -------------- मैं करूँ तो क्या करूँ?

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक हिमालय की गोद में स्थित कौसानी के सौंदर्य से इतना प्रभावित हुआ कि उसका मन बार-बार वहाँ जाने को करता रहता है। अपने यात्रा-वृत्तांत के समापन में लेखक ने अपनी इसी मनोदशा को व्यक्त किया है।

व्याख्या– मेरे मन में आज भी हिमालय की हिम से ढकी हुई चोटियाँ साकार हो उठती हैं। उन हिम-मंडित शिखरों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है। मुझे लगता है कि वे शिखर मुझे बुला रहे हैं। हिमालय के असीम सौंदर्य का स्मरण होते ही एक अजीब-सी कसक हृदय में उठने लगती है। लेखक बताते हैं कि कल ठेले पर लदे बर्फ को देखकर उनके उपन्यासकार मित्र हिमालय की जिन स्मृतियों में खो गए थे, वे साक्षात् हिमालय को न देख पाने की उनकी कसक को भली-भाँति समझते हैं। लेखक स्वयं भी वही कसक अपने मन में लिए है, किंतु वह ठेले पर हिमालय की बात कहकर जिस प्रकार हँसता है उस हँसी से भी वह कसक स्पष्ट झलकती है। एक प्रकार से उसका वह हँसना मानो उस दर्द को भुलाने का एक बहाना है। हम नगरों में रहने वाले हिमालय के उन हिम-मंडित शिखरों को नहीं देख पाते, ठेले पर लदकर जाने वाली बर्फ को देखकर ही अपने को दिलासा दे लेते हैं। शायद महाकवि तुलसीदास ने अपने आस-पास ठेलों पर लदे हिमालयों को अर्थात् ऊँचे आदर्शों की बात करने वाले क्षुद्र (छोटे, नीच) लोगों को देखा था और तभी उनके दिल में उच्च (आदर्शमयी) जीवन व्यतीत करने की भावना उदित हुई। अपनी इसी भावना को प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा था - 'कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो' अर्थात् क्या मैं कभी इस प्रकार उच्च जीवन जी सकूँगा?

यह ध्यान आते ही मेरे मन में यह लालसा उत्पन्न होती है कि मैं उस ऊँचे हिमालय से पुकार-पुकारकर कह दूँ कि हे बन्धु हिमालय! मैं फिर लौटकर उन्हीं ऊँचाइयों पर आऊँगा; क्योंकि वही मेरा वास्तविक निवास-स्थल है। मेरा मन वहीं रमता है। इन्हीं ऊँचाइयों पर आकर मेरे सब ताप शीतल हो जाते हैं। मन को एक शीतल व सुखद स्पर्श-सा मिलता है, जिससे मुझे तृप्ति की अनुभूति होती है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ठेले पर हिमालय **लेखक–** धर्मवीर भारती

(ब) लेखक को आज भी किसकी याद आती है?

उ०– लेखक को आज भी हिमालय के असीम सौंदर्य की याद आती है जो उसने कौसानी में देखा था।

(स) ठेलों पर लदे हिमालय को देखकर तुलसीदास जी ने क्या कहा था?

उ०– तुलसीदास जी ने अपने आस-पास ठेलों पर लदे हिमालयों को अर्थात् ऊँचे आदर्शों की बात करने वाले क्षुद्रों को देखकर कहा था– 'कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो' अर्थात् क्या मैं भी कभी इस प्रकार उच्च जीवन जी सकूँगा?

(द) लेखक हिमालय को क्या संदेश भेजना चाहता है?

उ०– लेखक हिमालय को संदेश भेजना चाहता है कि 'हे भाई! मैं कोई सामान्य व्यक्ति नहीं हूँ। वरन तुम्हारे समान ही ऊँचा सोचने वाला हूँ। मेरा मन भी तुम्हारे ऊँचे शिखरों पर ही लगता है। अब तुम ही बताओ कि तुम्हारे पास रहने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. धर्मवीर भारती जी का जन्म-स्थान है–

(अ) **इलाहाबाद** (ब) कानपुर

(स) दिल्ली (द) आगरा

2. धर्मवीर भारती का जन्म-सन् है–

(अ) 1941 (ब) 1905

(स) **1926** (द) 1935

3. प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' के संपादक हैं–

(अ) **धर्मवीर भारती** (ब) रामचंद्र शुक्ल

(स) काका कालेलकर (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

4. धर्मवीर भारती को भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया–

(अ) 1965 ई० में (ब) 1984 ई०में

(स) 1978 ई० में (द) **1972 ई० में**

5. मुर्दों का गाँव' कहानी के लेखक हैं–

(अ) श्रीराम शर्मा (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) **धर्मवीर भारती** (द) रामवृक्ष बेनीपुरी

6. 'नदी प्यासी थी' किस साहित्यिक विधा से संबधित है?

(अ) **नाटक** (ब) उपन्यास

(स) कहानी (द) निबंध

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के उपसर्गों को पृथक करके लिखिए–

शब्द	**उपसर्ग**
खुशकिस्मत	खुश
अत्याधुनिक	अति
संदेश	सम्
सुकुमार	सु
निरावृत	निर्
अनासक्ति	अन
सहयोगी	सह
सुललित	सु
लापरवाह	ला
प्रतिक्रिया	प्रति

2. **निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग करके लिखिए–**

शब्द	**प्रकृति**
शीतलता	ता
कुंठित	इत
सुहावनापन	पन
कंकड़ीली	ईली
कष्टप्रद	प्रद

3. **'असीम सौंदर्य राशि हमारे सामने अभी-अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी।' लेखक ने ऐसी ही तुलनाएँ की हैं, उन्हें छाँटिए।**

उ०– लेखक ने प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करने के लिए अध्याय में कुछ और तुलनाएँ की हैं जो निम्नलिखित हैं–

(अ) 'ठेले पर हिमालय' - खासा दिलचस्प शीर्षक है न।

(ब) चाँदनी में उजली बर्फ को धुंध के हलके नीले जल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते और जगमगाते देखा है।

(स) कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता।

(द) ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े-मेढ़े खेत, जो थोड़े-से हों तो शायद अच्छे भी लगें, पर उनका एकरस सिलसिला बिल्कुल शैतान की आँत मालूम पड़ता है।

(य) सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत।

(र) टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर-नीचे रेंगती हुई कंकड़ीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी।

(ल) पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुदंर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे-किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ।

(व) और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रूपहला, न हल्का नीला .... पर तीनों आभास देता हुआ।

(श) सूरज डूबने लगा और धीर-धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी नीली हो गई।

4. **निम्नलिखित शब्दों में समास विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए–**

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
प्रसन्नवदन	प्रसन्न मुख से	कर्मधारय समास
पर्वतमाला	पर्वतों की माला	संबंध तत्पुरुष समास
तंद्रालस	थकान के कारण आलस	करण तत्पुरुष समास
जलराशि	जल की राशि	संबंध तत्पुरुष समास
हिमालय	हिम का आलय (घर)	संबंध तत्पुरुष समास
शीर्षासन	शीर्ष का आसन	संबंध तत्पुरुष समास
हिमराशि	हिम की राशि	संबंध तत्पुरुष समास

5. **निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए व संधि का नाम लिखिए–**

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**	**संधि का नाम**
रवींद्र	रवि + इंद्र	दीर्घ संधि
अत्याधुनिक	अति + आधुनिक	यण संधि
अनासक्ति	अन + आसक्ति	दीर्घ संधि
तंद्रालस	तंद्र + आलस	दीर्घ संधि
सोमेश्वर	सोम + ईश्वर	गुण संधि
नागाधिराज	नाग + अधिराज	दीर्घ संधि
हर्षतिरेक	हर्ष + अतिरेक	दीर्घ संधि

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि का नाम
निष्कलंक	नि: + कलंक	विसर्ग संधि
हिमालय	हिम + आलय	दीर्घ संधि
निरावृत	नि: + आवृत	विसर्ग संधि

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

काव्य खंड

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हिंदी काव्य के इतिहास को कितने कालों में विभाजित किया गया है?

उ०– हिंदी काव्य के इतिहास को चार कालों में विभाजित किया गया है—

(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल

(स) रीतिकाल (द) आधुनिककाल

2. वीरगाथा काल को चारणकाल क्यों कहते हैं?

उ०– वीरगाथा काल के कवि चारण या भाट थे। इसलिए वीरगाथा काल को चारणकाल भी कहते हैं।

3. 'बीसलदेव रासो' किसकी रचना है?

उ०– 'बीसलदेव रासो' नरपति नाल्ह द्वारा रचित है।

4. किस काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है?

उ०– भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

5. आदिकाल की समय-सीमा क्या है?

उ०– आदिकाल की समय-सीमा सन् 743 से 1343 ई० तक मानी गई है।

6. रीतिकाल की भाषा कौन-सी है?

उ०– रीतिकाल की भाषा ब्रजभाषा है।

7. आदिकाल में प्रयुक्त प्रमुख रस कौन-सा है?

उ०– आदिकाल में प्रयुक्त प्रमुख रस वीर रस है।

8. आदिकाल की कविता का मुख्य विषय क्या है?

उ०– आदिकाल की कविता का मुख्य विषय राजाओं अथवा वीर पुरुषों की वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करना व उनका यशोगान करना है।

9. भक्तिकाल को कितनी शाखाओं में बाँटा गया है? उनके नाम लिखिए।

उ०– भक्तिकाल को दो शाखाओं में बाँटा गया है। उनके नाम हैं—

(अ) निर्गुण शाखा (ब) सगुण शाखा

10. निर्गुण भक्ति शाखा की दो उपशाखाएँ कौन-सी हैं?

उ०– निर्गुण भक्ति शाखा की दो उपशाखाएँ हैं—

(अ) ज्ञानाश्रयी शाखा (ब) प्रेमाश्रयी शाखा

11. भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों व उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– भक्तिकाल के दो प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ हैं—

(अ) कबीरदास (बीजक) (ब) सूरदास (सूरसागर)

12. कबीर निर्गुण भक्ति की किस शाखा के कवि हैं?

उ०– कबीर निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

12. कबीर निर्गुण भक्ति की किस शाखा के कवि हैं?

उ०– कबीर निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

13. 'पद्मावत' किस शाखा की रचना है?

उ०– 'पद्मावत' निर्गुण प्रेमाश्रयी शाखा की रचना है।

14. 'पृथ्वीराज रासो' किस काल से संबंधित है?

उ०– 'पृथ्वीराज रासो' वीरगाथाकाल से संबंधित है।

15. 'सूर-सारावली' किस कवि की रचना है?

उ० 'सूर-सारावली' सूरदास जी की रचना है।

16. भक्तिकाल की समय-सीमा निर्धारित कीजिए।

उ०– भक्तिकाल की समय-सीमा सन् 1343 ई० से 1643 ई० तक है।

17. 'ललित ललाम' किसकी रचना है?

उ०– 'ललित ललाम' मतिराम जी की रचना है।

18. तुलसी की प्रमुख रचना कौन-सी है?

उ०– तुलसी की प्रमुख रचना 'रामचरितमानस' है।

19. रीति ग्रंथ किसे कहते हैं?

उ०– रस, छंद, अलंकार आदि के आधार पर नायक-नायिकाओं के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सृजित रचनाओं को लक्षण ग्रंथ अथवा रीति ग्रंथ कहते हैं।

20. रामायण के रचयिता कौन हैं तथा यह किस भाषा में रचित है?

उ०– रामायण के रचयिता कवि वाल्मीकि हैं तथा यह संस्कृत भाषा में रचित है।

21. 'अष्टछाप' के कवियों के नाम बताइए।

उ०– कृष्णदास, कुम्भनदास, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, गोविंद स्वामी, नंददास, परमानंद दास व सूरदास अष्टछाप के कवि थे।

22. कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि का नाम लिखिए।

उ०– कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि सूरदास हैं।

23. राम भक्ति काव्य की रचना किन भाषाओं में हुई?

उ०– राम भक्ति काव्य की रचना अवधी एवं ब्रजभाषा में हुई है।

24. आधुनिक काल को किन अन्य नामों से जाना जाता है?

उ०– आधुनिक काल को गद्यकाल, नवीन विकास का काल, पुनर्जागरण काल आदि नामों से जाना जाता है।

25. छायावाद के चार प्रमुख कवियों के नाम बताइए।

उ०– छायावाद के चार प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तथा महादेवी वर्मा हैं।

26. किसी एक रीतिमुक्त कवि व उसकी रचना का नाम बताइए।

उ०– रीतिमुक्त कवि 'बिहारी' व उनकी रचना 'बिहारी सतसई' है।

27. आधुनिक काल को किन युगों में विभाजित किया गया है?

उ०– आधुनिक काल को भारतेंदु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी एवं नई कविता के युगों में विभाजित किया गया है।

28. 'नई कविता' से क्या आशय है?

उ०– 'नई कविता' प्रयोगवादी धारा का विकसित रूप थी जो किसी भी बंधन से नहीं बँधी थी। वह वास्तविकता की नवीन कलात्मकता के द्वारा अभिव्यक्ति में सक्षम रही।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) की पाँच प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उ०– आदिकाल (वीरगाथा काल) की पाँच प्रमुख विशेषताएँ हैं—

(अ) आश्रयदाताओं की प्रशंसा

(ब) सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव

(स) युद्धों के सुंदर और सजीव वर्णन

(द) वीर रस के साथ शृंगार रस का भी वर्णन

(य) ऐतिहासिक वृत्तों में कल्पना का प्राचुर्य

2. भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है, कारण स्पष्ट कीजिए।

उ०– भक्तिकाल में कबीर, जायसी, सूर एवं तुलसी जैसे प्रसिद्ध कवियों की दिव्य वाणी देश में सर्वत्र छा गई। भक्तिकाल भाव, भाषा, शिल्प आदि सभी दृष्टियों से अन्य कालों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ था। इस युग के कवियों ने अपने काव्य में सुधारवाद, अध्यात्मवाद, गुरु महिमा एवं ईश्वर महत्व को बड़ी ही स्पष्टता एवं मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से भी इस युग का काव्य उच्चकोटि का है। इन्हीं कारणों से भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

3. भक्तिकाल की विभिन्न शाखाओं के नाम लिखिए।

उ०– भक्तिकाल में (क) निर्गुण शाखा एवं (ख) सगुण शाखा - दो प्रकार की शाखाएँ मिलती हैं। निर्गुण भक्ति शाखा ज्ञानश्रयी शाखा एवं प्रेमाश्रयी शाखा तथा सगुण भक्ति शाखा रामाश्रयी शाखा एवं कृष्णाश्रयी शाखा आदि दो-दो उपशाखाओं में विभाजित हैं।

4. भक्तिकाल में भक्ति भावना किन रूपों में प्रकट हुई? स्पष्ट कीजिए।

उ०– भक्तिकाल में भक्ति भावना निर्गुण भक्ति भावना एवं सगुण भक्ति भावना के रूप में प्रकट हुई।

निर्गुण शाखा– निर्गुण शाखा में ब्रह्मा (ईश्वर) के निराकार स्वरूप की उपासना की गई है। इसकी दो उपशाखाएँ हैं— ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में संत रैदास, नानक, दादू, मलूकदास, धर्मदास और सुंदरदास हैं। इन भक्तों ने साधना के सहज मार्ग को अपनाया तथा जाति-पाँति, तीर्थ-व्रत आदि बाह्याडम्बरों का विरोध किया। इस शाखा की प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। इस शाखा के कवियों ने लौकिक प्रेम के आधार पर अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है।

सगुण शाखा– भक्तिकालीन काव्य की जिस धारा में सगुण परमात्मा के प्रति भक्तिभाव की अभिव्यक्ति हुई है, उसे सगुण काव्यधारा कहा जाता है। इसकी दो उपशाखाएँ हैं— रामाश्रयी शाखा और कृष्णाश्रयी शाखा। रामाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी हैं। इस शाखा में राम का लोकोपकारी रूप स्पष्ट हुआ है। कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि सूरदास जी हैं। इस शाखा के सभी कवियों ने श्रीकृष्ण के बाल और किशोर जीवन की अनेक लीलाओं का चित्रण किया है।

5. ज्ञानाश्रयी शाखा का परिचय दीजिए।

उ०– ज्ञानाश्रयी शाखा भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा की एक शाखा है। इस शाखा के काव्य में साधना एवं ज्ञान की श्रेष्ठता का भाव अभिव्यक्त हुआ है। इस शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं तथा उनका प्रमुख ग्रंथ 'बीजक' है। इनकी भाषा 'सधुक्कड़ी व 'पंचमेल खिचड़ी' है। दादू, मलूकदास, संत रविदास (रैदास), धर्मदास, सुंदरदास व नानक इस शाखा के अन्य कवि हैं, जिन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना करते हुए गुरु महिमा का वर्णन किया है।

6. महाकाव्य किसे कहते हैं?

उ०– महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप में चित्रण होता है। इसकी कथा इतिहास-प्रसिद्ध होती है। इसका नायक उदात और महान् चरित्र वाला होता है। इसमें वीर, शृंगार और शांत रस में से कोई एक रस प्रधान तथा शेष रस गौण होते हैं। महाकाव्य सर्ग में विभाजित होता है तथा इसमें कम-से-कम आठ सर्ग होते हैं। इसकी कथा में धारावाहिक तथा हृदय को भाव-विभोर करने वाले मार्मिक प्रसंगों का समावेश भी होना चाहिए।

आधुनिक युग के महाकाव्यों के स्वरूप में प्राचीन प्रतिमानों की तुलना में परिवर्तन हुए हैं। हिंदी के कुछ प्रसिद्ध महाकाव्य हैं— 'पद्मावत', 'श्रीरामचरितमानस', 'साकेत', 'प्रियप्रवास', 'कामायनी', 'उर्वशी', 'लोकायतन' आदि।

7. प्रयोगवादी कविता की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उ०– घोर वैयक्तिकता, अति यर्थाथवादी दृष्टिकोण, कुंठा और निराशा के स्वर, गहन बौद्धिकता, भदेस (अनगढ़, विरूप) का चित्रण, विद्रोह का स्वर, व्यंग्य तथा कटूक्ति प्रयोगवादी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बिहारी' किस काल के कवि हैं?

(अ) आदिकाल (ब) **रीतिकाल**

(स) भक्तिकाल (द) आधुनिक काल

2. 'बिहारी सतसई' है–

(अ) महाकाव्य (ब) खंडकाव्य

(स) **मुक्तक काव्य** (द) प्रबंध काव्य

3. 'बीजक' के रचयिता हैं–

(अ) रत्नाकर (ब) हरिऔध

(स) बिहारीलाल (द) **कबीरदास**

4. 'कामायनी' काव्य साहित्य की किस विधा से संबंधित है?

(अ) खंडकाव्य (ब) गीतिकाव्य

(स) पद (द) **महाकाव्य**

5. सन् 743 ई० से सन् 1343 ई० तक की अवधि किस काल से संबंधित है?

(अ) रीतिकाल (ब) भक्तिकाल

(स) आधुनिक काल (द) **आदिकाल**

6. 'सूरसागर' के रचयिता हैं–

(अ) तुलसीदास (ब) बिहारीलाल

(स) भूषण (द) **सूरदास**

7. 'पद्मावत' के रचयिता हैं–

(अ) सूरदास (ब) **जायसी**

(स) गुप्त (द) हरिऔध

8. रामाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं–

(अ) **तुलसीदास** (ब) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(स) केशवदास (द) अग्रदास

9. रीतिकाल में वीर रस की कविता लिखने वाले प्रमुख कवि हैं–

(अ) बिहारी (ब) **भूषण**

(स) महादेवी वर्मा (द) अज्ञेय

10. सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित महाकाव्य है–

(अ) **लोकायतन** (ब) श्रीरामचरितमानस

(स) साकेत (द) कुरुक्षेत्र

11. 'अष्टछाप' के कवियों में से एक कवि हैं–

(अ) मीराबाई (ब) **सूरदास**

(स) रसखान (द) भारतेंदु हरिश्चंद्र

12. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं–

(अ) तुलसीदास (ब) सूरदास

(स) नाभादास (द) **कबीर**

13. 'पद्मावत' किस भाषा में लिखा गया है?

(अ) ब्रज (ब) भोजपुरी

(स) **अवधी** (द) संस्कृत

14. 'झरना' किसकी रचना है?

(अ) दिनकर (ब) अज्ञेय

(स) महादेवी वर्मा (द) **जयशंकर प्रसाद**

15. 'प्रयोगवाद' के प्रवर्तक हैं–

(अ) भूषण (ब) भारतेंदु

(स) रहीम (द) **अज्ञेय**

16. 'चिदंबरा' के रचयिता हैं–

(अ) कबीरदास (ब) तुलसीदास

(स) **सुमित्रानंदन पंत** (द) जायसी

17. अज्ञेय जी ने 'तार सप्तक' का संपादन किया–

(अ) सन् 1935 ई० में (ब) सन् 1940 ई० में

(स) **सन् 1943 ई० में** (द) सन् 1941 ई० में

18. नई कविता का प्रकाशन वर्ष माना गया है–

(अ) 1945 ई० (ब) **1960 ई०**

(स) 1951 ई० (द) 1956 ई०

1. साखी (कबीरदास)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीरदास जी का जन्म कैसे समय में हुआ?

या

कबीरदास जी के जन्म के समय, कैसा दौर चल रहा था?

उ०– कबीरदास जी का जन्म ऐसे समय में हुआ, जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप अंधकारमय हो रहा था। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक अवस्थाएँ शोचनीय हो गई थी।

2. कबीदास जी के जन्म के विषय में प्रचलित किवदंती बताइए।

उ०– एक किवदंती के अनुसार कबीरदास जी को विधवा ब्राह्मणी का पुत्र बताया जाता है, जिसको भूल से रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था।

3. कबीरदास जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उ०– कबीरदास जी का जन्म सन् 1399 को काशी में हुआ था।

4. कबीरदास जी की काव्य-प्रतिभा कौन से गुरु की कृपा से जागृत हुई?

उ०– कबीरदास जी की काव्य-प्रतिभा गुरु रामानंद जी की कृपा से जागृत हुई।

5. कबीरदास जी की पत्नी कौन थी और उनके कितने बच्चे थे? नाम बताइए।

उ०– कबीरदास जी की पत्नी वनखेड़ी बैरागी की पालिता कन्या लोई थी। उनकी दो संतानें थी – पुत्र कमाल और पुत्री कमाली।

6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी क्यों कहा है?

उ०– कबीर की भाषा में अरबी, फारसी, भोजपुरी, पंजाबी, बुंदेलखंडी, ब्रज, खड़ीबोली आदि विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इसी कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा है।

7. कबीरदास जी की रचनाओं का संकलन किस नाम से जाना जाता है?

उ०– कबीरदास जी की रचनाओं का संकलन 'बीजक' नाम से जाना जाता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीरदास जी के अनुसार गुरु का स्थान जीवन में कितना महत्वपूर्ण है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– कबीरदास जी के अनुसार गुरु ही प्रसन्न होकर हमें ज्ञान का उपदेश देते हैं। जिससे हमारे हृदय में व्यापक भक्ति का जन्म होता है। भक्ति का यह बादल प्रेम और स्नेह की वर्षा के रूप में बरसने लगता है। गुरु के द्वारा दिया गया ज्ञान बहुमूल्य वस्तु है, जिसका मूल्य नहीं चुकाया जा सकता अर्थात् गुरु के द्वारा ही ईश्वर का ज्ञान होता है, जिसकी भक्ति से अनुपम संतोष की प्राप्ति होती है और मन प्रेममय हो जाता है। इसलिए मानव-जीवन में गुरु का अत्यधिक महत्व है।

2. किसकी कृपा से हमें सतगुरु की प्राप्ति संभव हो सकती है?

उ०– कबीरदास जी के अनुसार ईश्वर की कृपा से ही सतगुरु की प्राप्ति हो सकती है। जिनके कारण हमारे चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैला है।

3. कबीरदास जी ने संसार को सेमल के फूल के समान क्यों कहा है?

उ०– कबीरदास जी ने संसार को सेमल के फूल के समान इसलिए कहा है क्योंकि सेमल का फूल देखने में आकर्षक लगता है, किंतु उसका यह आकर्षण क्षणिक होता है। कुछ ही दिनों में वह टूटकर गिर पड़ता है। उसी प्रकार संसार के सुख भी क्षणिक होते हैं, जो शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

4. कबीरदास जी मनुष्य को किस बात से सावधान कर रहे हैं ?

उ०– कबीरदास जी अपने दोहों के द्वारा मनुष्य को सावधान करते हुए कह रहे हैं कि हे मनुष्य, यह संसार सेमल के फूल की तरह नश्वर है अर्थात् यह नष्ट हो जाने वाला है अत: तू संसार की किसी भी वस्तु के लिए अहंकार मत कर। ये वस्तुएँ सदा के लिए तेरे साथ जाने वाली नहीं हैं।

मनुष्य को आगे सावधान करते हुए कबीर जी अपने एक दोहे के माध्यम से समझाते हैं कि रे मनुष्य, ये जो तेरा शरीर है, यह एक कच्चे घड़े के समान है। इसकी सुंदरता पर घमंड मत कर। एक न एक दिन यह भी काल के झटके से फूट जाएगा। अत: कबीर जी कहते हैं कि संसार की समस्त भौतिक वस्तुओं की मोह माया को छोड़कर रे मनुष्य तू उस ईश्वर का भजन कर। वही तेरा कल्याण करेगा।

5. कबीरदास जी ने कच्चा घड़ा किसको कहा है और क्यों?

उ०– कबीरदास जी ने मनुष्य के शरीर को कच्चा घड़ा कहा हैं क्योंकि जिस प्रकार मिट्टी के कच्चे घड़े में थोड़ा-सा धक्का लगने पर वह फूट जाता है, उसी प्रकार मानव शरीर भी काल का छोटा-सा झटका लगने पर नष्ट हो जाता है।

6. ईश्वर मनुष्य के अंदर विरजमान है लेकिन उसके होने का अनुभव वह नहीं कर पाता। कबीरदास जी ने इस बात को किस तरह से कहा है?

उ०– कबीरदास जी अपने एक दोहे के माध्यम से कहते हैं कि—

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिट गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

अर्थात्– जब मनुष्य के शरीर में 'मैं' रूपी अहंकार का समावेश होता है, वह अपने अंदर विराजमान ईश्वर का अनुभव नहीं कर पाता। परंतु जब उसे ज्ञान रूपी दीपक का प्रकाश मिलता है तो उसके मन का अंधकार मिट जाता है अर्थात् अहंकार विनष्ट हो जाता है और वह अपने मन में ईश्वर की अनुभूति करने लगता है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. कबीरदास जी का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उ०– महात्मा कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ, जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप अंधकारमय हो रहा था। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक अवस्थाएँ शोचनीय हो गई थीं। एक तरफ मुसलमान शासकों की मनमानी से जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी और दूसरी तरफ हिंदुओं के कर्मकांडों, विधानों एवं पाखंडों से धर्म-बल का ह्रास हो रहा

था। जनता के भीतर भक्ति-भावनाओं का सम्यक् प्रचार नहीं हो रहा था। सिद्धों के पाखंडपूर्ण वचन, समाज में वासना को बढ़ावा दे रहे थे। ज्ञान और भक्ति दोनों तत्व केवल ऊपर के कुछ धनी-मनी, पढ़े-लिखे की बपौती के रूप में दिखाई दे रहा था। ऐसे नाजुक समय में एक बड़े एवं भारी समन्वयकारी महात्मा की समाज को आवश्यकता थी, जो राम और रहीम के नाम पर अज्ञानतावश लड़ने वाले लोगों को सच्चा रास्ता दिखा सके। ऐसे ही संघर्ष के समय में, मस्तमौला कबीर का प्रादुर्भाव हुआ।

वस्तुत: कबीर का ऐसा तूफानी व्यक्तित्व था, जिसने रूढ़ि और परंपरा की जर्जर दीवारों को धराशाई कर दिया और एकता की मजबूत नींव पर मानवता का विशाल दुर्ग खड़ा किया। कबीर एवं उनके काव्य के संबंध में डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है कि कबीर एक उच्च कोटि के साधक, सत्य के उपासक और ज्ञान के अन्वेषक थे। उनका समस्त साहित्य एक जीवनमुक्त संत के गूढ़ एवं गंभीर अनुभवों का भंडार है।

जन्म परिचय–

चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार, एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रकट भए।।

महात्मा कबीर के जन्म के विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं। 'कबीर कसौटी' में इनका जन्म संवत् 1455 दिया गया है। 'भक्ति-सुधा-बिंदु-स्वाद' में इनका जन्मकाल संवत् 1451 से संवत् 1552 के बीच माना गया है।

ऊपर दी गई उक्ति के आधार पर ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार, वि० संवत् 1456 (सन् 1399) को इनका जन्म माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी वि० संवत् 1456 को ही कबीर का जन्म-संवत् स्वीकार करते हैं। कबीर ने अपने को काशी का जुलाहा कहा है। कबीरपंथियों के अनुसार उनका निवास स्थान काशी था। बाद में, कबीर एक समय काशी छोड़कर मगहर चले गए थे। ऐसा वह स्वयं कहते हैं—

सकल जनम शिवपुरी गँवाया।
मरत बार मगहर उठि आया।।

कहा जाता है कि कबीर का पूरा जीवन काशी में ही गुजरा, लेकिन वह मरने के समय मगहर चले गए थे। कबीर वहाँ जाकर दु:खी थे। वह न चाहकर भी, मगहर गए थे।

अबकहु राम कवन गति मोरी।
तजीले बनारस मति भई मोरी।।

कहा जाता है कि कबीर के शत्रुओं ने उनको मगहर जाने के लिए मजबूर किया था। वह चाहते थे कि आपकी मुक्ति न हो पाए, परंतु कबीर तो मरने से नहीं, राम की भक्ति से मुक्ति पाना चाहते थे।

जौ काशी तन तजै कबीरा
तो रामै कौन निहोटा।

कबीर के माता-पिता– कबीर के माता-पिता के विषय में भी एक राय निश्चित नहीं है। 'नीमा और नीरू' की कोख से यह अनुपम ज्योति पैदा हुई थी या लहर तालाब के समीप विधवा ब्राह्मणी की पाप-संतान के रूप में आकर ये पतितपावन हुए थे, ठीक तरह से नहीं कहा जा सकता है। कई मत यह है कि नीमा और नीरू ने केवल इनका पालन-पोषण ही किया था। एक किवदंती के अनुसार कबीर को एक विधवा ब्राह्मणी का पुत्र बताया जाता है, जिसको भूल से रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था। एक जगह कबीरदास जी ने कहा है—

जाति जुलाहा नाम कबीरा
बनि बनि फिरो उदासी।

स्त्री और संतान– कबीर का विवाह वनखेड़ी बैरागी की पालिता कन्या 'लोई' के साथ हुआ था। कबीर को कमाल और कमाली नाम की दो संतानें भी थी। ग्रंथ साहब के एक श्लोक से विदित होता है कि कबीर का पुत्र कमाल उनके मत का विरोधी था।

बूड़ा बंस कबीर का, उपजा पूत कमाल।
हरि का सिमरन छोड़ि के, घर ले आया माल।।

कबीर मूलत: संत थे परंतु ये अपने पारिवारिक जीवन के कर्तव्यों के प्रति कभी उदासीन नहीं रहे। इन्होंने भी जुलाहे का ही

धंधा अपनाया और आजीवन इसे निष्ठा के साथ करते रहे। अपने व्यवसाय से संबंधित चरखा, ताना, बाना, भरनी, पूनी आदि का इन्होंने अपने काव्य में प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया।

रचनाएँ– कबीर को शिक्षा-प्राप्ति का अवसर नहीं मिला था। उनकी काव्य-प्रतिभा उनके गुरु रामानंद जी की कृपा से ही जाग्रत हुई थी। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। इन्होंने स्वयं स्वीकार किया है–

मसि कागद् छूयौ नहीं, कलम गह्यौ नहिं हाथ।

कबीरदास जी में अद्‌भुत काव्य-प्रतिभा थी। इन्होंने साधुओं की संगति और देशाटन द्वारा ज्ञानार्जन किया था। इसी ज्ञान से कबीर ने अपने अनुभव की कसौटी पर कसकर जनता के सामने उपदेशात्मक रूप में प्रस्तुत किया। कबीर के शिष्य धर्मदास ने इनकी रचनाओं का 'बीजक' नाम से संग्रह किया, जिसके तीन भाग हैं–

(अ) साखी– कबीर की शिक्षाओं और सिद्धांतों का प्रस्तुतीकरण 'साखी' में हुआ है। इसमें दोहा छंद का प्रयोग हुआ है।

(ब) सबद– इसमें कबीर के गेय पद संग्रहीत हैं। गेय होने के कारण इनमें संगीतात्मकता है। इन पदों में कबीर की प्रेम साधना व्यक्त हुई है।

(स) रमैनी– इसमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचार व्यक्त हुए हैं। यह चौपाई छंद में रचित है। कबीर की संपूर्ण रचनाओं का संकलन बाबू श्यामसुंदरदास ने 'कबीर ग्रंथावली' नाम से किया है, जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित की गई है।

2. 'शरीर नश्वर है।' प्रस्तुत पाठ में दिए गए कौन-से दोहे इस कथन का समर्थन करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'शरीर' नश्वर है।' इस कथन का समर्थन कबीरदास जी के निम्न दोहे करते हैं–

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद।
जगत चबैना काल का, कछु मुख में कछु गोद॥
यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौं, झूठे रंग न भूलि॥
यह ताना काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि।
ढबका लागा फुटि गया, कछु न आया हाथि॥

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए।

(अ) सतगुरु हम सूँ -------------- भीजि गया सब अंग।

संदर्भ– प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'संत कबीरदास जी' द्वारा रचित 'साखी' (कबीर ग्रंथावली) शीर्षक से उद्‌धृत है।

प्रसंग– इस साखी में कबीर ने गुरु का महत्व बताते हुए कहा है कि गुरु की कृपा से ही ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है।

व्याख्या– कबीरदास जी कहते हैं कि सद्‌गुरु ने मेरी सेवा-भावना से प्रसन्न होकर मुझे ज्ञान की एक बात समझाई, जिसे सुनकर मेरे हृदय में ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न हो गया। वह उपदेश मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो ईश्वर-प्रेमरूपी जल से भरे बादल बरसने लगे हों। उस ईश्वरीय प्रेम की वर्षा से मेरा अंग-अंग भीग गया। यहाँ कबीरदास जी के कहने का भाव यह है कि सद्‌गुरु के उपदेश से ही हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और उसी से मन को शांति मिलती है। इस प्रकार जीवन में गुरु का अत्यधिक महत्व है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत साखी में कवि ने ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में गुरु की महत्ता को अत्यंत सुंदर एवं उपयुक्त अभिव्यक्ति दी है।

2. भाषा– सधुक्कड़ी **3. रस–** शांत **4. छंद–** दोहा **5. अलंकार–** रूपक व अनुप्रास।

(ब) जब मैं था तब गुरु ------------------- दो न समाहिं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कबीर ने गुरु से प्रेम को अहंकार के विनाश का साधन बताया है।

व्याख्या– कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे हृदय में अहंकार था, तब तक मेरे मन में गुरु के लिए कोई स्थान नहीं

था अर्थात् मैं अहंकार के कारण गुरु के प्रति श्रद्धा न रख सका, किंतु अब जब मेरे मन में गुरु के प्रति श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न हो गया है तो मेरा संपूर्ण अहंकार ही नष्ट हो गया है। इसका कारण बताते हुए कबीरदास आगे कहते हैं कि प्रेमरूपी हृदय की गली अत्यधिक सँकरी है और उसमें एक साथ दो का प्रवेश नहीं हो सकता। यही कारण है कि जब तक उस गली में अहंकार विद्यमान था, तब तक गुरु-भक्ति को कोई स्थान नहीं मिला और जब गुरु-भक्ति का प्रवेश उसमें हो गया तो अहंकार को वहाँ से भागना पड़ा।

काव्यगत सौंदर्य– 1. भाषा– सधुक्कड़ी **2. रस–** शांत **3. छंद–** दोहा **4. अलंकार–** रूपक और अनुप्रास **5.** प्रभु-प्राप्ति में अहंकार ही सबसे अधिक बाधक सिद्ध होता है।

(स) ग्यान प्रकास्या ---------------------- मिलिया आइ॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में कहा गया है कि ईश्वर की कृपा के बिना सद्गुरु की प्राप्ति नहीं होती।

व्याख्या– संत कबीर कहते हैं कि सच्चा गुरु मिलने पर चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है। इसलिए जो गुरु हमें ज्ञान का प्रकाश देता है, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए अर्थात् उसके प्रति हमेशा कृतज्ञ बने रहना चाहिए; क्योंकि ईश्वर की कृपा से ही किसी को सच्चा गुरु प्राप्त होता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ गुरु एवं ईश्वर की महानता की तुलनात्मक अभिव्यक्ति का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है। **2.** कबीर जी कहते है कि गुरु ने ईश्वर का ज्ञान दिया, परंतु सच्चा गुरु भी तभी प्राप्त होता है, जब ईश्वर की अनुकंपा होती है।**3. भाषा–** सधुक्कड़ी **4. रस–** शांत **5. छंद–** दोहा **6. अलंकार–** अनुप्रास।

(द) झूठे सुख को सुख ------------------- कछु गोद॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कबीर ने भौतिकवाद को सुख मानने वाली लोगों की प्रवृत्ति को गलत बताया है।

व्याख्या– कबीरदास जी कहते हैं कि लोग संसार की भौतिक वस्तुओं के उपभोग को सुख मानकर मन में प्रसन्न होते हैं, जबकि वास्तव में यह झूठा सुख है। सच्चा सुख तो ईश्वर की भक्ति में है। यह संसार और इसका भौतिकवाद तो क्षणभंगुर है, इसे तो काल चबैने के रूप में चबाकर समाप्त कर देगा। यह कुछ को अपने मुख में रखकर चबा रहा है और कुछ को चबाने के लिए अपनी गोद में समेटे बैठा है। आशय यह है कि इस संसार को विनष्ट करने का काल का यह क्रम लगातार चल रहा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इसमें मानव-शरीर की नश्वरता का मार्मिक चित्रण हुआ है। **2. भाषा–** सधुक्कड़ी **3. रस–** शांत **4. छंद–** दोहा **5. अलंकार–** अनुप्रास और रूपक **6. भावसाम्य–** सांसारिक वस्तुओं को क्षणभंगुर मानते हुए कबीर ने अन्यत्र भी कहा है—

यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौ, झूठै रंग न भूल॥

(य) भगति भजन हरि -------------- सुमिरण सार॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– संत कबीर ने इन काव्य-पंक्तियों में जगत् की असारता और परमात्मा की नित्यता बताते हुए अहंकार को नष्ट कर हरि-भक्ति की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– कबीरदास जी का कथन है कि जीव के लिए परमात्मा की भक्ति और भजन करना एक नाव के समान उपयोगी है। इसके अतिरिक्त संसार में दु:ख ही दु:ख हैं। इसी भक्तिरूपी नाव से सांसारिक दु:खरूपी सागर को पार किया जा सकता है। इसलिए मन, वचन और कर्म से परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, यही जीवन का परम तत्व है; सार है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. भाषा– सधुक्कड़ी **2. रस–** शांत **3. छंद–** दोहा **4. अलंकार–** सांगरूपक और अनुप्रास।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) यह तन काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि।

भाव स्पष्टीकरण– जिस प्रकार मिट्टी का कोई कच्चा घड़ा जरा से धक्के से ही फूट जाता है, उसी प्रकार कबीरदास जी

ने मनुष्य के शरीर को भी कच्चे घड़े के समान कहा है, जोकि हम अपने साथ लिए घूमते हैं। यदि इस पर भी छोटा-सा झटका लग जाए तो वह फूट जाता है। अर्थात् काल के छोटे-से झटके से ही मनुष्य के प्राण निकल जाते हैं। अत: कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य को इस शरीर का कभी घमंड नहीं करना चाहिए।

(ब) बीछड़ियाँ मिलिबौ नहीं, ज्यूँ काँचली भुजंग।

भाव स्पष्टीकरण– कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार साँप के शरीर से उसकी केंचुली अलग होने के बाद उसके शरीर पर नहीं चढ़ती, उसी प्रकार अवस्था ढलने पर मनुष्य का रूप-रंग भी बिगड़ जाता है और दुबारा लौटकर नहीं आता।

(स) यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।

भाव स्पष्टीकरण– कबीरदास जी कहते हैं कि यह संसार सेमल के फूल के समान क्षणभंगुर है। सेमल का फूल देखने में आकर्षक लगता है; किंतु उसका यह आकर्षण क्षणिक होता है, इस संसार की स्थिति भी इसी प्रकार की है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीरदास जी का जन्म हुआ था–

(अ) सन् 1698 ई० में (ब) **सन् 1399 ई० में**

(स) सन् 1478 ई० में (द) सन् 1872 ई० में

2. कबीर की भाषा है–

(अ) ब्रज (ब) भोजपुरी

(स) बुंदेलखंडी (द) **सधुक्कडी**

3. 'रमैनी' किस छंद पर आधारित है?

(अ) दोहा (ब) सोरठा

(स) **चौपाई** (द) रोला

4. कबीरदास जी की गेय पदों पर आधारित रचना है–

(अ) साखी (ब) **सबद**

(स) रमैनी (द) बीजक

5. कबीरदास जी के गुरु थे–

(अ) **स्वामी रामानंद** (ब) स्वामी हरिदास

(स) तानसेन (द) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि' पद में कौन-सा रस है?

उ०– 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि' पद में शांत रस का प्रयोग किया गया है।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(अ) माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पड़ंत।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में रूपक व पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(ब) कबिरा चित्त चमंकिया, चहुँ दिसि लागी लाइ।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(स) कहै कबीर गुर ग्यान थै, एक आध उबरंत।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

3. कबीर की साखियों में किस छंद का प्रयोग हुआ है? सतर्क उत्तर दीजिए।

उ०– कबीरदास जी की साखियों में दोहे छंद का प्रयोग हुआ है। दोहा एक मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। पहले व तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। अंत में वर्ण गुरु व लघु होते हैं, जैसे—

। । । । ॥ ऽ ऽ । । ।
सत गुर हम सू रीझि करि = 13

। । । ऽ ऽऽ।
एक कह्या प्रसंग = 11

।।ऽ ऽ।। ऽ। ऽ
बरस्या बादल प्रेम का = 13

ऽ । ।ऽ ॥ ऽ।
भीजि गया सब अंग = 11

4. तत्सम रूप लिखिए-

शब्द	**तत्सम**
सीतल	शीतल
सतगुर	सतगुरु
काचा	अपक्व
ब्यौहार	व्यवहार
लाइ	अग्नि
चबैना	चर्वण
दुक्ख	दु:ख
गली	पथ
भगति	भक्ति

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

2. पदावली (मीराबाई)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. कृष्णाश्रयी शाखा की एकमात्र कवयित्री का नाम लिखिए।

उ०– कृष्णाश्रयी शाखा की एकमात्र कवयित्री मीराबाई थी।

2. मीराबाई का जन्म कब और किस स्थान पर हुआ था?

उ०– मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई० के लगभग राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी ग्राम में हुआ था।

3. मीराबाई के पति कौन थे?

उ०– मीराबाई के पति चित्तौड़ के महाराणा राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज थे।

4. मीराबाई किसकी भक्त थी?

उ०– मीराबाई श्रीकृष्ण की भक्त थी।

5. मीराबाई ने बचपन से ही किसे अपना पति माना?

उ०– मीराबाई ने बचपन से ही श्रीकृष्ण को अपना पति माना।

6. मीराबाई किन्हें अपना गुरु मानती थी?

उ०– मीराबाई रैदास को अपना गुरु मानती थी।

7. **मीराबाई द्वारिका क्यों चली गई थी?**

उ०– मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राजपरिवार को अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने मीरा को कई बार विष देकर मारने की कोशिश की। घरवालों के इस व्यवहार से परेशान होकर वे द्वारिका चली गई थीं।

8. **मीराबाई के काव्य में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।**

उ०– मीराबाई ने अपने काव्य में श्रृंगार और शांत रस का प्रयोग किया है।

9. **हिंदी साहित्य में मीराबाई का क्या स्थान है? वे किस नाम से जानी जाती हैं?**

उ०– कृष्णभक्त कवियों में मीरा का स्थान भावना की तरंगों और अगाध तन्मयता के कारण विशिष्ट है। हिंदी साहित्य में वे 'प्रेम दीवानी मीरा' के नाम से जानी जाती हैं।

10. **मीराबाई की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।**

उ०– (अ) नरसी जी का मायरा (ब) राग गोविंद

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. **मीराबाई अपने नैनों में किनको बसाना चाहती हैं? उनका स्वरूप कैसा है?**

उ०– मीराबाई अपने नैनों में श्रीकृष्ण को बसाना चाहती हैं। जो अपने सिर पर मोर पंखवाला मुकुट, कानों में मछली की आकृति के कुंडल, होठों पर सुंदर बाँसुरी, कमर पर छोटी-छोटी घंटियों वाली कमरबंद और पैरों में घुँघरन वाली पाजेब धारण करते हैं।

2. **मीराबाई को कौन-से धन की प्राप्ति हो गई है? उस धन की क्या विशेषताएँ हैं?**

उ०– मीराबाई को राम नाम रूपी अमूल्य धन अर्थात् श्रीकृष्ण की प्राप्ति हो गई है। इस धन की विशेषता है कि यह खर्च नहीं होती, इसे कोई चोर नहीं चुरा सकता है और खर्च करने पर दिन-प्रतिदिन इसमें सवा गुना वृद्धि होती है।

3. **मीरा ने क्या मोल लिया है?**

उ०– मीरा ने श्रीकृष्ण को मोल लिया है। उन्होंने श्रीकृष्ण को सोच-समझकर तथा ठीक प्रकार से नाप-तौलकर मोल लिया है।

4. **मीरा ने 'वस्तु अमोलक' किसे कहा है?**

उ०– मीरा ने 'श्रीकृष्ण' को वस्तु अमोलक कहा है, क्योंकि उन्होंने श्रीकृष्ण को बहुत अधिक मूल्य देकर मोल लिया है। अर्थात् मीरा ने सारे संसार से विरक्त होकर पूर्ण समर्पण भाव से श्रीकृष्ण को खरीदा है।

5. **मीरा किसके रँग में रंग गई हैं? यहाँ 'तजि' से क्या अभिप्राय है?**

उ०– मीरा श्रीकृष्ण के रंग में रंग गई हैं। यहां 'तजि' से अभिप्राय है कि उन्होंने लोक-लाज को त्याग दिया है और श्रृंगार करके कृष्णभक्ति में नृत्य प्रारंभ कर दिया है।

6. **मीरा ने अपने पति की क्या पहचान बताई है?**

उ०– मीरा ने अपने पति की पहचान बताई है कि जो अपने सिर पर मोर-मुकुट धारण किए हुए हैं, वे कृष्ण ही मेरे पति (स्वामी) हैं।

7. **मीरा संसार रूपी सागर पार करने का क्या उपाय बताती हैं?**

उ०– मीरा संसार रूपी सागर पार करने का एकमात्र उपाय कृष्णभक्ति को बताती हैं। वे कहती हैं कि कृष्ण ही इस संसार रूपी भवसागर से पार लगाकर, उद्धार करके मोक्ष प्रदान कर सकते हैं।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **मीराबाई का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं के बारे में बताइए।**

उ०– मीराबाई कृष्णाश्रयी शाखा की हिंदी की महान कवयित्री हैं। श्रीकृष्ण की उपासिका मीरा ने अपने प्रियतम श्रीकृष्ण को पाने के लिए अपना राजसी वैभव त्याग दिया था। भरे-पूरे परिवार में जन्म लेकर भी अपने गिरधर नागर के चरणों में सजाने के लिए मीरा सदा आँसुओं की लड़ियाँ ही पिरोती रहीं।

जन्म परिचय– श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. (संवत् 1555 विक्रमी) के लगभग राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी ग्राम में हुआ था। इनके पिता जोधपुर के राजा रत्नसिंह थे। बचपन में ही इनकी माता का निधन हो गया था। मीराबाई राव जोधाजी की प्रपौत्री एवं राव दूदाजी की पौत्री थी। अत: इनके दादा जी राव दूदाजी ने ही इनका पालन-पोषण किया था। दादाजी की धार्मिक प्रवृत्ति का प्रभाव इन पर पूरा पड़ा। तभी से मीराबाई के हृदय में

कृष्ण-प्रेम उत्पन्न हो गया। आठ वर्ष की मीरा ने कब श्रीकृष्ण को पति के रूप में स्वीकार लिया, यह बात कोई न जान सका।

विवाह– मीराबाई का विवाह चित्तौड़ के महाराणा राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। इनका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा। विवाह के कुछ समय बाद मीराबाई विधवा हो गई। इसके बाद इनके ससुर भी पंचतत्वों में विलीन हो गए। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया। किंतु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुईं। वे संसार की ओर से विरक्त हो गईं।

पति के परलोकवास के बाद इनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। वे मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्ण जी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की। घरवालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वे द्वारका और वृंदावन गईं। वे जहाँ जाती थीं, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था। लोग उनको देवियों जैसा प्यार और सम्मान देते थे।

मीराबाई की भक्ति– मीरा की भक्ति में माधुर्य-भाव काफी हद तक पाया जाता है। वे अपने इष्टदेव कृष्ण की भावना प्रियतम या पति के रूप में करती थीं। उनका मानना था कि इस संसार में कृष्ण के अलावा कोई पुरुष है ही नहीं। वे कृष्ण की अनन्य दीवानी थी।

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरति साँवरि सुरति, नैना बने बिसाल।।
अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर बैजंती-माल।
छुद्र घंटिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

मीराबाई रैदास को अपना गुरु मानते हुए कहती हैं—

गुरु मिलिया रैदास दीन्ही ज्ञान की गुटकी।

भक्ति में मीराबाई को लोक-लाज का भी ध्यान नहीं रहता था— वे तन्मय होकर नाचती थीं। कृष्ण के विषय में उन्होंने कहा है—

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई।।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।।

कृष्ण भक्ति के पद गाते हुए सन् 1546 ई. में मीराबाई प्रभु के श्री चरणों में विलीन हो गई।

रचनाएँ– मीराबाई ने गीतिकाव्य की रचना की है। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—

(अ) गीत गोविंद की टीका
(ब) राग सोरठा के पद
(स) राग गोविंद
(द) नरसी जी का मायरा
(य) राग विहाग एवं फुटकर पद
(र) गरबा गीत
(ल) मीराबाई की मल्हार

2. 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई' पद का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– प्रस्तुत पद में मीराबाई जी ने श्रीकृष्ण को ही अपना बताया है। उनके अनुसार कृष्ण के अलावा उनका कोई और सगा-संबंधी नहीं है। वे ही उनके पति हैं। संसार से जुड़े किसी भी प्राणी से उनका किसी भी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। अर्थात् पिता, माता, भाई अब कोई उनका अपना नहीं है। उनके लिए तो श्रीकृष्ण ही सब कुछ हैं। मीराबाई जी कहती हैं कि उन्होंने श्रीकृष्ण के लिए अपने कुल की मर्यादाओं को भी छोड़ दिया है। उनका अब कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। संतों की संगति से उन्होंने लोक-लाज का मोह छोड़ दिया है। आँसुओं की धारा से उन्होंने प्रेमरूपी बेल को सींचा है, जो अब फैल गई है तथा जिस पर आनंदरूपी फल लगे हुए हैं। अर्थात् श्रीकृष्ण की भक्ति करने से उन्हें जो आनंद की अनुभूति होती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अब वे श्रीकृष्ण की भक्ति में ही अपनी खुशी देखती हैं और इस संसार को देखकर

उन्हें रोना आता है अर्थात् संसार के व्यवहारों से वे विमुख हो गई हैं। मीराबाई श्रीकृष्ण जी को संबोधित करते हुए कहती हैं कि हे गिरधर, मैं आपकी दासी हूँ, अत: मेरा उद्धार करो।

सारांशत: मीराबाई कृष्ण की भक्ति में इस कदर लीन हो गई हैं कि उन्हें अब संसार और संसार से संबंधित किसी वस्तु से किसी भी प्रकार का कोई मोह नहीं रह गया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) पायो जी..गायो।

संदर्भ–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्य खंड' में संकलित 'मीराबाई' द्वारा रचित 'मीरा सुधा-सिंधु' से 'पदावली' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद में कवयित्री ने सद्गुरु की कृपा से प्राप्त रामनाम का महत्व बताया है।

व्याख्या– मीराबाई कहती हैं कि मैंने राम-नाम-रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त कर लिया है। सच्चे गुरु ने मुझ पर कृपा करके राम-नाम की अमूल्य वस्तु मुझे प्रदान की है। राम-नाम के रत्न को पाकर मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैंने जन्म-जन्मांतरों से संचित खजाना प्राप्त कर लिया है। मैंने अब तक प्राप्त सभी सांसारिक भोग्य वस्तुओं को त्यागकर रामनाम की वह अपूर्व निधि प्राप्त कर ली है, जो खर्च नहीं होती, इसे चोर नहीं चुरा सकते और खर्च करने पर दिन-प्रतिदिन इसमें सवा गुना वृद्धि होती है। मीरा कहती हैं कि मुझे ईश्वर-भक्तिरूपी नाव मिल गई है और उसका खेने वाला सच्चा गुरु है। कुशल सद्गुरु रूपी मल्लाह मिल जाने से इस भक्तिरूपी नौका द्वारा मैं संसाररूपी सागर को पार कर सकूँगी और मोक्ष प्राप्त कर लूँगी। मीराबाई कहती हैं कि मेरे स्वामी गिरधर नागर हैं और मैं प्रसन्नतापूर्वक बार-बार उनका यशोगान करती हूँ।

काव्यगत सौंदर्य–1. यहाँ सद्गुरु की महिमा का वर्णन किया गया है। **2.** भगवान श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति और श्रद्धा भावना व्यक्त हुई है। **3.** मीरा के आराध्यदेव भगवान श्रीकृष्ण हैं। यहाँ 'राम' शब्द उनके लिए ही प्रयोग हुआ है। **4. भाषा**-राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा **5. रस**-शांत **6. गुण**-प्रसाद **7. अलंकार**-पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास और रूपक **8. छंद**-गेय पद **9.** संत कबीरदास जी ने भी अपने दोहों में कई जगह सद्गुरु की महिमा का वर्णन किया है।

(ब) माई री ....कौल।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– मीराबाई कृष्ण के प्रेम में दीवानी हो गई थीं। इस पद में वे बताती हैं कि उन्होंने कृष्ण को पूरी तरह से अपना बना लेने का निर्णय भली-भाँति सोच-विचारकर ही किया है।

व्याख्या– मीराबाई कहती हैं— अरी माई, सुन! मैंने तो कृष्ण को मोल ले लिया है, अर्थात् कृष्ण पूरी तरह मेरे हो गए हैं; क्योंकि जो व्यक्ति मूल्य देकर वस्तु को खरीद लेता है, उस पर उसी का पूरा अधिकार हो जाता है। भले ही इस विषय में लोग तरह-तरह की बातें करते रहें। कोई किसी वस्तु को छिपाकर खरीदता है और कोई चुपचाप खरीद लेता है, किंतु मैंने ऐसा नहीं किया है। मैने तो उन्हें सरेआम ढोल बजाकर खरीदा है। कोई कहता है कि मैंने कृष्ण को महँगा खरीदा है, तो कोई कहता है सस्ता खरीदा है लेकिन मैंने तो उन्हें भली-भाँति नाप-तोल करके यानि तराजू से तोल करके मोल लिया है। कोई उन्हें काला बताता है, तो कोई गोरा, परंतु मैंने तो उन्हें अपना सब कुछ देकर अर्थात् सारे संसार से विरक्त होकर पूर्ण समर्पण भाव से खरीदा है। सब यह जानते हैं कि मीरा ने आँखें खोलकर अर्थात् बहुत समझ-बूझकर श्रीकृष्ण को अपनाया है। किसी को इस बात का क्या पता है कि प्रभु श्रीकृष्ण ने मीरा को पूर्वजन्म के वायदे के अनुसार दर्शन दिए हैं।

काव्यगत सौंदर्य–1. प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीरा का अप्रतिम समर्पण भाव दर्शनीय है। जिस प्रकार जब कोई सौदागर किसी वस्तु को खरीदता है तो उसकी खरीद पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ हुआ करती हैं; उसी प्रकार श्रीकृष्ण को अपना लेने पर मीराबाई की तरह-तरह की आलोचनाएँ हो रही हैं, किंतु मीरा को इसकी कोई चिंता नहीं है। उनके अनुसार तो सौदा बिलकुल नाप-तोलकर किया गया है। **2. भाषा–** राजस्थानी भाषा के साथ-साथ ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है तथा 'बजंता ढोल', 'तराजू तोल', और 'आँखें खोल' मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया गया है। **3. रस–** भक्ति **4. गुण–** प्रसाद **5. अलंकार–** रूपक और अनुप्रास **6. छंद–** गेय पद

(स) मैं तो साँवरे..............................जाँची।।

संदर्भ–पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में मीरा भगवान कृष्ण के प्रेम में डूबकर पूर्णरूप से उन्हीं के रंग में रँग गई हैं, इसलिए संसार की अन्य किसी वस्तु में उनका मन नहीं लगता।

व्याख्या– मीरा कहती है कि मैं तो साँवरे कृष्ण के श्याम रंग में रँग गई हूँ अर्थात् उनके प्रेम में आत्मविभोर हो गई हूँ। मैंने तो लोक-लाज को छोड़कर अपना पूरा श्रृंगार किया है और पैरों में घुँघरू बाँधकर नाच भी रही हूँ। साधुओं की संगति से मेरे हृदय की सारी कालिमा मिट गई है और मेरी दुर्बुद्धि भी सद्बुद्धि में बदल गई है। मैं प्रभु श्रीकृष्ण का नित्य गुणगान करके कालरूपी सर्प के चंगुल से बच गयी हूँ अर्थात् अब मैं जन्म-मरण के चक्र से छूट गयी हूँ। अब कृष्ण के बिना मुझे यह संसार निस्सार और सूना लगता है और उनकी बातों के अतिरिक्त अन्य सभी बातें व्यर्थ लगती हैं। मीराबाई को केवल श्रीकृष्ण की भक्ति में ही आनंद मिलता है, संसार की किसी अन्य वस्तु में नहीं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इस पद में मीरा की अनन्य भक्ति— भावना का भावात्मक चित्रण हुआ है। **2.** मीरा ने स्वयं को श्रीकृष्ण के समक्ष समर्पित कर दिया है। **3.** प्रेम दीवानी मीरा के लिए यह संसार निस्सार और व्यर्थ है। **4. भाषा–** राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा **5. रस**- शांत और भक्ति **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार**- अनुप्रास, रूपक और पुनरुक्तिप्रकाश **8. छंद–** गेय पद

(द) मेरे तो गिरधर ....मोई।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं कि वे तो एकमात्र श्रीकृष्ण को प्राप्त करना चाहती हैं, किसी अन्य को नहीं।

व्याख्या– मीराबाई कहती हैं कि मेरे एकमात्र गिरधर गोपाल (श्रीकृष्ण) ही हैं, दूसरा कोई नहीं है। जो सिर पर मोर-मुकुट धारण किए हुए हैं, वे कृष्ण ही मेरे स्वामी अर्थात् पति हैं। माता-पिता, भाई-बंधु कोई भी मेरा नहीं है। अपने गिरधर के प्रेम में मैंने अपने कुल (राजवंश) की सारी मर्यादाएँ त्याग दी हैं। अब मेरा कोई क्या बिगाड़ेगा (जब कृष्ण मेरे साथ हैं)? साधु संतों के पास बैठकर मैंने झूठी बनावटी परंपराओं की लोक— लज्जा को भी खो दिया है। मैंने प्रेम की बेल को बोकर, उसे कृष्ण— वियोग के आँसुओं से सींचा है और अब तो यह बेल चारों ओर फैल गई है और इस पर आनंदरूपी फल भी लग गए हैं। मीरा को कृष्ण-भक्ति ही रुचिकर लगती है और इस नश्वर संसार को देखकर उन्हें रोना भी आता है। मीरा श्रीकृष्ण से विनती करती है कि हे गिरधरलाल! मैं आपके चरणों की दासी हूँ। अब आप ही मुझे इस संसाररूपी सागर से पार लगाओ और मेरा उद्धार करो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की अनन्य भक्ति प्रदर्शित हुई है। **2.**ईश्वर के प्रति प्रणय भावना पर आधारित भक्ति चित्रित की गई है। **3. भाषा–** राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा **4. रस–** भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** रूपक **7. छंद–** गेय पद।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।

भाव स्पष्टीकरण– मीराबाई जी कहती हैं कि मेरे गुरु ने मुझे राम-नाम के रूप में अमूल्य वस्तु दी है, जिसको मैंने गुरु की कृपा समझकर ग्रहण कर लिया है।

(ब) खरचै नहिं कोई चोर न लैवे, दिन-दिन बढ़त सवायो।

भाव स्पष्टीकरण– मीराबाई जी कहती हैं कि राम नाम की अपूर्व निधि जो मैंने प्राप्त की है, वह खर्च नहीं होती, इसे कोई चोर नहीं चुरा सकता और खर्च करने पर दिन-प्रतिदिन इसमें सवा गुना वृद्धि होती है।

(स) कोई कहै छाने कोई कहै चुपके, लियो री बजंता ढोल।

भाव स्पष्टीकरण– मीराबाई कहती हैं कि किसी वस्तु की खरीद कोई छिपाकर करता है और कोई चुपचाप, किंतु मैंने श्रीकृष्ण को न तो छिपाकर खरीदा है और न ही चुपचाप, मैंने तो उन्हें ढोल बजाकर डंके की चोट पर खरीदा है।

(ङ) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध–

1. निम्नलिखित पदों में नाम सहित समास-विग्रह कीजिए–

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
मकराकृत	मछली के समान आकृति	कर्मधारय समास
कुमति	कुत्सित मति	कर्मधारय समास
नंदलाल	नंद का लाल	संबंध तत्पुरुष समास
अमोल	न मोल	नत्र तत्पुरुष समास
राम-रतन	राम रूपी रतन	कर्मधारय समास

2. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

शब्द	**तत्सम**
नैनन	नयन
सबद	शब्द
किरपा	कृपा
बिसाल	विशाल
आणंद	आनन्द
भगति	भक्ति
बछल	वत्सल
छुद्र	क्षुद्र
सिंगार	शृंगार

3. मीरा के काव्य में किस रस की प्रधानता है?

उ०– मीरा के काव्य में शृंगार व शांत रस की प्रधानता है।

4. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए–

(अ) मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुण तिलक दिए भाल।

उ०– इस पंक्ति में अनुप्रास व उपमा अलंकार है।

(ब) बसो मेरे नैनन में नंदलाल।

उ०– इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(स) जनम-जनम की पूँजी पाई।

उ०– इस पंक्ति में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(द) अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेल बोई।

उ०– इस पंक्ति में रूपक और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(य) पायो जी म्है तो राम-रतन धन पायो।

उ०– इस पंक्ति में रूपक अलंकार है।

(च) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मीराबाई का जन्म-स्थान है–

(अ) लखनऊ (ब) **राजस्थान**

(स) दिल्ली (द) कानपुर

2. मीराबाई की कृति है–

(अ) साहित्य लहरी (ब) बीजक

(स) **नरसी जी का मायर** (द) गीतावली

3. मीराबाई उपासिका है–

(अ) राम की (ब) **कृष्ण की**

(स) शिव की (द) विष्णु की

4. मीराबाई की भाषा है–

(अ) अवधी (ब) संस्कृत

(स) अंग्रेजी (द) **साहित्यिक ब्रज**

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

3. दोहे (रहीम)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. रहीम किस प्रकार के कवि माने जाते हैं?

उ०– रहीम भारतीय सांस्कृतिक समन्वय का आदर्श प्रस्तुत करने वाले मर्मी कवि माने जाते हैं।

2. मुसलमान होते हुए भी रहीम ने अपने काव्य में किन ग्रंथों को उदाहरण के लिए चुना?

उ०– मुसलमान होते हुए भी रहीम ने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को उदाहरण के लिए चुना।

3. रहीम का जन्म कब और कहाँ हुआ था? इनके पिता का क्या नाम था?

उ०– रहीम का जन्म सन् 1556 ई.में लाहौर में हुआ था। इनके पिता का नाम बैरम खाँ था।

4. रहीम का पूरा नाम क्या था?

उ०– रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था।

5. अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध अकबर के नवरत्न का नाम बताइए।

उ०– अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध अकबर के नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना थे।

6. अकबर ने रहीम को किस उपाधि से विभूषित किया?

उ०– अकबर ने रहीम को 'खानखाना' की उपाधि से विभूषित किया।

7. रहीम की बरवै छंद पर आधारित रचना का नाम लिखिए।

उ०– रहीम की बरवै छंद पर आधारित रचना 'बरवै नायिका-भेद वर्णन' है।

8. अकबर ने रहीम को किस प्रमुख पद पर नियुक्त किया?

उ०– अकबर ने रहीम को दरबार के प्रमुख पदों में से एक मीर अर्ज के पद पर नियुक्त किया।

9. 'सोरठा' छंद में रचित रहीम की कौन-सी रचना है?

उ०– 'सोरठा' छंद में रचित रहीम की रचना 'श्रृंगार-सोरठा' है।

10. रहीम ने कौन-सी भाषा-शैली का प्रयोग अपने काव्य में किया है?

उ०– रहीम ने अपने काव्य में अवधी व ब्रजभाषा और मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बुरी संगति का प्रभाव कैसे व्यक्तियों पर नहीं होता है?

उ०– जो व्यक्ति उत्तम स्वभाव और दृढ़ चरित्र वाले होते हैं, ऐसे व्यक्तियों पर बुरी संगति का प्रभाव नहीं होता है।

2. हमें कैसे व्यक्ति को बार-बार मनाना चाहिए? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ०– हमें सज्जन व्यक्ति को बार-बार मनाना चाहिए। यदि वे सौ बार भी नाराज हों तो उन्हें सौ बार भी मना लेना चाहिए। जैसे- सच्चे मोतियों का हार टूट जाने पर उसे बार-बार पिरोया जाता है।

3. रहीम ने सच्चे मित्र की क्या पहचान बताई है?

उ०– रहीम के अनुसार सच्चे मित्र वे होते हैं, जो विपत्ति की कसौटी पर सदा खरे उतरते हैं अर्थात विपत्ति में भी मित्र का साथ निभाते हैं।

4. नेत्रों से निकलने वाले आँसू क्या करते हैं?

उ०– नेत्रों से निकलने वाले आँसू, नेत्रों से निकलते ही मन के सारे दु:ख को प्रकट कर देते हैं।

5. 'जुरै गाँठ परि जाय' के द्वारा रहीम ने प्रेम संबंधों की किस विशेषता को बताया है?

उ०– 'जुरै गाँव परि जाय' के द्वारा रहीम ने प्रेम संबंधों की नाजुकता के बारे में बताया है। जिस प्रकार धागा टूटने पर जुड़ता नहीं है और यदि जुड़ भी जाए तो उसमें गाँठ पड़ जाती है, उसी प्रकार प्रेम संबंधों के टूटने पर उसका जुड़ना कठिन होता है। इसको जोड़ने का प्रयास करने पर भी इसमें अंतर अवश्य आ जाता है।

6. 'जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या समझाना चाहता है?

उ०– इस पंक्ति के माध्यम से कवि समझाना चाहता है कि बड़े लोगों को देखकर छोटे लोगों का निरादर नहीं करना चाहिए। उनका साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए; क्योंकि जिस स्थान पर सुई काम आती है, उस स्थान पर तलवार काम नहीं आ सकती।

7. हमें कैसे लोगों से न तो मित्रता करनी चाहिए और न ही शत्रुता?

उ०– हमें तुच्छ विचार वाले अर्थात् नीच मनुष्य से प्रेम और द्वेष नहीं करना चाहिए, उससे किसी भी प्रकार से संबंध नहीं रखना चाहिए; क्योंकि उससे दोनों ही प्रकार से हानि होने की संभावना रहती है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. रहीम के जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुए उनकी रचनाओं और भाषा-शैली का वर्णन कीजिए।

उ०– नवाब अब्दुर्रहीम खानखाना मध्यकालीन भारत के कुशल राजनीतिवेत्ता, वीर बहादुर योद्धा और भारतीय सांस्कृतिक समन्वय का आदर्श प्रस्तुत करने वाले मर्मी कवि माने जाते हैं। उनकी गिनती विगत चार शताब्दियों से ऐतिहासिक पुरुष के अलावा भारत माता के सच्चे सपूत के रूप में की जाती रही है। आपके अंदर वह सब गुण मौजूद थे, जो महापुरुषों में पाए जाते हैं। आप ऐसे सौ भाग्यशाली व्यक्तियों में से थे, जो अपनी उभयविध लोकप्रियता के कारण केवल ऐतिहासिक न होकर भारतीय जनजीवन के अमिट पृष्ठों पर यश शरीर से भी जीवित पाए जाते हैं। एक मुसलमान होते हुए भी हिंदू जीवन के अंतर्मन में बैठकर आपने जो मार्मिक तथ्य अंकित किए थे, वे आपकी विशाल हृदयता का परिचय देते हैं। हिंदू देवी-देवताओं, धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का जहाँ भी आपके द्वारा उल्लेख किया गया है, पूरी जानकारी एवं ईमानदारी के साथ किया गया है। रहीम ने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को उदाहरण के लिए चुना है और लौकिक जीवन व्यवहार पक्ष को उसके द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है, जो सामाजिक सौहार्द एवं भारतीय संस्कृति की झलक को पेश करता है, जिसमें विभिन्नता में भी एकता की बात की गई है।

जन्म परिचय– अब्दुर्रहीम खानखाना का जन्म संवत् 1613 (सन् 1556) में इतिहास प्रसिद्ध बैरम खाँ के घर लाहौर में हुआ था। संयोग से उस समय सम्राट हुमायूँ सिकंदर सूरी के आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए सैन्य के साथ लाहौर में मौजूद थे। बैरम खाँ के घर पुत्र की उत्पति की खबर सुनकर वे स्वयं वहाँ गए और उस बच्चे का नाम 'रहीम' रखा।

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। एक बार अकबर इनके पिता बैरम खाँ से नाराज हो गए। विद्रोह का आरोप लगाते हुए बैरम खाँ को हज करने मक्का भेज दिया। उनके शत्रु मुबारक खाँ द्वारा बैरम खाँ की हत्या कर दी गई। अकबर ने ही रहीम की शिक्षा का प्रबंध किया। रहीम ने तुर्की, अरबी, फारसी, हिंदी व संस्कृत आदि भाषाओं का समुचित ज्ञान प्राप्त कर लिया। इनकी योग्यता से प्रभावित होकर अकबर ने इन्हें 'नवरत्नों' में स्थान दिया।

रहीम का विवाह– रहीम की शिक्षा समाप्त होने के पश्चात सम्राट अकबर ने अपने पिता हुमायूँ की परंपरा का निर्वाह करते हुए, रहीम का विवाह बैरमखाँ के विरोधी मिर्जा अजीज कोका की बहन माहबानों से करवा दिया। इस विवाह में भी अकबर ने वही किया, जो पहले करता आ रहा था कि विवाह के संबंधों के बदौलत आपसी तनाव व पुरानी से पुरानी कटुता को समाप्त कर दिया करता था। रहीम के विवाह से बैरम खाँ और मिर्जा के बीच चली आ रही पुरानी रंजिश खत्म हो गई। रहीम का विवाह लगभग सोलह साल की उम्र में कर दिया गया था।

मीर अर्ज का पद– अकबर के दरबार के प्रमुख पदों में से एक मीर अर्ज का पद था। यह पद पाकर कोई भी व्यक्ति रातोंरात अमीर हो जाता था, क्योंकि यह पद ऐसा था, जिससे पहुँचकर ही जनता की फरियाद सम्राट तक पहुँचती थी और सम्राट के द्वारा लिए गए फैसले भी इसी पद के जरिए जनता तक पहुँचाए जाते थे। इस पद पर हर दो-तीन दिनों में नए लोगों को नियुक्त किया जाता था। सम्राट अकबर ने इस पद का काम-काज सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने सच्चे व विश्वासपात्र अमीर रहीम को मुस्तकिल मीर अर्ज नियुक्त किया। यह निर्णय सुनकर सारा दरबार सन्न रह गया था। इस पद पर आसीन होने का मतलब था कि वह व्यक्ति जनता एवं सम्राट दोनों में सामान्य रूप से विश्वसनीय है।

रहीम दानशील व उदार हृदय के साथ-साथ मृदु स्वभाव के भी थे। अकबर के दरबारी कवि गंग के एक छंद से प्रसन्न होकर इन्होंने उसे 36 लाख रुपये पुरस्कार में दिए। अकबर ने इन्हें 'खानखाना' की उपाधि से विभूषित किया। रहीम का अंतिम जीवन कष्टमय रहा। सन् 1627 ई.में रहीम इस संसार से सदा के लिए विदा हो गए।

रचनाएँ–

(अ) बरवै नायिका-भेद वर्णन– यह नायक-नायिका भेद पर लिखित हिंदी का पहला काव्य-ग्रंथ माना जाता है। यह शृंगार प्रधान है। इसकी रचना बरवै छंद में की गई है। इसमें 115 छंद हैं।

(ब) शृंगार -सोरठा– यह काव्य-रचना भी शृंगार प्रधान है। अभी तक इसके केवल छः छंद ही प्राप्त हैं। जो सोरठा छंद में रचित हैं।

(स) मदनाष्टक– यह रहीम की सर्वश्रेष्ठ काव्य-रचना मानी जाती है। यह ब्रजभाषा में रचित है। किंतु इसमें संस्कृत शब्दों के प्रयोग भी हुए हैं। इसमें श्रीकृष्ण और गोपियों की प्रेम संबंधी लीलाओं का सरस चित्रण है।

(द) रहीम-सतसई– इसमें नीति परक और उपदेशात्मक दोहों का संग्रह हुआ है। ये दोहे जनसाधारण में आज भी लोकप्रिय हैं। इनमें से अभी तक 300 दोहे प्राप्त हुए हैं।

(य) रास पंचाध्यायी– यह 'श्रीमद्भागवतपुराण' के आधार पर लिखा ग्रंथ है, जो अप्राप्य है।

(र) नगर शोभा– इसमें नगरों में रहने वाली विभिन्न जातियों एवं व्यवसायों की स्त्रियों का वर्णन है।

भाषा-शैली– रहीम ने अवधी और ब्रजभाषा दोनों में ही कविता की है जो सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है। उनके काव्य में शृंगार, शांत तथा हास्य रस मिलते हैं तथा दोहा, सोरठा, बरवै, कवित्त और सवैया उनके प्रिय छंद हैं। रहीम जनसाधारण में अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं। हिंदी काव्य में इन्हें बरवै छंद का जनक माना जाता है। प्रायः सभी प्रमुख रसों एवं अलंकारों का प्रयोग इनकी रचनाओं में मिलता है। रहीम ने मुक्तक शैली में ही अपने काव्य का सृजन किया। इनकी यह शैली अत्यंत सरल, सरस और बोधगम्य है।

2. रहीम की रचनाओं में भक्तिकाल की जो सामान्य प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं, उनका उल्लेख कीजिए।

उ०– रहीम की रचनाओं में भक्तिकाल की रचनाओं के समान ही ईश्वर में सहज विश्वास, उसकी दीन-वत्सलता, नाम स्मरण की महत्ता, जप, कीर्तन, भजन का अवलंबन, गुरु की महत्ता, अहंकार का त्याग, जाति-पाँति का विरोध, लोक-मंगल की भावना, संत जीवन का आदर्श- सरलता, निस्पृहता, परोपकार तथा प्रेम-महिमा आदि प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) रहिमन..चून॥

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्य खंड' में संकलित 'रहीम' जी द्वारा रचित 'रहीम ग्रंथावली' से 'दोहे' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में सच्ची प्रीति की विशेषता पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या– कवि रहीम कहते हैं कि उसी प्रेम की प्रशंसा करनी चाहिए, जिसमें दोनों प्रेमियों का प्रेम मिलकर दुगुना हो जाता है, अर्थात् दोनों प्रेमी अपना अलग-अलग अस्तित्व भूलकर एक-दूसरे में समाहित हो जाते हैं। जैसे हल्दी पीली होती है और चूना सफेद, परंतु दोनों मिलकर एक नया (लाल) रंग बना देते हैं। हल्दी अपने पीलेपन को और चूना सफेदी को छोड़कर एकरूप हो जाते हैं। सच्चे प्रेम में भी ऐसा ही होता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. जब तक स्वयं का अस्तित्व भुला न दिया जाए, प्रेम का वास्तविक स्वरूप प्रकट नहीं होता। कवि ने हल्दी-चूने के मिलन का उदाहरण देकर इस प्रेम की प्रकृति के भाव का सुंदर चित्रण किया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. रस–**शांत **4.छंद–** दोहा **5.अलंकार–** दृष्टांत, उत्प्रेक्षा और अनुप्रास।

(ब) टूटे सुजन...मुक्ताहार।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में रहीम ने सज्जनों के महत्व पर विचार प्रकट किया है।

व्याख्या– कवि रहीम कहते हैं कि यदि सज्जन मनुष्य रूठ भी जाएँ तो उन्हें शीघ्र मना लेना चाहिए। यदि वे सौ बार भी नाराज हों तो उन्हें सौ बार भी मना लेना चाहिए; क्योंकि वे जीवन के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। जिस प्रकार सच्चे मोतियों का हार टूट जाने पर उसे बार-बार पिरोया जाता है, उसी प्रकार सज्जन को भी मनाकर रखना चाहिए, क्योंकि वे मोतियों के समान ही मूल्यवान होते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. सज्जन को निरंतर प्रसन्न रखना चाहिए— इस तथ्य को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. अलंकार–** यमक, पुनरुक्तिप्रकाश और दृष्टांत **6. छंद–** दोहा।

(स) जाल परे..छोह।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में मछली के माध्यम से सच्चे प्रेम को आदर्श बताया गया है।

व्याख्या– कवि रहीम कहते हैं कि जब मछली पकड़ने के लिए नदी में जाल डाला जाता है, तब मछली तो जाल में फँस जाती है और पानी अपनी सहेली मछली का मोह त्यागकर आगे निकल जाता है; परंतु मछली को जल से इतना प्रेम है कि वह पानी के बिना तड़प-तड़पकर मर जाती है। तात्पर्य यह है कि सच्चा प्रेम करने वाला कभी अपने साथी का साथ नहीं छोड़ता।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ मछली और जल के संबंध के द्वारा प्रेम के स्वरुप को अत्यंत हृदयग्राही रूप में स्पष्ट किया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. छंद–** दोहा **6. अलंकार–** अनुप्रास और अन्योक्ति।

(द) दीनन..होय।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में कवि द्वारा सामान्य जन को दीन-दु:खियों की सहायता करने के लिए प्रेरित किया गया है और कहा गया है कि ऐसा व्यक्ति ईश्वर-तुल्य होता है।

व्याख्या– रहीमदास जी कहते हैं कि दीन-हीन निर्धन लोग सभी लोगों की ओर इस आशा से देखते हैं कि वे हमारी कुछ सहायता करेंगे, किंतु विडंबना यह है कि उन दीन-हीनों को कोई नहीं देखता अर्थात् उनकी सहायता कोई नहीं करता। कवि रहीम कहते हैं कि जो दीनों की ओर देखता है अर्थात् उनकी सहायता करता है, वह उनके लिए भगवान् के समान होता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. सभी को दीन-दु:खियों की सहायता करनी चाहिए, इस भाव की अभिव्यक्ति की गई है। **2. भाषा–** सरल तथा प्रवाहपूर्ण **3. छंद–** दोहा **4. अलंकार–** अनुप्रास **5. रस–** शांत।

(य) कदली......................................दीन।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में सत्संगति के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या– कवि रहीम का कहना है कि स्वाति नक्षत्र की बूँदों में पानी एक-सा होता है, परंतु उसका प्रभाव अलग-अलग वस्तु में अलग-अलग होता है। वह स्वाति बूँद केले के पत्ते पर गिरकर कपूर बन जाती है अथवा कपूर के दाने के समान दिखाई देती है। सीप में पड़कर मोती का रूप धारण कर लेती है और सर्प के मुख में पड़कर विष बन जाती है। इसी प्रकार मनुष्य भी जैसी संगति में बैठता है, उसके ऊपर उस संगति का वैसा ही प्रभाव पड़ता है। तात्पर्य यह है कि अच्छी संगति में बैठने पर व्यक्ति सज्जन और दुर्जनों की संगति पाकर दुर्जन बन जाता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. रहीम ने यहाँ स्वाति नक्षत्र की बूँद का उदाहरण देते हुए संगति के परिणाम की जो व्याख्या की है, वह व्यावहारिक दृष्टि से अनुकरणीय है। **2. भाषा–** ब्रज **3. रस–** शांत, **4. गुण–** प्रसाद **5. छंद–** दोहा **6. अलंकार–** दृष्टांत।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) बिपति कसौटी जो कसे, तेही साँची मीत।

भाव स्पष्टीकरण– इस पंक्ति में रहीम जी कहते हैं कि जो विपत्ति की कसौटी पर सदा खरे उतरते हैं अर्थात् विपत्ति में भी मित्र का साथ निभाते हैं, वही सच्चे मित्र होते हैं।

(ब) टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।

भाव स्पष्टीकरण– इस पंक्ति का भाव यह है कि हमें प्रेम संबंधों को नहीं तोड़ना चाहिए। यदि यह संबंध एक बार टूट जाए तो फिर से जुड़ना कठिन होता है और इसको जोड़ने का प्रयास भी किया जाए तो उसमें अंतर अवश्य आ जाता है।

(स) कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।

भाव स्पष्टीकरण– कवि रहीम कहते हैं कि स्वाति नक्षत्र की बूँद तो एक ही होती है, किंतु संगति के कारण उसके गुण तीन हो जाते हैं। वह केले के पेड़ पर गिरकर कपूर, सीप में गिरकर मोती व सर्प के मुख में गिरकर विष बन जाती है।

(द) जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि।।

भाव स्पष्टीकरण– कवि रहीम कहते हैं कि बड़ों को देखकर लघुजनों अर्थात् छोटे लोगों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए क्योंकि सुई बहुत छोटी वस्तु है और तलवार उसके मुकाबले में बहुत बड़ी। परंतु जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार का प्रयोग नहीं किया जा सकता अर्थात् छोटे लोग भी अपने स्थान पर महत्वपूर्ण होते हैं।

(ङ) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित के तत्सम रूप लिखिए–

शब्द	**तत्सम**
गुन	गुण
बिपति	विपत्ति
गोत	गोत्र
जुरै	जुड़े
गाँठ	ग्रंथि

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए–

मछली – अंडज, मीन, मत्स्य।

भुजंग – विषधर, सर्प, पन्नग।

फ़ूल – पुष्प, कुसुम, सुमन।

आँख – नयन, दृग, लोचन।

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

शब्द	**विलोम**
विष	अमृत
टूटे	जुड़े
दु:ख	सुख
प्रेम	क्रोध
संपत्ति	विपत्ति
लघु	दीर्घ
बढ़त	घटत

4. निम्नलिखित दोहों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम बताइए–

(अ) प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाए।।

उ०– प्रस्तुत दोहे में अनुप्रास व दृष्टांत अलंकार है।

(ब) यों रहीम सुख होत है, बढ़त देख निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि आँखिन को सुख होत।।

उ०– प्रस्तुत दोहे में अनुप्रास व दृष्टांत अलंकार है।

(च) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रहीम का जन्म हुआ था–

(अ) **सन् 1556 ई.में** (ब) सन् 1656 ई.में
(स) सन् 1621 ई.में (द) सन् 1541 ई.में

2. रहीम किसके भक्त थे?

(अ) राम के (ब) **श्रीकृष्ण के**
(स) शिव के (द) विष्णु जी के

3. रहीम का जन्म-स्थान है–

(अ) कानपुर (ब) दिल्ली
(स) **लाहौर** (द) बरेली

4. रहीम के पिता थे–

(अ) **बैरम खाँ** (ब) अकबर
(स) शाहजहाँ (द) जहाँगीर

5. रहीम की रचना है–

(अ) बीजक (ब) साहित्य लहरी
(स) **मदनाष्टक** (द) प्रेम सरोवर

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

4. प्रेम माधुरी (भारतेंदु हरिश्चंद्र)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कौन कहे जाते हैं?

उ०– भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं।

2. भारतेंदु जी का मूल नाम क्या था?

उ०– भारतेंदु जी का मूल नाम हरिश्चंद्र था।

3. भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का जन्म 9 सितंबर, 1850 में काशी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था।

4. भारतेंदु जी का विवाह कब और किसके साथ हुआ?

उ०– भारतेंदु जी का विवाह 13 वर्ष की अवस्था में 'मन्नो देवी' नामक युवती से हुआ था।

5. हरिश्चंद्र जी को किस सन् में 'भारतेंदु' की उपाधि से विभूषित किया गया?

उ०– हरिश्चंद्र को सन् 1880 में 'भारतेंदु' की उपाधि से विभूषित किया गया।

6. उस कवि का नाम बताइए, जिसे खड़ीबोली गद्य का जनक कहा जाता है और गद्य-पद्य दोनों के ही इतिहास में उसके नाम से एक युग का नामकरण किया गया।

उ०– भारतेंदु हरिश्चंद्र।

7. भारतेंदु जी ने अपने काव्य में कौन-सी भाषा और शैली का प्रयोग किया है?

उ०– भारतेंदु जी ने अपने काव्य में ब्रजभाषा और मुक्तक का प्रयोग किया है।

8. भारतेंदु जी की नाटक लिखने की शुरूआत किस नाटक से हुई थी?

उ०– भारतेंदु जी की नाटक लिखने की शुरुआत बंगला के विद्यासुंदर (1867) नाटक के अनुवाद से हुई थी।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कृष्ण के वियोग में गोपियों की मन की स्थिति कैसी थी?

उ०– कृष्ण के वियोग के कारण गोपियों का मन विरह-वेदना से व्याकुल था। उन्हें बादल का बरसना अच्छा नहीं लगता था। उनकी आँखें केवल कृष्ण के दर्शनों की अभिलाषी थीं। उनके शरीर के सभी अंग कृष्ण के वश में हैं। इसलिए उन पर उद्धव की बात का कोई प्रभाव नहीं होता था। सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में मगन थी।

2. बादलों को 'निगोड़े' क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– बादलों को 'निगोड़े' कहा गया है क्योंकि बादलों के बरसने के कारण विरह में व्याकुल गोपियों की वेदना बढ़ती जाती है। परंतु बादल गोपियों की विरह-वेदना को नहीं समझते और वर्षा के रूप में झूम-झूमकर आनंद लेते हुए बरसते हैं। इसलिए गोपियों ने उन्हें निगोड़े कहकर उलाहना दिया है।

3. 'रितुन को कंत' किसे कहा गया है? इसके आने पर वातावरण अच्छा होने पर भी गोपी को इसमें पीड़ा का अनुभव क्यों हो रहा है?

उ०– 'रितुन को कंत' ऋतुओं के स्वामी वसंत को कहा गया है। इसके आने पर वातावरण आनंदमय हो जाता है। चारों दिशाओं में पीली-पीली सरसों फूल रही होती है। अत्यंत सुंदर, शीतल और सुगंधित पवन बहने पर भी श्रीकृष्ण के वियोग के कारण गोपियाँ इसमें पीड़ा का अनुभव करती हैं, क्योंकि कृष्ण मथुरा जाते हुए उन्हें यह बताकर गए थे कि वे परसों तक लौट आएँगे, परंतु बरसों बीतने पर भी वह लौटकर नहीं आए हैं।

4. वसंत ऋतु में किसको देखने के लिए गोपियाँ तरस रही हैं?

उ०– वसंत ऋतु में श्रीकृष्ण को देखने के लिए गोपियाँ तरस रही हैं।

5. 'मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उ०– यहाँ कवि का अभिप्राय है कि गोपियों की आँखें मरने के बाद भी श्रीकृष्ण के दर्शनों की प्रतीक्षा में खुली रहेंगी क्योंकि गोपियों के प्राण श्रीकृष्ण के लौट आने की अवधि बीत जाने पर शरीर से निकल जाना चाहते हैं, परंतु उनकी आँखे उनके प्राणों के साथ नहीं जाना चाहती क्योंकि उन्होंने अपने प्रियतम कृष्ण को जी भरकर नहीं देखा है और उनके दर्शनों की प्रतीक्षा में वे खुली रहेंगी।

6. प्रेम-माधुरी में वर्णित वर्षा वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– वर्षा ऋतु में कोयल कदंब के वृक्ष पर बैठकर कूकने लगी है। वर्षा के जल से पत्ते धुलकर हिल-हिलकर सुशोभित होते हैं। मेंढक बोलने लगे हैं और मोर नाचने लगते हैं। वर्षा ऋतु का यह दृश्य देखकर संयोगीजन (जिनके प्रियजन उनके समीप हैं) मन में हर्षित होते हैं। धरती हरी भरी हो गई है, शीतल पवन धीरे-धीरे बह रही है। इन सब दृश्यों को देखकर वियोगीजन अपने प्रियजनों के दर्शनों के लिए तरसने लगते हैं। वर्षा ऋतु में वर्षा झूम-झूमकर आती है और निकम्मे बादल बरस-बरसकर वियोगीजनों की विरह वेदना को बढ़ाते हैं।

7. गोपियाँ उद्धव की बात न मानकर ज्ञान का उपदेश ले जाने के लिए क्यों कह रही हैं?

उ०– गोपियाँ उद्धव की बात न मानकर ज्ञान का उपदेश ले जाने के लिए इसलिए कहती हैं क्योंकि गोकुल में सभी ब्रज बालाएँ श्रीकृष्ण के प्रेम में मग्न हैं। जिन पर उद्धव के ब्रह्म ज्ञान के उपदेशों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे कुएँ में भाँग पड़ने पर सभी उसके जल को पीकर मद अवस्था में आ जाते हैं, उसी प्रकार सभी गोपियाँ कृष्ण प्रेमरूपी भाँग पीकर प्रसन्न हैं। अत: आप अपना ज्ञान का उपदेश लेकर यहाँ से चले जाओ।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. हिंदी साहित्य में भारतेंदु जी के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उ०– भारतेंदु के वृहत साहित्यिक योगदान के कारण ही 1868 से 1900 तक के काल को 'भारतेंदु युग' के नाम से जाना जाता है। पंद्रह वर्ष की अवस्था से ही भारतेंदु ने साहित्य सेवा प्रारंभ कर दी थी। अठारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने 'कविवचन सुधा' नामक पत्रिका निकाली, जिसमें उस समय के बड़े-बड़े विद्वानों की रचनाएँ छपती थीं। वे बीस वर्ष की अवस्था में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाए गए और आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उन्होंने 1868 में 'कविवचन सुधा', 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' और 1874 में स्त्री शिक्षा के लिए 'बाल बोधिनी' नामक पत्रिकाएँ निकालीं। साथ ही

उनके समांतर साहित्यिक संस्थाएँ भी खड़ी कीं। वैष्णव भक्ति के प्रचार के लिए उन्होंने 'तदीय समाज' की स्थपना की थी। अपनी देशभक्ति के कारण राजभक्ति प्रकट करते हुए भी उन्हें अंग्रेजी हुकूमत का कोपभाजन बनना पडा। उनकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने 1880 में उन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि प्रदान की। हिंदी साहित्य को भारतेंदु की देन भाषा तथा साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में है। भाषा के क्षेत्र में उन्होंने खड़ीबोली के उस रूप को प्रतिष्ठित किया, जो उर्दू से भिन्न है और हिंदी क्षेत्र की बोलियों का रस लेकर संवर्धित हुआ है। इसी भाषा में उन्होंने अपने संपूर्ण गद्य साहित्य की रचना की। साहित्य सेवा के साथ-साथ भारतेंदु जी की समाज सेवा भी चलती थी। उन्होंने कई संस्थानों की स्थापना में अपना योगदान दिया। दीन-दुखियों, साहित्यिकों तथा मित्रों की सहायता करना वे अपना कर्तव्य समझते थे।

2. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

उ०- भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे हिंदी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। इनका मूल नाम 'हरिश्चंद्र' था। 'भारतेंदु' उनकी उपाधि थी। इनका कार्यकाल युग की संधि पर खड़ा है। उन्होंने रीतिकाल की विकृत सामंती संस्कृति की पोषक वृत्तियों को छोड़कर स्वस्थ परंपरा की भूमि अपनाई और नवीनता के बीज बोए। हिंदी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध भारतेंदु जी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों के अमानवीय शोषण के चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिंदी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया।

जीवन परिचय– भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर,1850 में काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। उनके पिता गोपाल चंद्र एक अच्छे कवि थे और गिरधर दास उपनाम से कविता लिखा करते थे। 1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु 7 वर्ष की होगी। ये दिन उनकी आँख खुलने के थे। भारतेंदु का कृतित्व साक्ष्य है कि उनकी आँखे एक बार खुलीं तो बंद नहीं हुई। पैंतीस वर्ष की संक्षिप्त आयु में उन्होंने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा, इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समूचा रचनाकर्म पथदर्शक बन गया।

जब हरिश्चंद्र पाँच वर्ष के थे तब इनकी माता तथा जब दस वर्ष के थे तब उनके पिता की मृत्यु हो गई। इस तरह माता-पिता के सुख से भारतेंदु वंचित हो गए। बचपन का सुख नहीं मिला। विमाता ने खूब सताया। 13 वर्ष की अवस्था में 'मन्नो देवी' नामक युवती से इनका विवाह हुआ। संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतंत्र रूप से देखने-सोचने व समझने की आदत का विकास होने लगा। पढ़ाई की विषय-वस्तु और पद्धति से उनका मन उखड़ता रहा। क्वींस कॉलेज, बनारस में प्रवेश लिया, तीन-चार वर्षो तक कॉलेज आते-जाते रहे पर यहाँ से मन बार-बार भागता रहा। स्मरण शक्ति तीव्र थी, ग्रहण क्षमता अद्‌भुत। इसलिए परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते रहे। बनारस में उन दिनों अंग्रेजी पढ़े-लिखे और प्रसिद्ध लेखक- राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद थे, भारतेंदु शिष्य भाव से उनके यहाँ जाते। उन्हीं से अंग्रेजी शिक्षा सीखी। भारतेंदु ने स्वाध्याय से संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू भाषाएँ सीख ली।

उनको काव्य-प्रतिभा अपने पिता से विरासत के रूप में मिली थी। उन्होंने पाँच वर्ष की अवस्था में ही निम्नलिखित दोहा बनाकर अपने पिता को सुनाया और सुकवि होने का आशीर्वाद प्राप्त किया—

लै ब्योढ़ा ठाढ़े भए, श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर की सेन को, हनन लगे भगवान।।

अत्यधिक उदार व दानशील होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। ये ऋणग्रस्त हो गए। बहुत कोशिशों के बाद भी ये ऋण-मुक्त नहीं हो पाए और क्षय रोग से ग्रस्त हो गए। हिंदी साहित्य की यह दीप्ति सन् 1885 ई. में सदैव के लिए बुझ गई।

रचनाएँ– भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। हिंदी में नाटकों का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतेंदु के नाटक लिखने की शुरूआत बंगला के विद्यासुंदर (1867)नाटक के अनुवाद से होती है। यद्यपि नाटक उनके पहले भी लिखे जाते रहे किंतु नियमित रूप से खड़ीबोली में अनेक नाटक लिखकर भारतेंदु ने ही हिंदी नाटक की नींव को सुदृढ़ बनाया।

(अ) **नाटक–** भारत-दुर्दशा, अँधेरी नगरी, नील देवी, रत्नावली, भारत-जननी, मुद्राराक्षस, सती-प्रताप, धनंजय विजय, सत्य हरिश्चंद्र आदि।

(ब) **काव्य कृतियाँ–** प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, दानलीला, प्रेम सरोवर, कृष्ण चरित आदि।

(स) **उपन्यास–** पूर्ण प्रकाश, चंद्रप्रभा

(द) **निबंध संग्रह–** दिल्ली दरबार दर्पण, मदालसा, सुलोचना

(य) **यात्रा वृत्तांत–** लखनऊ की यात्रा, सरयूपार की यात्रा

(र) **संपादन–** हरिश्चंद्र चंद्रिका, हरिश्चंद्र मैगजीन, कविवचन सुधा

3. भारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– **भाषा-शैली–** हिंदी साहित्य को भारतेंदु जी की देन भाषा और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में है। भारतेंदु जी का खड़ीबोली और ब्रजभाषा दोनों पर समान अधिकार था। भारतेंदु जी ने खड़ी-बोली के उस रूप को प्रतिष्ठित किया, जो उर्दू से भिन्न है और हिंदी क्षेत्र की बोलियों का रस लेकर संवर्धित हुआ है। इसी भाषा में उन्होंने अपने संपूर्ण गद्य साहित्य की रचना की। इन्होंने काव्य के सृजन हेतु ब्रजभाषा को अपनाया। इनके द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा अत्यंत सरल, सरस एवं माधुर्य से परिपूर्ण है। भाषा में नवीनता एवं सजीवता है। साथ ही प्रचलित शब्दों, मुहावरों एवं कहावतों का यथास्थान प्रयोग किया गया है। इसके परिणामस्वरूप उनकी भाषा में प्रवाह उत्पन्न हो गया है।

भारतेंदु जी ने मुख्य रूप से मुक्तक शैली का प्रयोग किया। इस शैली के अंतर्गत इन्होंने अनेक नवीन प्रयोग करके अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। इनकी शैली भावों के अनुकूल है। लोकगीतों की शैली में भी भारतेंदु जी ने अपने काव्य की रचना की। इनके द्वारा प्रयुक्त शैली सरस, सरल एवं प्रवाहपूर्ण है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए।

(अ) कूकै लगी.......................................बरसै लगे।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' द्वारा रचित 'भारतेंदु ग्रंथावली' से 'प्रेम माधुरी' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग–इस पद्यांश में कवि ने वर्षा के आगमन का मोहक चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि कदंब के वृक्षों पर बैठकर फिर से कोयलें कूकने लगी हैं। वर्षा के जल से धुले पत्ते हिल-हिलकर वृक्षों पर सरस प्रतीत होने लगे हैं। अब मेंढक फिर बोलने लगे हैं तथा मोर नाचने लगे हैं। यह सब देखकर अपने प्रिय के समीप होने के कारण संयोगीजन अपने हृदय में हर्षित होने लगे हैं और दूसरी ओर सारी धरती हरी-भरी हो गई है। शीतल मंद पवन चलने लगी है। इसे देखकर वियोगी व्यक्ति के मन अपने प्रिय के दर्शनों को तरसने लगे हैं। लो यह वर्षा ऋतु झूम-झूमकर फिर से आ गई है और ये निगोड़े बादल झुक-झुककर फिर से बरसने लगे हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ पर वर्षा ऋतु का बड़ा मनोहारी वर्णन हुआ है। **2.** प्रकृति का उद्दीपन रूप में वर्णन हुआ है। वर्षा के आगमन पर संयोगीजन हर्षित व वियोगीजन दु:खी हो रहे हैं। **3. भाषा–** ब्रज **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. छंद–** कवित्व **7. अलंकार–** अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश।

(ब) यह संग...मानती है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्यांश में कृष्ण के वियोग में गोपियों के नेत्रों की दयनीय दशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– गोपियाँ कृष्ण के विरह से पीड़ित होकर अपने नेत्रों की व्यथा उद्धव को सुनाती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे नेत्र कृष्ण के वियोग में तथा उनकी खोज में सदा इधर-उधर घूमते रहते हैं और उन्हें देखे बिना धैर्य धारण नहीं करते हैं। यदि क्षणभर के लिए भी इन नेत्रों को कृष्ण का वियोग मालूम पड़े तो ये प्रलयकाल का दृश्य उपस्थित कर देते हैं अर्थात् प्रलयकाल के बादलों के समान निरंतर आँसुओं की वर्षा करते हैं। ये आँखें क्षणभर के लिए भी बरौनियों के बीच में स्थिर रहना नहीं जानती, कभी झपकती हैं तो कभी तत्काल खुल जाती हैं। पलकों में समाना तो ये जानती ही नहीं। इसलिए हे उद्धव! तुम श्रीकृष्ण से यह कहना कि उन्हें (कृष्ण) देखे बिना दुखियारी गोपियों की आँखें मानती ही नहीं हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1.यहाँ गोपियों के कृष्ण के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा व्यक्त हुई है। **2.** गोपियों के विरह-काल की स्थिति का आँखों के माध्यम से कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है। **3. भाषा–** ब्रज **4. रस–** वियोग शृंगार **5. छंद–** सवैया **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास तथा अतिशयोक्ति।

(स) ऊधौ जू...भाँग परी है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्यांश में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि वे किसी प्रकार भी उनके निराकार ब्रह्मा के उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकतीं।

व्याख्या– गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! तुम उस मार्ग पर सीधे चले जाओ, जहाँ तुम्हारे ज्ञान की गुदड़ी रखी हुई है। यहाँ पर तुम्हारे उपदेश को कोई गोपी ग्रहण नहीं करेगी; क्योंकि सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में विश्वास रखती हैं। हे उद्धव! ये सभी ब्रजबालाएँ एक-सी हैं, कोई भी भिन्न प्रकृति की नहीं है। इनकी तो पूरी मंडली ही बिगड़ी हुई है। यदि किसी एक गोपी की बात होती तो तुम उसे ज्ञान का उपदेश भी देते, किंतु यहाँ तो कुएँ में ही भाँग पड़ी हुई है अर्थात् सभी श्रीकृष्ण के प्रेम-रस में सरोबोर हो गई हैं। इसलिए तुम्हारा उपदेश देना व्यर्थ होगा।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने गोपियों की कृष्ण भक्ति को चित्रित करते हुए निर्गुण भक्ति की अपेक्षा सगुण भक्ति की श्रेष्ठता को अत्यंत कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया। **2. भाषा–** ब्रज **3. रस–** श्रृंगार एवं भक्ति **4. गुण–** माधुर्य **5. छंद–** सवैया **6. अलंकार–** रूपक तथा अनुप्रास।

(द) सखि आयो..................................परसों।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्यांश में वसंत ऋतु के आगमन पर गोपियों की विरह-व्यथा का चित्रण किया गया है।

व्याख्या– कृष्ण-विरह से पीड़ित एक गोपी दूसरी गोपी से अपनी मनोव्यथा को व्यक्त करती हुई कहती है कि हे सखी! ऋतुओं का स्वामी वसंत आ गया है। चारों दिशाओं से पीली-पीली सरसों फूल रही है। अत्यंत सुंदर, मंद और सुगंधित वायु बह रही है, किंतु वसंत ऋतु का मादक वातावरण श्रीकृष्ण के बिना मुझे पूर्णरूप से कष्टदायक प्रतीत हो रहा है। नंदनंदन श्रीकृष्ण हमसे यह बताकर गए थे कि मैं परसों तक मथुरा से लौट आऊँगा, परंतु उन्होंने परसों के स्थान पर न जाने कितने वर्ष व्यतीत कर दिए और अभी तक लौटकर नहीं आए। मैं तो अपने प्रियतम कृष्ण के चरणों का स्पर्श करने के लिए तरस रही हूँ, पता नहीं कब उनके दर्शन हो सकेंगे?

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने वसंत ऋतु का वर्णन करते हुए गोपियों की विरह-व्यथा का मर्मस्पर्शी एवं सजीव चित्रण किया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. रस–** वियोग श्रृंगार **4. गुण–** माधुर्य **5. छंद–** सवैया **6. अलंकार–** रूपक, अनुप्रास और विशेषोक्ति।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) एक जो होय तो ज्ञान सिखाइए, कूपहिं में यहाँ भाँग परी है।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि गोकुल में अगर एक गोपी हो तो उद्धव आप ज्ञान की बात सिखाएँ भी, परंतु यहाँ तो कुएँ में भाँग पड़े होने के समान सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण प्रेम में मगन हैं।

(ब) मन में रहै जो ताहि दीजिए बिसारि, मन आपै बसै जायै त्राहि कैसे कै बिसारिए।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि यदि गोपियों के मन में कोई निवास करता, तो उसे वे भुला भी पाती, लेकिन जब उनका मन किसी दूसरे के हृदय में निवास करने लगा हो, तब उसे वे कैसे भुला सकती हैं। अत: उनके लिए कृष्ण को भुलाना संभव नहीं है।

(ङ) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित के तत्सम रूप लिखिए–

शब्द	**तत्सम**
प्रलै	प्रलय
आग	अग्नि
लाज	लज्जा
कोइलैं	कोयल
बादर	मेघ
हिय	हृदय
धीरज	धैर्य
औधि	अवधि
रितून	ऋतु

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए–

आग लगाना (क्रोध या ईर्ष्या भड़काना)– राधिका सदैव अपने माता-पिता के सामने अपनी सौतेली बहन के विरुद्ध **आग लगाती रहती है**।

धीरज न आना (धैर्य न रखना)– युवा पुत्र की मृत्यु हो जाने के कारण सबके समझाने पर भी उसके माता-पिता को **धीरज न आ सका**।

प्रलय ढाना (नष्ट-भ्रष्ट करना)– युद्ध के पश्चात विजयी देश की सेना विजित प्रदेश पर **प्रलय ढा देती है**।

पलकों में न समाना (अत्यधिक प्रसन्न या दु:खी होना)– पुत्री के आई.ए.एस.की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खबर उसके माता-पिता के **पलकों में न समाई**।

3. प्रेम माधुरी में किन छंदों का प्रयोग किया गया है?

उ०– प्रेम माधुरी में कवित्त एवं सवैया छंदों का प्रयोग किया गया है।

4. 'निगोड़ा' शब्द का प्रयोग किसी को उलाहना देने के लिए किया जाता है। इसमें गोपियाँ 'निगोड़ा' शब्द बादल के लिए क्यों प्रयुक्त कर रही हैं? स्पष्ट कीजिए।

उ०– लोक व्यवहार में निगोड़ा कहकर उसे उलाहना दिया जाता है, जो मन की पीड़ा को बढ़ाने वाला हो। बादल बरसकर गोपियों की पीड़ा को बढ़ा देते हैं इसलिए गोपियाँ उन्हें निगोड़ा कहकर उलाहना देती हैं।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए–

(अ) परसों को बिताए दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में यमक और अनुप्रास अलंकार है।

(ब) कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(स) पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अंखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

6. प्रस्तुत पाठ में श्रृंगार रस युक्त पंक्तियाँ लिखिए।

उ०– ''देखि के सँजोगी-जन हिय हरसै लगे।''
''पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ, दुखियाँ नहिं मानती हैं।''
''बिना प्रान-प्यारे दरस तुम्हारे हाय, मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी।''

(च) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म हुआ था।

(अ) **सन् 1850 ई.में** (ब) सन् 1868 ई.में
(स) सन् 1880 ई.में (द) सन् 1884 ई.में

2. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भारतेंदु जी की नहीं है?

(अ) **बीजक** (ब) प्रेम सरोवर
(स) नीलदेवी (द) भारत-दुर्दशा

3. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भारतेंदु जी की है?

(अ) दीपशिखा (ब) गोदान
(स) **भारत-दुर्दशा** (द) यामा

4. 'प्रेम माधुरी' काव्य कृति किस कवि की है?

(अ) प्रेमचंद (ब) प्रतापनारायण मिश्र
(स) पूर्णसिंह (द) **भारतेंदु हरिश्चंद्र**

5. भारतेंदु जी को 'भारतेंदु' की पदवी से कब विभूषित किया गया?

(अ) **सन् 1880 में** (ब) सन् 1884 में
(स) सन् 1821 में (द) सन् 1781 में

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

5. पंचवटी (मैथिलीशरण गुप्त)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. खड़ीबोली पद्य के उन्नायकों में से किसी एक राष्ट्रीय कवि का नाम लिखिए।

उ०– खड़ीबोली पद्य के उन्नायकों में से एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' हैं।

2. गुप्त जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– गुप्त जी का जन्म 3 अगस्त सन् 1886 में उत्तर प्रदेश में झाँसी के पास चिरगाँव में हुआ था।

3. गुप्त जी के जीवन पर सबसे गहरा प्रभाव किसका पड़ा?

उ०– गुप्त जी के जीवन पर सबसे गहरा प्रभाव मुंशी अजमेरी जी का पड़ा।

4. 'साकेत' और 'पंचवटी' के रचयिता कौन हैं?

उ०– 'साकेत' और 'पंचवटी' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त जी हैं।

5. हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा गुप्त जी को कौन-सा सम्मान मिला?

उ०– हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा गुप्त जी को 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' सम्मान मिला।

6. गुप्त जी को 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा किसने प्रदान की?

उ०– गाँधी जी ने गुप्त जी को 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा प्रदान की।

7. हिडिंबा, नहुष, दुर्योधन के चरित्र को नवीन रूप गुप्त जी ने अपनी किस कृति में दिया?

उ०– गुप्त जी ने अपनी कृति द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया में हिडिंवा, नहुष, दुर्योधन के चरित्र को नवीन रूप दिया।

8. 'साकेत' किस तरह की रचना है?

उ०– 'साकेत' एक महाकाव्य है।

9. गुप्त जी ने किस भाषा और शैली को अपनाया है?

उ०– गुप्त जी ने भाषा में ब्रजभाषा तथा परिष्कृत, सरल तथा शुद्ध खड़ीबोली एवं शैलियों में प्रबंधात्मक, अलंकृत, विवरणात्मक, गीति और नाट्य शैली को अपनाया है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पंचवटी की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उ०– पंचवटी की सुंदरता अद्भुत है। वहाँ सुंदर चंद्रमा की किरणें जल और थल में क्रीड़ा करती हुई लगती हैं। धरती और आकाश में चंद्रमा का प्रकाश इस प्रकार फैला हुआ है जैसे किसी ने धरती और आकाश में साफ धुली चादर बिछा दी हो। पृथ्वी अपना हर्ष हरी घास के तिनकों की नोकों को हिलाकर प्रदर्शित कर रही है और वृक्ष धीरे-धीरे बहने वाली वायु के झोंकों से हिलकर अपना हर्ष प्रकट कर रहे हैं।

2. पंचवटी में प्रहरी कुटी के किस धन की रक्षा कर रहा है?

उ०– पंचवटी में प्रहरी कुटी के अनुपम धन सती सीता की रक्षा कर रहा है, जो अपने पति राम के साथ यहाँ रह रही हैं और जो रघुवंश की प्रतिष्ठा हैं।

3. निद्रा का त्याग करके पंचवटी की छाया में स्वच्छ शिला पर कौन बैठा हुआ है?

उ०– निद्रा का त्याग करके पंचवटी की छाया में स्वच्छ शिला पर लक्ष्मण बैठे हुए हैं,जो पंचवटी कुटी में राम और सीता की रक्षा करने के लिए सजग प्रहरी के रूप में बैठे हुए हैं।

4. राम के राज्यभार सँभालने पर लक्ष्मण अपने किस अहित से आशंकित हैं?

उ०– राम के राज्यभार सँभालने पर लक्ष्मण आशंकित हैं कि जब राम राज्य के कार्य में व्यस्त होंगे, तो विवश होकर वे हम लोगों को भूल जाएँगे और हम उनके सानिध्य से दूर हो जाएँगे।

5. लक्ष्मण संसार से क्या अपेक्षा रखते हैं?

उ०– लक्ष्मण संसार के लोगों से अपेक्षा रखते हैं कि संसार के लोग अपना तथा दूसरों का भला स्वयं करने लगें और इसके लिए वे दूसरों पर निर्भर न रहें तो यह संसार कितना सुखद और सुंदर हो जाएगा।

6. 'भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना' कौन दिखाई दे रहा है? कवि ने उसको 'भोगी कुसुमायुध' क्यों कहा है?

उ०– भोगी कुसुमायुध योगी– से बने लक्ष्मण दिखाई दे रहे हैं। कवि ने उनको 'भोगी कुसुमायुध' इसलिए कहा है क्योंकि उनके रूप–सौंदर्य और तन्मयता को देखकर ऐसा लगता है कि मानो भोगी कामदेव ही योगी का रूप धारण करके यहाँ आकर बैठ गया हो।

7. प्रकृति हमारे लिए क्या-क्या करती है?

उ०– प्रकृति हमारे सुख में सुखी व दु:ख में दु:खी होती है। प्रकृति जहाँ अनजाने में हुई हमारी भूलों और अपराधों के लिए हमें निर्दय भाव से दंड देती है, वहीं यह वृद्धजनों का माता के समान पालन–पोषण करती है। जिस प्रकार माता अपने सभी बच्चों का समान भाव से पालन करती है, उसी प्रकार पृथ्वी भी बाल, वृद्ध सभी का समान भाव से पालन–पोषण करती है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उ०– राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी के महत्वपूर्ण कवि हैं। श्री पं०महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से आपने खड़ीबोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ीबोली को एक काव्य–भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। गुप्त जी खड़ीबोली के उन्नायकों में प्रधान हैं। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध काव्य–भाषा को छोड़कर समय और संदर्भो के अनुकल होने के कारण नए कवियों ने इसे ही अपनी काव्य–अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिंदी कविता के इतिहास में गुप्त जी का यह सबसे बड़ा योगदान है। पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय संबंधों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो 'पंचवटी' से लेकर 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और 'साकेत' तक में प्रतिष्ठित एवं प्रतिफलित हुए हैं। साकेत उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है। अपनी लेखनी के माध्यम से वे सदा अमर रहेंगे और आने वाली सदियों में नए कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे।

जीवन परिचय– हिंदी साहित्य के प्रखर नक्षत्र, माँ भारती के वरद पुत्र मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त सन् 1886 ई. में पिता सेठ रामचरण गुप्त और माता कौशल्या बाई की तीसरी संतान के रूप में उत्तर प्रदेश में झाँसी के पास चिरगाँव में हुआ। माता और पिता दोनों ही परम वैष्णव थे। वे 'कनकलताद्ध' नाम से कविता करते थे। विद्यालय में खेलकूद में अधिक ध्यान देने के कारण पढ़ाई अधूरी ही रह गई। घर में ही हिंदी, बंगला, संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। मुंशी अजमेरी जी ने उनका मार्गदर्शन किया। 12 वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में कविता रचना आरंभ की। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में भी आए। उनकी कविताएँ खड़ीबोली में मासिक 'सरस्वती' में प्रकाशित होना प्रारंभ हो गई। प्रथम काव्य संग्रह 'रंग में भंग' तथा बाद में 'जयद्रथ वध' प्रकाशित हुई। उन्होंने बंगाली के काव्य ग्रंथ 'मेघनाद वध', 'ब्रजांगना' का अनुवाद भी किया। सन् 1914 ई. में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत 'भारत भारती' का प्रकाशन किया। उनकी लोकप्रियता सर्वत्र फैल गई। संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'स्वप्नवासवदत्ता' का अनुवाद प्रकाशित कराया। सन् 1916-17 ई. में महाकाव्य 'साकेत' का लेखन प्रारंभ किया। उर्मिला के प्रति उपेक्षा भाव इस ग्रंथ में दूर किए गए। स्वत: प्रेस की स्थापना कर अपनी पुस्तकें छापना शुरू किया। 'साकेत' तथ अन्य ग्रंथ 'पंचवटी' आदि सन् 1931 में पूर्ण किए।

12 दिसंबर 1964 ई.को दिल का दौरा पड़ा और साहित्य का यह जगमगाता तारा अस्त हो गया। उन्होंने 78 वर्ष की आयु में दो महाकाव्य, 19 खंडकाव्य, काव्यगीत, नाटिकाएँ आदि लिखीं। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना, धार्मिक भावना और मानवीय उत्थान प्रतिबिबित हैं। 'भारत भारती' के तीन खंड में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य चित्रित है। वे मानववादी, नैतिक और सांस्कृतिक काव्यधारा के विशिष्ट कवि थे। डा.नगेंद्र के अनुसार वे सच्चे राष्ट्रकवि थे। दिनकर जी के अनुसार उनके काव्य के भीतर भारत की प्राचीन संस्कृति एक बार फिर तरुणावस्था को प्राप्त हुई थी।

रचनाएँ–

(अ) भारत भारती– इसमें देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाओं पर आधारित कविताएँ लिखी हुई हैं। इसी से वे राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए।

(ब) साकेत– 'मानस' के पश्चात हिंदी में राम–काव्य का दूसरा अनुपम–ग्रंथ 'साकेत' ही है।

(स) यशोधरा– इसमें उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को काव्य का आधार बनाया गया है।

(द) द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया– इनमें हिडिंबा, नहुष, दुर्योधन आदि के चरित्रों को नवीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

(य) गुप्त जी की अन्य पुस्तकें– पंचवटी, चंद्रहास, कुणालगीत, सिद्धराज, मंगल–घट, अनघ तथा मेघनाद वध।

2. गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में किस भाषा-शैली का प्रयोग किया है? क्या उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हैं?

उ०– भाषा-शैली– गुप्त जी ने अपनी कविताओं में ब्रजभाषा तथा परिष्कृत, सरल तथा शुद्ध खड़ीबोली को अपनाया, उन्होंने यह सिद्ध किया कि ब्रजभाषा काव्य सृजन के लिए समर्थ भाषा है। सभी अलंकारों का इन्होंने स्वाभाविक प्रयोग किया है। लेकिन सादृश्यमूलक अलंकार गुप्त जी को अधिक प्रिय है। घनाक्षरी, मालिनी, वसंततिलका, हरिगीतिका व द्रुतविलंबित आदि छंदों में उन्होंने काव्य रचना की है।

गुप्त जी ने विविध शैलियों में काव्य की रचना की। इनके द्वारा प्रयुक्त शैलियाँ हैं— प्रबंधात्मक शैली, अलंकृत उपदेशात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, गीति शैली तथा नाट्यशैली।

मैथिलीशरण गुप्त जी की रचनाएँ राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण हैं। काव्य के क्षेत्र में उन्होंने अपनी लेखनी से संपूर्ण देश में राष्ट्रभक्ति की भावना भर दी थी। राष्ट्रप्रेम की इस अजस्र धारा का प्रवाह बुंदेलखंड क्षेत्र से कविता के माध्यम से हो रहा था। बाद में राष्ट्र प्रेम की इस धारा को देशभर में प्रवाहित किया था, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने।

3. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'पंचवटी' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– पंचवटी में रात्रि सौंदर्य अपने चरम पर है। सुंदर चंद्रमा की किरणें जल और थल सब जगह खेलती हुई प्रतीत होती हैं। चंद्रमा का प्रकाश धरती और आकाश पर ऐसे फैला हुआ है, जैसे धरती पर धुली हुई चादर बिछा दी हो। पृथ्वी हरी-हरी घास की नोंकों को हिलाकर अपना हर्ष और उल्लास प्रकट कर रही है और वृक्ष मंद-मंद वायु के झोंकों से हिलकर उनकी प्रसन्नता को प्रकट कर रहे हैं। पंचवटी की छाया में सुंदर पत्तों की कुटिया बनी हुई है। जिसके सामने साफ पत्थर की शिला पर धनुष धारण किए कोई वीर तथा निडर व्यक्ति बैठा है। जब सारा संसार रात्रि के कारण सो रहा है, तब यह क्यों जाग रहा है, जो तपस्वियों का वेश धारण किए इतना सुंदर लगता है, मानो सांसारिक सुखों में लिप्त रहने वाला कामदेव योगी का रूप धारण करके बैठा हो। इस वीर ने ऐसा कौन-सा व्रत ग्रहण किया हुआ है, जिसके कारण इसने अपनी निद्रा का त्याग किया हुआ है?

यह व्यक्ति जो वैराग्य धारण किए बैठा है, यह तो राजभवन के सुखों को पाने के योग्य है। मेरे मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है कि जिस कुटी की रक्षा में इस तपस्वी ने अपना तन, मन और जीवन अर्पण किया हुआ है, उसमें जाने ऐसा कौन-सा धन है। पंचवटी में तीन लोकों की महारानी सती सीता अपने पति श्रीराम संग निवास करती है और वह वीर (लक्ष्मण) इस निर्जन प्रदेश में उनकी रक्षा के लिए बैठे हैं। सती सीता रघुवंश की मर्यादा हैं। इसलिए इस कुटी का प्रहरी वीर होना चाहिए। पंचवटी में रात्रि सन्नाटे से भरी है और चाँदनी दूर तक फैली है, यहाँ कोई शब्द नहीं हो रहा है। नियति रूपी नर्तकी के समस्त कार्य चल रहे हैं। राम लक्ष्मण और सीता के वनवास के तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, पर ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो, जब वे वनवास को आए थे परंतु अब वनवास की अवधि पूर्ण होने को है। लक्ष्मण विचार करते हैं कि राजा बनने के बाद राज्य-भार के कारण राम इतने व्यस्त हो जाएँगे कि वे हमें भूल जाएँगे। ऐसा करना उनकी विवशता ही होगी, किंतु इससे हमें दु:ख नहीं होगा क्योंकि इससे जनता का कल्याण होगा। परंतु क्या यह संसार अपना व दूसरों का कल्याण स्वयं नहीं कर सकता। यदि ये लोग अपना और संसार का हित कर सकते तो संसार कितना सुखद और मधुर होता।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए।

(अ) चारु चंद्र की....................................झोंकों से।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित 'पंचवटी' काव्य से 'पंचवटी' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने चाँदनी रात में पंचवटी की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि सुंदर चंद्रमा की चंचल किरणें जल और थल सभी स्थानों पर क्रीड़ा कर रही हैं। पृथ्वी से आकाश तक सभी जगह चंद्रमा की स्वच्छ चाँदनी फैली हुई है, जिसे देखकर ऐसा मालूम पड़ता है कि धरती और आकाश में कोई धुली हुई सफेद चादर बिछी हुई हो। पृथ्वी हरे घास के तिनकों की नोंक के माध्यम से अपनी प्रसन्नता को व्यक्त कर रही है। तिनकों के रूप में उसका रोमांचित होना दिखाई देता है; अर्थात् तिनकों की नोंक चाँदनी में चमकती है और उसी

चमक से पृथ्वी की प्रसन्नता व्यक्त हो रही है। मंद सुगंधित वायु बह रही है, जिसके कारण वृक्ष धीरे-धीरे हिल रहे हैं, तब ऐसा मालूम पड़ता है मानों सुंदर वातावरण को पाकर वृक्ष भी मस्ती में झूम रहे हों। तात्पर्य यह है कि सारी प्रकृति प्रसन्न दिखाई दे रही है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ पंचवटी की रात्रिकालीन सुंदरता का मनोहारी वर्णन हुआ है। **2.** प्रकृति का चित्रण आलंबन रूप में हुआ है। **3. भाषा–** खड़ी-बोली **4. रस–** श्रृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण **7. छंद–** मात्रिक।

(ब) किस व्रत में है..जीवन है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्य में उस समय का वर्णन है, जब वनवास के दिनों में श्रीराम और सीता जी पंचवटी की कुटिया में सोए हुए हैं और लक्ष्मण रात को कुटिया के बाहर एक शिला पर बैठकर पहरा दे रहे हैं।

व्याख्या– लक्ष्मण को पहरा देते हुए देखकर कवि कहता है कि वीर व्रत धारण करने वाला यह युवक अपनी नींद त्यागकर किस व्रत की साधना में लीन है? देखने से तो लगता है कि यह किसी राज्य का सुख भोगने के योग्य है, पर यह तो वैराग्य धारण कर जंगल में बैठा है। आखिर इस कुटिया में ऐसा कौन-सा धन है, जिसका यह युवक बड़ी तन्मयता से पहरा दे रहा है। यह इस कुटी की रक्षा के लिए शरीर की परवाह नहीं कर रहा है अर्थात् अपने शरीर को विश्राम नहीं दे रहा है और सब प्रकार से अपने मन को इस कुटी की रक्षा में लगाए हुए है। अवश्य ही इस कुटी में ऐसा कोई अमूल्य और अनुपम धन होना चाहिए, जिसकी रक्षा में यह वीर अपने तन, मन और जीवन को ही समर्पित किए हुए है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने इन पंक्तियों में लक्ष्मण की लगन, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, एकाग्रता आदि गुणों पर प्रकाश डाला है। **2. भाषा–** खड़ीबोली **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. छंद–** मात्रिक **6. अलंकार–** अनुप्रास।

(स) क्या ही स्वच्छ.................................और चुपचाप।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने प्रकृति के सौंदर्य, क्रियाशीलता, शांति और सात्विकता का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या– पंचवटी के प्राकृतिक सौंदर्य को निहारते हुए लक्ष्मण अपने मन में सोचते हैं कि यहाँ कितनी स्वच्छ और चमकीली चाँदनी है और रात्रि भी बहुत शांत है। स्वच्छ, सुगंधित वायु मंद-मंद बह रही है। पंचवटी में किस ओर आनंद नहीं है? इस समय चारों ओर पूर्ण शांति है तथा सभी लोग सो रहे हैं, फिर भी नियतिरूपी नटी अर्थात् नर्तकी अपने कार्य-कलाप बहुत शांत भाव से और चुपचाप पूरा करने में तल्लीन है। तात्पर्य यह है कि नियति रूपी नर्तकी अपने क्रिया-कलापों को बहुत ही शांति से संपन्न कर रही है और वह अकेले ही अपने कर्तव्यों का निर्वाह किए जा रही है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ पंचवटी के रात्रि सौंदर्य को दार्शनिक अर्थ में चित्रित किया है। पंचवटी रात्रि के सन्नाटे में डूबी हुई है, किंतु नियति (यहाँ इसका अर्थ प्रकृति से लिया गया है; क्योंकि उसकी सभी क्रियाएँ निश्चित नियमों के अंतर्गत चलती हैं) अपने कार्य में संलग्न है, अर्थात् सभी विश्राम में हैं, शांत हैं, किंतु प्रकृति अपने कार्य में इस समय भी व्यस्त है। **2. भाषा–** खड़ी बोली **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. छंद–** मात्रिक **6. अलंकार–** अनुप्रास और रूपक।

(द) सरल तरल..सेवी है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने लक्ष्मण के मन में उठ रहे विचारों का सुंदर चित्रण किया है। लक्ष्मण को प्रकृति एक ओर हर्ष और उल्लास प्रकट करती हुई प्रतीत होती है तो दूसरी ओर अपने शोकभावों को भी व्यक्त करती है।

व्याख्या– लक्ष्मण अपने मन में विचार करते हैं कि जो सुंदर और चंचल ओस की बूँदे प्रकृति की प्रसन्नता और शोभा की प्रतीक हैं, उन्हीं ओस की बूँदों से वह आत्मीय प्रकृति दु:ख की घड़ी में हमारे साथ रोती हुई-सी प्रतीत होती है, जबकि सुख के क्षणों में इन्हीं ओस की बूँदों के माध्यम से वह अपना हर्ष प्रकट करती है। यह प्रकृति हमारी अनजाने में की गई भूलों पर कठोरतापूर्वक दंड देती है, किंतु कभी-कभी बड़ी दयालु होकर बूढ़ों की भी बच्चों के समान सेवा करती है। इस प्रकार प्रकृति के कठोर और कोमल दोनों रूप हमारे सम्मुख प्रकट होते हैं। यहाँ प्रकृति में आत्मीयता और संरक्षण का भाव व्यक्त हुआ है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रकृति ओस के कणों को मोतियों के रूप में पृथ्वी पर बिखेरकर अपना हर्ष प्रकट करती है और यही ओस कण हमारी वेदना में अश्रु की बूँदें बनकर लुढ़कते हैं। आँसू को बहुधा मोती की उपमा दी जाती है। कवि ने इस

सादृश्य उपमा के काव्यकाल का अद्‌भुत रूप प्रस्तुत किया है। **2.** प्रकृति को माता के रूप में चित्रित करके उसके भावात्मक स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। **3.** यहाँ प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। **4. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. छंद–** मात्रिक **8.अलंकार–** रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास तथा मानवीकरण।

(य) और आर्य को..................................यह नरलोक?

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– पंचवटी में स्थित कुटिया का प्रहरी बने लक्ष्मण सोच रहे हैं कि एक वर्ष पश्चात् जब हम लोग अयोध्या लौट जाएँगे, तब रामचंद्र प्रजा के हित के लिए राज्य-भार को धारण करेंगे। प्रस्तुत पद्य में इसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– वनवास की अवधि पूरी करके जब हम लोग अयोध्या लौटेंगे तो बड़े भाई राम को क्या मिलेगा? लक्ष्मण स्वयं उत्तर देते हुए कहते हैं कि वे राज्यभार सँभाल लेंगे, किंतु यह भार तो वह प्रजा के हित के लिए ही धारण करेंगे। तब वे राज्य के कार्य में इतने व्यस्त रहेंगे कि विवश होकर हम लोगों को भी भूल जाएँगे, किंतु यह सोचकर कि वे लोगों के उपकार में लगे हैं, हमें दु:ख नहीं होगा। लक्ष्मण के मन में यह प्रश्न उठता है कि इस दुनिया के लोग अपना हित स्वयं क्यों नहीं कर सकते? वे अपनी सुख-सुविधा के लिए राजा पर ही निर्भर क्यों रहते हैं? यदि लोग अपना तथा दूसरों का भला स्वयं ही करने लगें और इसके लिए दूसरों का मुँह न देखें तो यह संसार कितना सुंदर और सुखद हो जाएगा।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ राम की महानता के साथ-साथ लक्ष्मण के सेवा-भाव को भी चित्रण हुआ है। कवि ने लक्ष्मण की सोच में एक साथ दो भावों को समाहित करके अपनी काव्यात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. छंद–** मात्रिक **6. अलंकार–** अनुप्रास और उत्प्रेक्षा।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) वीर वंश की लाज यही है, फिर क्यों वीर न हो प्रहरी?

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि पंचवटी की कुटिया में निवास करने वाली सती सीता हैं, जो वीर वंश (रघुकुल)की प्रतिष्ठा हैं इसलिए इस कुटी का रक्षक एक वीर पुरुष है, जो उनकी रक्षा कर सकें।

(ब) भोगी कुसुमायुध योगी-सा, बना दृष्टिगत होता है।

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि जब संसार रात के शांत वातावरण में सोया हुआ है, उस समय यह धनुर्धारी तपस्वियों के वेश में ऐसा सुंदर लग रहा है, मानो सांसारिक सुखों में लिप्त रहने वाले कामदेव ही योगी का रूप धारण करके यहाँ बैठ गए हों।

(स) कर विचार लोकोपकार का,
हमें न इससे होगा शोक।
पर अपना हित आप नहीं क्या,
कर सकता है यह नरलोक?

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि लक्ष्मण के मन में विचार उठ रहे हैं कि राजकाज सँभालने के बाद राम हमें भूल जाएँगे, किंतु इससे हमें दु:ख नहीं होगा क्योंकि ऐसा वे लोक कल्याण के लिए करेंगे। परंतु क्या दुनिया के आदमी अपना हित स्वयं नहीं कर सकते? यदि वे अपना व दूसरों का हित कर लें तो संसार कितना मधुर और सुखद हो जाएगा।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'नहुष' के रचयिता हैं–

(अ) तुलसी (ब) बिहारी
(स) **मैथिलीशरण गुप्त** (द) हरिऔध

2. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना 'गुप्त जी' की है?

(अ) शिवा-शौर्य (ब) **साकेत**
(स) आँसू (द) बीजक

3. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना गुप्त जी की नहीं है?

(अ) **प्रिय-प्रवास** (ब) भारत भारती
(स) द्वापर (द) अनघ

4. गुप्त जी का जन्म स्थान है–

(अ) आगरा (ब) बरेली

(स) **चिरगाँव (झाँसी)** (द) कानपुर

5. राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत आधुनिक युग के लोकप्रिय कवि हैं–

(अ) कबीरदास (ब) **मैथिलीशरण गुप्त**

(स) पूर्णसिंह (द) मलिक मुहम्मद जायसी

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

कुटीर – कुटी, झोंपड़ी।

निशा – रात्रि, यामिनी।

अवनि – पृथ्वी, धरती।

अंबर – नभ, गगन।

चंद्र – राकेश, मयंक।

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**
लोकोपकार	लोक + उपकार
निरानंद	निर् + आनंद
धनुर्धर	धनुः + धर
कुसुमायुध	कुसुम + आयुध

3. निम्नलिखित शब्दों में समास विग्रह कीजिए–

समस्त पद	**समास विग्रह**
पंचवटी	पाँच वृक्षों का समाहार
जल-थल	जल और थल
नरलोक	मनुष्यों का संसार
वीर वंश	वीरों का वंश
अदय	बिना दया का
राम-जानकी	राम और जानकी
वसुंधरा	वस्तुओं को धारण करने वाली
सदय	दया के साथ
नियति-नटी	भाग्य रूपी नर्तकी

4. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए–

(अ) चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल थल में।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास, मानवीकरण व उपमा अलंकार है।

(ब) भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में उपमा अलंकार है।

(स) मानो झीम रहे हैं तरु भी, मंद पवन के झोंकों से।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

6. पुनर्मिलन (जयशंकर प्रसाद)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य कौन-सा है?

उ०– 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य है।

2. छायावाद के चार स्तंभ कहे जाने वाले कवियों के नाम लिखिए।

उ०– छायावाद के चार स्तंभ कहे जाने वाले कवि हैं–सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और जयशंकर प्रसाद।

3. जयशंकर प्रसाद किस युग के कवि हैं ?

उ०– जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के कवि हैं।

4. प्रसाद जी का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ था। इस कथन की विवेचना कीजिए।

उ०– जयशंकर प्रसाद जी के माता-पिता की इनकी (प्रसाद जी की) कम उम्र में ही मृत्यु हो जाने से प्रसाद जी के लालन-पालन का भार इनके भाई 'शम्भुरत्न' पर आ पड़ा। परंतु शम्भुरत्न जी का भी देहांत हो गया। अत: इन पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। प्रसाद जी के घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी ही शेष थी। अन्य कुटुंबीजन इनकी संपत्ति हड़पने के षड्यंत्र में लगे रहे। परंतु प्रसाद जी ने इन सभी कठिनाइयों का धीरता से सामना किया। निष्कर्षत: जयशंकर प्रसाद जी का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ था।

5. प्रसाद जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था? इनके पिता का क्या नाम था?

उ०– प्रसाद जी का जन्म 1889 ई. में काशी के सरायगोवर्धन में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू देवीप्रसाद था।

6. सुमित्रानंदन पंत ने 'कामायनी' महाकाव्य की तुलना किससे की है?

उ०– सुमित्रानंदन पंत ने 'कामायनी' महाकाव्य को 'हिंदी' में ताजमहल के समान माना है।

7. प्रसाद जी की काव्य कृतियाँ लिखिए।

उ०– कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक आदि प्रसाद जी की काव्य कृतियाँ हैं।

8. प्रसाद जी को किस कृति के लिए 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया गया?

उ०– प्रसाद जी को 'कामायनी' महाकाव्य के लिए 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया गया।

9. छायावाद का प्रवर्तक किसे कहा गया है?

उ०– छायावाद का प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद को कहा गया है।

10. प्रसाद जी ने किस भाषा का प्रयोग किया है?

उ०– प्रसाद जी ने परिष्कृत व परिमार्जित, साहित्यिक तथा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली का प्रयोग किया है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रद्धा कौन थी तथा उसके पुत्र का क्या नाम था?

उ०– श्रद्धा मनु की पत्नी थी तथा उसके पुत्र का नाम मानव था।

2. कामायनी का पुत्र किस प्रकार चल रहा था और क्यों?

उ०– कामायनी अर्थात् श्रद्धा का पुत्र अपनी माँ की अँगुली पकड़कर चुपचाप और धैर्य के साथ चल रहा था, क्योंकि वह अपने पिता को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बहुत थक गया था।

3. कामायनी को अपनी किस भूल के लिए पश्चाताप हो रहा था?

उ०– कामायनी को अपनी इस भूल के लिए पश्चाताप हो रहा था कि मनु के नाराज होने पर उसने उसे क्यों नहीं मनाया। श्रद्धा को यह आभास होता है कि मुझे मनु को मनाना चाहिए था।

4. मनु को श्रद्धा का स्पर्श कैसा प्रतीत हो रहा था?

उ०– मनु को श्रद्धा का स्पर्श उबटन के समान प्रतीत हो रहा था।

5. 'पुनर्मिलन' में कवि ने किस रस का प्रयोग किया है?

उ०– 'पुनर्मिलन' में कवि ने करुण रस व विप्रलम्भ शृंगार रस का प्रयोग किया है।

6. इड़ा को कामायनी धुँधली-सी छाया क्यों प्रतीत हो रही थी?

उ०– इड़ा को कामायनी विरह की वेदना के कारण धुँधली-सी छाया प्रतीत हो रही थी।

7. विरहिणी के रूप में कामायनी का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है?

उ०– कवि ने विरहिणी के रूप में श्रद्धा का चित्रण मार्मिक रूप में किया है। कवि ने कली की टूटी हुई पँखुड़ियों के साथ श्रद्धा के जर्जर अंगों की, लुटे हुए मकरंद के साथ श्रद्धा के नष्ट हुए माधुर्य की और कली के मुरझा जाने से श्रद्धा के उपेक्षित सौंदर्य की तुलना की है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय लिखिए।

उ०– जयशंकर प्रसाद हिंदी कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार थे। वे हिंदी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की, जिसके द्वारा खड़ीबोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई।

आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। वे एक युगप्रवर्तक लेखक थे, जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरव करने लायक कृतियाँ लिखीं। कवि के रूप में वे निराला, पंत, महादेवी के साथ छायावाद के चौथे स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं; नाटक लेखन में भारतेंदु के बाद वे एक अलग धारा बहाने वाले युगप्रवर्तक नाटककार रहे, जिनके नाटक आज भी पाठक चाव से पढ़ते हैं। इसके अलावा कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने कई यादगार कृतियाँ दीं। उन्होंने विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करुणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन किया। 48 वर्षों के छोटे से जीवन में ही उन्होंने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की।

जीवन परिचय– प्रसाद जी का जन्म 1889 ई.में काशी के सरायगोवर्धन में हुआ। इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू दान देने में प्रसिद्ध थे और इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने के लिए विख्यात थे। इनका काशी में बड़ा सम्मान था और काशी की जनता काशीनरेश के बाद 'हर हर महादेव' से बाबू देवीप्रसाद का ही स्वागत करती थी। इनके पिता तंबाकू के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। पिता की मृत्यु के बाद ही बड़े भाई 'शम्भुरत्न' का भी देहांत हो गया। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी, कुटुंबियों, परिवार से संबद्ध अन्य लोगों का संपत्ति हड़पने का षड्यंत्र, इन सबका सामना उन्होंने धीरता और गंभीरता के साथ किया। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कॉलेज में हुई, किंतु बाद में घर पर ही इनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध किया गया, जहाँ संस्कृत, हिंदी, उर्दू तथा फारसी का अध्ययन इन्होंने किया। दीनबंधु ब्रह्मचारी जैसे विद्वान इनके संस्कृत के अध्यापक थे। इनके गुरुओं में 'रसमय सिद्ध' की भी चर्चा की जाती है। घर के वातावरण के कारण साहित्य और कला के प्रति उनमें प्रारंभ से ही रुचि थी और कहा जाता है कि नौ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'कलाधर' के नाम से ब्रजभाषा में एक सवैया लिखकर 'रसमय सिद्ध' को दिखाया था। उन्होंने वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्य शास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया था। वे बाग-बगीचे तथा भोजन बनाने के शौकीन थे और शतरंज के खिलाड़ी भी थे। वे नियमित व्यायाम करने वाले, सात्विक खानपान एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। वे नागरीप्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष भी थे। क्षय रोग के कारण सन् 1937 को काशी में उनका देहांत हो गया।

2. प्रसाद जी की भाषा-शैली पर टिप्पणी लिखिए।

उ०– प्रसाद जी के काव्य की प्रमुख विशेषता रहस्यवादी चित्रण है। प्रारंभ में ये ब्रजभाषा में काव्य रचना करते थे किंतु कुछ समय बाद इन्होंने खड़ीबोली को अपने काव्य का माध्यम बनाया। इनकी भाषा परिष्कृत व परिमार्जित साहित्यिक तथा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। इनकी भाषा में ओज, माधुर्य एवं प्रवाह सर्वत्र दर्शनीय हैं। इनके काव्य में सुगठित शब्द-योजना दृष्टिगोचर होती है। इनका वाक्य-विन्यास तथा शब्द-चयन अद्वितीय है। सूक्ष्म भाव अभिव्यक्ति के लिए इन्होंने लक्षणा व व्यंजना शब्द-शक्तियों को अपनाया है।

प्रसाद जी की शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। ये छोटे-छोटे वाक्यों में भी गंभीर भाव भरने में दक्ष थे। संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित इनकी शैली अत्यंत सरस एवं मधुर है। जहाँ दार्शनिक विषयों पर आधारित अभिव्यक्ति हुई है, वहाँ इनकी शैली अवश्य गंभीर हो गई है।

3. जयशंकर प्रसाद की काव्य-कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उ०– **काव्य-कृतियाँ–** जयशंकर प्रसाद जी के प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं- लहर, कानन कुसुम, झरना, प्रेम पथिक, करुणालय, आँसू, महाराणा का महत्व, उर्वशी, चित्राधार, तन मिलन तथा कामायनी आदि। अनेक विद्वानों ने 'कामायनी' को आधुनिक हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना है।

भाषागत विशेषताएँ– जयशंकर प्रसाद जी की भाषा में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में परिष्कृत व परिमार्जित साहित्यिक तथा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली का प्रयोग किया है।

(ब) इनकी भाषा में ओज, माधुर्य एवं प्रवाह सर्वत्र दर्शनीय होता है।

(स) इनके काव्यों में सुगठित शब्द-योजना दृष्टिगोचर होती है।

(द) इनके काव्यों में वाक्य-विन्यास तथा शब्द चयन अद्वितीय है।

(य) अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए प्रसाद जी ने लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का आश्रय लिया है तथा प्रतीकात्मक शब्दावली को अपनाया है।

(र) इनकी शैली संगीतात्मक, सरस तथा मधुर है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) चौंक उठी...फेरा।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य से 'पुनर्मिलन' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में रानी इड़ा के चौंकने तथा मनु को खोजती हुई श्रद्धा की दीन दशा का चित्रण किया गया है। मनु अपनी पत्नी श्रद्धा से रूठकर चले गए हैं। उनकी पत्नी श्रद्धा किस प्रकार उनके विरह में व्याकुल है, उसी के विषय में कवि इड़ा के माध्यम से बता रहे हैं—

व्याख्या– जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं कि सारस्वत नगर की रानी इड़ा अपने विचारों में खोई हुई थी। सहसा कुछ दूर से आती हुई आवाज को सुनकर वह चौंक उठी। उसने सुना कि दूर से इस शांत रात्रि में कोई महिला यह कहती हुई चली आ रही है— अरे! कोई दया करके मुझे यह बता दो कि मेरा वह परदेशी प्रियतम कहाँ है? मैं अपने उसी बावले प्रियतम की खोज में भटकती फिर रही हूँ।

काव्यगत सौंदर्य–1. कवि ने यहाँ श्रद्धा के विरह से व्याकुल हृदय एवं उसकी व्यथा का सजीव एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। **2.** इड़ा को भविष्य की सोच में डूबे दिखाकर कवि ने मानव-मन की विभिन्न दशाओं का तुलनात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। **3.** 'प्रवासी' शब्द का प्रयोग करके श्रद्धा ने यह घोषणा की है कि मनु का एकमात्र स्थान उसका हृदय है। **4.** 'बावले' शब्द में स्नेह की अधिकता की अभिव्यंजना है। **5.** 'फेरा डालना' मुहावरे का प्रयोग किया गया है। **6. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **7. रस–** विप्रलम्भ श्रृंगार **8. गुण–**प्रसाद **9. अलंकार–** अनुप्रास तथा रूपक।

(ब) इड़ा उठी...कली।

संदर्भ–पूर्ववत्

प्रसंग– श्रद्धा ने स्वप्न में अपने पति मनु को घायल और मरणासन्न अवस्था में देखा। वह पुत्र को साथ लेकर मनु को खोजने निकल पड़ती है और खोजते-खोजते सारस्वत नगर की रानी इड़ा के पास पहुँचती है।

व्याख्या– इड़ा ने जब उठकर देखा तो उसे राजपथ पर एक धुँधली-सी छाया आती दिखाई दी। उसके स्वर में करुणा वेदना थी और उसकी पुकार दु:ख की आग में जलती हुई-सी प्रतीत हो रही थी। श्रद्धा का शरीर निरंतर चलने के कारण थक गया था। उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हो गए थे। उसकी चोटी खुल गई थी, जो उसकी अधीरता को प्रकट कर रही थी। वह उस मुरझाई कली के समान दिखाई दे रही थी, जिसकी पंखुड़ियाँ टूटकर बिखर गई हों तथा जिसका पराग लुट गया हो। तात्पर्य यह है कि श्रद्धा की अस्त-व्यस्तता उसकी मानसिक परेशानी को प्रकट कर रही थी कि उसे अपने शरीर तक की सुध नहीं थी।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ विरह से व्याकुल श्रद्धा का शब्दचित्र अंकित किया है। **2.** कली की टूटी पँखुड़ियों से श्रद्धा के जर्जर अंगों, लुटे मकरंद से श्रद्धा के नष्ट हुए माधुर्य और कली के मुरझाने से श्रद्धा के उपेक्षित सौंदर्य की तुलना

की गई है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ी बोली **4. रस–** विप्रलंभ श्रृंगार और करुण **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास तथा उपमा।

(स) इड़ा आज.................................... खोलो तो।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में इड़ा, पति-वियोग से दु:खी श्रद्धा को धीरज बँधाती हुई उसे अपने पास रुक जाने का आग्रह करती है।

व्याख्या– माँ-बेटे के दु:ख को देखकर इड़ा का हृदय करुणा से भर गया। उनके पास पहुँचकर इड़ा ने कहा कि तुमको किसने भुला दिया है? तुम इस अँधेरी रात में भटकती हुई कहाँ जाओगी? तुम मेरे निकट आकर बैठ जाओ। तुम्हारी अस्त-व्यस्त दशा को देखकर मेरा हृदय व्यथित हो गया है। तुम अपने हृदय में जो पीड़ा छिपाए घूम रही हो, उसको मुझे बताओ। हो सकता है मैं तुम्हारा कष्ट दूर करने में तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ। तुम्हारे कष्टों को सुनने के लिए मेरा हृदय व्यग्र हो उठा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. श्रद्धा के प्रति इड़ा की सहानुभूति में मानवीय संवेदना प्रकट की गई है। किसी दु:खी व्यक्ति के साथ बैठकर पीड़ा बाँटने की स्वाभाविक मानवीय प्रकृति को अभिव्यक्ति दी है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ी बोली **3. रस–** करुण और शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. अलंकार–** रूपक।

(द) उधर कुमार.......................................खड़े हुए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में श्रद्धा अपने पुत्र को मनु से मिलवाती है और सबके मिलने पर छोटे-से परिवार में आत्मीयता का भाव भर जाता है।

व्याख्या– यहाँ कवि ने मनु के पुत्र मानव के भावों का वर्णन किया है, जब वह यज्ञभूमि के ऊँचे मंदिर, यज्ञ मंडप और यज्ञ की वेदी को देख रहा था, वह सोचने लगा कि यह सब कितना मोहक, सुंदर और नवीन है, जो मेरे मन को आकर्षित कर रहा है। मनु के होश में आने पर श्रद्धा ने अपने पुत्र से कहा कि तू भी आकर अपने पिता के दर्शन कर ले। ये भूमि पर लेटे हुए हैं। माँ का कथन सुनते ही उसने पिता के पास आकर कहा- ''पिताजी! देखो मैं आपके पास आ गया।'' पिता से बात कर पुत्र को अति प्रसन्नता हुई और दोनों ही रोमांचित हो गए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ बालकों की प्रकृति एवं उनकी उत्सुकता संबंधी भावना का अत्यंत स्वाभाविक चित्रण किया गया है। **2.** मनु से श्रद्धा और पुत्र के मिलन में स्वाभाविकता का समावेश हुआ है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. रस–** श्रृंगार तथा वात्सल्य **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) धुला हृदय, बन नीर बहा।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने श्रद्धा की व्याकुलता को स्पष्ट किया है कि मनु को घायल अवस्था में लेटे देखकर वह उसके पास जाती है और चीख उठती है ''आह! प्राणप्रिय! यह क्या हो गया? तुम इस दशा में क्यों हो?'' ऐसा कहते हुए उसका सारा दुःख उसके नेत्रों के द्वारा आँसू बनकर बहने लगता है।

(ब) छिन्न-पत्र मकरंद लुटी-सी, ज्यों मुरझाई हुई कली।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने श्रद्धा की दशा को स्पष्ट किया है कि वह विरह-वेदना के कारण उस मुरझाई हुई कली के समान दिखाई देती है, जिसकी पँखुड़ियाँ टूटकर बिखर गई हों तथा जिसका पराग लुट गया हो। तात्पर्य यह है कि श्रद्धा की अस्त-व्यस्तता उसकी व्याकुलता को प्रकट कर रही है।

(स) आँखें खुली चार कोनों में, चार बिंदु आकर छाए।

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि श्रद्धा और मनु के मिलन पर जब मनु श्रद्धा के स्पर्श के बाद अपनी आँखें खोलतें हैं तो दोनों की आँखों में आँसू आ जाते हैं अर्थात् दोनों एक-दूसरे को देखकर भाव विह्वल हो जाते हैं।

(द) छाया एक मधुर स्वर उस पर, श्रद्धा का संगीत बना।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने श्रद्धा, मनु व उनके पुत्र के मिलन का मार्मिक चित्रण किया है कि उस परिवार में श्रद्धा का मधुर स्वर संगीत बनकर छा गया। आशय यह है कि अब उनके मध्य आनंद ही आनंद विद्यमान है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रसाद जी का जन्म हुआ था–

(अ) सन् 1885 में (ब) सन् 1886 में

(स) सन् 1491 में (स) **सन् 1889 में**

2. प्रसाद जी को 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' उनकी कौन-सी रचना के कारण दिया गया?

(अ) लहर (ब) झरना

(स) **कामायनी** (द) चित्राधार

3. 'कामायनी' की रचना विधा है–

(अ) कहानी (ब) खंडकाव्य

(स) **महाकाव्य** (द) नाटक

4. प्रसाद जी की रचना है–

(अ) पंचवटी (ब) साहित्य लहरी

(स) विनय पत्रिका (द) **लहर**

5. प्रसाद जी की कृति नहीं है–

(अ) झरना (ब) आँसू

(स) आकाशदीप (द) **साकेत**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

निस्तब्ध	—	शांत, मौन।
पथ	—	मार्ग, रास्ता।
निशा	—	यामिनी, रात।
कोमल	—	मृदुल, नरम।
माँ	—	जननी, माता।
विश्राम	—	आराम, चैन।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
दया	निर्दय
अपनापन	परायापन
प्रवासी	निवासी
निज	पराया
रजनी	वासर
बिसराया	याद किया
चंचल	सुस्त
मिलन	वियोग

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए पाठ से छाँटकर उन शब्दों को लिखिए, जिनके अर्थ को ये प्रकट करते हैं–

(अ) अधिक बोलने वाला **मुखर**

(ब) मन को हरने वाला **मनोहर**

(स) फूलों का रस **मकरंद**

(द) प्रियजनों से दूर विदेश में रहने वाला **प्रवासी**

4. प्रस्तुत पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए–

(अ) मुखर हो गया सूना मंडप

उ०– यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

(ब) इड़ा उठी, दिख पड़ा राज-पथ, धुँधली-सी छाया चलती।

उ०– यहाँ उपमा व उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(स) अनुलेपन सा मधुर स्पर्श था, व्यथा भला क्यों रह जाती?

उ०– यहाँ उपमा व उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(द) यही भूल अब शूल सदृश हो, साल रही उर में मेरे।

उ०– यहाँ अनुप्रास व उपमा अलंकार है।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए–

(अ) इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही, दु:खियों को देखा उसने।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में करुण रस है।

(ब) ''आह प्राणप्रिय! यह क्या? तुम यों?'' घुला हृदय, बन नीर बहा।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में करुण रस है।

(स) शिथिल शरीर वसन विश्रृंखल, कबरी अधिक अधीर खुली।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में विप्रलम्भ श्रृंगार रस है।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

7. दान (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

<u>अभ्यास</u>

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. निराला जी किस छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं?

उ०– निराला जी मुक्त छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं।

2. निराला जी द्वारा संपादित किसी एक पत्रिका का नाम लिखिए।

उ०– निराला जी ने 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया।

3. निराला जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उ०– निराला जी का जन्म सन् 1897 में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था।

4. निराला जी साहित्य के अतिरिक्त और क्या शौक रखते थे?

उ०– निराला जी को बचपन से ही कुश्ती, घुड़सवारी तथा कृषि कार्य का शौक था।

5. अपनी पुत्री की याद में निराला जी ने कौन-सी रचना लिखी?

उ०– निराला जी ने अपनी पुत्री की याद में 'सरोज स्मृति' नामक रचना लिखी।

6. 'अनामिका' और 'गीतिका' किस कवि की रचनाएँ हैं?

उ०– 'अनामिका' और 'गीतिका' सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की रचनाएँ हैं।

7. निराला जी की पहली नियुक्ति कहाँ हुई और इन्होंने यह नौकरी कितने समय से कितने समय तक की?

उ०– निराला जी की पहली नियुक्ति महिषादल में हुई। उन्होंने नौकरी सन् 1918 से सन् 1922 तक की।

8. निराला जी की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता क्या थी?

उ०– निराला जी की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता चित्रण कौशल थी।

9. निराला जी ने अपने काव्य में किस भाषा और शैली का प्रयोग किया?

उ०– निराला ने अपने काव्य में शुद्ध परिमार्जित खड़ीबोली तथा कठिन एवं दुरुह, सरल व सुबोध शैली का प्रयोग किया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निराला जी ने प्रकृति को सदया क्यों कहा है?

उ०– निराला जी ने प्रकृति को सदया इसलिए कहा है क्योंकि प्रकृति दया भाव से सभी मनुष्यों को उनके कर्मों का फल प्रदान करती है।

2. मनुष्य को प्रकृति से क्या प्राप्त हुआ है?

उ०– मनुष्य को प्रकृति से सौंदर्य, गीतात्मकता, विविध रंग, गंध, भाषा, भाव-रचना, छंदों के बंध आदि वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।

3. 'दान' कविता में वर्णित प्रात:काल की सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– प्रात:काल में सूर्य की किरणों के साथ प्रकृति के शृंगार को देखने के लिए कमल उपवन में खिलते हैं। हवा प्रात: काल में ऐसी लगती है; जैसे सुगंधित वस्त्र पहने बह रही हो। जब यह हवा कानों के पास से बहती है तो ऐसा प्रतीत होता है; जैसे चुपचाप हृदय की बात कानों में कह रही हो। अतः प्रात:काल का दृश्य सुहावना व आनंददायक है।

4. मनुष्य के बारे में कवि पहले क्या सोचते थे?

उ०– मनुष्य के बारे में कवि पहले सोचते थे कि मनुष्य इस जड़ चेतन संसार में सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि मानव अपने प्रयत्नों से प्रकृति की दी हुई या मनुष्य द्वारा निर्मित सुंदर चीजों को प्राप्त कर सकता है।

5. मनुष्य के बारे में कवि की धारणा क्यों परिवर्तित हुई?

उ०– कविता के अनुसार, पहले कवि मनुष्य के अंदर दयाभाव को देखकर यह सोचा करता था कि वास्तव में मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। परंतु एक दिन एक दृश्य को देखकर उसकी धारणा परिवर्तित हो गई। उसने देखा कि उसके पड़ोस में रहने वाले एक सज्जन नित्य गोमती नदी के तट पर स्नान करने के लिए आते थे और बंदरों को कुछ-न-कुछ खिलाते रहते थे। परंतु इन्हीं सज्जन ने एक दिन बंदरों को तो मालपुए खिलाए लेकिन एक दीन-हीन भिखारी के माँगने पर उसे दानव कहकर झिड़क दिया। उस दिन से ही कवि की मनुष्य के प्रति धारणा में यह परिवर्तन हुआ कि यदि मनुष्य, एक मनुष्य के प्रति दयाभाव नहीं दिखला सकता तो वह श्रेष्ठ कहलाने के योग्य भी नहीं हो सकता।

6. पुल से नीचे देखने पर कवि के मन में क्या विचार उत्पन्न हुए?

उ०– पुल से नीचे देखने पर कवि को एक विप्रवर को देखकर उनके मन में विचार उत्पन्न हुए कि ये विप्रवर बहुत धार्मिक व दयालु हैं, जो बंदरों को रोज कुछ-न-कुछ खिलाते हैं, वे दीन-हीन भिखारी पर भी दया भाव दिखाते हुए उसकी सहायता करते हुए उसे भी कुछ-न-कुछ देंगे।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'दान' शीर्षक का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'दान' कविता में कवि ने पहले मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठ कृति बताया है, जो अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से करता है। प्रकृति भी मनुष्य को उनके कर्मों के अनुसार फल देती है। इसलिए कवि ने प्रकृति को सदया कहा है। प्रकृति ने मनुष्य को बहुत-सी सुंदर चीजें दी हैं, जो उसका मन हर लेती हैं। प्रकृति द्वारा दी गई चीजें और मनुष्य द्वारा निर्मित अधिक सुंदर चीजें उसके प्रयत्नों द्वारा या अनायास ही उसके पास चली आती हैं। इसलिए कवि ने मानव को विश्व में श्रेष्ठ बताया है। परंतु एक दृश्य को देखकर कवि की धारणा परिवर्तित हो जाती है, जब एक दिन एक विप्रवर गोमती नदी के तट पर स्नान करने व शिव जी की उपासना करके ऊपर आते हैं तब वह गोमती के पुल पर बैठे बंदरों को तो मालपुए खिलाते हैं परंतु उसी मार्ग पर बैठे दीन-हीन भिखारी को मालपुए माँगने पर दानव कहकर झिड़क देते हैं। पृथ्वी पर मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना समझने वाले कवि को मानव की ऐसी निंदनीय उपेक्षा देखकर दु:ख होता है। अचानक उनके मुँह से व्यंग्य निकलता है ''श्रेष्ठ मानव! तुम धन्य हो।'' अर्थात् मानव पर दया न दिखाने से न तो तुम श्रेष्ठ हो और न ही धन्य हो।

2. निराला जी का हिंदी साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उ०– निराला जी का हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। निराला जी छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक थे। वे हिंदी में मुक्त छंद के प्रवर्तक थे। उन्होंने संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद आदि किए। 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया, 1923 में अगस्त से 'मतवाला' के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई, जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका 'सुधा' से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। 1935 से 1940 तक का कुछ समय उन्होंने लखनऊ में भी बिताया। इसके बाद 1942 से मृत्यु-पर्यंत इलाहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। उनकी पहली कविता 'जन्मभूमि प्रभा' नामक मासिक पत्र में

जून 1920 में, पहला कविता संग्रह 1923 में 'अनामिका' नाम से तथा पहला निबंध 'बंग भाषा का उच्चारण' अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किंतु उनकी ख्याति विशेषरूप से कविता के कारण ही है।

निराला की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है— चित्रण-कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य-रूप, संगीतात्मक ध्वनियाँ हों या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग-अलग लगने वाले तत्वों को घुला-मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत-सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है।

निराला जी की रचनाओं में आग है, पौरुष है और सड़ी-गली परंपराओं के विरुद्ध विद्रोह भी है। कुल मिलाकर निराला जी क्रांतिकारी कवि हैं। शायद ही हिंदी के किसी अन्य कवि को इतने वैषम्यों और विरोधों का सामना करना पड़ा हो। प्रलयंकर शिव के समान स्वयं कटु गरल का पान करके इन्होंने हिंदी काव्य जगत को पीयूष वितरित किया। अपने विलक्षण व्यक्तित्व एवं निराले कवित्व के कारण निराला जी हिंदी काव्य जगत के सम्राट माने जाते हैं।

3. महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जीवन परिचय एवं काव्य-कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उ०– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिंदी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह 'परिमल' की भूमिका में वे लिखते हैं- ''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों को मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं फिर भी स्वतंत्र। इसी तरह कविता का भी हाल है।''

जीवन परिचय– छायावाद के आधार-स्तंभ महाकवि निराला जी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में सन् 1897 ई. में हुआ। उनके पिता पं.रामसहाय त्रिपाठी उन्नाव (बैसवाड़ा) के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। निराला की शिक्षा हाईस्कूल तक हुई। बाद में हिंदी, संस्कृत और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया। पिता की छोटी-सी नौकरी की असुविधाओं और मान-अपमान का परिचय निराला को आरंभ में ही प्राप्त हुआ। उन्होंने दलित-शोषित किसान के साथ हमदर्दी का संस्कार अपने अबोध मन से ही अर्जित किया। इनकी तीन वर्ष की अवस्था में माता का और बीस वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो गया।

बाल्यावस्था में इन्हें कुश्ती, घुड़सवारी तथा कृषि कार्य में भी विशेष रुचि थी। हिंदी, संस्कृत भाषाओं के साथ-साथ इन्हें बंगला भाषा का अच्छा ज्ञान था। साहित्य क्षेत्र में रुचि रखने वाली युवती मनोहरा देवी से इनका विवाह हुआ लेकिन ये अधिक समय तक इनका साथ न दे पाई। एक पुत्र और पुत्री का दायित्व निराला जी को सौंपकर वह पंचतत्वों में विलीन हो गई। इसके बाद का उनका सारा जीवन आर्थिक-संघर्ष में बीता। निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गँवाया। 15 अक्टूबर सन् 1961 को सरस्वती का यह साधक पंचतत्वों में विलीन हो गया।

कृतियाँ–

(अ) काव्य संग्रह– जूही की कली, अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका के दूसरे भाग में सरोज-स्मृति और राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीता कुंज, सांध्यकाकली, अपरा।

पुत्री सरोज के देहांत के बाद इन्होंने सरोज-स्मृति नामक कविता लिखी—

दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहें आज जो नहीं कही।
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर सकता मैं तेरा तर्पण।।

(ब) **उपन्यास–** अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा

(स) **कहानी संग्रह–** लिली, चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, सखी, देवी

(द) **निबंध–** रवींद्र कविता कानन, प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संग्रह

(य) **पुराण कथा–** महाभारत

(र) **अनुवाद–** आनंद मठ, विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, कपालकुंडला, दुर्गेश नंदिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुल्य, चंद्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत, भरत में विवेकानंद तथा राजयोग का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद।

4. छायावादी गीतों में प्रयुक्त सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की भाषा-शैली की विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

उ०– **भाषा-शैली–** निराला जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध परिमार्जित खड़ीबोली का प्रयोग किया। निराला जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ है, कहीं भी नीरसता नहीं है। इनकी कृतियों में छायावाद व रहस्यवाद के साथ ही प्रगतिवादी भावनाएँ भी परिलक्षित होती हैं। निराला जी की कविताएँ संगीतात्मकता से युक्त हैं तथा उनमें कहीं-कहीं पर मुहावरों का प्रयोग भी दिखाई देता है। निराला जी ने संदेह, अनुप्रास व सांगरूपक अलंकार तथा मुक्त छंद को अपनाया है। श्रृंगार, वीर, रौद्र आदि रस भी उनकी कविताओं में विद्यमान हैं। निराला जी ने कठिन एवं दुरुह, सरल व सुबोध शैली का प्रयोग किया है।

(ङ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए।

(अ) निकला पहला अरविन्द ....आवेश चपल।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' द्वारा रचित 'अपरा' काव्य-संग्रह से 'दान' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने प्रातःकालीन प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है। पौष मास के प्रातःकाल की यह सुंदरता उसे प्रकृति का रहस्यमय श्रृंगार लगती है।

व्याख्या– कविवर निराला जी का कहना है कि प्रकृति के रहस्यमय सुंदर श्रृंगार को देखने के लिए पौ फटते ही पहला कमल खिल गया अथवा प्रकृति के रहस्यों को निर्दोष भाव से देखने के लिए आज ज्ञान का प्रतीक सूर्य निकल आया है। सुगंधरूपी वस्त्र धारण कर वायु मंद-मंद बह रही है। वह जब कानों के निकट से गुजरती है तो ऐसा मालूम पड़ता है कि वह प्राणों को पुलकित करने वाली गतिशीलता का संदेश दे रही हो। गोमती नदी में कहीं-कहीं पानी कम होने से वह एक पतली कमर वाली नवेली नायिका-सी जान पड़ती है। उसमें उठती-गिरती लहरों के कारण वह धारा मधुर उमंग से भरकर नृत्य करती हुई -सी जान पड़ती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण करते हुए उसमें रहस्यात्मक अनुभूति का निरूपण किया है। **2.** सूर्य की पहली किरण से प्रातःकालीन प्रथम कमल के खिलने की कल्पना इस प्रकृति सौंदर्य को कोमल सुंदरता के भाव से प्लवित करती है। **3.** गोमती नदी को नवयौवना नर्तकी कहकर नदी का मानवीकरण किया गया है। **4. भाषा–** परिष्कृत खड़ीबोली **5. रस–** शांत और श्रृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** मानवीकरण, रूपक तथा अनुप्रास।

(ब) मैं प्रात: पर्यटनार्थ.................................... श्रेष्ठ धन्य मानव।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में प्रात: भ्रमण के लिए निकले हुए निराला जी ने प्रकृति के विविध साधनों को देखा और उनमें मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति बताया है।

व्याख्या– कवि निराला जी कहते हैं कि मैं एक दिन सवेरे गोमती नदी के तट पर घूमने के लिए गया और लौटकर पुल के समीप आकर खड़ा हो गया। वहाँ मैं विचार करने लगा कि इस संसार के सभी नियम अटल हैं। जो जैसा करता है, उसको वैसा ही फल मिलता है। प्रकृति दया भाव से सभी मनुष्यों को उनके कर्मों का फल प्रदान करती है अर्थात् मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार ही फल पाते हैं। इस प्रकार उनके सोचने के लिए कुछ भी नवीन नहीं होता।

निराला जी पुन: विचार करते हैं कि इस संसार में एक से बढ़कर एक सुंदर चीजें हैं जिनमें सुंदरता है, गीत हैं, अनेक रंग और सुगंधियाँ हैं, भाषा हैं, भाव है और सुंदर छंद भी हैं। ये सब हमारा मन मोह लेते हैं। प्रकृति की दी हुई या मनुष्य द्वारा निर्मित और भी अधिक सुंदर चीजें और क्रियाकलाप हो सकते हैं, जो हमें सुंदर लगते हैं और जो मनुष्य के पास प्रयत्न

करने पर या अनायास ही चले आते हैं। इसलिए इस जड़ चेतन संसार में मनुष्य सबमें श्रेष्ठ है, इसलिए वह धन्य है। तात्पर्य यह है कि विश्व में मनुष्य ही ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

काव्यगत सौंदर्य– 1.प्रस्तुत पंक्तियाँ निराला जी के दार्शनिक चिंतन की परिचायक है। **2.**अपने उपयोग की सभी वस्तुएँ मानव प्रकृति से ही प्राप्त करता है। इसलिए प्रकृति को दयालु कहा गया है। **3. भाषा–** शुद्ध संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली **4.रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास।

(स) फिर देखा, उस पुल के........................ एक, उपायकरण!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने दान करने का ढोंग करने वाले व्यक्तियों से संबंधित एक घटना का वर्णन करते हुए मानव की मानव के प्रति संवेदनहीनता का वर्णन किया है।

व्याख्या– निराला जी ने देखा कि गोमती के पुल पर बहुत बड़ी संख्या में बंदर इकट्ठे होकर बैठे हुए हैं तथा सड़क के एक ओर दुबला-पतला काले रंग का एक भिखारी बैठा हुआ था। वह हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखाई दे रहा था और ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी मृत्यु निकट आ गई हो अथवा जैसे गरीबी स्वयं दुर्बल शरीर धारण कर वहाँ बैठी हो। वह भिक्षा पाने के लिए अपलक नेत्रों से ऊपर की ओर देख रहा था। उसका कंठ भूख के कारण बहुत कमजोर पड़ गया था और उसकी श्वास भी तीव्र गति से चल रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह जीवन से बिल्कुल उदास होकर शेष घड़ियाँ व्यतीत कर रहा हो। न जाने जीवन के इस रूप में वह कौन-सा शाप ढो रहा था और किन पापों का फल भोग रहा था? मार्ग से गुजरने वाले सभी लोग यही सोचते थे, किंतु कोई भी इसका उत्तर नहीं दे पाता था। कोई अधिक दया दिखाता तो एक पैसा उसकी ओर फेंक देता जैसे कि उस एक पैसे की दया से उसकी दरिद्रता दूर हो जाएगी।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने ईश्वर की श्रेष्ठ रचना, मानव की दुर्दशा तथा उसके प्रति लोगों की उपेक्षा का मार्मिक चित्रण किया है। **2.** उपर्युक्त भावना सभ्य समाज में व्याप्त संवेदनहीनता का उदाहरण है। **3. भाषा–** शुद्ध संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली **4. रस–** शांत तथा करुण **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा।

(द) मैंने झुक नीचे को देखा..धन्य, श्रेष्ठ मानव!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने ढोंग करने वाले कट्टरपंथी धार्मिक लोगों की प्रवृत्ति पर तीखा व्यंग्य किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि मैंने झुककर पुल के नीचे देखा तो मेरे मन में कुछ आशा जगी। वहाँ एक ब्राह्मण स्नान करके शिवजी पर जल चढ़ाकर और दूब, चावल, तिल आदि भेंट करके अपनी झोली लिए हुए ऊपर आया। उनको देखकर बंदर शीघ्रता से दौड़े। ये ब्राह्मण भगवान् राम के भक्त थे। उन्हें भक्ति करने से कुछ मनोकामना पूरी होने की आशा थी। वह बारह महीने भगवान् शिव की आराधना किया करते थे। वे ब्राह्मण महाशय प्रतिदिन प्रात:काल रामायण का पाठ करने के बाद 'श्रीमन्नारायण' मंत्र का जाप करते थे। कभी दु:खी होते या असहाय दशा का अनुभव करते, तब हाथ जोड़कर बंदरों से कहते कि वे इनका दु:ख दूर कर दें। कवि इस ब्राह्मण का परिचय देते हुए कहता है कि ये सज्जन मेरे पड़ोस में रहते थे और प्रतिदिन गोमती नदी में स्नान करते थे। इन्होंने पुल के ऊपर पहुँचकर अपनी झोली से पुए निकाल लिए और हाथ बढ़ाते हुए बंदरों के हाथ में पुए रख दिए।

कवि को यह देखकर दु:ख हुआ कि उन्होंने बंदरों को तो बड़े चाव से पुए खिलाए, परंतु उधर घूमकर भी नहीं देखा, जिधर वह भिखारी कातर दृष्टि से देखता हुआ बैठा था। जब उस भिखारी ने अपनी क्षीण आवाज में उनसे पुआ माँगा तो उन्होंने उसे 'दानव! दूर ही रहो' कहकर झिड़क दिया। पृथ्वी पर मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना समझने वाले निराला जी को मानव की ऐसी निंदनीय उपेक्षा देखकर अत्यधिक दु:ख हुआ और अत्यधिक विषादमय स्वर में वे बोल उठे- 'तू धन्य है श्रेष्ठ मानव।' तात्पर्य यह है कि मनुष्य होकर मनुष्य पर दया न दिखाने वाले मनुष्य! न तो तुम श्रेष्ठ हो और न ही धन्य हो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने अंधविश्वासी मानवों के धार्मिक ढोंग पर तीव्र व्यंग्य किया है। **2.** कवि के हृदय की करुणा एवं मानव प्रेम की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में रस की धारा बनकर बहती है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. रस–** शांत व करुण **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** उत्प्रेक्षा, अनुप्रास तथा वक्रोक्ति।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) कर रामायण का पारायण
जपते हैं श्रीमन्नारायण।

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि जो सज्जन विप्रवर प्रतिदिन प्रात:काल रामायण का पाठ करने के बाद 'श्रीमन्नारायण' मंत्र का जाप करते रहते हैं और प्रत्यक्ष में धार्मिक व दयालु प्रतीत होते हैं, परंतु जो ऐसा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही करते हैं, उनके मन में किसी के प्रति दयाभाव नहीं होता है। यह केवल एक ढोंग है।

(ब) चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं– ''धन्य श्रेष्ठ मानव!''

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने ईश्वर की श्रेष्ठ कृति मानव की संवेदनहीनता को स्पष्ट किया है। एक विप्रवर बंदरों को तो प्रेमपूर्वक मालपुए खिलाते हैं परंतु एक दीन-हीन भिखारी के माँगने पर उसे 'दानव' कहकर झिड़क देते हैं। कवि को ईश्वर की श्रेष्ठ कृति मानव का मानव के प्रति निंदनीय व्यवहार देखकर दु:ख होता है। वह मानव होकर मानव पर दया न दिखाने वाले मनुष्य को व्यंग्यपूर्वक श्रेष्ठ मानव कहते हैं।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निराला जी का जन्म सन् है–

(अ) सन् 1887 ई. (ब) **सन् 1897 ई.**
(स) सन् 1875 ई. (द) सन् 1891 ई.

2. निम्नलिखित में से कौन-सी कृति निराला जी की है?

(अ) प्रिय प्रवास (ब) **अपरा**
(स) बीजक (द) कवितावली

3. निम्नलिखित में से कौन-सी कृति निरालाजी की नहीं है?

(अ) कुकुरमुत्ता (ब) **कामायनी**
(स) नए पत्ते (द) अपरा

4 'अणिमा' के रचयिता कौन हैं?

(अ) प्रसाद (ब) पंत
(स) **निराला** (द) महादेवी वर्मा

5. आपनी पुत्री सरोज की स्मृति में निराला जी की करुण वेदना किस कृति में मुखरित हुई है?

(अ) तोड़ती पत्थर (ब) अनामिका
(स) **सरोज-स्मृति** (द) जूही की कली

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–

समस्त पद	**समास-विग्रह**
राम-भक्त	राम का भक्त
दूर्वादल	दूर्वा का दल
सरिता-मज्जन	सरिता में मज्जन
कृष्णकाय	कृष्ण शरीर
छंद-बंध	छंद का बंध
अनिन्द्य	निंदा से रहित, प्रशंसनीय, अति सुंदर

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**
अनायास	अन + अयास
निश्चल	नि: + चल

संधि शब्द	**संधि विच्छेद**
पर्यटनार्थ	पर्यटन + अर्थ
उपायकरण	उपाय + करण
सज्जन	सत् + जन
श्रीमन्नारायण	श्रीमत् + नारायण

3. विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
अनायास	सायास
मौन	वाचाल
आशा	निराशा
पाप	पुण्य
निश्चल	चलायमान
क्षीण	स्थूल
तीव्र	मंद
सदा	कदा

4. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए–

(अ) गोमती क्षीण-कटि नरी नवल

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में रूपक अलंकार है।

(ब) जीता ज्यों जीवन से उदास।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास और उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(स) कर रामायण का पारायण, जपते हैं श्रीमन्नारायण।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(द) सौरभ वसना समीर बहती।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में मानवीकरण और रूपक अलंकार है।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

8. उन्हें प्रणाम (सोहनलाल द्विवेदी)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. द्विवेदी जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

उ०– द्विवेदीजी का जन्म 22 फरवरी सन् 1906 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के बिंदकी नामक स्थान पर हुआ था।

2. द्विवेदी जी ने एल.एल.बी. की शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?

उ०– द्विवेदी जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एल.एल.बी.की शिक्षा प्राप्त की।

3. भारत सरकार ने द्विवेदी जी को किस उपाधि से सम्मानित किया?

उ०– भारत सरकार ने 1969 में द्विवेदी जी को 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया।

4. सोहनलाल द्विवेदी किस विचारधारा के कवि हैं?

उ०– सोहनलाल द्विवेदी गाँधीवादी विचारधारा के कवि हैं।

5. द्विवेदी जी की प्रथम प्रकाशित रचना कौन-सी थी?

उ०– द्विवेदी जी की प्रथम प्रकाशित रचना 'भैरवी' थी।

6. द्विवेदी जी की कविताओं का मुख्य विषय क्या है?

उ०– द्विवेदी जी की कविताओं का मुख्य विषय राष्ट्रीय उद्‌बोधन है।

7. द्विवेदी जी के जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव किसका पड़ा?

उ०– द्विवेदी जी के जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव महात्मा गाँधी जी का पड़ा।

8. 'अधिकार' पत्र के संपादक कौन थे?

उ०– 'अधिकार' पत्र के संपादक सोहनलाल द्विवेदी जी थे।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'उन्हें प्रणाम' कविता के माध्यम से कवि किनके प्रति अपना प्रणाम अर्पित कर रहा है?

उ०– 'उन्हें प्रणाम' कविता के माध्यम से कवि महापुरुषों और स्वतंत्रता प्रेमियों के प्रति अपना प्रणाम अर्पित कर रहा है।

2. कवि किस मंगलमय दिन को प्रणाम अर्पित करता है?

उ०– कवि उस मंगलमय दिन को प्रणाम अर्पित करता है, जब सबका कल्याण होगा और सब जगह पर्याप्त सुख और शांति का प्रसार हो जाएगा।

3. कवि ने वंदनीय पुरुष किसे कहा है?

उ०– कवि ने उन लोगों को वंदनीय पुरुष कहा है जो देश के करोड़ों वस्त्रहीनों, भिक्षुओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर खड़े हैं, जिनको गरीबों के साथ लज्जा नहीं आती, जो अपने मस्तक को ऊँचा उठाकर सताए हुए प्राणियों के हाथ को पकड़कर उन्हें मुक्ति प्रदान करने के लिए बढ़ते चले जाते हैं।

4. कवि ने धीर पुरुष किसे कहा है?

उ०– देश की आजादी के लिए जेल के सींकचों में अपना जीवन बिताने वाले देशभक्तों को कवि ने धीर पुरुष कहा है।

5. कविता के माध्यम से कवि की आशा का स्वरूप क्या है?

उ०– कविता के माध्यम से कवि की आशा का स्वरूप उन सभी महापुरुषों को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करना है, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में किसी न किसी रूप में अपना योगदान दिया। कवि ने इस कविता के माध्यम से महापुरुषों, सत्पुरुषों, कवि, संगीतकार, क्रांतिकारियों, देशभक्तों, जनसेवकों आदि को प्रणाम करते हुए अपनी श्रद्धांजलि दी है।

6. कवि ने अपने देश का स्वाभिमान किसे कहा है?

उ०– कवि ने उन महापुरुषों को जो देश का सोया गौरव जगाने में तल्लीन रहते हैं, जो अपने देश की सुंदर संस्कृति का ज्ञान कराते हैं, देश का स्वाभिमान कहा है।

7. देशभक्तों द्वारा अपना सर्वस्व त्याग तथा नगर-नगर धूल छानने के पीछे क्या उद्‌देश्य है?

उ०– देशभक्तों द्वारा अपना सर्वस्व त्यागकर तथा नगर-नगर धूल छानने के पीछे उद्‌देश्य है कि वे जनता में मातृभूमि के प्रति ऐसा प्रेम जगाएँ, जिससे जनता अपनी भूल को समझ सके और अपने सोए हुए स्वाभिमान को जगाकर उनके साथ अपने कदम-से-कदम मिलाकर भारत को स्वतंत्र कराने में अपना योगदान दे सके।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. द्विवेदी जी का जीवन परिचय लिखिए।

उ०– सोहनलाल द्विवेदी हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं। द्विवेदी जी हिंदी के राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। ऊर्जा और चेतना से भरपूर रचनाओं के इस रचयिता को राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया। महात्मा गाँधी के दर्शन से प्रभावित, द्विवेदी जी ने बालोपयोगी रचनाएँ भी लिखीं। 1969 में भारत सरकार ने आपको पद्मश्री उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया था।

जीवन परिचय– 22 फरवरी सन् 1906 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के बिंदकी नामक स्थान पर सोहनलाल द्विवेदी का जन्म हुआ। इनका परिवार एक संपन्न परिवार था। अत: बाल्यकाल से ही शिक्षा की समुचित व्यवस्था रही। हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए ये वाराणसी गए। वहाँ काशी हिंदू विश्वविद्यालय से इन्होंने एम.ए.तथा एल.एल.बी.की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। इनके पिता का नाम श्री वृंदावन द्विवेदी था।

कार्यक्षेत्र– सन् 1941 में देश-प्रेम से लबरेज 'भैरवी' उनकी प्रथम प्रकाशित रचना थी। उनकी महत्वपूर्ण शैली में 'पूजागीत', 'युगाधार', 'विषपान', 'वासंती', 'चित्रा' जैसी अनेक काव्य-कृतियाँ सामने आई थीं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा

के दर्शन उसी समय हो गए थे, जब 1937 में लखनऊ से उन्होंने दैनिक पत्र 'अधिकार' का संपादन शुरू किया था। चार वर्ष बाद उन्होंने अवैतनिक संपादन के रूप में 'बालसखा' का संपादन भी किया। देश में बाल साहित्य के वे महान आचार्य थे। राष्ट्रीयता से संबंधित कविताएँ लिखने वालों में आपका स्थान अनन्य है। महात्मा गाँधी पर आपने कई भावपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं, जो हिंदी जगत में अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। आपने गाँधीवाद के भावतत्व को वाणी देने का सार्थक प्रयास किया है तथा अहिंसात्मक क्रांति के विद्रोह व सुधारवाद को अत्यंत सरल, सबल और सफल ढंग से काव्य बनाकर 'जन साहित्य' बनाने के लिए उसे मर्मस्पर्शी और मनोरम बना दिया है।

द्विवेदी जी पर लिखे गए एक लेख में अच्युतानंद मिश्र जी ने लिखा है– ''मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी या सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय नवजागरण के उत्प्रेरक ऐसे कवियों के नाम हैं, जिन्होंने अपने संकल्प और चिंतन, त्याग और बलिदान के सहारे राष्ट्रीयता की अलख जगाकर, अपने पूरे युग को आंदोलित किया था, गाँधी जी के पीछे देश की तरुणाई को खड़ा कर दिया था। सोहनलाल जी उस श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी थे। डा.हरिवंशराय बच्चन ने एक बार लिखा था ''जहाँ तक मेरी स्मृति है, जिस कवि को राष्ट्रकवि के नाम से सर्वप्रथम अभिहित किया गया, वे सोहनलाल द्विवेदी थे। गाँधी जी पर केंद्रित उनका गीत 'युगावतार' या उनकी चर्चित कृति 'भैरवी' की यह पंक्ति 'वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो, हो जहाँ बलि शीश अगणित एक सिर मेरा मिला लो' में कैद स्वतंत्रता-संग्राम सेनानियों का सबसे अधिक प्रेरणा गीत था। सन् 1988 ई.में सोहनलाल द्विवेदी जी का देहावसान हो गया।

2. सोहनलाल द्विवेदी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालते हुए हिंदी साहित्य में उनका स्थान निर्धारित कीजिए।

भाषा-शैली– सोहनलाल द्विवेदी जी की भाषा शुद्ध, परिमार्जित व सरल खड़ीबोली है। इन्होंने मुहावरों तथा व्यावहारिक शब्दावली का यथास्थान प्रयोग किया है। कविता में व्यर्थ के अलंकारों का प्रदर्शन नहीं है। कुछ स्थानों पर उर्दू तथा संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। उन्होंने काव्य-सृजन के लिए प्रबंध व मुक्तक दोनों ही शैलियों को अपनाया है। इनकी शैली में प्रवाह और रोचकता है। राष्ट्रीय कविताएँ ओजपूर्ण हैं।

हिंदी साहित्य में स्थान– अपनी ओजपूर्ण राष्ट्रीय कविताओं के माध्यम से सुप्त भारतीय जनता को जागरण का संदेश देने वाले कवियों में सोहनलाल द्विवेदी का विशिष्ट स्थान है।

गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर द्विवेदी जी ने राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया और राष्ट्रीय भावना प्रधान रचनाओं के लिए कवि सम्मेलनों में सम्मानित हुए। द्विवेदी जी की कविताओं का मुख्य विषय ही राष्ट्रीय उद्बोधन है। खादी-प्रचार, ग्राम-सुधार, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा और प्रेम द्विवेदी जी की कविताओं के मुख्य विषय हैं। इनकी गणना राष्ट्रीयता एवं स्वदेश-प्रेम का शंख फूँकने वाले प्रमुख कवियों में की जाती है।

3. सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'उन्हें प्रणाम' का सारांश लिखिए।

उ०– उन्हें प्रणाम कविता मे राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने राष्ट्र के उन सभी महापुरुषों को नमन किया है, जिन्होंने किसी भी रूप में भारत देश की स्वतंत्रता में योगदान दिया। कवि ने सर्वप्रथम उन महापुरुषों को नमन किया है, जिनका हृदय निर्धन और साधनहीन व्यक्तियों के आँसुओं से बिंध गया और जो गरीबों के साथ रहने में लज्जा का अनुभव नहीं करते। कवि ने उन सत्पुरुषों का वंदन किया है, जो शोषित प्राणियों के हाथ को पकड़कर उन्हें मुक्ति प्रदान करने के लिए बढ़ते चले जा रहे हैं। कवि ने कवियों, संगीतकारों व साहित्यकारों को प्रणाम किया है, जिनके गीतों, कविताओं और संगीत से मन को शांति मिलती है। कवि ने उन क्रांतिकारियों का वंदन किया है, जो हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं। दूसरे व्यक्तियों के घावों पर मरहम लगाने वाले दयालु व्यक्तियों का भी कवि अभिनंदन करता है। कवि उन परोपकारी व्यक्तियों को जिनके सामने स्वार्थ का कोई मूल्य नहीं है, जो दूसरों के लिए अपना सुख छोड़कर दो सूखी रोटियाँ खाकर सदैव सत्य की खोज में लगे रहते हैं और जो दु:खी प्राणियों की रक्षा करते हैं, जिनके क्रोध का आलंबन क्रूर व दुष्ट प्राणी बनते हैं, अपना प्रणाम अर्पित करता है। कवि निर्धनों व निर्बलों की सहायता करने वाले नेताओं को भी प्रणाम करता है।

जिनके मन में मातृभूमि के लिए असीम प्रेम है और युवावस्था में ही वैराग्य को धारण करके सोई हुई जनता को जगाने के लिए नगर-नगर व गाँव-गाँव फिरते हैं, उन देशभक्तों को कवि हृदय से प्रणाम करता है। कवि उन जनसेवकों को प्रणाम करता है, जिन्हें नमक व रोटी भी प्राप्त नहीं होती परंतु वे ज्ञानी व अज्ञानी व्यक्तियों को जगाने के लिए फेरी लगाते रहते हैं। द्विवेदी जी राष्ट्र के उन स्वाभिमानी देशभक्तों को प्रणाम करते हैं, जो राष्ट्र के सोए हुए गौरव को जगाते हैं। कवि उन महापुरुषों को प्रणाम करता है जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्हें कारागार में डाल दिया गया, सींकचों और जंजीरों में जकड़ दिया गया। देश के लिए उन्होंने हथकड़ियाँ पहनीं तथा बेतों की मार सहन की, परंतु वे

स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहे और उन्होंने आजादी की पुकार नहीं छोड़ी। कवि ने उन वीर पुरुषों के चरणों में प्रणाम किया है, जो हँसते-हँसते सूली को चूमकर फाँसी के तख्ते पर चढ़ जाते हैं। कवि ने उन भोले-भाले वीरों की वंदना की है, जिन्हें जीवित दीवार में चुनवा दिया गया। कवि कहते हैं कि हमें ऐसे ही महापुरुषों के कारण वर्तमान का सुख मिला है। दिव्य एवं मंगलकारी भविष्य भी उन्हीं के कारण आएगा। इन महापुरुषों के बलिदान की अग्नि में सारे पाप भस्म हो जाएँगे। कवि उस दिन को करोड़ों प्रणाम करता है जब सबका कल्याण होगा और सर्वत्र पर्याप्त सुख और शांति का प्रसार हो जाएगा।

4. द्विवेदी जी की कृतियों का उल्लेख कीजिए।

उ०- **कृतियाँ-** द्विवेदी जी के काव्य-संग्रहों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

(अ) **भैरवी-** स्वदेश-प्रेम के भावों की प्रधानता

(ब) **वासवदत्ता-** भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव का भाव

(स) **कुणाल-** ऐतिहासिक आधार पर लिखा गया प्रबंध-काव्य

(द) **पूजा के स्वर-** इसके माध्यम से कवि ने जनता में जागृति उत्पन्न करते हुए युग-प्रतिनिधि कवि के रूप में कार्य किया।

इनकी राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत अन्य रचनाएँ हैं-

पूजागीत, विषपान, युगाधार, वासंती, चित्रा, प्रभाती, चेतना, जय भारत जय।

(य) **बाल पुस्तकें-** बाँसुरी और झरना, बच्चों के बापू, दूध-बताशा, बाल-भारती, नेहरू चाचा, हँसो-हँसाओ, शिशु भारती।

(ङ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए-

(अ) भेद गया......................................ज्ञात नहीं हैं जिनके नाम! उन्हें प्रणाम!

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'सोहनलाल द्विवेदी' द्वारा रचित 'जय भारत जय' काव्य संग्रह से 'उन्हें प्रणाम' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग- इन पंक्तियों में कवि उन अज्ञात देशभक्तों की वंदना करता है, जिन्होंने मातृभूमि के कल्याण और दीन-दु:खियों की सेवा के लिए अपने समस्त सुखों को न्योछावर कर दिया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि मैं उन महापुरुषों को प्रणाम करता हूँ, जिनका हृदय दीन-दु:खियों के नेत्रों में आँसू देखकर पीड़ित हो जाता है। जो लोग असहायों और दीनों के बीच बैठकर सेवा करने में तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं करते; अर्थात् जो लोग दीन-दु:खियों को देखकर नि:संकोच उनकी सेवा करने लगते हैं, उन लोगों को चाहे किसी भी स्थान में किसी भी ढंग से रहना पड़े, वे हर परिस्थिति में दीन-हीनों की सेवा में जुटे रहते हैं। दया, प्रेम, सहानुभूति आदि मानवीय गुणों की स्थापना करना उनका लक्ष्य रहता है। ऐसे अनेक महापुरुष हो चुके हैं, जिनके नामों का भी पता नहीं है; क्योंकि वे प्रसिद्धि और यश-प्राप्ति से दूर रहकर मानव-सेवा में लगे रहते हैं। ऐसे महापुरुषों को मैं प्रणाम करता हूँ, उन्हें बार-बार प्रणाम करता हूँ।

काव्यगत सौंदर्य- 1. यहाँ कवि ने मानवता को स्थापित करने वाले ज्ञात और अज्ञात सभी महापुरुषों को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं। **2. भाषा-** सरल, सुबोध खड़ीबोली **3. रस-** शांत **4. गुण-** प्रसाद **5. अलंकार-** पुनरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास।

(ब) मरण मधुर..............................मेरे कोटि प्रणाम!

संदर्भ- पूर्ववत्

प्रसंग- इन पंक्तियों में कवि ने वंदना करने योग्य देशभक्तों को नमन करते हुए उनके देशप्रेम का वर्णन किया है कि उन्हें देशप्रेम में मृत्यु भी वरदान के समान लगती है।

व्याख्या- कवि उन क्रांतिकारियों को प्रणाम करता है, जिन्हें देशहित में मृत्यु भी ऐसी लगती है, जैसे कोई वरदान मिल गया हो। इन क्रांतिकारियों को मृत्यु का भय कभी भी दु:ख नहीं दे सकता। क्रांतिकारी तो मृत्यु का वरण हँस-हँसकर लेते हैं और मदभरी मुसकान के साथ फाँसी के फंदे पर झूल जाते हैं। कवि उन महापुरुषों को भी प्रणाम करता है, जो संसार में अन्याय के प्रसार और उसकी छत्रछाया सहन नहीं किया करते और जिनका शुभ-संकल्प यही रहता है कि इस अन्याय के

विरुद्ध लड़ा जाए। ऐसे महापुरुषों के प्राण बलिवेदी पर चढ़ जाने को तत्पर रहते हैं।

कवि ने अंत में उन सहृदयजनों को प्रणाम किया है, जो ऐसे-ऐसे काम करते हैं जिनसे घावों पर मरहम लगे। ऐसे सहृदयों के हृदय को कवि करोड़ों बार प्रणाम अर्पित करता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इन पंक्तियों में कवि ने उन देशभक्तों का स्मरण किया है, जो अपने सुख की चिंता किए बिना अपने देश-जाति के लिए हर बलिदान करने को तत्पर रहते हैं। **2. भाषा–** साहित्यिक हिंदी **3. रस–** वीर **4. गुण–** ओज **5. अलंकार**– अनुप्रास एवं श्लेष।

(स) मातृभूमि का..कोटि प्रणाम!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग–इन पंक्तियों में कवि उन लोगों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है, जिन्होंने अपने समस्त सुखों को न्योछावर कर मातृभूमि की सेवा की है।

व्याख्या– कवि उन लोगों को प्रणाम करता है, जिन महापुरुषों के हृदय में मातृभूमि के प्रति ऐसा असीम प्रेम उत्पन्न हुआ था, जिसके कारण अपने सब सुखों को त्यागकर उन्होंने अपनी युवावस्था में ही वैराग्य ले लिया था। उन्होंने नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में घूम-घूमकर जनता में मातृभूमि के प्रति ऐसा प्रेम जगाया था, जिससे जनता अपनी भूल को समझ सके और परतंत्रता की नींद को छोड़कर मातृभूमि के उद्धार के लिए कदम उठा सके। जिन लोगों को समाज ने इतना गरीब बना दिया है कि उन्हें पेट भरने के लिए नमक और रोटी तक नसीब नहीं होती, वे अज्ञानी और मूर्ख ही बने रह जाते हैं। इनको ज्ञान देना और इनमें जागरूकता पैदा करना ऐसे-वैसों का काम नहीं है। लेकिन जो विद्वान ऐसे मूर्खों की अज्ञानता दूर कर उनमें ज्ञान और जागरूकता भरने के लिए रात और दिन, सुबह और शाम चक्कर लगाते रहते हैं, निश्चय ही वे सत्पुरुष वंदनीय हैं। जो महापुरुष देश का सोया गौरव जगाने में तल्लीन रहते हैं, जो अपने देश की सुंदर संस्कृति का ज्ञान कराते हैं, वे सत्पुरुष देश के स्वाभिमान हैं, देश को उन पर गर्व है और वे वंदनीय हैं, अभिनंदनीय हैं। कवि उन्हें करोड़ों बार प्रणाम करता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. राष्ट्रभक्तों के दुर्गम एवं कठिन साधनायुक्त जीवन के प्रति भक्तिभाव स्पष्ट हुआ है। **2.** क्रांतिकारियों एवं राष्ट्रभक्तों के प्रति यहाँ श्रद्धाभाव का भावात्मक स्वरूप दृष्टष्य है। **3. भाषा–** साहित्यिक हिंदी **4. रस–** शांत, **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

(द) जो फाँसी के ....सुख शांति प्रकाम!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने उन बलिदानी वीरों के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं जिनके कारण मंगलमय युग की प्राप्ति संभव हुई।

व्याख्या– कवि उन साहसी देशभक्तों को प्रणाम करता है, जो प्रसन्नतापूर्वक फाँसी के तख्तों पर चढ़कर (भगत सिंह की तरह) हँसते-हँसते सूली को चूम लेते हैं। अपने प्रण की रक्षा के लिए भोले-भाले बालक (गुरु गोविंद सिंह के बच्चों की तरह) जिंदा ही दीवार में (औरंगजेब के द्वारा) चिनवा दिए जाते हैं, परंतु अपनी टेक नहीं छोड़ते। कवि उन वीर पुरुषों के प्रति भी श्रद्धा से नमन करता है, जिन्होंने प्रसन्नता से जहर के धुएँ को पी लिया और काल-कोठरी में अपना जीवन व्यतीत करते रहे।

कवि आगे कहता है कि वह उन्हें श्रद्धा से प्रणाम करता है, जिनके महान कार्यों के कारण यह वर्तमान का सुंदर समय (आजादी) देखने का अवसर मिला तथा आने वाला भविष्य भी अलौकिक व मंगलमय होगा। उन पवित्र आत्मा वाले पुरुषों के बलिदान की पवित्र अग्नि में जलकर सभी पाप उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं, जैसे यज्ञ की पवित्र अग्नि में हवन-सामग्री। कवि उन महान् राष्ट्रभक्तों को भी अपना प्रणाम अर्पित करता है जो ऐसे नवयुग का निर्माण करेंगे, जिसके प्रारंभ होते ही सभी स्वतंत्र होंगे, सभी सुखी हो जाएँगे और पृथ्वी पर चारों ओर सुख-समृद्धि का वातावरण हो जाएगा। वह नवयुग उस नए वातावरण को उत्पन्न कर देगा, जो सभी के लिए कल्याणकारी होगा।

कवि आने वाले उस मंगलकारी दिन को करोड़ों बार अपना प्रणाम करता है जिस दिन सबका कल्याण होगा, जिसमें सभी प्रकार के सुख और पूर्ण शांति होगी।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने देश के लिए फाँसी पर चढ़ जाने वाले क्रांतिकारियों का स्मरण किया है। **2.** दीवारों में चुनवा दिए जाने का संकेत देकर कवि ने गुरु गोविंद सिंह के उन दो मासूम पुत्रों की ओर संकेत किया है, जिन्हें औरंगजेब

ने दीवार में चुनवा दिया था। **3.** कवि आन पर अपने प्राण न्योछावर करने वालों के प्रति प्रणाम अर्पित करता है। **4.** कवि उस मंगलमय दिन को प्रणाम करता है, जब सर्वत्र सुख और समृद्धि का वातावरण होगा। **5. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **6. रस–** वीर, शांत **7. गुण–** ओज तथा प्रसाद **8. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, रूपक तथा यमक।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म!

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि महापुरुषों का हृदय दीन–दु:खियों के नेत्रों में आँसू देखकर दु:खी हो जाता है। उन लोगों को चाहे किसी भी स्थान पर किसी भी ढंग में रहना पड़े, वे हर परिस्थिति में दीन–हीनों की सेवा में जुटे रहते हैं। दया, प्रेम, सहानुभूति आदि मानवीय गुणों की स्थापना करना ही उनका उद्देश्य होता है।

(ब) मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग,
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि महापुरुष ऐसे होते हैं, जिनके हृदय में मातृभूमि के लिए असीम प्रेम उत्पन्न होता है और जिन्होंने युवावस्था में ही संसार के सुखों का त्याग करके वैराग्य धारण कर लिया है अर्थात् देश की सोई जनता के हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम जगाने के लिए उन्होंने अपने सुखों का त्याग कर दिया ।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् है–

(अ) सन् 1915 ई.में (ब) सन् 1907 ई.में
(स) सन् 1909 ई.में (द) **सन् 1906 ई. में**

2. 'प्रभाती' काव्य-संग्रह के रचयिता हैं–

(अ) रहीम (ब) महादेवी वर्मा
(स) **सोहनलाल द्विवेदी** (द) निराला जी

3. सोहनलाल द्विवेदी का प्रथम काव्य-संग्रह है–

(अ) बाँसुरी (ब) चेतना
(स) पूजागीता (द) **भैरवी**

4. द्विवेदी जी की कृति है–

(अ) **बच्चों के बापू** (ब) प्रिय–प्रवास
(स) चुभते चौपदे (द) प्रेम–माधुरी

5. द्विवेदी जी की कृति नहीं है–

(अ) दूध–बताशा (ब) **कामायनी**
(स) पूजागीत (द) वासंती

(घ) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

राजा — नृप, भूपति।
जन — मनुष्य, व्यक्ति।
दीन — दरिद्र, निर्धन।
मुख — मुँह, आनन।
जगत — संसार, लोक।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
अक्षय	क्षय
उन्नत	अवनत
स्वदेश	विदेश

शब्द	विलोम
कर्मठ	अकर्मठ
जय	पराजय
धीर	अधीर
विष	अमृत
शांति	अशांति
क्रूर	दयावान
स्वतंत्र	परतंत्र

3. निम्नलिखित शब्दों की संधि विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	संधि विच्छेद
स्वाभिमान	स्व + अभिमान
निर्धन	नि: + धन
निर्बल	नि: + बल
सर्वोदय	सर्व + उदय
अनागत	अन + आगत
अत्याचार	अति + आचार
सत्पुरुष	सद् + पुरुष

4. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण-विशेष्य छाँटिए–

शब्द	विशेषण	विशेष्य
नवयुग	नव	युग
मरण-मधुर	मधुर	मरण
बंद सींकचों	बंद	सींकचों
नव प्रभात	नव	प्रभात

5. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार स्पष्ट कीजिए–

(अ) उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(ब) मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान।

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

6. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) कोटि-कोटि नंगों, भिखमंगों के जो साथ।

काव्यगत सौंदर्य– 1. जो व्यक्ति दीन दु:खियों के साथ रहकर उनकी सेवा करते हैं, वे वंदनीय होते हैं। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. रस–** शांत **4. गुण–**प्रसाद **5. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश।

(ब) बार-बार बलिदान चढ़े प्राणों को वार

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि बलिदानी देशभक्त वीरों की वंदना करता है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. रस–** वीर **4. गुण–** ओज **5. अलंकार–** पुरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास।

(स) नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने जन जागृति उत्पन्न करने वाले महापुरुषों का वर्णन किया है। **2. भाषा–** साहित्यिक हिंदी **3. रस–**शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. अलंकार–** पुरुक्तिप्रकाश।

(द) जंजीरों में कसे हुए सिकचों के पार।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने देशप्रेम के लिए कारागारों में बंद देशभक्तों का वंदन किया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. रस–** वीर **4. गुण–** ओज।

(य) जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम।
जो हँसते-हँसते शूली को लते हैं चूम।
काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने देशप्रेम के लिए फाँसी पर चढ़ जाने वाले महान क्रांतिकारियों (भगत सिंह, सुखदेव आदि) का स्मरण किया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. रस–** वीर **4. गुण–** ओज **5. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता
विद्यार्थी स्वयं करें।

9. पथ की पहचान (हरिवंशराय 'बच्चन')

अभ्यास

(क) अतिउत्तरीय प्रश्न

1. बच्चन जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– बच्चन जी का जन्म 27 नवंबर 1907 को इलाहाबाद (प्रयाग) के नजदीक प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव बाबूट्टी में हुआ था।

2. बच्चन जी के माता-पिता का नाम क्या था? वे 'बच्चन' नाम से कैसे मशहूर हुए?

उ०– बच्चन जी के माता-पिता का नाम क्रमशः सरस्वती देवी और प्रतापनारायण श्रीवास्तव था। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' है। बाद में ये इसी नाम से मशहूर हुए।

3. बच्चन जी को राज्यसभा का सदस्य कब मनोनीत किया गया?

उ०– बच्चन जी को सन् 1966 में राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया।

4. बच्चन जी ने पी-एच.डी.की उपाधि कहाँ से प्राप्त की?

उ०– बच्चन जी ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी-एच.डी.की उपाधि प्राप्त की।

5. बच्चन जी की वह कौन-सी रचना है, जिससे वे अत्यधिक लोकप्रिय हुए?

उ०– बच्चन जी अपनी रचना 'मधुशाला' से अत्यधिक लोकप्रिय हुए।

6. हरिवंशराय की प्रथम कृति कौन-सी थी?

उ०– हरिवंशराय की प्रथम कृति 'तेरा हार' थी।

7. बच्चन जी ने अपने काव्य में किस भाषा-शैली का प्रयोग किया है?

उ०– बच्चन जी ने अपने काव्य में सरल खड़ीबोली व मुक्तक और भावात्मक गीति शैली का प्रयोग किया है।

8. काव्य की किन विशेषताओं के कारण बच्चन जी को लोकप्रियता मिली?

उ०– काव्य की सरलता, संगीतात्मकता, प्रवाह और मार्मिकता के कारण बच्चन जी को लोकप्रियता मिली।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पुस्तकों में किसकी कहानी नहीं छापी गई है? कविता के आधार पर लिखिए।

उ०– पुस्तकों में हमारे जीवन-पथ की कहानी नहीं छपी होती है। जीवन-पथ की कहानी हमें स्वयं ही बनानी पड़ती है। हम दूसरे लोगों के कहे अनुसार अपने जीवन का मार्ग निर्धारित नहीं कर सकते। इसका निर्धारण हमें स्वयं ही करना होता है।

2. हमें सफल यात्री बनने के लिए क्या प्रयास करने चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

उ०– हमें सफल यात्री बनने के लिए अपने लक्ष्य व मार्ग का निर्धारण भली-भाँति कर लेना चाहिए। रास्ता अच्छा है या बुरा यह सोचकर समय नष्ट नहीं करना चाहिए तथा मार्ग पर आस्था के साथ चलना चाहिए।

3. 'पथ की पहचान' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उ०– 'पथ की पहचान' कविता के माध्यम से कवि जीवन-मार्ग पर बढ़ने वाले मनुष्य को संदेश देना चाहता है कि पथिक इस मार्ग पर चलने से पहले तुम्हें अपने लक्ष्य व मार्ग का निर्धारण कर लेना चाहिए। अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए रास्ते के बारे में सोचकर समय नष्ट मत करो। आस्था के साथ अपने चुने मार्ग पर आगे बढ़ो।

4. 'आँख में हो स्वर्ग लेकिन, पाँव पृथ्वी पर टिके हों' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि जीवन की किस वास्तविकता से परिचित कराना चाहते हैं?

उ०– इन पंक्तियों के माध्यम से कवि जीवन की इस वास्तविकता से परिचित कराना चाहते हैं कि यथार्थ जीवन की कठोरता मनुष्य की कोमल कल्पना को साकार नहीं होने देती है। जीवन में कोमल कल्पना और यथार्थ के बीच समन्वय होना चाहिए। इसलिए आँखों में स्वर्ग के सुख की कल्पना तो अवश्य करो, परंतु अपने पैर यथार्थ के धरातल पर ही जमाए रखो। अर्थात् मन में चाहे कितनी ऊंची कल्पना हो,परंतु कार्य व्यावहारिक होना चाहिए।

5. रास्ते पर चलने से पहले हमे बहुत-सी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः हमें किन बातों को ध्यान में रखकर चलना चाहिए?

उ०– रास्ते पर चलने से पहले हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमने जो लक्ष्य व मार्ग चुना है, वह उपयुक्त हो। हमें मार्ग में बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, जो हमारा मार्ग अवरुद्ध कर सकती हैं, इस मार्ग पर चलते हुए कौन हमसे बिछड़ जाए व कौन मिल जाए तथा जीवन की यात्रा किस स्थान पर जाकर समाप्त हो, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

6. 'स्वप्न दो तो सत्य दो सौ' इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं?

उ०– इस पंक्ति के द्वारा कवि कहना चाहते हैं कि स्वप्न या कल्पनाएँ जीवन में बहुत कम हैं, उनके सामने यथार्थ सत्य अनगिनत हैं। अर्थात् सत्य का मुकाबला कल्पनाओं से नहीं करना चाहिए। सुख के स्वप्नों में डूबकर जीवन की वास्तविकताओं की अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. हरिवंशराय 'बच्चन' के जीवन परिचय और काव्य कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उ०– हरिवंशराय श्रीवास्तव 'बच्चन' हिंदी भाषा के प्रमुख कवि और लेखक थे। 'हालावाद' के प्रवर्तक बच्चन जी हिंदी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' है। वे भारतीय फिल्म उद्योग के प्रख्यात अभिनेता 'अमिताभ बच्चन' के पिता भी हैं।

जीवन परिचय– हरिवंशराय बच्चन जी का जन्म 27 नवंबर 1907 को इलाहाबाद (प्रयाग) के नजदीक प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव बाबूपट्टी में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' या संतान होता है। बाद में ये इसी नाम से मशहूर हुए। इन्होंने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू की शिक्षा ली, जो उस समय कानून की डिग्री के लिए पहला कदम माना जाता था। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए.और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू.बी.यीट्स की कविताओं पर शोध कर पी- एच.डी.पूरी की।

1926 में 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ, जो उस समय 14 वर्ष की थी। लेकिन 1936 में श्यामा की टीबी के कारण मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद 1941 में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया, जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का पुनर्निर्माण' जैसी कविताओं की रचना की। तेजी बच्चन से अमिताभ तथा अजिताभ दो पुत्र हुए।

हिंदी साहित्य की आराधना करते हुए यह महान विभूति 18 जनवरी 2003 को पंचतत्व में विलीन हो गई।

रचनाएँ– हरिवंशराय 'बच्चन' की प्रथम कृति 'तेरा हार' सन् 1932 ई. में प्रकाशित हुई। उनकी अन्य कृतियाँ इस प्रकार हैं–

(अ) निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत– इन संग्रहों में कवि के हृदय की पीड़ा साकार हो उठी है। ये कृतियाँ बच्चन जी की सर्वोत्कृष्ट काव्य उपलब्धि कही जा सकती हैं।

(ब) मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश– ये तीनों संग्रह एक के बाद एक शीघ्र प्रकाश में आए। हिंदी में इन्हें हालावाद की रचनाएँ कहा गया। बच्चन जी की इन कविताओं में प्यार और कसक है।

(स) सतरंगिणी, मिलनयामिनी– इन रचनाओं में उल्लास-भरे तथा श्रृंगार रस से परिपूर्ण गीतों के संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त बच्चन जी के अनेक गीत-संग्रह प्रकाशित हुए, जिनमें प्रमुख हैं- आकुल अंतर, प्रणय-पत्रिका, बुद्ध का नाचघर तथा आरती और अंगारे।

2. बच्चन रचित 'पथ की पहचान' कविता का भाव या आशय अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'पथ की पहचान' कविता में कवि ने मनुष्य को जीवन पथ पर आगे बढ़ने से पहले सावधान किया है कि यात्रा आरंभ करने से पहले मनुष्य को अपने लक्ष्य व मार्ग का निर्धारण कर लेना चाहिए। इस लक्ष्य का निर्धारण हमें स्वयं ही करना पड़ता है। यह कहानी पुस्तकों में नहीं छपी होती। जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने भी अपने लक्ष्य का निर्धारण स्वयं ही किया था। कवि ने पथिक को अच्छे-बुरे की शंका किए बिना आस्था के साथ अपने मार्ग पर चलने को कहा है, जिससे लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा सरल हो जाएगी। यदि हम अपने मन में यह सोच लें कि यही मार्ग सही एवं सरल है तो हम लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से कर सकते हैं। जितने भी महापुरुषों ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की है, वे मार्ग की कठिनाइयों से नहीं घबराए और अपने मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहे। उचित मार्ग की पहचान से ही जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। जीवन के मार्ग में कब कठिनाइयाँ आएँगी और कब सुख मिलेगा, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अर्थात् यह सब अनिश्चित है कि कब कोई हमसे बिछड़ जाएगा और कब हमें कोई मिलेगा, कब हमारी जीवन यात्रा समाप्त हो जाएगी। कवि मनुष्य को हर विपत्ति से सामना करने का प्रण लेने की प्रेरणा देते हैं। कल्पना करना मनुष्य का स्वभाव है। कवि के अनुसार जीवन के सुनहरे सपने देखना गलत बात नहीं है। अपनी आयु के अनुरूप सभी कल्पना करते हैं। परंतु इस संसार में कल्पनाएँ बहुत कम और यथार्थ बहुत अधिक हैं। इसलिए तू कल्पनाओं के स्वप्न में न डूब, वरन् जीवन की वास्तविकताओं को देख। जब मनुष्य स्वर्ग के सुखों की कल्पना करता है तो उसकी आँखों में प्रसन्नता भर जाती है। पैरों में पंख लग जाते हैं और हृदय उन सुखों को पाने को लालायित हो जाता है परंतु जब यथार्थ (सत्य) सामने आता है तो मनुष्य निराश हो जाता है।

हमारे आँखों में भले ही स्वर्ग के सुखों के सपने हो परंतु हमारे पैर धरातल पर ही जमे होने चाहिए। राह के काँटे हमें जीवन मार्ग की कठिनाइयों का संदेश देते हैं। इसलिए इन कष्टों से लड़ने के लिए सोच-विचारकर ही कार्य करो और एक बार आगे बढ़ने पर विघ्न-बाधाओं से मत घबराओ।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) पुस्तकों में ....पहचान कर ले।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी के 'काव्यखंड' में संकलित 'हरिवंशराय बच्चन' द्वारा रचित 'सतरंगिणी' काव्य संग्रह से 'पथ की पहचान' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्यांश में कवि कहता है कि हमें कोई भी कार्य सोच-विचारकर करना चाहिए। लक्ष्य चुन लेने के बाद उस काम की कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए।

व्याख्या– यात्रा पर निकलने को तैयार पथिक के संबोधन के द्वारा कवि मनुष्य को जीवन-पथ पर आगे बढ़ने से पहले सावधान करते हुए कहता है कि हे पथिक! हमारे जीवन-पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं छपी होती, वह तो स्वयं ही बनानी पड़ती है। दूसरे लोगों के कथन के अनुसार भी हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते। इसका निर्धारण हमें स्वयं ही करना पड़ेगा। इस संसार-पथ पर अनेक लोग आए और चले गए अर्थात् पैदा हुए और मृत्यु को प्राप्त हो गए, उन सबकी गणना नहीं की जा सकती, परंतु कुछ ऐसे कर्मवीर भी इस जीवन-मार्ग से गुजरे हैं, जिनके कर्मरूपी पदचिह्न आज भी आने वाले पथिकों का मार्गदर्शन करते हैं; उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं; अर्थात् इस संसार में अनेक लोग जन्मे हैं, जिनके पदचिह्न मौन भाषा में उनके महान् कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं। उनके पद्चिह्नों की मूक भाषा में जीवन की सफलता के अनेक रहस्य छिपे हैं। हे पथिक! तू उस मूक भाषा के उन रहस्यमयी अर्थों को समझकर अपने लक्ष्यरूपी गंतव्य और उस तक जाने के मार्ग का पूर्व निर्धारण कर ले। उन सभी कर्मठ महापुरुषों ने काम करने से पहले खूब सोच-विचार किया और फिर मन-प्राण से अपने कार्य में जुटकर सफलता प्राप्त की। हे पथिक! चलने से पहले अवश्य ही अपने मार्ग को भली प्रकार से पहचान ले।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पथिक को कर्तव्य के मार्ग पर बढ़ने का संदेश दिया है और कार्य करने से पहले सोच-विचार करने की प्रेरणा दी है। **2.** आत्म-प्रेरणा का भाव भी मुखरित हुआ है। **3. भाषा–** सरल तथा सरस खड़ीबोली **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** अनुप्रास तथा विरोधाभास।

(ब) है अनिश्चित ....पहचान कर ले।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ पर कवि जीवन-पथ पर आने वाले सुख-दु:खों के प्रति सचेत करता हुआ मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दे रहा है।

व्याख्या– कवि कहता है कि हे जीवन-पथ के पथिक! यह पहले से ही नहीं निश्चित किया जा सकता है कि तेरे मार्ग में किस स्थान पर नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेंगी; अर्थात् तेरे मार्ग में कब कठिनाइयाँ और बाधाएँ आएँगी, यह नहीं कहा जा सकता, यह सब कुछ अनिश्चित है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि तेरे जीवन के मार्ग में किस स्थान पर सुंदर वन और उपवन मिलेंगे, अर्थात् तुम्हारे जीवन में कब सुख-सुविधाएँ प्राप्त होंगी? यह भी निश्चित नहीं है कि कब अचानक तुम्हारी जीवन-यात्रा समाप्त हो जाएगी अर्थात् कब तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी?

कवि आगे कहता है कि यह बात भी अनिश्चित है कि मार्ग में कब तुझे फूल मिलेंगे और कब काँटे तुझे घायल करेंगे; अर्थात् तुम्हारे जीवन में कब सुख प्राप्त होगा और कब दु:ख- यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि तेरे जीवन-मार्ग में कौन अपरिचित अचानक आकर तुझसे मिलेंगे और कौन प्रियजन अचानक तुझे छोड़ जाएँगे। हे पथिक! तू अपने मन में प्रण कर ले कि जीवन की कठिनाइयों के सम्मुख नतमस्तक न होकर बड़ी-से-बड़ी विपत्ति के आ पड़ने पर भी तुझे आगे ही बढ़ते जाना है।

हे जीवन-पथ के यात्री! तू पथ पर चलने से पूर्व जीवन में आने वाले सुख-दु:ख को भली-भाँति जानकर अपने मार्ग की पहचान कर ले।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ पथिक को माध्यम बनाकर जीवन-पथ की यथार्थता पर प्रकाश डाला है। **2.** कवि ने स्पष्ट किया है कि दृढ़ निश्चय से ही सफलता की प्राप्ति संभव हो सकती है। **3. भाषा–** सरल तथा सरस खड़ीबोली **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** रूपक तथा अनुप्रास।

(स) कौन कहता है..पहचान कर ले।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्य में कवि कहता है कि मानव द्वारा कल्पना करना स्वाभाविक है, किंतु इसके साथ सत्य का भी आभास होना आवश्यक है।

व्याख्या– हे पथिक! स्वप्न देखना अर्थात् कल्पना करना मानव का स्वभाव है। तुमसे यह किसने कहा है कि जीवन में सुनहरे स्वप्न देखना मना है। सभी अपनी-अपनी इच्छाओं एवं आयु के अनुरूप कल्पना करते हैं। इसलिए मनुष्य भी कल्पना अवश्य करेगा, प्रयत्न करने पर भी इन्हें कल्पना करने से रोका नहीं जा सकता। जिस प्रकार नील-गगन में तारे उदित होते हैं, ऐसे ही मन में सुंदर-सुंदर कल्पनाएँ भी झिलमिलाती हैं। ये स्वप्न अर्थात् कल्पनाएँ तभी सार्थक हैं, जब इनका कोई उद्देश्य हो, परंतु इस संसार में कुछ ही कल्पनाएँ पूरी होती हैं, जबकि यथार्थ अनगिनत हैं। इसलिए केवल कल्पना-लोक में ही मत अटक जाओ, सत्य को भी अवश्य देखो। तात्पर्य यह है कि सुख के स्वप्नों में ही नहीं डूब जाना चाहिए, वरन् जीवन की वास्तविकताओं को भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने पर ही उन्नति का पथ प्रशस्त हो सकेगा। जो कुछ सोच-विचार करना है, अपना पथ निर्धारित करने से पहले ही कर लेना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि का यहाँ तात्पर्य है कि महत्वकांक्षा यथार्थ के सत्य पर आधारित होनी चाहिए। इसके लिए कठिन श्रम के साथ-साथ कर्तव्य का पालन भी आवश्यक है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. अलंकार–** रूपक तथा अनुप्रास।

(द) स्वपन आता स्वर्ग का................................पहचान कर ले।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग–इन पंक्तियों में कवि ने पथिक को आदर्श और यथार्थ का उचित समन्वय करके ही जीवन-पथ पर बढ़ने के लिए सचेत किया है।

व्याख्या– हे पथिक! कल्पना का आनंद स्वर्ग जैसा प्रतीत होता है। जब मनुष्य स्वर्ग के सुखों की कल्पना करता है तो उसकी आँखों में प्रसन्नता का प्रकाश भर जाता है। उसके चरण उस रंगीन कल्पना तक पहुँचने के लिए बड़ी तीव्रता से बढ़ने लगते हैं। उसका हृदय उस सुंदर कल्पना को गले लगाने के लिए उत्कंठित रहता है, परंतु कर्मपथ पर कोई एक ही कठिनाई जब किसी काँटे की तरह उसके पैर में चुभती है तो उससे जो रक्त निकलता है, उसी में कल्पना का सारा संसार डूब जाता है; अर्थात् व्यक्ति कठोर कठिनाइयों से विचलित होकर उन सुखों की प्राप्ति की कल्पना करना ही छोड़ देता है। इस प्रकार यथार्थ जीवन की कठोरता मनुष्य की कोमल कल्पना को साकार नहीं होने देती है। कवि बच्चन यहाँ परामर्श

देते हैं कि जीवन में कोमल कल्पना और कठोर यथार्थ के बीच समन्वय होना आवश्यक है, तभी जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए आँखों में स्वर्ग के सुख की कल्पना तो अवश्य करो, परंतु अपने पैर यथार्थ के धरातल पर ही जमाए रखो; अर्थात् कल्पना और यथार्थ में सामंजस्य बनाए रखो। पथ के काँटे हमें यही संदेश देते हैं कि जीवन कष्टों से भरा पड़ा है और हमें उन्हीं के मध्य अपने सपनों की दुनिया बसानी है। उन कष्टों से जूझने के लिए तैयार रहो और पर्याप्त सोच-विचार के बाद ही कोई कार्य करो एवं एक बार काम शुरू कर देने पर विघ्न-बाधाओं से मत घबराओ।

काव्यगत सौंदर्य–1. कवि ने मनुष्य को यथार्थ व आदर्शों के बीच समन्वय बनाकर अपने जीवन-पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। **2.** मनुष्य कठिनाइयों और बाधाओं से बहुत कुछ सीखता है। **3.** कवि ने प्रतीकों का आश्रय लेकर अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। **4. भाषा–** मुहावरेदार खड़ीबोली **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** अतिशयोक्ति, अनुप्रास और रूपक।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

(अ) यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि कुछ ऐसे कर्मवीर भी इस जीवन-पथ से गुजरे हैं, जो इस मार्ग पर अपने पैरों की निशानी छोड़ गए हैं जिनके कर्मरूपी पदचिह्न आज भी आने वाले पथिकों का मौन रहकर मार्गदर्शन करते हैं। अर्थात् उनके पदचिह्नों की मूकभाषा में जीवन की सफलता के अनेक रहस्य छिपे हैं।

(ब) कौन सहसा छूट जाएँगे,
मिलेंगे कौन सहसा।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने पथिक को सावधान करते हुए स्पष्ट किया है कि जीवन-पथ में बहुत-सी कठिनाइयाँ आएँगी। ये सब कठिनाइयाँ अनिश्चित हैं। यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि तुम्हें जीवन-पथ में कौन अपरिचित अचानक मिल जाएँगे और कौन प्रियजन अचानक तुम्हें छोड़ जाएँगे।

(स) स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने पथिक के माध्यम से स्पष्ट किया है कि मनुष्य को कल्पनाओं पर ही रीझना नहीं चाहिए। उसे सत्य को भी अवश्य देखना चाहिए। तात्पर्य यह है कि केवल सुख के स्वप्नों में ही नहीं डूब जाना चाहिए, वरन् जीवन की वास्तविकताओं की भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बच्चन' जी का जन्म-स्थान है–

(अ) आगरा (ब) **प्रयाग**
(स) दिल्ली (द) कानपुर

2. 'एकांत संगीत' के रचयिता हैं–

(अ) मैथिलीशरण गुप्त (ब) भारतेंदु हरिश्चंद्र
(स) डा.नगेंद्र (द) **हरिवंशराय बच्चन**

3. बच्चन जी की रचना है–

(अ) **मधुशाला** (ब) कृष्ण गीतावली
(स) वैदेही वनवास (द) गीतावली

4. 'बच्चन' जी का जन्म सन् है–

(अ) सन् 1915 ई. (ब) सन् 1925 ई.
(स) सन् 1891 ई. (द) **सन् 1907 ई.**

5. 'पथ की पहचान' कविता में कवि ने किसके माध्यम से मनुष्य को अपने पथ की पहचान करने के लिए प्रेरित किया है?

(अ) **पथिक के** (ब) पर्वतों के
(स) महापुरुषों के (द) नदी के

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में रस को पहचानिए–

(अ) किंतु जग के पथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में शांत रस है।

(ब) आ पड़े कुछ भी रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के, बटोही
बाट की पहचान कर ले।

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में वीर रस है।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए–

शब्द	**विलोम**
स्वर्ग	नरक
सम्मान	अपमान
पूर्व	पश्चात् या पश्चिम
बुरा	भला
असंभव	संभव
सरल	कठिन
सफल	असफल
विश्वास	अविश्वास
अनिश्चित	निश्चित
उदय	अस्त
सत्य	असत्य
ज्ञान	अज्ञान

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची बताइए–

सरित – नदी, तरंगिणी।
गिरि – पर्वत, पहाड़।
बाग – वाटिका, उपवन।
सुमन – फूल, कुसुम।
आँख – नयन, लोचन।
स्वर्ग – सुरलोक, देवलोक।
पृथ्वी – धरा, धरती।

4. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और प्रत्यय को अलग-अलग करके मूल शब्द के साथ लिखिए–

शब्द	**मूलशब्द**	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**
सफलता	सफल	—	ता
असंभव	संभव	अ	—
अनुमान	मान	अनु	—
अवधान	धान	अव	—
पंथी	पंथ	—	ई

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
अनिश्चित	निश्चित	अ	——
उन्मुक्त	मुक्त	उत्	——

5. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए–

(अ) यह निशानी मूक होकर,
भी बहुत कुछ बोलती है।

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में अनुप्रास व विरोधाभास अलंकार है।

(ब) पंख लग जाते पगों को
ललकती उन्मुक्त छाती।

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में अनुप्रास व अतिशयोक्ति अलंकार है।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

10. बादल को घिरते देखा है (नागार्जुन)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. नागार्जुन जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उ०– नागार्जुन जी का जन्म सन् 1911 ई. में दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में हुआ था।

2. नागार्जुन जी का असली नाम क्या था?

उ०– नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था।

3. नागार्जुन जी मैथिली में किस नाम से लिखते थे?

उ०– नागार्जुन जी मैथिली में 'यात्री' नाम से लिखते थे।

4. नागार्जुन जी का यह नाम कैसे पड़ा?

उ०– बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर महात्मा बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य के नाम पर इन्होंने अपना नाम 'नागार्जुन' रख लिया।

5. नागार्जुन जी को कौन-कौन से सम्मान से सम्मानित किया गया?

उ०– नागार्जुन जी को उनकी रचनाओं पर उत्तर प्रदेश के 'भारत-भारती', बिहार के 'राजेंद्र प्रसाद' तथा मध्य प्रदेश के 'कबीर' सम्मान से सम्मानित किया गया।

6. नागार्जुन किस युग के कवि हैं?

उ०– नागार्जुन प्रगतिवादी युग के कवि हैं।

7. नागार्जुन जी ने किस भाषा-शैली का प्रयोग किया है?

उ०– नागार्जुन जी की भाषा सरस, सरल, व्यावहारिक एवं प्रभावोत्पादक है। इन्होंने मुक्तक व प्रबंध शैली को अपनाया है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता में कवि नागार्जुन ने कौन-से पर्वत के किस स्थान का वर्णन किया है?

उ०– प्रस्तुत कविता में कवि नागार्जुन ने हिमालय पर्वत की चोटियों की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन किया है।

2. 'कस्तूरी मृग' अपने आप से क्यों चिढ़ता है?

उ०– कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित अदृश्य कस्तूरी की मनमोहक सुगंध से उन्मुक्त होकर उसकी खोज में इधर-उधर दौड़ता रहता है, जबकि वह सुगंध उसकी नाभि से ही आ रही होती है। जब वह चंचल व युवा मृग उस कस्तूरी को प्राप्त नहीं कर पाता तो वह अपने आप पर झुँझलाता व चिढ़ता है।

3. कविता में कवि नागार्जुन ने किन्नर-किन्नरियों के विषय में क्या कहा है?

उ०– कविता में कवि ने किन्नर प्रदेश का वर्णन किया है। जहाँ लाल और सफेद भोजपत्रों से बनी हुई कुटिया में किन्नर और

किन्नरियों के जोड़े विलासमय क्रीड़ाएँ करते रहते हैं। इनके बाल अनेक प्रकार के रंगों वाले सुगंधित फूलों से सजे रहते हैं। इनके गले में इंद्र नीलमणि की बनी माला, कानों में नीलकमलों के कर्णफूल तथा उनकी चोटियों में लाल कमल सुशोभित होते हैं।

4. कविता में किन्नर और किन्नरी किस वातावरण में और कौन-सी मुद्रा में वंशी बजाते वर्णित किए गए हैं?

उ०– कविता में किन्नर और किन्नरियों को मदिरापान के बाद मदमस्त अर्थात् मस्ती के वातावरण में मृग की छाल पर आसन मुद्रा में वंशी बजाते वर्णित किया गया है।

5. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर बादलों के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उ०– 'बादल को घिरते देखा है' कविता में कवि ने हिमालय पर्वत पर उमड़ते बादलों की सुंदरता का मनोहारी वर्णन किया है। जिनकी बूँदें ऊँची-ऊँची चोटियों पर मोती के समान प्रतीत होती हैं। ये बादल ऊँचे हिमालय के कंधे पर विराजमान दिखाई पड़ते हैं। जो क्षणभर में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचकर बरस जाते हैं। यक्ष ने भी अपनी प्रिया के पास इन्हीं बादलों को अपना संदेश देकर दूत बनाकर भेजा था। कैलाश पर्वत की ऊँची चोटियों पर ये बादल अपने अस्तित्व के लिए शक्तिशाली हवा से गरज-गरज कर संघर्ष करते हैं।

6. 'शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।' पंक्ति में कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उ०– प्रस्तुत पंक्ति में कवि का तात्पर्य है कि सुख-दु:ख तो आते रहते हैं। दु:ख के बाद आने वाला सुख अति सुखदायी होता है। जिस प्रकार शाप के कारण रातभर चकवा-चकवी अलग होकर विलाप करते रहते हैं, परंतु प्रात:काल होने पर जब उनका पुनर्मिलन होता है तो वे प्रसन्न होकर मानसरोवर की काईरूपी हरी दरी के ऊपर प्रेम क्रीड़ा करने लगते हैं। किसी समय ये दोनों वियोग से दु:खी थे, परंतु अब मिलन के सुख से प्रेम क्रीड़ा कर रहे हैं। यही काल का रहस्य है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'बादल को घिरते देखा है।' कविता में कवि का क्या उद्देश्य निहित है?

उ०– इस कविता के माध्यम से कवि नागार्जुन ने हिमालय पर्वत की प्राकृतिक सुषमा व उस पर बरसने वाले बादलों की सौंदर्य छटा का अनुपम वर्णन किया है। कविता के द्वारा कवि का उद्देश्य मनुष्यों को सुख-दु:ख में समान बने रहने की प्रेरणा देना है। कवि ने चकवा-चकवी के माध्यम से दु:ख के बाद आने वाले सुख का अनुपम उदाहरण दिया है। जिस प्रकार रातभर वियोग के बाद चकवा-चकवी प्रात:काल मिलन होने पर सुखपूर्वक प्रेम-क्रीड़ा करने लगते हैं, उसी प्रकार जीवन का सत्य यही है कि दु:ख के बाद ही सुख आता है। कवि ने धन के देवता कुबेर के माध्यम से (जिसके अभिशाप से यक्ष अपनी प्रिया से अलग हो गया था।) मनुष्य को सावधान किया है कि संसार परिवर्तनशील है। यहाँ धन और वैभव कुछ भी स्थिर नहीं रहता है। कवि ने मेघ और तूफानी हवा के माध्यम से कहा है कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए असमर्थ भी समर्थ से संघर्ष कर सकता है। कस्तूरी मृग के उदाहरण से कवि ने अपनी सामर्थ्य पहचानने की सलाह दी है। जिस प्रकार कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित कस्तूरी को नहीं पहचान पाता और उसकी खोज में इधर-उधर दौड़ता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने अंदर की सामर्थ्य को नहीं पहचान पाता और असफल होकर दु:खी होता रहता है। इस कविता में कवि का प्रमुख उद्देश्य प्रतीकों देकर मनुष्य को सचेत करना है।

2. नागार्जुन की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनका साहित्यिक परिचय भी प्रस्तुत कीजिए।

उ०– रचनाएँ– नागार्जुन ने छ: से अधिक उपन्यास, एक दर्जन कविता-संग्रह, दो खंडकाव्य, दो मैथिली (हिंदी में भी अनूदित) कविता-संग्रह, एक मैथिली उपन्यास, एक संस्कृत काव्य 'धर्मलोक शतकम' तथा संस्कृत की कुछ अनूदित कृतियों की रचना की।

(अ) कविता-संग्रह– अपने खेत में, युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, खून और शोले, तालाब की मछलियाँ, खिचड़ी विपल्व देखा हमने, हजार-हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तुमने कहा था, इस गुबार की छाया में, ओम मंत्र, भूल जाओ पुराने सपने, रत्नगर्भ, भस्मांकुर (खंडकाव्य)

(ब) उपन्यास– रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नई पौध, वरुण के बेटे, दुखमोचन, उग्रतारा, कुंभीपाक, पारो, आसमान में चाँद तारे

(स) व्यंग्य– अभिनंदन

(द) निबंध संग्रह– अन्नहीनम क्रियानाम

(य) बाल साहित्य– कथा मंजरी भाग—1, कथा मंजरी भाग—2, मर्यादा पुरुषोत्तम, विद्यापति की कहानियाँ

(र) **मैथिली रचनाएँ–** पत्रहीन नग्न गाछ (कविता-संग्रह), हीरक जयंती (उपन्यास)

(ल) **बांग्ला रचनाएँ–** मैं मिलिट्री का पुराना घोड़ा (हिंदी अनुवाद)

(व) **नागार्जुन रचना संचयन–** ऐसा क्या कह दिया मैंने

साहित्यिक परिचय– नागार्जुन हिंदी और साहित्य के अप्रतिम लेखक और कवि थे। हिंदी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की। नागार्जुन ने जीवन के कठोर यथार्थ एवं कल्पना पर आधारित अनेक रचनाओं का सृजन किया। अभावों में जीवन व्यतीत करने के कारण इनके हृदय में समाज के पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति का भाव विद्यमान था। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का शोषण करने वाले व्यक्तियों के प्रति इनका मन विद्रोह की भावना से भर उठता था।

सामाजिक विषमताओं शोषण और वर्ग-संघर्ष पर इनकी लेखनी निरंतर आग उगलती रही। अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होंने दलित, पीड़ित और शोषित वर्ग को अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा दी। अपने स्वतंत्र एवं निर्भीक विचारों के कारण इन्होंने हिंदी साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान बनाई। इनकी गणना वर्तमान युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में की जाती है।

3. कवि नागार्जुन के जीवन का परिचय देते हुए उनके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उ०– सही अर्थों में नागार्जुन भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं। ये प्रगतिवादी युग के कवि हैं। जन संघर्ष में अडिग आस्था, जनता से गहरा लगाव और एक न्यायपूर्ण समाज का सपना, ये तीन गुण नागार्जुन के व्यक्तित्व में ही नहीं, उनके साहित्य में भी घुले-मिले हैं। निराला के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इतने छंद, इतने ढंग, इतनी शैलियाँ और इतने काव्य रूपों का इस्तेमान किया है। पारंपरिक काव्य रूपों को नए कथ्य के साथ इस्तेमाल करने और नए काव्य कौशलों को संभव करने वाले वे अद्वितीय कवि हैं।

जीवन परिचय– प्रगतिवाद के गौरवपूर्ण स्तंभ नागार्जुन का जन्म सन् 1911 ई.में दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में हुआ था। नागार्जुन हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु हिंदी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में यात्री उपनाम से रचनाएँ कीं। इनके पिता श्री गोकुल मिश्र तरउनी गाँव के एक किसान थे और खेती के अलावा पुरोहिती आदि के सिलसिले में आस-पास के इलाकों में आया-जाया करते थे। उनके साथ-साथ नागार्जुन भी बचपन से ही 'यात्री' हो गए। आरंभिक शिक्षा प्राचीन पद्धति से संस्कृत में हुई किंतु आगे स्वाध्याय पद्धति से ही शिक्षा बढ़ी। राहुल सांकृत्यायन के 'संयुक्त निकाय' का अनुवाद पढ़कर वैद्यनाथ की इच्छा हुई कि यह ग्रंथ मूल पालि में पढ़ा जाए। इसके लिए वे लंका चले गए, जहाँ वे स्वयं पालि पढ़ते थे और मठ के 'भिक्खुओं' को संस्कृत पढ़ाते थे। यहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली।

बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर महात्मा बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य के नाम पर इन्होंने अपना नाम 'नागार्जुन' रख लिया। इनका आरंभिक जीवन अभावों से ग्रस्त रहा। जीवन के अभावों ने ही इन्हें शोषण के प्रति विद्रोह की भावनाओं से भर दिया। 1941 ई. में वे भारत लौट आए। नागार्जुन जी ने कई बार जेल यात्रा भी की। अपने विरोधी स्वभाव के कारण ये स्वतंत्र भारत में भी जेल गए। यह महान विभूति 87 वर्ष की अवस्था में 5 नवंबर 1998 को पंचतत्वों में विलीन हो गई।

काव्यगत विशेषताएँ– इनके काव्य में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(अ) नागार्जुन जी की भाषा सरल, सरस, व्यावहारिक एवं प्रभावोत्पादक है। उन्होंने तत्सम और तद्भव दोनों शब्दों का प्रयोग किया है।

(ब) इन्होंने अपनी रचनाओं में अनुप्रास, उपमा, रूपक और अतिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग किया है।

(स) इनकी काव्य रचनाओं में अभिव्यक्ति का ढंग तिर्यक बेहद ठेठ और सीधा भी है।

(द) अपनी तिर्यकता की प्रस्तुति में ये जितने बेजोड़ हैं, अपनी वाग्मिता में ये उतने ही विलक्षण भी हैं।

(य) उन्होंने अपनी रचनाओं में मुक्तक तथा प्रबंध शैली को अपनाया है।

(र) इनकी शैली प्रतीकात्मक और व्यंग्य प्रधान है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) अमल धवल......................................तिरते देखा है।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी के 'काव्यखंड' में संकलित 'नागार्जुन' द्वारा रचित 'प्यासी पथराई आँखें' से 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने हिमालय के वर्षाकालीन सौंदर्य का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि मैंने निर्मल और चाँदी के समान श्वेत बर्फ से आच्छादित हिमालय की ऊँची चोटियों पर घुमड़ते हुए बादलों के मनोरम दृश्य को देखा है। मैने वहाँ मानसरोवर झील में खिले सुनहले कमलों पर मोती के समान झिलमिलाती शीतल वर्षा की बूँदों को गिरते हुए भी देखा है। वास्तव में यह बहुत मोहक दृश्य है।

कवि हिमालय की प्राकृतिक सुषमा के विषय में कहता है कि उस पर्वतीय प्रदेश में हिमालय के ऊँचे-ऊँचे शिखररूपी कंधों पर अनेक छोटी-बड़ी झीलें स्थित हैं। इनका गहरा नीला-नीला सा निर्मल जल बहुत ही शीतल है। मैदानी प्रदेश की वर्षाकालीन उमस से व्याकुल होकर हंस इन झीलों में आ जाते हैं। वे कसैले और मीठे कमलनाल के कोमल रेशों को खोजते हुए इन शीतल जल में तैरते हुए बहुत सुंदर लगते हैं। यह दृश्य मैंने अपनी आँखों से देखा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने कलात्मक और साहित्यिक शब्दावली का प्रयोग करके हिमालय की सुंदरता का मोहक दृश्य प्रस्तुत करते हुए अपनी कुशल प्रकृति चित्रण कला का परिचय दिया है। **2. भाषा–** तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ीबोली **3. रस–** शृंगार **4. गुण–** माधुर्य **5. अलंकार–** अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश।

(ब) कहाँ गया धनपति.................................भिड़ते देखा है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने यह बताया है कि सुख-दु:ख, वैभव-विपन्नता जीवन में निरंतर आने जाने वाली परिस्थितियाँ हैं। जीव इनके समक्ष असमर्थ और विवश है।

व्याख्या– कविवर नागार्जुन कहते हैं कि कालिदास के 'मेघदूत' में वर्णित वह धनाढ्य कुबेर कहाँ गया, जिसके अभिशाप से यक्ष अपनी प्रिया से अलग हो गया था। समस्त वैभव और विलास के साधनों से युक्त कुबेर की वह अलका नामक नगरी भी दिखाई नहीं पड़ती। कालिदास द्वारा वर्णित आकाश-मार्ग से जाती हुई उस पवित्र गंगा का जल कहाँ चला गया? कवि का भाव यह है कि इस परिवर्तनशील जगत् में कुछ भी स्थिर नहीं है। कवि पुन: कहता है कि बहुत ढूँढ़ने पर भी मुझे मेघरूपी उस दूत के दर्शन नहीं हो सके। ऐसा भी हो सकता है कि इधर-उधर घूमते रहने वाला वह मेघ यक्ष का संदेश ही न पहुँचा पाया हो और लज्जित होकर पर्वत पर यहीं-कहीं बरस पड़ा हो, इस बात को बताने वाला भी कोई नहीं है। छोड़ो, रहने दो, यह तो कवि कालिदास की कल्पना थी। मैंने तो गगनचुंबी कैलाश पर्वत के शिखर पर भयंकर शीत में विशाल आकार वाले बादलों को तूफानी हवाओं से गरज-बरसकर संघर्ष करते हुए देखा है। तात्पर्य यह है कि यद्यपि हवा बादल को उड़ा ले जाती है और बादल वायु की तुलना में शक्तिहीन भी है; फिर भी हवा के प्रति उसका संघर्ष अपने अस्तित्व को कायम रखने की चेष्टा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ यह तथ्य स्पष्ट किया है कि संसार परिवर्तनशील है, यहाँ धन-वैभव कुछ भी स्थिर नहीं रहता है। **2.** बादल और तूफानी हवा के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए असमर्थ भी समर्थ से संघर्ष कर सकता है। **3. भाषा–** तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ीबोली **4. रस–** शांत **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(स) दुर्गम बर्फानी..चिढ़ते देखा है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने व्यक्ति की विवशताओं को रेखांकित किया है।

व्याख्या– कविवर नागार्जुन का कहना है कि हजारों फुट ऊँचे पर्वत-शिखर पर स्थित बर्फानी घाटियों में जहाँ पहुँचना ही बहुत कठिन होता है, वहाँ कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित अदृश्य कस्तूरी की मनमोहक सुगंध से उन्मत्त होकर इधर-उधर दौड़ता रहता है। निरंतर भाग-दौड़ करने पर भी जब वह चंचल और युवा मृग उस कस्तूरी को प्राप्त नहीं कर पाता तो वह अपने-आप पर झुँझलाता है। मैंने उसकी झुँझलाहट और चिढ़ को सदेह वहाँ उपस्थित होकर अनुभव किया है।

काव्यगत सौंदर्य–1. कवि ने कस्तूरी मृग के उदाहरण से यह स्पष्ट किया है कि सफलता की चाबी मनुष्य के पास ही है, किंतु उसे न जानने के कारण वह असफल होकर दु:खी होता रहता है। **2. भाषा–** तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली **3. रस–** शांत **4. गुण–** प्रसाद **5. अलंकार–** अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(द) शोणित धवल....................................... वंशी पर फिरते देखा है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने किन्नर-किन्नरियों पर पड़ने वाले बादलों के मादक प्रभाव का वर्णन करते हुए आज के संपन्न वर्ग की विलासिता पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या– कवि ने किन्नर प्रदेश की शोभा का अद्‌भुत वर्णन करते हुए कहा है कि देवदारु के वनों में लाल और श्वेत भोज-पत्रों से छाई हुई कुटी के अंदर किन्नर और किन्नरियों के जोड़े विलासमय क्रीड़ा में मग्न हो जाते हैं। वे (किन्नरों के जोड़े) अनेक प्रकार के रंगों वाले सुगंधित फूलों से अपने बालों को सजाए रखते हैं। वे अपने शंख के समान सुंदर और सुडौल गले में इंद्र नीलमणि की बनी माला डाले रखते हैं। उनके कानों में नीलकमलों के कर्णफूल सुशोभित रहते हैं। उनकी चोटियों में सौ पँखुड़ियों वाले लाल कमल के फूल गुँथे रहते हैं।

किन्नर-किन्नरियों में मदिरापान करने के पात्र चाँदी के बने हुए होते हैं तथा उनमें कलात्मक ढंग से मणियाँ जड़ी रहती हैं। वे मदिरापान के पात्रों को अंगूरों से बनी शराब से भरकर अपने-अपने सामने लाल चंदन से बनी तिपाई पर रख लेते हैं। वे कोमल, दागरहित, स्वच्छ बालों वाली कस्तूरी मृग की छाला को बिछाकर पालथी मारकर बैठ जाते हैं। तत्पश्चात वे मदिरापान करते हैं। मदिरापान के कारण उनकी आँखें लाल हो जाती हैं और उन पर एक विचित्र प्रकार का नशा छाया रहता है। इसके बाद मदिरा से मदमस्त होकर वे अपनी कोमल और सुंदर अँगुलियों को बाँसुरी पर फिराते हुए मधुर संगीत की तान छेड़ देते हैं। बादलों के घिरने पर किन्नर-किन्नरियों की इन विलासमयी क्रीड़ाओं को मैंने प्रत्यक्ष देखा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ किन्नर प्रदेश के स्त्री-पुरुषों के विलासमय जीवन के माध्यम से अमीरों की विलासिता का यथार्थ चित्र अंकित किया है। **2. भाषा–** संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली **3. रस–** शृंगार **4. गुण–** माधुर्य **5. अलंकार–** उपमा तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

(अ) शैवालों की हरी दरी पर,
प्रणय कलह छिड़ते देखा है।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि चकवा-चकवी रातभर अलग-अलग होकर विलाप करते हैं, परंतु प्रात:काल होने पर जब उनका पुनर्मिलन होता है तो वे काई रूपी हरी दरी के ऊपर प्रेम क्रीड़ा करने लगते हैं। वियोग के बाद मिलन अद्‌भुत होता है अर्थात् कवि का तात्पर्य है कि दु:ख के बाद आने वाले सुख का अनुभव सुखदायी होता है।

(ब) कौन बताए वह यायावर,
बरस पड़ा होगा न यहीं पर।

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि वह घुमक्कड़ बादल जो एक स्थान पर नहीं टिकता, जिसे यक्ष ने अपनी प्रिया को संदेश देने के लिए दूत बनाकर भेजा था बहुत ढूँढ़ने पर भी उसके दर्शन नहीं हुए हैं। ऐसा भी हो सकता है कि घूमने वाला वह बादल यक्ष का संदेश ही न पहुँचा पाया हो और लज्जित होकर पर्वत पर यहीं-कहीं बरस गया हो।

(स) तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि चंचल व युवा मृग अपनी नाभि की कस्तूरी की गंध को इधर-उधर खोजता है। परंतु अपनी नाभि में अदृश्य कस्तूरी को नहीं देख पाता तथा कस्तूरी प्राप्त न कर पाने के कारण अपने आप पर झुँझलाता व चिढ़ता है। मैंने उसकी इस झुँझलाहट को स्वयं देखा है। यहाँ कवि का तात्पर्य है कि सफलता की चाबी मनुष्य के पास ही होती है, किंतु उसे न जानने के कारण वह असफल होकर दु:खी होता रहता है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नागार्जुन का जन्म सन् है–

(अ) **सन् 1911 ई.** (ब) सन् 1900 ई.
(स) सन् 1918 ई. (द) सन् 1887 ई.

2. 'खून और शोले' कृति के रचयिता हैं–

(अ) मैथिलीशरण गुप्त (ब) जयशंकर प्रसाद
(स) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (द) **नागार्जुन**

3. कवि नागार्जुन किस युग से संबंधित हैं?

(अ) छायावादी युग (ब) **प्रगतिवादी युग**

(स) द्विवेदी युग (द) भारतेंदु युग

4. 'रतिनाथ की चाची' किस साहित्यिक विधा से संबंधित है?

(अ) **उपन्यास** (ब) कहानी

(स) खंडकाव्य (द) कविता

5. 'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन की किस कृति से उदधृत है?

(अ) युगधारा (ब) भस्मांकुर

(स) **प्यासी पथराई आँखें** (द) ओम मंत्र

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में समास विग्रह करके समास का नाम लिखिए–

समस्त पद	समास-विग्रह	समास का नाम
धनपति	धन का पति	संबंध तत्पुरुष समास
महामेघ	महान मेघ	कर्मधारय समास
शतदल	सौ पँखुडियों का समूह	द्विगु समास
त्रिपदी	तीन पदों का समाहार	द्विगु समास
प्रणय–कलह	प्रणय की क्रीड़ा	संबंध तत्पुरुष समास
चकवा–चकवी	चकवा और चकवी	द्वंद्व समास
गंगाजल	गंगा का जल	संबंध तत्पुरुष समास
पान–पात्र	पान का पात्र	संबंध तत्पुरुष समास
रक्त–कमल	लाल कमल	कर्मधारय समास
कवि–कल्पित	कवि द्वारा की गई कल्पना	तत्पुरुष समास
स्वर्णिम कमल	स्वर्ण रूपी कमल	कर्मधारय समास

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	संधि विच्छेद
हिमाचल	हिम + आचल
द्राक्षासव	द्राक्षा + आसव
मदिरारुण	मदिरा + अरुण
झंझानिल	झंझा + अनिल

3. वायु, बादल, कानन, पर्वत के पर्यायवाची लिखिए।

वायु – हवा, पवन।

बादल – मेघ, जलद।

कानन – जंगल, वन।

पर्वत – पहाड़, गिरि।

4. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और प्रत्यय अलग-अलग करके मूलशब्द के साथ लिखिए-

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
मुखरित	मुखर	——	इत
अभिशापित	शाप	अभि	इत
स्वर्णिम	स्वर्ण	——	इम
निदाग	दाग	नि	——

5. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए और स्पष्टीकरण भी कीजिए–

(अ) छोटे-छोटे मोती जैसे, अतिशय शीतल वारि कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम-कमलों पर गिरते देखा है।

उ०– **छोटे-छोटे** में पुनरुक्तिप्रकाश, **छोटे-छोटे मोती जैसे** में उपमा, **स्वर्णिम कमलों** में रूपक अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(ब) शोणित धवल भोजपत्रों से छाई हुई कुटी के भीतर
रंग-बिरंगे और सुगंधित फूलों से कुंतल को साजे
इंद्रनील की माला डाले शंख सरीखे सुघर गले में।

उ०– अनुप्रास अलंकार, **शंख सरीखे सुघर गले में** उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

6. निम्नलिखित पंक्तियों में रस पहचानकर उसका स्थायी भाव लिखिए–

(अ) शैवालों की हरी दरी पर,
प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।

उ०– रस– श्रृंगार **स्थायी भाव–** रति

(ब) नरम निदाग बाल कस्तूरी–
मृगछालों पर पल्थी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन,
उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।

उ०– रस– श्रृंगार **स्थायी भाव–** रति

(छ) पाठयेतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

11. अच्छा होता, सितार-संगीत की रात (केदारनाथ अग्रवाल)

अभ्यास

(क) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. केदार जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– केदार जी का जन्म 1 अप्रैल 1911 ई.को उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के कमासिन गाँव में हुआ था।

2. केदार जी की कृतियाँ कहाँ प्रकाशित होती थी?

उ०– केदार जी की कृतियाँ इलाहाबाद के परिमल प्रकाशन से प्रकाशित होती थी।

3. केदार जी का पहला कविता संग्रह कौन-सा था?

उ०– केदार जी का पहला कविता संग्रह 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' था।

4. केदार जी ने एल.एल.बी. की परीक्षा कहाँ से उत्तीर्ण की?

उ०– केदार जी ने एल.एल.बी. की परीक्षा डी.ए.वी.कॉलेज कानपुर से उत्तीर्ण की।

5. 'केदारनाथ जनवादी चेतना के सजग प्रहरी हैं।' कैसे?

उ०– केदारनाथ जनवादी चेतना के सजग प्रहरी हैं क्योंकि इनकी कविता का प्रमुख विषय मनुष्य और जीवन है। उनकी कविताएँ व्यापक जीवन संदर्भों के साथ ही मनुष्य की सौंदर्य चेतना से जुड़ती हैं।

6. केदारनाथ जी को किस-किस सम्मान से नवाजा गया?

उ०– केदारनाथ जी को हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि तथा बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी द्वारा डी. लिट्. की उपाधि दी गई। इनके अतिरिक्त इन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, हिंदी संस्थान पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार से नवाजा गया।

7. **शिवकुमार सहाय के साथ उनका संबंध कैसा था?**

उ०– शिवकुमार सहाय के साथ उनका संबंध प्रेमपूर्ण था। शिवकुमार सहाय उन्हें पितातुल्य मानते थे और 'बाबूजी' कहते थे।

8. **केदारनाथ जी काव्य की किस काव्यधारा के कवि हैं?**

उ०– केदारनाथ जी काव्य की प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि हैं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **कवि केदारनाथ अग्रवाल कैसे गुणों वाले आदमी को अच्छा मानते हैं?**

या

चरित्र की दृढ़ता के लिए इंसान में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

उ०– कवि केदारनाथ के अनुसार आदमी को दूसरे के लिए सद्‌भावी, सदाचारी व परमार्थी होना चाहिए। व्यक्ति को दृढ़ संकल्पी, वचनों का पक्का तथा स्वभाव का सच्चा होना चाहिए। आदमी को आदमी के लिए उदार तथा हिम्मतवाला होना चाहिए। ईश्वर ने व्यक्ति के हृदय में प्रेम-प्यार, दया, करुणा आदि भावनाओं की जो धरोहर सँजोकर रखी है, व्यक्ति को उसे अक्षुण्ण बनाए रखना चाहिए।

2. **'अच्छा होता' कविता की मूल भावना पर प्रकाश डालिए।**

उ०– 'अच्छा होता' कविता में कवि ने वर्तमान में मनुष्य के संवेदना शून्य और जीवन मूल्य विहीन होते जाने पर चिंता व्यक्त की है, साथ ही आशा की एक किरण भी बनाए रखी है कि कितना अच्छा होता यदि आदमी दूसरों के लिए परमार्थी, वचन का पक्का, नीयत अथवा स्वभाव का सच्चा, नि:स्वार्थी होता। वह दगाबाज व दुश्चरित्र न होता तथा हिम्मतवाला व बड़े हृदय वाला होता। यदि आदमी ईश्वर के द्वारा दी गई मानवीय गुणों की धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखें, तो मानवता का कल्याण हो जाए और संसार से भय और आतंक का अंत हो जाए।

3. **'स्वार्थ का चहबच्चा' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?**

उ०– इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि मनुष्य अपने स्वार्थों का खजाना (चहबच्चा) न हो, उसके हृदय में सिर्फ अपने स्वार्थ की भावना नहीं होनी चाहिए अर्थात् वह चोरी छिपे भी अपने स्वार्थों का पोषण न करें। यदि हम स्वार्थ में आकंठ डूब जाएँगे तो समाज हमें घृणित दृष्टि से देखेगा।

4. **'मौत का बाराती' पंक्ति के माध्यम से कवि ने किस ओर संकेत किया है?**

उ०– इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने मनुष्यों के स्वार्थों की ओर संकेत करते हुए कहा है कि मनुष्य यदि अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए मौत का बाराती अथवा सौदागर न बने तो कितना अच्छा हो। क्योंकि मनुष्य अपने हितों की पूर्ति के लिए मौत का खेल खेलने से भी नहीं चूकता।

5. **सितार के बोल से शहद की पँखुड़ियाँ किस प्रकार खुलती हैं?**

उ०– संगीतकार जब हृदय की शीतलता प्रदान करने के लिए सितार पर संगीत की तान छेड़ता है, तब संगीत के जो स्वर फूटते हैं उनसे शहद की पँखुरियाँ खुलती चली जाती हैं और जैसे-जैसे संगीत का माधुर्य बढ़ता है, वैसे-वैसे उससे प्राप्त होने वाले आनंदरस की मधुरता और गाढ़ी होती जाती है।

6. **'आग के ओठ बोलते हैं' पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है?**

उ०– यहाँ कवि का तात्पर्य है कि दु:खों से जलते-तपते हृदय को शीतलता प्रदान करने के लिए जब कोई सितार पर संगीत की तान छेड़ता है, तब संगीत के जो स्वर निकलते हैं। वह वास्तव में आग से जलते होठों की व्यथा होती है अर्थात् संगीत के स्वर दु:खी हृदय को शीतलता प्रदान करते हैं।

7. **संगीत-समारोह में कौमार्य कैसे बरसता है?**

या

रात्रि में आयोजित संगीत-समारोहों में क्या होता है?

उ०– जब संगीतकार संगीत रस में डूब जाता है और ज्यों-ज्यों वह अपने अतीत की स्मृतियों में खोने लगता है, त्यों-त्यों संगीत समारोह अपने यौवन को प्राप्त करता जाता है। रात की चाँदनी में नहाई शांति संगीत के आनंद को चरम पर पहुँचा देती है।

8. **काव्य लोक में कब कौन विचरण करती है?**

उ०– जब संगीत समारोह अपने यौवन को प्राप्त कर लेता है और व्यक्ति के मन में कोमल भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं, उस समय

आनंद का हंस अबाध गति से तैरने लगता है। इसी आनंदरूपी हंस पर सवार होकर सरस्वती काव्य लोक में विचरण करने लगती है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

3. केदारनाथ का जीवन परिचय लिखिए तथा उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– केदारनाथ अग्रवाल हिंदी काव्य की प्रगतिवादी काव्यधारा के अनन्य कवि हैं। इन्होंने अपनी साहित्यिक कृतियों से हिंदी-साहित्य में अप्रतिम योगदान दिया। काव्य रचनाओं में ही नहीं, बल्कि गद्य साहित्य में भी इन्होंने साहित्य सृजन किया। अत: साहित्य के प्रति उनकी अनुपम उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए उन्हें समय-समय पर विभिन्न हिंदी संस्थानों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

जीवन परिचय– केदारनाथ अग्रवाल जी का जन्म 1 अप्रैल 1911 ई. को उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के कमासिन गाँव में हुआ था। केदार जी की माता का नाम घसिट्टो तथा पिता का नाम हनुमान प्रसाद था। इनकी आरंभिक शिक्षा कमासिन गाँव में हुई। कक्षा तीन तक पढ़ने के बाद रायबरेली से कक्षा छ: उत्तीर्ण की। कक्षा सात व आठ कटनी के जबलपुर से उत्तीर्ण की। इसी समय पार्वती नामक कन्या से इनका विवाह हो गया। इसके पश्चात् केदार जी इलाहाबाद गए। इविंग क्रिश्चियन कॉलेज से इंटर पास करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक तथा डी.ए.वी.कॉलेज कानपुर से एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 22 जून सन् 2000 को साहित्य के इस महान उपासक का देहांत हो गया।

केदारनाथ अग्रवाल का इलाहाबाद से गहरा रिश्ता था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान ही उन्होंने लिखने की शुरूआत की। उनकी लेखनी में प्रयाग की प्रेरणा का बड़ा योगदान रहा है। प्रयाग के साहित्यिक परिवेश से उनके गहरे रिश्ते का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनकी सभी मुख्य कृतियाँ इलाहाबाद के परिमल प्रकाशन से ही प्रकाशित हुईं। प्रकाशक शिवकुमार सहाय उन्हें पितातुल्य मानते थे और 'बाबूजी' कहते थे। लेखक और प्रकाशक में ऐसा गहरा संबंध जल्दी देखने को नहीं मिलता। यही कारण रहा कि केदारनाथ ने दिल्ली के प्रकाशकों का प्रलोभन ठुकराकर परिमल से ही अपनी कृतियाँ प्रकाशित करवाईं। उनका पहला कविता संग्रह 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' परिमल से ही प्रकाशित हुआ था।

रचनाएँ– केदार जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं–

(अ) काव्य-कृतियाँ– अपूर्वा, फूल नहीं रंग बोलते हैं, लोक और आलोक, नींद के बादल, पंख और पतवार, कहे केदार खरी-खरी, युग की गंगा, खुली आँखें खुले डैने आदि

(ब) गद्य साहित्य– बस्ती खिले गुलाबों की, यात्रा संस्मरण, विवेक-विमोचन, समय समय पर, दतिया (उपन्यास), विचारबोध आदि

2. केदारनाथ जी ने अपने काव्य में किस भाषा-शैली का प्रयोग किया है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– केदारनाथ जी ने अपने काव्य में आम बोलचाल की सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया है, तथापि उनकी भावाभिव्यक्ति अत्यंत प्रभावपूर्ण है। ग्रामीण बोलचाल के शब्दों से युक्त व्यावहारिक भाषा को अपनाते हुए उन्होंने तत्कालीन यथार्थ परिस्थितियों का चित्रण किया है। अन्य प्रगतिवादी कवियों की भाँति उन्होंने मुहावरों, लोकोक्तियों को प्रमुखता न देते हुए जनता के विविधतापूर्ण जीवन, सौंदर्य-चेतना एवं श्रम को वाणी दी। उन्होंने गहन संवेदना के स्वर से युक्त संगीतात्मक भाषा को अपनाया। जनता के श्रम, सौंदर्य एवं जीवन की विविधता का वर्णन करने वाले केदार हिंदी प्रगतिवादी कविता का अलग ही चेहरा थे। शैली के रूप में इन्होंने मुक्तक शैली को ही प्राथमिकता दी है।

3. केदारनाथ जी ने अपने काव्य में जीवन के किन पक्षों पर प्रकाश डाला है?

उ०– जनवादी चेतना के सजग प्रहरी केदार जी की कविता का प्रमुख विषय मनुष्य और जीवन है। उनकी कविताएँ व्यापक जीवन-संदर्भों के साथ ही मनुष्य की सौंदर्य-चेतना से जुड़ती है। इसके साथ-साथ वे प्रगतिवादी हिंदी कविता में स्वकीया प्रेम के विरल कवि हैं। वे धरती व धूप के कवि तो हैं ही; लोकजीवन, प्रकृति और मानव की संघर्ष चेतना भी उनके काव्य में प्रचुर मात्रा में मिलती है। केदारनाथ जी ने अपने काव्य में जनता के श्रम, सौंदर्य एवं जीवन की विविधता का वर्णन किया है। वे अपने रचनात्मक विस्तार में जगह-जगह प्रगतिवाद के प्रचलित मुहावरों का निषेध करते हुए नए ढंग से प्रगतिशीलता गढ़ते थे। जिसकी आस्था मनुष्य और जीवन में है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) अच्छा होता .... कच्चा होता।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी के 'काव्यखंड' में संकलित 'केदारनाथ अग्रवाल' द्वारा रचित 'अपूर्वा' काव्य संग्रह से 'अच्छा होता' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत कविता-पंक्तियों में कवि 'मनुष्य को मनुष्य के लिए कैसा होना चाहिए' इस पर प्रकाश डाल रहे हैं।

व्याख्या– श्री केदारनाथ अग्रवाल जी का कहना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में रहता भी है। कितना अच्छा होता कि वह स्वार्थी न होकर परमार्थ की भावना लिए हुए होता और परमार्थ के लिए कार्य करता, स्वार्थ उसे छूता तक नहीं। लेकिन वह स्वार्थी है, बिना स्वार्थ के तो वह दूसरों से बात तक करना उचित नहीं समझता। वृक्ष, नदी, सूर्य आदि को देखिए, दूसरों को सुख प्रदान करना ही इनका उद्देश्य है। एक मनुष्य ही है जो सब कुछ जानते— समझते हुए भी परार्थी नहीं होना चाहता। परार्थी होने के लिए व्यक्ति को ईमानदार और इरादों का पक्का होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो हम परार्थी हो ही नहीं सकते। परार्थ के अभाव में हमारे अंत:करण में स्वार्थ की भावना जन्म लेने लगेगी। यदि हम स्वार्थ में आकंठ डूब जाएँगे तो समाज हमें कुत्सित दृष्टि से देखेगा, हमें अपराधी समझेगा और हमारी ओर अँगुली उठाएगा। यदि हमें समाज में सिर ऊँचा करके रहना है तो स्वार्थ का त्याग करना होगा और परस्पर कंधे से कंधा मिलाकर एक-दूसरे को विकास की ओर अग्रसर करना होगा। यदि हम अपने तक ही सीमित रहेंगे तो हम मानवता का अथवा मानव-समाज का हित नहीं कर सकते। अत: व्यक्ति को परार्थी होना चाहिए और प्रत्येक कार्य परमार्थ की भावना से करना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. मनुष्य को स्वार्थ का त्याग कर मानवता की भावना से कार्य करने की प्रेरणा दी गई है। **2.** कविता में यद्यपि कवि ने मनुष्य के दोषों का उल्लेख किया है कि वास्तव में उसने 'अच्छा होता' कहकर इन दोषों को त्यागने का संकल्प ही व्यक्त किया है। **3. भाषा–** लोकभाषा व अन्य भाषा के शब्दों से युक्त खड़ीबोली **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. छंद–** मुक्त **7. अलंकार–** अनुप्रास।

(ब) अच्छा होता ....बराती होना।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– 'मनुष्य को मनुष्य के लिए कैसा होना चाहिए' के विषय में आगे बताते हुए कवि कहता है कि मनुष्य यदि ईमानदार, मिथ्या अभिमान से रहित हो तथा आतंकवादी न हो तो बहुत ही अच्छी बात है। वास्तव में कवि मनुष्य में सभी मानवीय गुणों का समावेश चाहते हैं।

व्याख्या– कवि श्री केदारनाथ अग्रवाल जी कहते हैं कि कितना अच्छा होता यदि व्यक्ति स्वार्थी न होकर परार्थी होता। यदि व्यक्ति उदार होता; अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की मदद करने वाला होता; हिम्मती होता तो बहुत ही अच्छा होता। बहुत ही अच्छा होता यदि वह किसी की धरोहर की रक्षा करने वाला होता, किसी के साथ धोखा न करने वाला होता। आज ऐसा नहीं है। आज का व्यक्ति दूसरे लोगों को धोखा देने में, ठगने में ही अपनी चतुराई समझता है, व्यक्ति को दु:खी देखकर उसके दु:ख का सहभागी नहीं बनता। पुन: कवि कहता है कि व्यक्ति यदि किसी की ईमानदारी पर चोट करने वाला, ठग, जातिवाद के मिथ्या अभिमान से ग्रसित, आतंकवादी न होता तो बहुत ही अच्छा होता। निष्कर्ष रूप से कवि सभी व्यक्तियों को यथासंभव समस्त मानवीय गुणों से युक्त देखना चाहता है।

काव्यगत सौंदर्य–1. कवि आशा करता है कि सभी व्यक्तियों में मानवीय गुणों का विकास हो। **2.** अमानवीय गुणों के त्याग पर बल दिया गया है। **3. भाषा–** लोकभाषा के शब्दों से युक्त खड़ीबोली **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. छंद–** मुक्त **7. अलंकार–** अनुप्रास।

(स) आग के ओठ .... शहद की पंखुरियाँ।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में संकलित 'केदारनाथ अग्रवाल' द्वारा रचित 'अपूर्वा' काव्य संग्रह से 'संगीत सितार की रात' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने संगीत के उद्भव पर प्रकाश डालते हुए मानव हृदयों में व्याप्त दु:खों को उनका स्रोत बताया है।

व्याख्या– कवि केदारनाथ जी कहते हैं कि शांत सुनसान रात में मानव के जलते हृदय की आग (दु:खों) से शीतलता प्रदान करने के लिए जब कोई सितार पर संगीत की तान छेड़ता है, तब सितार से जो संगीत के स्वर प्रस्फुटित होते हैं, वे वास्तव में आग से जलते ओठों की व्यथा कथा होती है अर्थात मनुष्यों के हृदय की पीड़ा होती है। संगीतकार जैसे-जैसे उस

संगीत के प्रवाह में डूबता जाता है, उसके मन की एक-एक परत खुल जाती है और संगीत की मधुरता बढ़ती जाती है; जैसे-जैसे संगीत का माधुर्य बढ़ता है, वैसे-वैसे उससे प्राप्त होने वाले आनंद की मधुरता भी गाढ़ी होती जाती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि का मानना है कि वास्तविक संगीत का स्रोत जीवन में दु:ख है। **2.** दु:खों के बीच से भी आनंद रस प्राप्त करने में भी जीवन की सार्थकता है। **3. भाषा–** संस्कृत शब्दों से युक्त खड़ी बोली **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. छंद–** मुक्त **7. अलंकार–** अनुप्रास, मानवीकरण तथा रूपक।

(द) चूमती अंगुलियों ....चंद्रमा के साथ।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने विभिन्न रागों के रात्रि में चाँदनी के प्रकाश में गायन का वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि जब व्यक्ति एक बार अपने दु:खों में डूबकर उससे उत्पन्न संगीत के आनंद का रस लेने लगता है तो सितार (जीवन) के तारों को चूमती हुई उँगलियाँ स्वयं ही उन पर नृत्य करने लगती हैं और उससे एक-से बढ़कर एक राग हवा में तैरते हुए आनंद क्रीड़ा करने लगते हैं।

रात्रि के खुले विस्तृत वक्ष पर चंद्रमा के साथ जब ये राग मचलते हैं तो उससे प्राप्त आनंद असीम होता है। यह संगीत का सत्य है कि रात्रि में शांति से नहाई चाँदनी उसके आनंद को चरम पर पहुँचा देती है। इसीलिए संगीत के रागों का गायन रात्रि के विभिन्न प्रहरों में किया जाता है और संगीत समारोह भी प्राय: रात्रि में ही आयोजित किए जाते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि को संगीत की अच्छी समझ है, यह बात यहाँ प्रमाणित होती है। **2.** संगीत की रात्रि का प्रतीक रूप में चित्रण किया गया है। **3. भाषा–** संस्कृत शब्दों से युक्त खड़ी बोली **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. छंद–** मुक्त **7. अलंकार–** श्लेष।

(य) शताब्दियाँ ....विचरण करती हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि यहाँ स्पष्ट करना चाहता है कि दु:खों से आनंद रस ग्रहण करने पर संगीत और साहित्य (काव्य) की रचना होती है।

व्याख्या– कवि कहता है कि संगीत रस में एक बार डूब जाने पर जब व्यक्ति मन की खिड़की से झाँककर आनंद के असीम आकाश पर अपनी दृष्टि डालता है तो वह अपने शताब्दियों पुराने अतीत में गोते लगाने लगता है। वह ज्यों-ज्यों अपने अतीत की स्मृतियों में खोने लगता है, त्यों-त्यों संगीत समारोह अपने यौवन को प्राप्त करता जाता है अर्थात् व्यक्ति के मन में कोमल- सौम्य भावनाओं की झड़ी लग जाती है। इस समय व्यक्ति का मन श्वेत दूध की भाँति निर्मल और स्वच्छ हो उठता है और उस पर हर्ष अथवा आनंद का हंस निर्द्वंद्व होकर अबाध गति से तैरने लगता है। इसी आनंदरूपी हंस पर सवार होकर सरस्वती काव्य- लोक में विचरण करने लगती है। आशय यही है कि संसार के दु:खों से उत्पन्न आनंद ही काव्य और संगीत की पृष्ठभूमि तैयार करता है। जब भी, जैसे भी यह पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है, काव्य और संगीत की देवी सरस्वती सक्रिय होकर भाव जगत् में विचरण करने लगती है, जिसके परिणामस्वरूप काव्य और संगीत का जन्म होता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1.कवि ने काव्य और संगीत का स्रोत दु:खों को माना है। **2.** कवि की यह विचारधारा छायावादी कवियों से प्रभावित है। क्योंकि उन्होंने भी ऐसी ही भावना व्यक्त की है। **3. भाषा–** संस्कृत शब्दों से युक्त खड़ीबोली **4. रस–** शांत व श्रृंगार **5. गुण–** प्रसाद **6. छंद–** मुक्त **7. अलंकार–** रूपक और मानवीकरण।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) परार्थी
पक्का
और नियति का सच्चा होता।

भाव स्पष्टीकरण– कवि का तात्पर्य है कि आदमी को अपने मानवीय गुणों को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहिए। उसे अपने स्वार्थ का त्याग कर दूसरों की भलाई की कामना करते हुए अपने वचनों पर पक्का रहना चाहिए। दूसरों के कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प लेना चाहिए और अपने आचरण द्वारा उसे पूरा करके दिखाना चाहिए। उसे नीयत का सच्चा तथा उसमें लेशमात्र भी छल-कपट नहीं होना चाहिए।

(ब) चूमती अँगुलियों के नृत्य पर,
राग पर राग करते हैं किलोल।

भाव स्पष्टीकरण– कवि ने यहाँ स्पष्ट किया है कि जब व्यक्ति संगीत की धारा में डूब जाता है तो सितार के तारों को चूमती हुई उँगलियाँ उन पर स्वयं ही नृत्य करने लगती हैं, जिससे एक से बढ़कर एक राग हवा में क्रीड़ा करने लगते हैं अर्थात जब व्यक्ति संगीत के आनंद रस में डूब जाता है तो उसे परम आनंद मिलता है तथा नए-नए रागों का सृजन होता है।

(स) शताब्दियाँ झाँकती हैं,
अनंत की खिड़कियों से।

भाव स्पष्टीकरण– कवि ने स्पष्ट किया है कि संगीत रस में डूब जाने के बाद जब आदमी मन की खिड़की से झाँकता है तो आनंद के असीम आकाश पर उसकी दृष्टि पड़ती है, जिससे वह शताब्दियों पुराने अपने अतीत में चला जाता है। जैसे-जैसे वह अतीत की यादों में डूबता जाता है वैसे-वैसे संगीत अपने यौवन को प्राप्त करने लगता है। अर्थात् अतीत की स्मृति की कोमल भावनाएँ एक-एक कर सामने आने लगती हैं।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. केदार जी का जन्म-स्थान है–

(अ) प्रयाग (ब) काशी
(स) कानपुर (द) **बाँदा**

2. केदार जी का जन्म सन् है–

(अ) 1892 ई. (ब) 1900 ई.
(स) **1911 ई.** (द) 1905 ई.

3 केदार जी की प्रथम कृति है–

(अ) अपूर्वा (ब) नींद के बादल
(स) **फूल नहीं रंग बोलते हैं** (द) खुली गंगा

4. केदार जी को हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के द्वारा कौन-सी उपाधि से सम्मानित किया गया?

(अ) डी.लिट्. (ब) साहित्य अकादमी
(स) **साहित्य वाचस्पति** (द) तुलसी पुरस्कार

5 केदार जी की रचना है–

(अ) गीतांजली (ब) मधुशाला
(स) प्रिय-प्रवास (द) **खुली आँखें खुले डैने**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

चरित्र का कच्चा (चरित्रहीन)– समाज में **चरित्र के कच्चे** व्यक्तियों की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती है।

हृदय की थाती (हृदय की धरोहर)– सत्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी को सदैव **हृदय की थाती** मानकर सँजोकर रखना चाहिए।

ईमान का घाती (विश्वासघात करने वाला)– **ईमान के घाती** व्यक्ति देश की अखंडता के लिए हानिकारक हैं।

मौत का बराती (मृत्यु पर प्रसन्न होने वाला, आतंकवादी)– समाज में आजकल **मौत के बरातियों** की संख्या बढ़ती जा रही है।

स्वार्थ का चहबच्चा (स्वार्थ का खजाना)– स्वार्थी व्यक्ति सदैव **स्वार्थ के चहबच्चे** को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए उन शब्दों को लिखिए, जिनके अर्थ को ये वाक्यांश बनाते हैं–

(अ) जिसका कभी अंत न हो **अनंत**
(ब) सौ वर्षों का समय **शताब्दी**
(स) विद्या की देवी **सरस्वती**
(द) धोखा देने वाला **धोखेबाज**

(य) रुपया–पैसा गाड़कर रखने के लिए
बनाया गया गड्ढा — **चहबच्चा**

(र) वर के साथ चलने वाले लोग — **बाराती**

(ल) दूसरों का हित चाहने वाला — **परार्थी**

3. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार और रस को पहचानिए–

(अ) शताब्दियाँ झाँकती हैं,
अनंत की खिड़कियों से,
संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है।

उ०– अलंकार — अनुप्रास, मानवीकरण
रस — श्रृंगार

(ब) न स्वार्थ का चहबच्चा
न दगैल दागी
न चरित्र का कच्चा होता

उ०– अलंकार — अनुप्रास
रस — शांत

(छ) पाठ्येतर सक्रियता
विद्यार्थी स्वयं करें।

संस्कृत खंड
प्रथमः पाठः वन्दना

<u>अभ्यास</u>

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का संदर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) असतो मा सद् ....मृत्योर्माऽमृतं गमय॥

[**असतो** = बुराई से, **सद्** = भलाई, **गमय** = ले चलो, **तमसः** = अंधकार से, **ज्योतिर्गमय** = प्रकाश की ओर ले जाओ, **मृत्योः** = मृत्यु से, **अमृत** = अमरता की ओर।]

संदर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'वन्दना' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– हे ईश्वर! तुम मुझे बुराई से भलाई की ओर ले चलो। अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाओ। मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाओ।

(ख) नमो ब्रह्माणे.................................वक्तारम्॥

[ब्रह्माणे = ब्रह्मा को, **त्वमेव** = तुम ही, **त्वामेव** = तुमको ही, **ऋतम्** = वास्तविक सच्चाई, **तद्** = वह, **माम्** = मेरी, **अवतु** = रक्षा करें, **वक्तारम्** = बोलने वाले की ।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– ब्रह्म को नमस्कार हो। हे ईश्वर! तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। मैं तुमको ही प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। मैं तुम्हें वास्तविक सच्चाई अर्थात् यथास्थिति कहूँगा। सत्य कहूँगा। वह ब्रह्म मेरी रक्षा करे। वह ब्रह्म वक्ता (स्तुति करने वाले) की रक्षा करे। मेरी रक्षा करे, वक्ता की रक्षा करे।

(ग) तेजोऽसि तेजो......................................मयि धेहि।

[**तेजोऽसि** = तुम तेजस्वरूप हो, **मयि** = मुझमें, **धेहि** = धारण करना, **वीर्यम्** = पराक्रम, **बलमसि** = तुम बल (स्वरूप) हो, **ओजोऽसि** = तुम ओज (स्वरूप) हो।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– हे ईश्वर! तुम कांति (प्रकाश, तेज) स्वरूप हो, मुझमें भी तेज धारण कराओ। तुम पराक्रम स्वरूप हो, मुझमें भी पराक्रम धारण कराओ। तुम बलस्वरूप हो, मुझमें भी बल धारण कराओ। तुम ओजस्वरूप हो, मुझमें भी ओज धारण कराओ।

(घ) सत्यव्रतं सत्यपरं..शरणं प्रपन्नाः।।

[**सत्यव्रत्** = सत्य का व्रत धारण करने वाले, **सत्यपरं** = सत्य के मार्ग पर तत्पर रहने वाले, **त्रिसत्यं** = त्रिकाल (भूत, भविष्यत् और वर्तमान) में सत्य पृथ्वी, आकाशादि पञ्चभूत, **योनिम्** = उत्पत्ति स्थान, **सत्यस्य सत्यम्** = पञ्चभूतों का नाश होने पर भी सत्य, **प्रपन्नाः** = प्राप्त हुए हैं।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– हे ईश्वर, तुम सत्य का व्रत धारण करने वाले (सत्यनिष्ठ) हो। तुम सत्य के मार्ग पर तत्पर रहने वाले (सत्यपरायण) हो। तुम त्रिकाल (भूत, भविष्य और वर्तमान) में सत्य हो। तुम सत्य को उत्पन्न करने वाले हो और सत्य में स्थित रहने वाले हो। तुम सत्य (पञ्चभूतों का नाश होने पर भी सत्य) हो। तुम सत्य के प्रवर्तक हो। हे ईश्वर! हम तुम्हारी शरण को प्राप्त हुए हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) भक्तः ईश्वरं किम् किम् याचते?

उ०– भक्त: ईश्वरं तेज:, वीर्यम्, बलम्, ओज: च याचते।

(ख) भक्तः असतो कुत्र गन्तुम् इच्छति?

उ०– भक्त: असतो सत प्रति गन्तुम् इच्छति।

(ग) भक्तः मृत्योः कुत्र गन्तुम् इच्छति?

उ०– भक्त: मृत्यो: अमरत्वं प्रति गन्तुम् इच्छति।

(घ) 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अस्या पंक्त्या किम् अर्थम् अस्ति?

उ०– 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थम् अस्ति हे ईश:, मा तमस: ज्योति: गमय।

(ङ) 'तेजोऽसि तेजोमयि धेहि' कथनं कस्य कं प्रति?

उ०– 'तेजोऽसि तेजोमयि धेहि' ईश्वरस्य प्रति।

(च) भक्तः काम् प्रतिज्ञां करोति?

उ०– भक्त: अहं ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि इति प्रतिज्ञां करोति।

(छ) ईश्वरस्य स्वरूपं किम् अस्ति?

उ०– ईश्वरस्य स्वरूपं सत्यं अस्ति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. हे ईश्वर! मुझे अंधकार से प्रकार की ओर ले चलो।

अनुवाद– हे ईश्वर! माम् अंधकारेण ज्योति: गमय।

2. आप तेजस्वी हो।

अनुवाद– भवान् तेजो: असि।

3. मैं सत्य कहूँगा।

अनुवाद– अहम् सत्यं वदिष्यामि।

4. भक्त ईश्वर से बल माँगता है।

अनुवाद– भक्त: ईश्वरात् बलम् याचते।

5. एक बार राजा मंत्री के साथ आखेट के लिए वन जाते हैं।

अनुवाद– एकदा नृप: मंत्रिय: सह आखेटाय वनं गच्छति।

6. मैं आपकी शरण में हूँ।

अनुवाद– अहम् भवान् शरणं प्रपन्ना:।

7. **तुम कभी झूठ नहीं बोलोगे।**

अनुवाद– त्वं कदा असत्यं न वदिष्यसि।

8. **हे ब्राह्मण आपको नमस्कार है।**

अनुवाद– हे ब्राह्मण! भवान् नमस्कारम् अस्ति।

9. **हमारे पशुओं को भी भयमुक्त कर दो।**

अनुवाद– अस्माकं पशुभ्य: निर्भया: कुरु।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए–**

संधि विच्छेद	**संधि विच्छेद**
मामृतम्	मा + अमृतम्
तेजोऽसि	तेज: + असि
शन्न:	शम् + न:
त्वमेव	त्वम् + एव
ब्रह्मासि	ब्रह्म + असि
ज्योतिर्गमय	ज्योति: + गमय
वीर्यमसि	वीर्य + असि
नोऽभयं	न: + अभयम्
मृत्योर्मा	मृत्यु: + मा

2. **निम्नलिखित धातु रूपों के लकार, पुरुष व वचन बताइए–**

धातु रूप	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
वदिष्यामि	लृट	उत्तम	एकवचन
कुरु	लोट्	मध्यम	एकवचन
असि	लट्	मध्यम	एकवचन
अवतु	लोट्	प्रथम	एकवचन

3. **निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–**

संधि विच्छेद	**संधि शब्द**
न: +अभयम्	नोऽभयं
बलम् + असि	बलमसि
ओज: + असि	ओजोऽसि
तद्+ माम +अवतु	तन्मामवतु
वक्तारम् +अवतु	वक्तारमवतु
पर + उपकार	परोपकार
विद्या + आलय	विद्यालय

4. **निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति व वचन बताइए–**

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
तमस:	पञ्चमी/षष्ठी	एकवचन
माम्	द्वितीय	एकवचन
सत्यस्य	षष्ठी	एकवचन
त्वम्	प्रथमा	एकवचन
असत:	पञ्चमी/षष्ठी	एकवचन
त्वाम्	द्वितीय	द्विवचन

शब्द	विभक्ति	वचन
मयि	सप्तमी	एकवचन
बलम्	द्वितीय	एकवचन
ब्रह्मणे	चतुर्थी	एकवचन
पशुभ्य:	पञ्चमी	बहुवचन

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	विलोम
असत:	सद्
तमस:	ज्योति:
बलम्	अबलम्
सत्यं	असत्यं
मृत्यो	अमृतो
प्रत्यक्षं	अप्रत्यक्षं
भयम्	निर्भयम्

(द) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

द्वितीयः पाठः सदाचारः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित अवतरणों का संदर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) विनयः हि मनुष्याणां ....आचारः अनुकरणीयः।

[**उद्भवति =** पैदा होता है, **अन्येऽपि =** अन्य भी, **दाक्षिण्यम् =** उदारता, दानशीलता, **शिक्षेरन् =** सीखते थे, **एतेषां =** इनका।]

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के संस्कृत खंड के 'सदाचार:' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– विनम्रता (विनय) ही मनुष्यों का आभूषण है। विनयशील मनुष्य सभी लोगों को प्रिय होता है। विनम्रता सदाचार से उत्पन्न होती है। सदाचार से न केवल विनय अपितु अन्य विविध सुंदर गुण भी विकसित होते हैं; जैसे– धैर्य, उदारता, दानशीलता, संयम (इंद्रियों को वश में रखना), आत्मविश्वास, निडरता। हमारी भारतभूमि का सम्मान संसार में सदाचार से ही था। पृथ्वी पर सब मनुष्य भारत के सदाचारी (सदाचारपरायण) पुरुषों से ही अपने–अपने चरित्र की शिक्षा प्राप्त करते थे। भारतभूमि अनेक सदाचारी पुरुषों की जननी है। इन महापुरुषों का आचरण अनुकरण के योग्य है।

(ख) सदाचारः नाम ....शक्यते।

[**नियमसंयमोः =** नियम और संयम का, **मूले =** जड़ में, **युक्ताहारविहारेण =** अच्छे आहार और विहार से, **युक्तास्वप्नावबोधेन =** सही समय पर सोना और जागना, **अयुक्तम् =** अनुचित, **निर्णेतुं शक्यते =** निर्णय किया जा सकता है।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– नियम और संयम का पालन ही सदाचार है। इंद्रियों का संयम ही सदाचार के मूल में विद्यमान है। इंद्रियों का संयम उचित आहार और विहार से तथा उचित समय पर सोने और जागने से संभव होता है। क्या उचित है और क्या अनुचित है; इसका निर्णय सदाचार से ही हो सकता है।

(ग) ये केऽपि ....गच्छति।

[**ये =** जो, **केऽपि =** कोई भी, **अभवन् =** हुए हैं, **गताः =** प्राप्त हुए हैं, **अधीते =** अध्ययन करता है, **शेते =** सोता है, **जागर्ति =** जागता है, **अभ्युदयम् =** उन्नति को।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– जो कोई भी महान पुरुष हुए हैं, वे संयम और सदाचार से ही उन्नति को प्राप्त हुए हैं। जो मनुष्य समय से अध्ययन करता है, समय पर सोता है, जागता है, खाता है और पीता है, वह निश्चय ही उन्नति को प्राप्त करता है।

(घ) सर्वलक्षणहीनोऽपि ....परमं धनम्।।

[**सर्वलक्षणहीन =** सभी लक्षणों से रहित, **श्रद्धालु =** श्रद्धा रखने वाला, **अनसूयः =** दूसरों की निंदा न करने वाला, **शत वर्षाणि =** सौ वर्षों तक, **आचारालभते =** सदाचार से प्राप्त करता है, **श्रियम् =** लक्ष्मी, **परमं =** श्रेष्ठ]

संदर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी के 'संस्कृत खंड' से 'सदाचारः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– सभी लक्षणों से रहित होने पर भी जो पुरुष सदाचारी, श्रद्धा रखने वाला, दूसरों की निंदा न करने वाला होता है, वह सौ वर्षों तक जीता है। निश्चय ही मनुष्य सदाचार से दीर्घायु प्राप्त करता है, सदाचार से लक्ष्मी प्राप्त करता है,सदाचार से कीर्ति (यश) प्राप्त करता है। सदाचार परम (श्रेष्ठ) धन है।

(च) वृत्तं यत्नेन ....हतो हतः।।

[**वृत्तं =** चरित्र, **संरक्षेत् =** रक्षा करनी चाहिए, **वित्तम् =** धन, **आयाति =** आता है, **याति =** जाता है, **अक्षीणो =** कुछ भी नष्ट नहीं हुआ, **हतः =** नष्ट हुआ।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– चरित्र की प्रयत्न से रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता है और चला जाता है। धन के नष्ट होने पर कुछ भी नष्ट नहीं होता। चरित्र के नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) सदाचारः किम् अस्ति?

उ०– सज्जनानाम् आचार: सदाचार: अस्ति।

(ख) सज्जनाः के भवन्ति?

उ०– ये जना: सद् एव विचारयन्ति, सद् एव वदन्ति, सद् एव आचरन्ति, च ते एव सज्जना: भवन्ति।

(ग) मनुष्याणां भूषणं किम् अस्ति?

उ०– विनय: मनुष्याणां भूषणं अस्ति।

(घ) कः जनः सर्वेषाम् प्रियः भवति?

उ०– विनयशील: जन: सर्वेषाम् प्रिय: भवति।

(ङ) विनयः कस्मात् उद्भवति?

उ०– विनय: सदाचारात् उद्भवति।

(च) सदाचारात् के के गुणाः विकसन्ति?

उ०– सदाचारात् विनय:, धैर्यम् , दाक्षिण्यम् , संयम:, आत्मविश्वास: निर्भीकता गुणा: विकसन्ति।

(छ) भारत भूमि केषाम् पुरुषाणां जननी अस्ति?

उ०– भारत भूमि अनेकेषां सदाचारिणां पुरुषाणां जननी अस्ति।

(ज) केषाम् आचारः अनुकरणीयः?

उ०– महापुरुषाणाम् आचार: अनुकरणीय:।

(झ) कः सदाचारस्य मूले तिष्ठति?

उ०– इन्द्रियसंयम: सदाचारस्य मूले तिष्ठति।

(ञ) किम् परमं धनम्?

उ०– मनुष्याणां आचार: परमं धनम् अस्ति।

(ट) इन्द्रियसंयमः कथम् सम्भवति?

उ०– इन्द्रियसंयम: युक्ताहारविहारेंण, युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति।

(ठ) **केन प्रकारेण जनः निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति?**

उ०– यः जनः नियमेन अधीते, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च स निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति।

(ड) **कस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः?**

उ०– सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः।

(ढ) **अस्माभिः सदा कस्य रक्षा कार्या?**

उ०– अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या।

(ब) **अनुवादात्मक**

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **विनय ही मनुष्यों का आभूषण है।**
   अनुवाद– विनयः हि मनुष्याणां आभूषणम् अस्ति।
2. **विनय सदाचार से उत्पन्न होता है।**
   अनुवाद– विनयः सदाचारात् उद्भवति।
3. **सज्जनों का आचरण ही सदाचार होता है।**
   अनुवाद– सज्जनानाम् आचारः एव सदाचारः भवति।
4. **अच्छे आचरण से यश प्राप्त होता है।**
   अनुवाद– सदाचारात् कीर्तिं लभते।
5. **पुत्र माता के साथ बाजार जाता है।**
   अनुवाद– पुत्रः मात्रेण सह हट्टं गच्छति।
6. **साधु वन में रहते हैं।**
   अनुवाद– साधुः वने निवसन्ति।
7. **सदाचार की महिमा शास्त्रों में भी कही गई है।**
   अनुवाद– सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः।
8. **हमें चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।**
   अनुवाद– वयं चरित्रस्य रक्षां कुर्याम।
9. **हम सब खाते हैं।**
   अनुवाद– वयम् खादामः।
10. **सज्जन हमेशा सच बोलते हैं।**
   अनुवाद– सज्जनानाम् सर्वदा सत्यं वदन्ति।

(स) **व्याकरणात्मक**

1. **निम्नलिखित शब्द रूप किस विभक्ति और वचन के हैं?**

शब्द रूप	**विभक्ति**	**वचन**
महाभारते	सप्तमी	एकवचन
सदाचारेण	तृतीय	एकवचन
शास्त्रेषु	सप्तमी	बहुवचन
कीर्तिम्	द्वितीया	एकवचन
पृथिव्यां	सप्तमी	एकवचन
ते	प्रथमा	बहुवचन
परायणात्	पञ्चमी	एकवचन
वशे	सप्तमी	एकवचन
संयमेन	तृतीया	एकवचन
सज्जनानाम्	षष्ठी	बहुवचन

शब्द रूप	**विभक्ति**	**वचन**
विनय:	प्रथमा	एकवचन
सर्वे:	तृतीया	बहुवचन
पुरुषा:	प्रथमा	बहुवचन

2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
सदाचार:	सत् + आचार:
तथैव	तथा + एव
सज्जन:	सत् + जन:
सदाचारेणैव	सदाचारेण + एव
आचारल्लभते	आचारात् + लभते
ह्यायु:	हि + आयु:
हीनोऽपि	हीन: + अपि
अभ्युदयम्	अभि + उदयम्

3. 'भवति' में अनु, प्र, परा, सम् उपसर्ग लगाकर एक-एक शब्द बनाइए।

उ०– अनुभवति, प्रभवति, पराभवति, सम्भवति।

4. 'वस्' धातु के लङ् लकार (भूतकाल) के रूप लिखिए।

(वस्) **(लङ् लकार)**

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
मध्यम पुरुष	अवस:	अवसतम्	अवसत
उत्तम पुरुष	अवसम्	अवसाव	अवसाम

5. 'पठिष्यति' क्रिया का काल लिखिए।

उ०– भविष्यत्काल

6. निम्नलिखित क्रिया पदों के धातु रूप, लकार पुरुष व वचन लिखिए–

क्रिया-पद	**धातु-रूप**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
लभते	लभ्	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
पठ	पठ्	लोट् लकार	मध्यम पुरुष	एकवचन
भवन्ति	भू	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
पिबति	पा	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
करोति	कृ	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
हसति	हस	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
पठसि	पठ्	लट् लकार	मध्यम पुरुष	एकवचन
वदन्ति	वद्	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
भवत:	भू	लट् लकार	प्रथम पुरुष	द्विवचन
हसामि	हस	लट् लकार	उत्तम पुरुष	एकवचन
भवथ	भू	लट् लकार	मध्यम पुरुष	बहुवचन

7. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त कारक व विभक्ति बताइए–

	वाक्य	**कारक**	**विभक्ति**
(क)	ते <u>निश्चयेन</u> अभ्युदयं गच्छति।	करण	तृतीया
(ख)	<u>महापुरुषाणाम्</u> आचार: अनुकरणीय:।	संबंध	षष्ठी
(ग)	<u>सज्जना</u>: यथा आचरन्ति, तथैवाचरणं सदाचार: भवति।	कर्ता	प्रथमा

(घ) इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य मूले तिष्ठति। कर्ता प्रथमा
(ङ) सदा चरित्रस्य रक्षां कुर्याम। संबंध षष्ठी
(च) पुरुषाः सदाचारणैव उन्नतिं गताः। कर्म द्वितीया

8. निम्नलिखित शब्दों के वाक्य प्रयोग संस्कृत में कीजिए–

सज्जनः — ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव वदन्ति, सद् एव आचरन्ति च, ते एव **सज्जनाः** भवन्ति।
सदाचारः — सतां सज्जनानाम् आचारः **सदाचारः।**
विनयः — **विनयः** ही मनुष्याणां भूषणम्।
इन्द्रियसंयमः — **इन्द्रियसंयमः** सदाचारस्य मूले तिष्ठति।
वृत्तं — **वृत्तं** यत्नेन संरक्षेत्।
महाभारते — **महाभारते** अपि सत्यम् एव उक्तम् यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या।
शास्त्रेषु — सदाचारस्य महिमा **शास्त्रेषु** अपि वर्णितः।

(द) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

तृतीयः पाठः पुरुषोत्तमः रामः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित अवतरणों का संदर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) इक्ष्वाकुवंशप्रभवो ....वशी॥

[**वंशप्रभवः** = वंश में उत्पन्न, **जनैः** = लोगों के द्वारा, **नियतात्मा** = जिसका मन वश में हो, आत्मसंयमी, **महावीरः** = महान वीर, **द्युतिमान्** = कांतिमान्, **धृतिमान्** = धैर्यवान, **वशी** = इंद्रियों को जीतने वाले।]

संदर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'पुरुषोत्तमः रामः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए राम का नाम लोगों के द्वारा सुना गया है। वे अपने मन को वश में रखने वाले, महान वीर, कांतिमान, धैर्यवान और इंद्रियों को जीतने वाले हैं।

(ख) विपुलांसो ....गूढजत्रुररिन्दमः॥

[**विपुलांसो** = पुष्ट कंधों वाले, **कम्बुग्रीवो** = शंख के समान गर्दन वाले, **महाहनुः** = बड़ी ठोड़ी वाले, **महोरस्को** = विशाल वक्षस्थल वाले, **महेष्वासो** = विशाल धनुष वाले, **गूढजत्रुः** = मांस में दबी हुई नसों वाले, **अरिन्दमः** = शत्रुओं का नाश करने वाले।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– वे (राम) पुष्ट कंधों वाले, विशाल भुजाओं वाले,शंख के समान गर्दन वाले, बड़ी ठोड़ी वाले, विशाल वक्षस्थल वाले, विशाल धनुष वाले, मांस में दबी हुई नसों वाले, शत्रुओं का नाश करने वाले हैं।

(ग) समः ....लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः॥

[**समविभक्ताङ्ग** = समान रूप से विभक्त अंग वाले, **समः** = पक्षपात रहित, **स्निन्धवर्णः** = सुंदर वर्ण वाले, **पीनवक्षा** = पुष्ट वक्षस्थल वाले, **विशालाक्षो** = विशाल नेत्रों वाले।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– वे (राम) पक्षपातरहित, समान रूप से विभक्त अंग वाले, सुंदर वर्ण वाले, प्रतापी, पुष्ट वक्षस्थल वाले, विशाल नेत्रों वाले लक्ष्मीवान तथा शुभ लक्षणों से संपन्न हैं।

(घ) रक्षिता स्वस्य ....निष्ठितः॥

[**स्वस्य** = अपने, **वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञों** = वेद और वेदांगों के तत्व को जानने वाले, **धनुर्वेदे** = धनुर्विद्या में, **निष्ठितः** = निपुण।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– वे (राम) अपने धर्म की रक्षा करने वाले, अपने भक्तों (स्वजनों) के रक्षक, वेद और वेदांग के तत्व को जानने वाले और धनुर्विद्या में निपुण हैं।

(ङ) सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः ....विचक्षणः॥

[**सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः =** संपूर्ण शास्त्रों के अर्थ के तत्व को जानने वाले, **स्मृतिमान् =** अच्छी स्मरण शक्ति वाले, **प्रतिभवान् =** प्रतिभाशाली, **साधुः =** सज्जन, **अदीनात्मा =** उदार आशय वाले अर्थात स्वतंत्र विचार वाले, **विचक्षणः =** विद्वान, चतुर।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– वे (राम) संपूर्ण शास्त्रों के अर्थ के तत्व को जानने वाले, अच्छी स्मरण शक्ति वाले, प्रतिभाशाली, सभी लोगों के प्रिय, सज्जन, उदार आशय वाले अर्थात् स्वतंत्र विचार वाले और विद्वान हैं।

(च) कदाचिदुपकारेण .... शतमप्यात्मशक्तया॥

[**कदाचित् =** कभी, **उपकारेण =** उपकार के द्वारा, **कृते =** करने पर, **एकेन =** एक ही, **तुष्यते =** संतुष्ट करने में, प्रसन्न करने में, **स्मरति =** याद करते हैं, **अपि =** भी, **अपकाराणां =** अप्रिय कार्यों के, बुराइयों को, **शतम् =** सैकड़ों।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– एक बार उपकार के द्वारा दूसरों को प्रसन्न करने वाले (राम) एक हैं अर्थात् ऐसा कार्य करने वाले एकमात्र राम ही हैं। सैकड़ों आत्माएँ उनसे उपकृत हैं, किंतु एक बार भी उन्होंने अपकार किया है, यह याद नहीं है, अर्थात् राम ने कभी किसी के साथ अपकार नहीं किया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) इक्ष्वाकुवंशे कः उत्पन्नः अभवत्?

उ०– इक्ष्वाकुवंशे रामः उत्पन्नः अभवत्।

(ख) रामे के के विशिष्ट गुणाः आसन्?

उ०– रामे वीरता, धृतिः, बुद्धिः, वाग्मिता, धर्मज्ञता, सत्यवादिता, धर्मरक्षणम् इत्यादयः विशिष्टाः गुणाः आसन् ।

(ग) रामस्य छविः कीदृशः आसीत्?

उ०– रामस्य छविः विष्णुना सदृशः आसीत्।

(घ) रामः कस्यां विद्यायां निपुणः आसीत्?

उ०– रामः धनुर्विद्यायां निपुणः आसीत् ।

(ङ) रामः व्यवहारे कीदृशः आसीत्?

उ०– रामः व्यवहारे प्रशान्तात्मा सदृशः आसीत्।

(च) प्रजापति समः श्रीमान् कः?

उ०– रामः प्रजापति समः श्रीमान् आसीत्।

(छ) साङ्गवेदविद् कः आसीत्?

या

कः वेदवेदाङ्गतत्वज्ञ आसीत्?

उ०– रामः साङ्गवेदविद् आसीत्।

(ज) रामः कं नोत्तरं प्रतिपद्यते?

उ०– रामः परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते।

(झ) कः न स्मरत्यपकाराणाम्?

उ०– शतमप्यात्मशक्तया न स्मरत्यपकाराणाम्।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **राम धैर्यवान और बुद्धिमान थे।**
   अनुवाद– रामः धृतिमान् बुद्धिमान् च आसीत्।
2. **राम मधुरभाषी थे।**
   अनुवाद– रामः मृदुभाषी आसीत्।
3. **राम धनुर्विद्या में निपुण थे।**
   अनुवाद– रामः धनुर्विद्यायां निपुणः आसीत्।
4. **राम, सीता व लक्ष्मण के साथ वन गए।**
   अनुवाद– रामः, सीतालक्ष्मणश्चौ वनं अगच्छत्।
5. **राम वेद और वेदांगों के तत्वों को जानने वाले थे।**
   अनुवाद– रामः वेदवेदाङ्गश्च तत्वज्ञः आसीत्।
6. **श्रीराम पिता की आज्ञा का पालन करते थे।**
   अनुवाद– श्रीरामः पितृस्य आज्ञायाः पालनम् अकरोत्।
7. **पढ़ने से मनुष्य गुणवान होता है।**
   अनुवाद– अध्ययनात् मनुष्य गुणवान भवति।
8. **घोड़ा तेज दौड़ता है।**
   अनुवाद– अश्वः तीव्र धावति।
9. **जीवन में विद्या का महत्व है।**
   अनुवाद– जीवने विद्यायाः महत्व अस्ति।
10. **माता-पिता का आदर करो।**

उ०– माता-पितरौ सम्मानं कुरु।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–**

उ०–

समस्त पद	**सन्धि-विच्छेद**
धनुर्वेदे	धनुः +वेदे
विशालाक्षो	विशाल +अक्षो
विपुलांसो	विपुल +अंसो
कदाचिदुपकारेण	कदाचित् +अपकारेण
कृतेनैकेन	कृतेन् +एकेन
स्मरत्यपकाराणां	मरति +अपकाराणां
श्रीमाञ्छत्रु	श्रीमान् +शत्रु
साधुरदीनात्मा	साधुः +दीन +आत्मा
नोत्तरं	न +उत्तरम्
नियतात्मा	नियत +आत्मा
पुण्यात्मा	पुण्य +आत्मा

2. **'राम' शब्द के तृतीया और षष्ठी विभक्तियों के सभी रूप लिखिए–**

उ०–

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्

3. **'वेदवेदाङ्गतत्वज्ञ' का अर्थ लिखिए।**

उ०– वेद और वेदांग के तत्वों को जानने वाले।

4. **जिस प्रकार से 'मान' प्रत्यय लगाकर 'नीतिमान' बना है उसी प्रकार 'मान' और 'वान' से कुछ अन्य शब्द बनाइए।**

उ०– **मान**– श्रीमान्, बुद्धिमान्, वर्तमान्, शक्तिमान, सेव्यमान्।

वान– गुणवान्, धनवान्, पुत्रवान्, रूपवान्, निष्ठावान्।

5. **विभक्ति व वचन बताइए–**

शब्द रूप	**विभक्ति**	**वचन**
उपकारेण	तृतीया	एकवचन
हिते	सप्तमी	एकवचन
जनै:	पञ्चमी/षष्ठी	एकवचन
लोकस्य	षष्ठी	एकवचन
अपकाराणाम्	षष्ठी	बहुवचन
धर्मस्य	षष्ठी	एकवचन
प्रजानाम	षष्ठी	बहुवचन
वेदे	सप्तमी	एकवचन

6. **निम्नलिखित शब्दों के समास-विग्रह कीजिए–**

समस्त पद	**समास-विग्रह**
सुललाट:	सुन्दरा: ललाट:
महाहनु:	महान् चासौ हनु:
सुशिरा:	सुन्दरा शिरा:
महोरस्क:	महान् चासौ उरस्क:
महाबाहु:	महान् चासौ बाहु:
अमोद्यक्रोधहर्षश्च	अमोघ क्रोध च हर्ष च
धर्मज्ञ:	धर्मस्य ज्ञाता:

7. **सन्धि कीजिए–**

सन्धि-विग्रह	**सन्धि शब्द**
विद्या + आलय	विद्यालय
पुस्तक+आलय	पुस्तकालय
परम + आत्मा	परमात्मा
स + अक्षर	साक्षर
विद्या + अर्थी	विद्यार्थी
साधु: + अदीनात्मा	साधुरदीनात्मा
महा + ईश:	महेश:
रमा + ईश:	रमेश:
पुण्य + आत्मा	पुण्यात्मा
धर्म + आत्मा	धर्मात्मा

(द) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

चतुर्थः पाठः सिद्धिमन्त्रः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) अत्रैव ....जातम्।

[**अत्रैव =** यहीं, **पैतृकधनेन =** पुरखों के धन से, **सकलं =** सारा, **सम्पादयन्ति =** करते हैं, **उपेक्षया =** देखरेख के अभाव में, **नोत्पद्यते =** उत्पन्न नहीं होता है, **अभावग्रस्तं =** अभावों से ग्रसित, **जातम् =** हो गया।]

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'सिद्धिमन्त्रः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– इसी गाँव में पुरखों के धन से धनवान धर्मदास रहता है। उसका सारा काम सेवक करते हैं। सेवकों की देखरेख के अभाव (उपेक्षा) के कारण उसके पशु कमजोर हो गए हैं और खेतों में बीजमात्र के लिए भी अन्न उत्पन्न नहीं होता है। धीरे-धीरे उसका सारा पैतृक धन समाप्त हो गया। उसका सारा जीवन अभावों से ग्रसित हो गया।

(ख) एकदा..सञ्जातः।

[**एकदा =** एक बार, **प्रत्यागत्य =** लौटकर, **स्वद्वारि =** अपने दरवाजे पर, **उपविष्टम् =** बैठे हुए, **खिन्नं =** दु:खी, **चिराद् =** बहुत समय से, **दृष्टोऽसि =** दिखाई दिए हो, **केनापि =** किसी, **क्षीणविभवः =** निर्धन, ऐश्वर्यहीन, **संञ्जा =** हो गया।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– एक दिन वन से लौटते हुए रामदास ने अपने दरवाजे पर बैठे हुए धर्मदास को दु:खी और कमजोर देखकर पूछा– ''मित्र धर्मदास! बहुत समय के बाद दिखाई दिए हो। क्या किसी रोग से ग्रस्त हो, जिससे इतने कमजोर हो गए हो?'' धर्मदास ने प्रसन्न मुख वाले उस (मित्र) से कहा, –''मित्र! मैं बीमार नहीं हूँ, परन्तु धन के नष्ट होने पर (निर्धन) कुछ दूसरे प्रकार का हो गया हूँ।

(ग) इदमेव ....दास्यति इति।

[**अकर्मण्यता =** कर्महीनता, आलस्य, **सम्पत्तिकारकः =** धन को प्रदान करने वाला, **तर्हि =** तब, **अनुष्ठानम् =**कार्य, **उपचर्या =** सेवा, **कर्मकराणां =** मजदूरों के, **वर्षान्ते =** वर्ष के अंत में।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– यही सोच रहा हूँ कि किसी उपाय, मन्त्र अथवा तन्त्र से धनवान हो जाऊँ।'' उसकी गरीबी का कारण उसकी अकर्मण्यता है- ऐसा विचार कर रामदास ने इस प्रकार कहा– ''मित्र!, पहले किसी दयालु महात्मा ने मुझे सम्पत्ति प्रदान करने वाला एक मंत्र दिया था। यदि आप भी उस मंत्र को चाहते हैं तो उसके द्वारा बताए गए अनुष्ठान (कार्य) को करो। उसके बाद मंत्र का उपदेश देने वाले उसी महात्मा के पास चलेंगे।'' वह बोला– ''मित्र! शीघ्र ही उस अनुष्ठान को कहो, जिससे मैं फिर से धनवान हो जाऊँ।'' रामदास बोला– ''मित्र! प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठो और अपने पशुओं की सेवा स्वयं करो, प्रतिदिन खेतों में मजदूरों के कार्य का निरीक्षण करो। तुम्हारे विधिपूर्वक किए गए इस कार्य से प्रसन्न होकर वह महात्मा एक वर्ष के अंत में अवश्य तुम्हें सिद्धिमंत्र देंगे।''

(घ) विपन्नः ....जातम्।

[**विपत्रः =** दु:खी, **अभिलषन् =** इच्छा करता हुआ, **महिष्यः =** भैंसें, **यथोक्तम् =** कहे अनुसार, **अवर्धत् =** बढ़ गया, **प्रचुरं =** अधिक, **तदानीं =** तब, **सन्नद्धा अभवन् =** जुट गए।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– दु:खी धर्मदास ने संपत्ति की इच्छा करते हुए एक वर्ष तक जैसा कहा गया था, उसी के अनुसार अनुष्ठान (विधिपूर्वक कार्य) किया, प्रतिदिन प्रात:काल जागने से उसका स्वास्थ्य बढ़ गया। उसके द्वारा नियमपालित पशु स्वस्थ और सबल हो गए। गायों और भैंसों ने अधिक दूध दिया। तब उसके मजदूर भी खेती के कार्य में लग गए। अत: उस वर्ष उसके खेतों में अधिक अन्न पैदा हुआ और (उसका) घर धन-धान्य से भर गया।

(ङ) एकस्मिन्...स: सिद्धिमन्त्र:।

[पात्रम् = बर्तन, **दधानम् =** लिए हुए, **सम्यग् =** अच्छी तरह, **अवलोक्य =** देखकर, **ज्ञातं =** जान लिया।**]**

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– एक दिन प्रात:काल खेतों को जाते हुए रामदास ने दूध से भरे हुए बर्तन को हाथ में लिए हुए प्रसन्न मुख वाले धर्मदास को देखकर पूछा–'' आप कुशलपूर्वक तो हैं, क्या तुम्हारा अनुष्ठान विधि–पूर्वक चल रहा है? क्या उस महात्मा के पास मंत्र लेने चलें?'' धर्मदास ने उत्तर दिया– '' मित्र! एक वर्ष तक परिश्रम करके मैंने यह भली प्रकार जान लिया है कि 'कर्म' ही वह सिद्धिमंत्र है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) रामदास: धर्मदास: च कुत्र निवसत:?

उ०– रामदास: धर्मदास: च नारायणपुरे निवसत:।

(ख) प्रात:काले उत्थाय रामदास: किम् -किम् कार्यम् करोति?

उ०– प्रात:काले उत्थाय रामदास: नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति पशुभ्य: घासं ददाति च।

(ग) रामदास: पुत्रेण सह कुत्र गच्छति?

उ०– रामदास: पुत्रेण सह क्षेत्राणि गच्छति।

(घ) धर्मदास: कथं अभावग्रस्तं जातम्?

उ०– धर्मदास: सम्पत्ति: अभावग्रस्तं जातम्।

(ङ) सिद्धिमन्त्र: क: अस्ति?

उ०– कर्म एव सिद्धिमन्त्र: अस्ति।

(च) धर्मदास: कथं सम्पन्न: अभवत् ?

उ०– धर्मदास: कर्मकारणेन् सम्पन्न: अभवत्।

(छ) वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा धर्मदासेन किम् ज्ञातम्?

उ०– वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा धर्मदासेन ज्ञातम् यत् 'कर्म' एव सिद्धिमन्त्र:।

(ज) किम् श्रुत्वा रामदास: स्वगृह अगच्छत्?

उ०– धर्मदास: कथनं 'कर्म' एव सिद्धिमन्त्र:। तस्यैव अनुष्ठानेन मनुष्य: सर्वम् अभीष्टं फलं लभते तस्यैव अनुष्ठानस्य प्रभावेण सम्प्रति अहं पुन: सुखं समृद्धिं च अनुभवामि श्रुत्वा रामदास: स्वगृह अगच्छत्।

(झ) लक्ष्मी: निवासहेतो: कं स्वयं याति?

उ०– उत्साहसम्पन्नं, अदीर्घसूत्रं, क्रियाविधिज्ञं, व्यसनेषु, असक्तं, शूरं, कृतज्ञं दृढ़सौहृदं च लक्ष्मी: निवासहेतो: स्वयं याति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. रामदास और धर्मदास दोनों नारायणपुर में रहते हैं।

अनुवाद– रामदास: धर्मदास: द्वय च नारायणपुरे निवसत:।

2. रामदास कठिन परिश्रम करता है।

अनुवाद– रामदास: कठिनं श्रमं करोति।

3. रामदास के सभी कार्य अच्छी प्रकार होते हैं।

अनुवाद– रामदासस्य सर्वाणि कार्याणि भवन्ति।

4. धर्मदास आलसी है।

अनुवाद– धर्मदास: अकर्मण्य अस्ति।

5. धर्मदास बहुत दु:खी है।

अनुवाद– धर्मदास: अत्यधिक: दु:खी अस्ति।

6. **कर्म ही सिद्धिमन्त्र है।**
   अनुवाद– कर्म एव सिद्धिमन्त्र: अस्ति।
7. **हमें रोज सूर्योदय से पहले उठना चाहिए।**
   अनुवाद– वयं नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उतिष्ठेम।
8. **तुम बाजार जाओ।**
   अनुवाद– त्वं हट्टं गच्छ।
9. **अपने माता-पिता की सेवा करो।**
   अनुवाद– स्व माता-पितरौ सेबायाम् कुरू।
10. **अच्छे कार्यों को करो।**
   अनुवाद– श्रेष्ठं कार्यां कुरु।

(स)　बोधात्मक

कोष्ठक में दिए गए शब्दों के सही रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. रामदास: **पुत्रेन** सह क्षेत्राणि गच्छति। (पुत्र)
2. रामदास: नारायणपुरे **निवसति**। (वस्)
3. धर्मदास: प्रसन्नवदनं तम् **अवदत्** । (वद्)
4. रामदास: पशुभ्य: घासं **ददाति**। (दा)
5. अनेन तव **अनुष्ठानेन** प्रसन्न: स: महात्मा वर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमन्त्र: दास्यति इति। (अनुष्ठान)
6. किं तं **महात्मानं** मन्त्रार्थम् उपगच्छाव? (महात्मा)
7. अहम् पुन: सुखं समृद्धिं च **अनुभवामि**। (अनुभव)

(द)　व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथ सन्धि का नाम भी लिखिए–

सन्धि शब्द	**सन्धि विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
यथोक्तम्	यथा + उक्तम्	गुण सन्धि
तस्यैव	तस्य + एव	वृद्धि सन्धि
दृष्टोऽसि	दृष्टो + असि	पूर्वरूप सन्धि
वर्षान्ते	वर्ष + अन्ते	दीर्घ सन्धि
केनापि	केन + अपि	दीर्घ सन्धि
सूर्योदयात्	सूर्य + उदयात्	गुण सन्धि
केनोपायेन	केन + उपायेन	गुण सन्धि
नोत्पद्यते	न + उत्पद्यते	गुण सन्धि
प्रत्यागत्य	प्रति + आगत्य	यण सन्धि
येनाहं	येन + अहं	दीर्घ सन्धि
नाहं	न + अहं	दीर्घ सन्धि
मात्रमपि	मातृ + मपि	यण सन्धि
पुष्टाङ्गा	पुष्ट + अङ्गा	दीर्घ सन्धि
धनधान्यादि	धनधान्य + आदि	दीर्घ सन्धि

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए–

सन्धि विग्रह	**सन्धि शब्द**
क्षेत्र + एषु	क्षेत्रेषु
तस्य + एव	तस्यैव
महा + आत्मा	महात्मा

सन्धि विग्रह	सन्धि शब्द
मन्त्र + अर्थम्	मन्त्रार्थम्
यथा + उक्तम्	यथोक्तम्
अभि + इष्टम्	अभीष्टम्
व्यसनेषु + असक्तम्	व्यसनेष्वसक्तम्
पर + उपकार:	परोपकार:
महा + उत्सव:	महोत्सव:
अत्र + एव	अत्रैव
मन्त्र + उपदेशकम्	मन्त्रोपदेशकम्

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

शब्द	विलोम
सबल:	दुर्बल:
उपेक्षा	अपेक्षा
चिरात्	अल्पात्
प्रसन्न:	खिन्न:
दारिद्रयम्	धनधान्यं
सम्पत्ति:	विपत्ति:

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों में कारक और विभक्ति का नाम बताइए–

		कारक	विभक्ति
(क)	रामदास: <u>पुत्रेन</u> सह क्षेत्राणि गच्छति।	करण कारक	तृतीया विभक्ति
(ख)	<u>धर्मदास:</u> प्रत्यवदत्।	कर्ता कारक	प्रथमा विभक्ति
(ग)	स: कठिनं <u>श्रमं</u> करोति।	कर्म कारक	द्वितीया विभक्ति
(घ)	स: <u>तुभ्यं</u> सिद्धिमन्त्रं दास्यति।	संप्रदान कारक	चतुर्थी विभक्ति

5. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–

समस्त पद	समास-विग्रह
मन्त्रार्थम्	मन्त्राय इदम्
वर्षपर्यन्तं	वर्षस्य पर्यन्तं
वर्षान्ते	वर्षस्य अन्ते
यथोक्तम्	उक्तम् अनतिक्रम्य
अभावग्रस्तम्	अभावेन ग्रस्तम्
दुर्बला:	बलानां व्यृद्धि
सम्पत्तिकारक:	सम्पत्या: कारक:
यथास्थानम्	स्थानम् अनतिक्रम्य

6. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची संस्कृत में लिखिए–

लक्ष्मी	–	कमलनिवासिनी, विष्णुप्रिया।
गृह	–	सदनम्, आलय।
मनुष्य	–	नर:, जन: ।
गाँव	–	ग्राम:, उपनगर।
मित्र	–	सखा:, सहचर।

7. निम्नलिखित शब्दों में से जो शब्द 'कर्ता' हैं या जो 'कर्ता' और कर्म दोनों हैं, उन शब्दों को छाँटकर लिखिए–

शब्द	कर्ता	कर्ता व कर्म दोनों
सुखम्	——	सुखम्
स:	स:	——
फलम्	——	फलम्
धर्मदास:	धर्मदास:	——
कर्मकरा:	——	कर्मकरा:
क्षेत्राणि	——	क्षेत्राणि
कर्माणि	——	कर्माणि
सेवका:	सेवका:	——
धनम्	——	धनम्
दुग्धम्	——	दुग्धम्
रामदास:	रामदास:	——

8. 'अगच्छत्' किस लकार एवं वचन का उदाहरण है? इसके लोट् लकार के सभी रूप लिखिए–

उ०– 'अगच्छत्' लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप है।

इसके लोट् लकार के रूप निम्नवत् हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

9. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति व वचन बताइए–

शब्द रूप	विभक्ति	वचन
विपत्ति	प्रथमा	एकवचन
दारिद्रयम्	द्वितीया	एकवचन
चिरात्	पञ्चमी	एकवचन
सबल:	प्रथमा	एकवचन
प्रसन्न:	प्रथमा	एकवचन
उपेक्षा	प्रथमा	एकवचन

(य) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

पञ्चमः पाठः सुभाषितानि

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) मनीषिणः ....दुर्लभम् ।।

[**मनीषिण**: = विद्वान, **हितैषिण**: = हित चाहने वाला, **सुहृच्च** = और मित्र, **नृणाम्** = मनुष्यों में, **यथौषधं** = जैसे औषध।

सन्दर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'सुभाषितानि' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– जो विद्वान हैं, वे हितैषी (भला चाहने वाले) नहीं हैं। जो हितैषी हैं, वे विद्वान नहीं हैं। जो विद्वान भी हो

और हितैषी भी। ऐसा व्यक्ति मनुष्यों में मिलना उसी प्रकार से दुर्लभ है, जिस प्रकार स्वादिष्ट और हितकारी औषध का मिलना दुर्लभ होता है।

(ख) चक्षुषा..प्रसीदति।

[**चक्षुषा =** नेत्र से, **मनसा =** मन से, **वाचा =** वाणी से, **चतुर्विधम् =** चार प्रकार से, **प्रसादयति =** प्रसन्न करता है, **लोकं =** संसार को, **प्रसीदति =** प्रसन्न करता है।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– जो मनुष्य नेत्र से, मन से, वाणी से और कर्म से (इन) चारों प्रकार से संसार को प्रसन्न करता है, संसार उसे प्रसन्न करता है।

(ग) अकृत्वा....................................तद् बहु॥

[**अकृत्वा =** बिना किए, न करके, **परसन्तापम् =** दूसरों को दु:ख देना, **अगत्वा =** न जाकर, बिना जाए, **खलमन्दिरम् =** दुष्ट के घर, **अनुल्लङ्घ्य =** उल्लंघन किए बिना, **सतां =** सज्जनों का, **स्वल्पमपि =** थोड़ा भी, **तद् =** वह।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद–दूसरों को दु:ख न देकर, दुष्ट के घर न जाकर, सज्जनों के मार्ग का उल्लंघन न करके, जो थोड़ा भी मिल जाता है, वही बहुत है।

(घ) त्यज ....नित्यमनित्यताम्॥

[**त्यज =** छोड़ दो, **संसर्गं =** संगति, साथ, **भज =** अनुकरण करो, **समागमम् =** साथ, **अहोरात्रं =** दिन-रात को, **स्मर =** याद रखो, **नित्यम् =** उचित, ठीक, **अनित्यताम् =** अनुचित।]

संदर्भ–पूर्ववत्

अनुवाद– दुष्टों की संगति को छोड़ दो। सज्जनों से मेल-मिलाप करो। दिन में पुण्य कर्म करो और रात्रि में उचित-अनुचित को याद करो, अर्थात् हमें दिनभर अच्छे कार्य करने चाहिए और रात्रि में उन पर विचार करना चाहिए कि हमने क्या उचित किया और क्या अनुचित।

(ङ) मनसि ....कियन्त:॥

[**काये =** शरीर में, **पुण्यपीयूषपूर्णा =** पुण्यरूपी अमृत से परिपूर्ण, **प्रीणयन्त: =** प्रसन्न रखते हैं, **परगुण-परमाणून् =** दूसरों के परमाणु जैसे छोटे गुणों को, **पर्वतीकृत्य =** पर्वत के समान बढ़ा-चढ़ाकर, **विकसन्त: =** प्रसन्न होते हैं, **कियन्त: =** कितने हैं।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– मन, वचन और शरीर में पुण्यरूपी अमृत से परिपूर्ण, परोपकारों से तीनों लोकों को प्रसन्न करने वाले, दूसरों के परमाणु जैसे छोटे गुणों को भी पर्वत के समान बड़ा देखकर और अपने हृदय से सदा प्रसन्न रहने वाले सज्जन इस संसार में कितने हैं (अर्थात् बहुत कम हैं)।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) चन्द्र: कम् हन्ति?

उ०– चन्द्र: तम: हन्ति।

(ख) कीदृशं औषधं दुर्लभम्?

उ०– स्वादुहितं च औषधं दुर्लभम्।

(ग) कीदृशा: जना: संसारे दुर्लभा:?

उ०– सुहृच्च विद्वानपि जना: संसारे दुर्लभा:।

(घ) क्रोधं कीदृशं जयेत्?

उ०– क्रोधं अक्रोधेन (शान्त्या) जयेत्।

(ङ) कदर्यम् कीदृशं जयेत्?

उ०– कदर्यम् दानेन जयेत्।

(च) कीदृशो मार्गः सर्वोत्तम् भवति?

उ०– सतां मार्गः सर्वोत्तम् भवति।

(छ) वयम् कस्य संगति त्यजेम्?

उ०– वयम् दुर्जनाः संगति त्यजेम्।

(ज) अंधकारे प्रवेष्टये यत्नेन कः वार्यताम्?

उ०– अंधकारे प्रवेष्टये दीपो यत्नेन वार्यताम्।

(झ) कः जनः सर्वेषाम् जनानां प्रिय भवति?

उ०– यः चक्षुसा मनसा वाचा कर्मणा च लोकं प्रसादयति सः जनः सर्वेषाम् प्रिय भवति।

(ञ) अनृतं कीदृशं जयेत्?

उ०– अनृतं सत्येन जयेत्।

(ट) वयम् अहोरात्रं किम् - किम् स्मर कुर्याम?

उ०– वयम् अहोरात्रं नित्यमनित्यताम् स्मर कुर्याम।

(ठ) लोकः कः प्रसीदति?

उ०– यः लोकं प्रसादयति, लोकः तं प्रसीदति।

(ड़) संसारे कियन्तः सन्तः सन्ति?

उ०– संसारे अत्यल्पाः सन्तः सन्ति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **सैकड़ों मूर्ख पुत्रों से एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ होता है।**
   अनुवाद– शत् मूर्खः एकं गुणी पुत्रः श्रेष्ठं भवति।
2. **दुर्जन को सज्जनता से जीतना चाहिए।**
   अनुवाद– दुर्जनम् साधुना जयेत्।
3. **कंजूस को दान से जीतना चाहिए।**
   अनुवाद– कृपणं दानेन जयेत्।
4. **जो हितैषी होते हैं, वे विद्वान नहीं होते।**
   अनुवाद– ये हितैषिणः सन्ति, ते मनीषिणः न सन्ति।
5. **दुष्टों का साथ छोड़ देना चाहिए।**
   अनुवाद– दुर्जनस्य संसर्गं त्यजेयुः।
6. **हिमालय से नदी निकलती है।**
   अनुवाद– हिमालयात् नदि प्रभवति।
7. **हम सब बाहर खेलते हैं।**
   अनुवाद– वयं बाह्य क्रीडामः।
8. **मैं खाना खाता हूँ।**
   अनुवाद– अहं भोजनम् खादामि।
9. **राजा न्याय करता है।**
   अनुवाद– नृपः न्यायं करोति।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम भी बताइए–

सन्धि शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
सुहृच्च	सुहृत् + च	व्यंजन सन्धि
यथौषधम्	यथा + औषधम्	वृद्धि सन्धि
शतैरपि	शतै: + अपि	विसर्ग सन्धि
सत्याधार:	सत्य + आधार:	दीर्घ सन्धि
तपस्तैलं	तप: + तैलं	विसर्ग सन्धि
चन्द्रस्तमो	चंद्र: + तमो	विसर्ग सन्धि
चतुर्विधम्	चतु: + विधम्	विसर्ग सन्धि
चानृतम्	च + अनृतम्	दीर्घ सन्धि
एकश्चंद्र:	एक: + चन्द्र:	विसर्ग सन्धि

2. निम्नलिखित शब्दों के सही सन्धि-विच्छेद पर (3) का चिह्न लगाइए–

(क) विद्यालय:–

(i) विद्य+आलय: ☐ (ii) **विद्या+आलय:** 3

(iii) विद्या+लय: ☐ (iv) वि+आलय: ☐

(ख) महीशः–

(i) महा+ईश: ☐ (ii) महि+श ☐

(iii) **मही+ईश:** 3 (iv) मही+इश: 3

(ग) परोपकार:–

(i) **पर+ उपकार:** 3 (ii) पर+ऊपकार: ☐

(iii) पर:+उपकार: ☐ (iv) परो+उपकार: ☐

(घ) एकैक:–

(i) एक+एक: ☐ (ii) एका+ऐक: ☐

(iii) **एक+ऐक:** 3 (iv) एकैक+क ☐

(ङ) चन्द्रोदय:–

(i) चन्द्र:+उदय: ☐ (ii) चन्द्र+ओदय: ☐

(iii) चन्द्रो+उदय: ☐ (iv) **चन्द्र+उदय:** 3

(च) गायिका–

(i) गो+ईका ☐ (ii) गो+इका ☐

(iii) गौ+इका ☐ (iv) **गै+इका** 3

(छ) भवति–

(i) भव्+अति ☐ (ii) **भो+अति** 3

(iii) भव+अति ☐ (iv) भो+ति ☐

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

शब्द	विलोम
अंधकारम्	प्रकाशम्
चन्द्र:	सूर्य:
असाधु	साधु
जय	पराजय
क्रोधम्	अक्रोधम्

शब्द	विलोम
कदर्यम्	दानम्
तम:	ज्योति:
शुद्धम्	अशुद्धम्
हितम्	अहितम्
सत्यम्	असत्यम्
दुर्लभम्	सुलभम्

4. निम्नलिखित शब्द-रूपों के विभक्ति एवं वचन बताइए-

शब्द रूप	विभक्ति	वचन
यत्नेन	तृतीया	एकवचन
कदर्यं	द्वितीया	एकवचन
अक्रोधेन	तृतीया	एकवचन
सत्येन	तृतीया	एकवचन
नृणाम्	षष्ठी	बहुवचन
चक्षुषा	तृतीया	एकवचन
वाचा	तृतीया	एकवचन
असाधुम्	द्वितीया	एकवचन
कर्मणा	द्वितीया	बहुवचन
साधुना	तृतीया	एकवचन
यथौषधं	द्वितीया	एकवचन
अंधकारे	सप्तमी	एकवचन
मनसि	सप्तमी	एकवचन

5. निम्नलिखित धातु-रूपों के लकार, वचन तथा पुरुष बताइए-

धातु रूप	लकार	वचन	पुरुष
हन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष
सन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष
जयेत्	विधिलिङ्	एकवचन	प्रथम पुरुष
त्यज	लोट्	एकवचन	मध्यम पुरुष
प्रसीदति	लट्	एकवचन	प्रथम पुरुष

6. निम्नलिखित शब्दों के वाक्य प्रयोग संस्कृत में कीजिए-

नृणाम् - सुहृच्च विद्वानपि **नृणाम्** दुर्लभो अस्ति।

दुर्लभो - मनुष्यस्य जीवनं **दुर्लभो** अस्ति।

त्यज - दुष्टानां संगति **त्यज**।

लोकं - **यलोकं** प्रसादयति, लोक: तं प्रसीदति।

क्षमा - धर्मदास: **क्षमा** याचते।

अन्धकारे - चन्द्र: **अन्धकारे** नश्यति।

मार्गम् - सतां **मार्गम्** सर्वोत्तम: भवति।

यत्नेन - अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपो **यत्नेन** वार्यताम् ।

(द) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

षष्ठः पाठः परमहंसः रामकृष्णः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) रामकृष्णः एकः ....चरित्रम् अदर्शयत्।

[**विलक्षणः** = अलौकिक, **अभवत्** = हुए, **महात्मना गान्धिना** = महात्मा गाँधी द्वारा, **उक्तम्** = कहा गया, **प्रायोगिकम्** = आचरण में लाया गया, **विद्यते** = है, **प्रददाति** = प्रदान करता है, **मूर्तिमान्** = साक्षात् , **बङ्गेषु** = बंगाल प्रदेश में, **ख्रिस्ताब्दे** = ईसवीं सन् में, **पितरौ** = माता-पिता, **आस्ताम्** = थे।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'परमहंसः रामकृष्णः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– रामकृष्ण एक अलौकिक महापुरुष थे। उनके विषय में महात्मा गाँधी ने कहा था–''रामकृष्ण परमहंस का जीवन-चरित धर्म के आचरण का व्यावहारिक विवरण है। उनका जीवन हमें ईश्वर के दर्शनों के लिए शक्ति प्रदान करता है। उनके वचन न केवल किसी के नीरस ज्ञान के वचन हैं, अपितु उनकी जीवनरूपी पुस्तक के पृष्ठ ही हैं। उनका जीवन अहिंसा का साक्षात पाठ है।''

स्वामी रामकृष्ण का जन्म बंगाल में हुगली प्रदेश के 'कामारपुकुर' नामक स्थान में 1836 ईसवीं में हुआ था। उनके माता-पिता अत्यधिक धार्मिक विचारों के थे। बाल्यकाल से ही रामकृष्ण ने (अपने) अद्भुत चरित्र को प्रदर्शित किया।

(ख) परम सिद्धोऽपि ....प्रदर्शनेन॥

[**नोचितम्** = उचित नहीं है, ठीक नहीं है, **अमन्यत्** = मानते हैं, **केनचित्** = किसी, **पादुकाभ्याम्** =दोनों पादुकाओं से, **तरति** = पार कर लेता है, **पण** = पुराने जमाने का सिक्का, **एतादृश्याः** = इस प्रकार की।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– परमसिद्ध होते हुए भी वे सिद्धियों के प्रदर्शन को उचित नहीं मानते थे। एक बार किसी भक्त ने किसी की महिमा का इस प्रकार वर्णन किया– '' वह महात्मा पादुकाओं से नदी पार कर लेता है। यह बड़े आश्चर्य की बात है।'' परमहंस रामकृष्णन धीरे से हँसे और बोले–'' इस सिद्धि का मूल्य केवल दो पैसे है। दो पैसे से साधारण व्यक्ति नाव द्वारा नदी पार कर लेता है। इस सिद्धि से केवल दो पैसों का लाभ होता है। इस प्रकार की सिद्धि के प्रदर्शन से क्या प्रयोजन है?''

(ग) '' जले निमज्जिताः ....उदयो भवति।''

[**निमज्जिताः** = डूबे हुए, **प्राणाः** = प्राण, **निष्क्रमितुम्** = निकलने के लिए, **आकुलाः** = व्याकुल, **चेत्** = यदि, **समुत्सकाः** = उत्सुक, **भवितुम् अर्हति** =हो सकती है, **साधयितुम्** = साधना करने में, **दिनत्रयाधिक** = तीन दिन से अधिक, **मृत्कृते** = मेरे लिए, **अपेक्ष्यते** = आवश्यक है।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– 1.'' जल में डूबे हुए प्राण जिस प्रकार बाहर निकलने के लिए व्याकुल होते हैं, उसी प्रकार यदि लोग ईश्वर दर्शन के लिए भी उत्सुक होवें, तब उसके (ईश्वर के) दर्शन हो सकते हैं।''

2.'' किसी भी साधना को पूरा करने के लिए मुझे तीन दिन से अधिक का समय नहीं चाहिए।''

3.'' मैं भौतिक (सांसारिक) सुखों को प्रदान करने वाली विद्या नहीं चाहता हूँ। मैं तो उस विद्या को चाहता हूँ, जिससे हृदय में ज्ञान का उदय होता है।''

(घ) अयं महापुरुषः ....महान सन्देशः।

[**स्वकीयेन** = अपने, **एतावान्** = इतने, **सञ्जातः** = हुए, **मानवकृत** = मानव के द्वारा बनाए गए, **विभेदाः** = भेदभाव, **निर्मूलाः**= व्यर्थ, बेकार, **अजायन्त** = हो गए थे, **साधितम्** = सिद्ध किया, **विश्व विश्रुतः** = संसार में प्रसिद्ध, **अस्यैव** = इन्हीं, **महाभागस्य** = महानुभाव के, **डिण्डिमघोषः कृतः** = दुन्दुभि बजाई, **पुष्यति** = पुष्ट होता है।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– यह महापुरुष अपने योगाभ्यास के बल से ही इतने महान हो गए थे। वे ऐसे विवेकशील और शुद्ध चित्त वाले थे कि उनके लिए मानव के द्वारा बनाए गए भेदभाव बेकार हो गए थे। अपने आचरण से ही उन्होंने सब कुछ सिद्ध किया। संसार में प्रसिद्ध स्वामी विवेकानंद इन्हीं महानुभाव के शिष्य थे। उन्होंने केवल भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु पश्चिमी देशों में भी व्यापक मानव धर्म का डंका बजाया (दुन्दुभि बजाई)। उन्होंने और उनके दूसरे शिष्यों ने लोगों के कल्याण के लिए स्थान-स्थान पर रामकृष्ण सेवाश्रम स्थापित किए। ''ईश्वर का अनुभव दु:खी लोगों की सेवा से ही पुष्ट होता है।'' यह रामकृष्ण का महान संदेश है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) क: महापुरुष: विलक्षण: अभवत्?

उ०– रामकृष्ण परमहंस: महापुरुष: विलक्षण: अभवत्।

(ख) महात्मना गान्धिना रामकृष्णस्य विषये किम् उक्तम्?

उ०– रामकृष्णस्य विषये महात्मना गान्धिना उक्तम् - ''यत् तस्य जीवनम् अस्मभ्यम् ईश्वरदर्शनाय् शक्ति प्रददाति' इति।''

(ग) स्वामिन: रामकृष्णस्य जन्म कुत्र कदा च अभवत्?

उ०– स्वामिन: रामकृष्णस्य जन्म बङ्गेषु हुगली प्रदेशस्य कामारपुकुर स्थाने 1836 ख्रिस्ताब्दे अभवत्।

(घ) परमहंसस्य रामकृष्णस्य पितरौ कस्य प्रवृत्या आसीत्?

उ०– परमहंसस्य रामकृष्णस्य पितरौ परमधार्मिकौ प्रवृत्या आसीत्।

(ङ) रामकृष्णस्य जीवनम् अस्मभ्यम् किम सन्देशम् ददाति?

उ०– रामकृष्णस्य जीवनम् अस्मभ्यम् सन्देशम् ददाति ईश्वरानुभव: दुःखितानां जनानां सेवया पुष्यति।

(च) कदा ईश्वरस्य दर्शनम् भवितुम अर्हति?

उ०– जले निमज्जिता: प्राणा: यथा निष्क्रिमितुम् आकुला: भवन्ति तथैव चेत् ईश्वरदर्शनाय अपि सुमुत्सुका: भवन्तु: जना: तदा तस्य दर्शनं भवितुम् अर्हति।

(छ) रामकृष्ण: केन प्रकारेण महान् सञ्जात:?

उ०– रामकृष्ण: योगाभ्यासबलेन महान् सञ्जात:।

(ज) रामकृष्णाय किमपि साधनम् साधयितुम् कियत: काल: अपेक्ष्यते?

उ०– रामकृष्णाय किमपि साधनम् साधयितुम् दिनत्रयाधिक: काल: नैव अपेक्ष्यते।

(झ) रामकृष्णस्य श्रेष्ठ: शिष्य: क: आसीत्?

उ०– रामकृष्णस्य श्रेष्ठ:शिष्य: स्वामी विवेकानन्द: आसीत्।

(ञ) रामकृष्ण: काम् विद्याम् अवाञ्छत्?

उ०– रामकृष्ण: ताम् विद्याम् अवाञ्छत् यथा हृदये ज्ञानस्य उदयो भवति।

(ट) ईश्वरानुभव: केषां जनानाम् सेवया पुष्यति?

उ०– ईश्वरानुभव: दुःखितानां जनानाम् सेवया पुष्यति।

(ठ) स्वामी विवेकानन्देन पाश्चात्यदेशेषु क: डिण्डिमघोष: कृत:?

उ०– स्वामी विवेकानन्देन पाश्चात्यदेशेषु व्यापकस्य मानवधर्मस्य डिण्डिमघोष: कृत:।

(ड) रामकृष्ण: सेवाश्रमा: केन स्थापिता:?

उ०– रामकृष्ण: सेवाश्रमा: स्वामी विवेकानन्देन स्थापिता:।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. रामकृष्ण एक विलक्षण महापुरुष हुए।

अनुवाद– रामकृष्ण: एक: विलक्षण: महापुरुष: अभवत्।

2. **उनका जन्म बंगाल में हुआ था।**
   अनुवाद– तस्य जन्म बङ्गालप्रान्ते अभवत्।
3. **उनके वचन जीवन ग्रन्थ के पृष्ठ ही हैं।**
   अनुवाद– तस्य वचनानि जीवनग्रन्थस्य पृष्ठानि एव सन्ति।
4. **रामकृष्ण की ईश्वर में आस्था थी।**
   अनुवाद– रामकृष्णस्य ईश्वरे निष्ठा आसीत्।
5. **रामकृष्ण भौतिक सुख नहीं चाहते थे।**
   अनुवाद– रामकृष्ण: भौतिकं सुखं न अवाञ्छत्।
6. **रामकृष्ण बड़े महात्मा थे।**
   अनुवाद– रामकृष्ण: उदार: महात्मा आसीत्।
7. **तुम वन जाओ।**
   अनुवाद– त्वं वनं गच्छ।
8. **तुम पुस्तक पढ़ो।**
   अनुवाद– त्वं पुस्तकं पठ।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम भी बताइए–**

सन्धि शब्द	**सन्धि विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
बाल्यकालादेव	बाल्यकालात् + एव	व्यंजन सन्धि
तदानीमेव	तदानीम्+इव	गुण सन्धि
समुत्सुका:	सम्+उत्सुका:	पररूप सन्धि
बलेनैव	बलेन+एव	वृद्धि सन्धि
आराधनावसरे	आराधना+अवसरे	दीर्घ सन्धि
नोचितम्	न+उचितम्	गुण सन्धि
नाह	न+अहं	दीर्घ सन्धि
सेवाश्रमा:	सेवा+आश्रमा:	दीर्घ सन्धि
ईश्वरानुभव:	ईश्वर+अनुभव:	दीर्घ सन्धि
धर्माचरणस्य	धर्म+आचरणस्य	दीर्घ सन्धि
परमसिद्धोऽपि	परमसिद्धो+अपि	पूर्वरूप सन्धि
अस्यैव	अस्य+एव	वृद्धि सन्धि

2. **निम्नलिखित शब्दों के समास-विग्रह करते हुए समास का नाम भी लिखिए–**

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभाव समास
विश्वविश्रुत:	विश्वे विश्रुत:	सप्तमी तत्पुरुष समास
ईश्वरानुभव:	ईश्वरस्य अनुभव:	षष्ठी तत्पुरुष समास
महापुरुष:	महान् पुरुष	कर्मधारय समास
शुद्धचित्त:	शुद्ध: चित:	कर्मधारय समास
पीताम्बर:	पीत: अम्बर:	कर्मधारय समास
यथाशक्ति	शक्तिं अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
प्रजाहितम्	प्रजाया: हितं	चतुर्थी तत्पुरुष समास
विद्याहीन:	विद्येन हीन:	तृतीया तत्पुरुष समास
नीलकमलम्	नीलं कमलम्	कर्मधारय समास

3. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति व वचन बताइए–

शब्द	विभक्ति	वचन
नौकया	तृतीया	एकवचन
आचरेण	तृतीया	एकवचन
जले	सप्तमी	एकवचन
तेन	तृतीया	एकवचन
सत्यस्य	षष्ठा	एकवचन
अस्मभ्यम्	चतुर्थी	बहुवचन
ग्रन्थस्य	षष्ठी	एकवचन
नाहं	द्वितीया	एकवचन
विषये	सप्तमी	एकवचन
बङ्गेषु	सप्तमी	बहुवचन
लोके	सप्तमी	एकवचन
दर्शनाय	चतुर्थी	एकवचन
ईश्वरानुभव:	प्रथमा	एकवचन
आराधनावसरे	सप्तमी	एकवचन

4. 'एव' तथा 'एवम्' शब्दों का अन्तर स्पष्ट करते हुए दोनों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उ०– 'एव' का अर्थ 'ही' तथा 'एवम्' का अर्थ 'इस प्रकार' है। दोनों का वाक्य में प्रयोग निम्नलिखित है—
रामकृष्णस्य विषये महात्मना गान्धिना **एवम्** उक्तम् — तस्य जीवन-ग्रन्थस्य पृष्ठानि **एव**।

5. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए–

शब्द	उपसर्ग
आजीवनं	आ
विभेदा:	वि
विलक्षण:	वि
अहिंसा	अ
स्वागत	सु
आयामि	आ
निर्गच्छति	निर्
प्रहरति	प्र
पराभवति	परा

6. 'पठ' धातु में 'तुमुन' प्रत्यय जोड़ने से 'पठितुम्' शब्द बनता है, उसी प्रकार भू, हन् , दृश, गम् धातुओं में 'तुमुन' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

धातु	प्रत्यय	शब्द
भू	तुमुन	भवितुम्
हन्	तुमुन	हन्तुम्
दृश	तुमुन	द्रष्टुम्
गम्	तुमुन	गन्तुम्

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त धातु, लकार, पुरुष एवं वचन बताइए–

शब्द	धातु	लकार	पुरुष	वचन
भवति	भू	लट्	प्रथम	एकवचन
तरति	तृ	लट्	प्रथम	एकवचन

शब्द	धातु	लकार	पुरुष	वचन
वाञ्छामि	वाञ्छ्	लट्	उत्तम	एकवचन
अर्हति	अर्ह	लट्	प्रथम	एकवचन
अतिष्ठत्	स्था	लङ्	प्रथम	एकवचन
आस्ताम्	अस्	लङ्	प्रथम	द्विवचन
अभवत्	भू	लङ्	प्रथम	एकवचन
खादामि	खाद्	लट्	उत्तम	एकवचन
पठामि	पठ्	लट्	उत्तम	एकवचन
अपिबत्	पा	लङ्	प्रथम	एकवचन
अपश्यत्	पश्य	लङ्	प्रथम	एकवचन

8. निम्नलिखित सन्धि-विच्छेदों की उचित सन्धि के सामने (3) का चिह्न लगाइए–

(क) भानु+उदयः–

(i) **भानूदयः** [3] (ii) भानुदयः [ ]
(iii) भानूउदयः [ ] (iv) भानुउदयः [ ]

(ख) महा+ऋषिः–

(i) महार्षिः [ ] (i) महोर्षिः [ ]
(iii) **महर्षिः** [3] (iv) महारीषिः [ ]

(ग) सु+आगतम्–

(i) स्वगतम् [ ] (ii) **स्वागतम्** [3]
(iii) सूवागतम् [ ] (iv) सवागतम् [ ]

(घ) कवे+ए–

(i) कवेए [ ] (ii) कवऐ [ ]
(iii) कवेय [ ] (iv) **कवये** [3]

(ङ) पौ+अकः–

(i) पवकः [ ] (ii) पायकः [ ]
(iii) **पावकः** [3] (iv) पौवकः [ ]

(च) सो+अहम्–

(i) सावहम् [ ] (ii) सवहम् [ ]
(iii) सायहम् [ ] (iv) **सोऽहम्** [3]

(द) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

सप्तमः पाठः कृष्णः गोपालनन्दनः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) सुविदितमेव.................................श्रीकृष्णः जातः।

सुविदितम् = भली प्रकार ज्ञात, **एव** = ही, **लोकोत्तरः** = लोक में उच्च, अलौकिक, **सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्राक्** = हजारों वर्ष पूर्व, **मातुलः**= माता, **अद्य** = आज, **स्व** = अपनी, **भगिन्याः** = बहन का, **उभावपि** = दोनों ही, **न्यक्षिपत्** = डाल दिया, **जातः** = उत्पन्न हुए।

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'कृष्ण: गोपालनन्दन:' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– यह भली प्रकार से ज्ञात ही है कि श्रीकृष्ण अलौकिक महापुरुष थे। हजारों वर्ष पहले उत्पन्न हुए ये महापुरुष आज भी लोगों के हृदयों में विराजमान हैं। श्रीकृष्ण का मामा कंस एक अत्याचारी शासक था। पहले उसने अपनी बहन देवकी का विवाह वसुदेव के साथ कर दिया, बाद में आकाशवाणी द्वारा देवकी के पुत्र द्वारा अपनी मृत्यु का समाचार सुनकर दोनों को जेल में डाल दिया। वहीं पर कारागार में श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए।

(ख) श्रीकृष्णस्य जन्म ....अभवत्।

अष्टम्यां तिथौ = अष्टमी के दिन, **यदायम् =** जब से, **घटाटोपाः =** घटाओं से घिरे, **सद्योजातं =** तुरंत पैदा हुए, नवजात, **आदाय =** लेकर, **उत्तालतरङ्गा =** ऊँची-ऊँची लहरों वाली, **उत्तीर्य =** पार करके, **प्रापयत् =** पहुँचा दिया, **हृदयवल्लभः =** हृदय के प्रिय।

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मथुरा में हुआ था। मध्य रात्रि में जब ये उत्पन्न हुए, तब आकाश में घिरे घने मेघ मूसलाधार वर्षा कर रहे थे। उस समय रात अँधेरी थी। परन्तु वसुदेव ने तुरंत पैदा हुए (नवजात) पुत्र की रक्षा के लिए तत्काल उसको लेकर ऊँची-ऊँची लहरों वाली यमुना को पार करके गोकुल में नन्दजी के घर पहुँचा दिया। वहाँ बचपन से ही श्रीकृष्ण लोगों के हृदय के प्यारे हो गए।

(ग) कापि गोपिका ....स्निह्यन्ति।

अङ्के = गोद, **निधाय =** रखकर अर्थात् लेकर, **नयति =** लेकर, **अपरा =** दूसरी, **पाययति =** पिलाती है, **नवनीतम् =** मक्खन, **अवशिष्टम् =**बचे हुए, **पातयति =** गिरा देता है, **दधिभाण्डं =** दही का बर्तन, **त्रोटयति =** तोड़ देता है, **कुर्वतोऽपि =** करते हुए भी, **कोऽपि =** कोई भी, **क्रुध्यति =** क्रोध करता है, **स्निह्यन्ति =** स्नेह करते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– कोई गोपी उन्हें अपनी गोद में लेकर घर ले जाती, दूसरी उन्हें दूध पिलाती और उन्हें मक्खन देती। श्रीकृष्ण प्रेमपूर्वक दिया गया दूध पीते और मक्खन खाते। अवसर पाकर वे अपने मित्र ग्वालों के साथ किसी के घर में घुसकर दही खाते, मित्रों को देते, शेष दही को भूमि पर गिरा देते और कभी-कभी दही का बर्तन भी तोड़ देते।

यह सब करते हुए भी उनके शील और सौंदर्य से प्रभावित होकर कोई उन पर क्रोध नहीं करता था, वरन् सब उनसे स्नेह करते थे।

(घ) अनन्तरं श्रीकृष्णः ....अकरोत्।

अनन्तरम = इसके बाद, **चारयति =** चराते हैं, **वेणुं =** बाँसुरी को, **गावः =** गायें, **विहाय =** छोड़कर, **वादयति =** बजाते हैं, **शृण्वन्ति =** सुनते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– इसके बाद श्रीकृष्ण ग्वालों के साथ वन में जाकर गायें चराते हैं और वहाँ बाँसुरी बजाते हैं। इससे सभी गायें और ग्वाले सब कार्यों को छोड़कर उनका बाँसुरी-वादन सुनते हैं। महाकवि व्यास ने संस्कृत भाषा में (और) भक्तकवि सूरदास ने हिंदी भाषा में उनकी बाल लीला का अत्यधिक सुंदर वर्णन किया है।

(ङ) यदा अयं बालः ....अभवत्।

बालः एव = बालक ही, **हन्तुम् =** मारने के लिए, **प्रेषयत् =** भेजा, **अहन् =** मार डाला, **अविगणय्य =** न गिरकर, परवाह न करके, **निवारयन् =** दूर करते हुए, **सन्दीप्ते वह्नौ =** जलती हुई आग में, **पदमधारयत् =** स्थान बना लिया, **स्वोत्तमैः =** अपने उत्तम (गुणों से)।

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– जब ये बालक ही थे, तब कंस ने इन्हें मारने के लिए एक के बाद एक बहुत से राक्षसों को भेजा, परंतु श्रीकृष्ण ने अपने कौशल और पराक्रम से उन सबको मार दिया। उन्होंने केवल राक्षसों से ही नहीं अपितु दूसरी

विपत्तियों से भी गोकुल में रहने वाले लोगों की रक्षा की। एक बार वर्षा ऋतु में गोकुल में यमुना का जल तेजी से बढ़ रहा था तब श्रीकृष्ण ने अपने प्राणों की चिंता न करके सभी गोकुलवासियों की रक्षा की। इसी प्रकार आग लग जाने पर इन्होंने सब पशुओं और ग्वालों की उससे रक्षा की। इस प्रकार निरन्तर गोकुलवासियों के कष्टों को दूर करते हुए इन्होंने उनके हृदय में स्थान बना लिया था। अत: श्रीकृष्ण बचपन से ही अपने उत्तम गुणों और परोपकार की भावना से लोकप्रिय हो गए थे।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) श्रीकृष्णः कीदृशः महापुरुषः आसीत्?

उ०– श्रीकृष्ण: लोकोत्तरो महापुरुष: आसीत्।

(ख) श्रीकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत्?

उ०– श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायां कंसस्य कारागारे अभवत्।

(ग) श्रीकृष्णस्य जन्म कदा अभवत्?

उ०– श्रीकृष्णस्य जन्म भाद्रपदमासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां तिथौ अभवत्।

(घ) श्रीकृष्णस्य मातुलः कः आसीत्?

उ०– कंस: श्रीकृष्णस्य मातुल: आसीत्।

(ङ) श्रीकृष्णस्य जन्मस्य अवसरे रात्रि कीदृशी आसीत्?

उ०– श्रीकृष्णस्य जन्मस्य अवसरे रात्रि अन्धकारपूर्णा आसीत्।

(च) किं ज्ञात्वा कंसः स्वभग्नीम् कारागारे न्यक्षिपत्?

उ०– आकाशवाण्या देवकीपुत्रेण स्वमृत्यु समाचारं ज्ञात्वा कंस: स्वभग्नीम् कारागारे न्यक्षिपत्।

(छ) श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः कीदृशः नृपः आसीत्?

उ०– श्रीकृष्णस्य मातुल: कंस: अत्याचारी नृप: आसीत्।

(ज) कः कविः श्रीकृष्णस्य बाललीलायाः वर्णनम् हिन्दी भाषायाम् अकरोत्?

उ०– महाकवि: सूरदास: श्रीकृष्णस्य बाललीलाया: वर्णनम् हिन्दी भाषायाम् अकरोत्।

(झ) कदा श्रीकृष्णः जनानां हृदयवल्लभः अभवत्?

उ०– श्रीकृष्ण: बाल्यादेव जनानां हृदयवल्लभ: अभवत्।

(ञ) श्रीकृष्णस्य पितुः किं नाम अस्ति?

उ०– श्रीकृष्णस्य पितु: नाम वसुदेव: अस्ति।

(ट) श्रीकृष्णः कदा सर्वान् गोकुलवासिनाम् अरक्षत्?

उ०– एकदा वर्षाकाले गोकुले यमुनाया: जलं वेगेन अवर्धत्, तदा श्रीकृष्ण: स्वप्राणान् अविगणय्य सर्वान् गोकुलनिवासिन: अरक्षत्। एवमेव सन्दीप्ते वह्नौ अयं सर्वान् पशून् गोपालान् च तत: अत्रायत।

(ठ) सूरदासः कस्याम् भाषायां श्रीकृष्णस्य बाललीलायाः वर्णनम् अकरोत्?

उ०– सूरदास: हिन्दी भाषायां श्रीकृष्णस्य बाललीलाया: वर्णनम् अकरोत्।

(ड) श्रीकृष्णः केन गुणेन जनानां मनांसि अहरत्?

उ०– श्रीकृष्ण: बाललीलाया: स्वसौन्दर्येण च जनानां मनांसि अहरत्।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था।

अनुवाद– श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायाम् अभवत्।

2. श्रीकृष्ण के मामा कंस एक अत्याचारी शासक थे।

अनुवाद– श्रीकृष्णस्य मातुल: कंस: एक: अत्याचारी शासक: आसीत्।

3. श्रीकृष्ण बचपन से ही लोगों के हृदय में बसे हुए थे।

अनुवाद– श्रीकृष्ण: बाल्यकालात् एव जनानाम् हृदयेषु अवसत्।

4. **श्रीकृष्ण ने राक्षसों को मारा।**
अनुवाद– श्रीकृष्ण: राक्षसान् अहन्।
5. **श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया।**
अनुवाद– श्रीकृष्ण: अर्जुनाय गीताया: उपदेशम् अयच्छत्।
6. **वह बाजार से सब्जी लाता है।**
अनुवाद– स: आपणात् साकम् आनयति।
7. **राम विद्यालय जाता है।**
अनुवाद– राम: विद्यालयम् गच्छति।
8. **पेड़ से पत्ते गिरते हैं।**
अनुवाद– वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
9. **तुम सब पढ़ते हो।**
अनुवाद– यूयम् पठथ।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम भी बताइए–**

सन्धि शब्द	**सन्धि विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
उभावपि	उभौ + अपि	अयादि सन्धि
अत्याचारी	अति + आचारी	यण सन्धि
यदायम्	यदा + अयम्	दीर्घ सन्धि
परोपकार	पर + उपकार	गुण सन्धि
तत्रैव	तत्र + एव	वृद्धि सन्धि
लोकोत्तरो	लोक + उत्तरो	गुण सन्धि
अद्यापि	अद्य + अपि	दीर्घ सन्धि
स्वोत्तमै:	स्व + उत्तमै:	गुण सन्धि
बाल्यकालादेव	बाल्यकालात् + एव	व्यंजन सन्धि
कुर्वतोऽपि	कुर्वतो + अपि	पूर्वरूप सन्धि

2. **निम्नलिखित पदों का समास-विग्रह कीजिए–**

समस्त पद	**समास-विग्रह**
महापुरुष:	महान् पुरुष:
महात्मा	महान् आत्मा:
लोकप्रिय:	लोके प्रिय:
दधिभाण्डम्	दध्न: भाण्डम्
गोकुलवासिन:	गोकुलस्य वासिन:
अन्धकारपूर्णा	अन्धकारेण पूर्णा
मृत्युसमाचारम्	मृत्यो: समाचारम्
नन्दगृहम्	नन्दस्य गृहम्
पीताम्बर:	पीत: अम्बर:

3. **विभक्ति व वचन बताइए–**

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
पुत्रेण	तृतीया	एकवचन
कारागारे	सप्तमी	एकवचन
मासस्य	षष्ठी	एकवचन

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
गोकुले	सप्तमी	एकवचन
भाषायां	सप्तमी	एकवचन
बाल्यकालात्	पञ्चमी	एकवचन
वर्षेभ्यः	चतुर्थी/पञ्चमी	बहुवचन
हृदयेषु	सप्तमी	बहुवचन
जनानाम्	षष्ठी	बहुवचन
वसुदेवेन	तृतीया	एकवचन

4. निम्नलिखित धातु-रूपों की धातु, लकार, पुरुष व वचन बनाइए—

धातु-रूप	**धातु**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
पिबति	पा	लट्	प्रथम	एकवचन
पिबतु	पा	लोट्	प्रथम	एकवचन
करोत्	कृ	लङ्	प्रथम	एकवचन
कुरु	कृ	लोट्	मध्यम	एकवचन
अकुर्वन्	कृ	लङ्	प्रथम	बहुवचन
ददाति	दा	लट्	प्रथम	एकवचन
नयति	नी	लट्	प्रथम	एकवचन
आसीत्	अस्	लङ्	प्रथम	एकवचन
वदेयुः	वद्	विधिलिङ्	प्रथम	बहुवचन
पश्य	दृश	लोट्	मध्यम	एकवचन
करिष्यामि	कृ	लृट्	उत्तम	एकवचन
शृण्वन्ति	श्रु	लट्	प्रथम	बहुवचन

5. आकाश, सूर्य, जल, पृथ्वी तथा हरि के दो-दो पर्यायवाची संस्कृत में लिखिए—

आकाश — नभ, गगन।
सूर्य — भानु, दिनकर।
जल — नीर, तोय।
पृथ्वी — भूमि, वसुंधरा।
हरि — ईश्वर, प्रभु।

6. निम्नलिखित अव्यय शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिए—

अव्यय	**हिन्दी अर्थ**
यत्र-तत्र	जहाँ-तहाँ
यथा-तथा	जैसे-तैसे
यदा-कदा	जब-कब
इदानीम्	अब
यथा	जैसे
अधुना	अब
प्राक्	पहले
कथम्	क्यों
तदा	तब (उस समय)
यदा	जब (जिस समय)
कदा	कब (किस समय)

अव्यय	हिन्दी अर्थ
अत्र	यहाँ
तत्र	वहाँ
कुत्र	कहाँ
सह	के साथ
अपि	भी
एव	ही
च	और
एवम्	ऐसा
परम्	अत्यन्त
अद्य	आज
श्व:	कल(आने वाला)

(य) निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत में वाक्य प्रयोग कीजिए–

शासक: — श्रीकृष्णस्य मातुल: कंस: अत्याचारी **शासक:** आसीत्।
आसीत् — पण्डित: जवाहरलाल नेहरू: भारतस्य प्रथम: प्रधानमंत्री **आसीत्**।
सह — रामदास: पुत्रेण **सह** क्षेत्राणि गच्छति।
पुत्रस्य — तस्य **पुत्रस्य** जन्म मथुरायाम् अभवत्।
गृहम् — **गृहम्** गच्छ पठ च।
वनम् — स: **वनम्** गत्वा गा: चारयति।
सुन्दरम् — महाकवि: सूरदास: हिन्दीभाषायां कृष्णबाललीलाया: अति **सुन्दरम्** वर्णनम् अकरोत्।
जलं — स: **जलं** पिबति।

(द) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

एकांकी खंड
भूमिका
अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एक अंक वाले नाटक को क्या कहते हैं?

उ०– एक अंक वाले नाटक को एकांकी कहते हैं।

2. एकांकी को किसका स्वरूप माना जाता है?

उ०– एकांकी को नाटक का ही स्वरूप माना जाता है। इसमें नाटक के संपूर्ण तत्व तो होते ही हैं, साथ ही रचना-विधान तथा अन्य तत्वों में ऐसी विशेषताएँ भी होती हैं, जिनके कारण साहित्यशास्त्रियों ने एकांकी को साहित्य की एक सर्वथा विधा मान लिया है। एकांकी साधारणत: नाटक के उस स्वरूप को कहते हैं, जिसमें केवल एक ही अंक में संपूर्ण नाटक समाप्त हो जाता है।

3. संस्कृत साहित्य में काव्य के किन दो रूपों का वर्णन मिलता है? नाम बताइए।

उ०– संस्कृत साहित्य में काव्य के दो रूप माने गए हैं– (अ) श्रव्य काव्य (ब) दृश्य काव्य।

4. श्रव्य काव्य व दृश्य काव्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ०– श्रव्य काव्य का पूरा आनंद सुनकर अथवा पढ़कर लिया जा सकता है, परंतु दृश्य काव्य का पूरा आनंद अभिनय से ही मिलता है।

5. नाटक व एकांकी में क्या अंतर है?

उ०– नाटक और एकांकी के स्वरूप में पर्याप्त अंतर है। यद्यपि दोनों ही दृश्य काव्य के भेद हैं। दोनों में कथावस्तु, पात्र और संवाद आदि की योजना होती है, दोनों में अभिनय तत्व का पूरा निर्वाह अपेक्षित है, तथापि दोनों की बहिरंग प्रकृति भिन्न होती है।

नाटक में कथावस्तु लंबी होती है, जिसमें आधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु साथ-साथ चलती है, परंतु एकांकी में संक्षिप्त और एक ही कथावस्तु होती है। नाटक में पाँच से लेकर दस अंक तक हो सकते हैं, परंतु एकांकी में केवल एक अंक होता है, यद्यपि उसमें अनेक छोटे दृश्य हो सकते हैं। नाटक में अनेक पात्र होते हैं, जो प्रमुख पात्र नायक के चारित्रिक विकास में सहायक होते हैं, परंतु एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित होती है।

6. उपन्यास को हम नाटक नहीं कह सकते, इस बात को स्पष्ट करते हुए कारण बताइए।

उ०– उपन्यास और नाटक में एक साथ अनेक संदेशों, प्रभावों और समस्याओं का निर्वाह संभव है, परंतु उपन्यास व नाटक में पर्याप्त भिन्नता भी है, जिसके कारण हम उपन्यास को नाटक नहीं कह सकते। नाटक में कई अंक होते हैं तथा पात्रों की संख्या सीमित व कथावस्तु से संबंधित होती है, जबकि उपन्यास में अंक नहीं होते और उसमें पात्रों व स्थानों की संख्या अधिक होती है। नाटक का रंगमंच पर अभिनय किया जा सकता है।

7. एकांकी के मुख्य तत्व कौन-कौन से हैं?

उ०– पाश्चात्य एकांकीकारों के अनुसार सामान्यत: एकांकी के छ: तत्व हैं- (i) कथावस्तु (ii) पात्र एवं चरित्र-चित्रण (iii) संवाद एवं कथोपकथन (iv) भाषा-शैली (v) वातावरण और देशकाल (vi) उद्देश्य।

8. एकांकी की कथावस्तु को कितनी अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है?

उ०– एकांकी की कथावस्तु को विविध नाटकीय स्थितियों के विश्लेषण की सुविधा के विचार से तीन अथवा चार अवस्थाओं में रख सकते हैं-(i) आरंभ (ii) विकास (iii) चरम-सीमा (iv) समाप्ति अथवा परिणति।

9. एकांकी में पात्रों की संख्या कम रखने का कारण स्पष्ट कीजिए।

उ०– एकांकी में पात्रों की संख्या कम रखने का कारण है कि इसमें पात्रों की संख्या जितनी कम होती है, परिस्थिति का रंग उतना ही उभरकर सामने आता है। एकांकी की कथावस्तु का नियोजन पात्रों के माध्यम से ही होता है, अत: पात्रों का चयन सावधानीपूर्वक करना होता है। यदि पात्रों की संख्या अधिक होती है तो उनकी भीड़ में एकांकीकार के विचारों के खो जाने का खतरा बना रहता है। ऐसी स्थिति में पाठक या दर्शक नाटक के मूलभाव से तादात्म्य स्थापित नहीं कर पाता।

10. कथोपकथन किसे कहते हैं?

उ०– एकांकी को संवादों (कथनों) के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, इसलिए यह एकांकी का अनिवार्य तत्व है। इसका प्रमुख प्रयोजन कथावस्तु को गतिशील बनाना और पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को उद्घाटित करना है। संवादों के द्वारा एक पात्र जो कुछ भी कहता है, वह अर्थपूर्ण होता है, उसकी विचारधारा का परिचायक होता है। एक पात्र द्वारा बोले गए संवादों की प्रतिक्रिया दूसरे पात्रों पर होती है और वे चुभता हुआ उत्तर देते हैं। इस प्रकार कथा चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर परिणति को प्राप्त होती है। संवादों को ही कथोपकथन कहते हैं।

11. संवाद एकांकी का प्राणतत्व क्यों है?

उ०– संवाद एकांकी का प्राणतत्व हैं। संपूर्ण कथावस्तु और चरित्रांकन संवादों के माध्यम से ही संभव है। कथानक को निरंतर सक्रिय और गतिशील बनाए रखना, पात्रों की स्वभावगत चारित्रिक विशेषताओं को उभारते रहना तथा उन्हें स्वाभाविक रूप से परिणति की ओर अग्रसर करते रहना ही संवाद योजना का लक्ष्य होता है। एकांकी में निरर्थक और अनावश्यक वार्तालाप को कहीं स्थान नहीं मिलना चाहिए।

12. एकांकी में भाषा-शैली का क्या महत्व है?

उ०– वस्तुत: भाषा-शैली एकांकी के संवादों की सफलता की कसौटी है। एकांकी की भाषा का प्रयोग पात्र की शिक्षा, संस्कृति, वातावरण, परिस्थिति के अनुरूप ही होना चाहिए। यदि पात्र का सांस्कृतिक स्तर ऊँचा है तो उसकी भाषा शिष्ट और शैली परिष्कृत होगी। यदि उसका वातावरण दूषित है, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर ऊँचा नहीं है तो उसकी भाषा में निखार और शैली में वह परिष्कार नहीं दिखाई देगा। एकांकीकार की सारी अभिव्यंजना और संप्रेषणीयता की शक्ति उसकी भाषा-शैली के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।

13. संकलन-त्रय का क्या अर्थ है?

उ०– कार्य, समय और स्थल की एकता को संकलन-त्रय कहा जाता है, अर्थात् एकांकी के अंतर्गत एक संपूर्ण कार्य एक ही अवधि में और एक ही स्थान पर होना चाहिए। इसी के सफल विधान को संकलन-त्रय कहा जाता है।

14. भारतेंदु युग में कितने प्रकार के एकांकी लिखे गए, उदाहरण सहित नाम बताइए।

उ०– भारतेंदु युग में प्राय: छह प्रकार के एकांकी लिखे गए—

(i) **राष्ट्रीय एकांकी–** भारत-जननी, भारत-दुर्दशा (भारतेंदु); भारत-माता, अमर सिंह राठौर (राधाचरण गोस्वामी); भारतोद्धार (रामकृष्ण वर्मा)।

(ii) **ऐतिहासिकता के साथ देश-प्रेम की भावना पर आधारित एकांकी–** महारानी पद्मिनी (राधाकृष्ण दास)।

(iii) **सामाजिक यथार्थवादी एकांकी–** चौपट चपेट (किशोरीलाल गोस्वामी); कलियुगी जनेऊ (देवकीनंदन त्रिपाठी)।

(iv) **सामाजिक-सुधारवादी एकांकी–** रेल का टिकट (कार्तिकप्रसाद खत्री); बूढे मुँह मुँहासे (राधाचरण गोस्वामी); दु:खिनी बाला (राधाकृष्णदास)।

(v) **धार्मिक एकांकी–** धनंजय विजय (हरिश्चंद्र)।

(vi) **हास्यप्रधान एकांकी–** इस धारा के प्रमुख एकांकीकार हैं— राधाचरण गोस्वामी, देवकीनंदन त्रिपाठी, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, किशोरीलाल गोस्वामी।

15. वर्तमान युग में एकांकी को कितने वर्गों में बाँटा गया है? उनका संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उ०– वर्तमान काल को हिंदी एकांकी के बहुमुखी विकास का काल माना जाता है। इस युग के एकांकियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है—

(अ) सामाजिक-राजनैतिक– तत्कालीन स्वतंत्रता-संग्राम के आलोक में गाँधीवादी प्रभाव और आर्थिक विषमता के कारण व्याप्त हैं। प्रमुख एकांकीकार हैं-शचि, प्रेम-नारायण टंडन, हीरादेवी चतुर्वेदी, विमला लूथरा, अनंत कुमार, पाषाण, रांगेय राघव, प्रभाकर माचवे, पहाड़ी, शंभुनाथ सिंह, जयनाथ नलिन, मुक्तिदूत, अमृतराय, विष्णु प्रभाकर, हरिकृष्ण 'प्रेमी' आदि।

(ब) मानवतावादी दृष्टि– दलित उत्थान और मानव के महत्व को स्थापित करने में सहायक इस श्रेणी के प्रमुख एकांकीकार हैं- विष्णु प्रभाकर, रामचंद्र तिवारी, प्रेमनारायण टंडन, रावी, हीरादेवी चतुर्वेदी, विमला लूथरा आदि।

(स) धार्मिक-पौराणिक– यह प्रवृत्ति प्रमुख रूप से विष्णु प्रभाकर, भारद्वाज, शंभुदयाल सक्सेना, डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल एवं विपुला देवी में लक्षित हुई।

यद्यपि इस काल के एकांकीकारों की सूची पर्याप्त लंबी है, फिर भी रामवृक्ष बेनीपुरी, विनोद रस्तोगी, अर्जुन चौबे, कश्यप, गोविंद शर्मा, महेंद्र भटनागर, जनार्दन, सत्यदेव शर्मा, इंदुशेखर, धर्मवीर भारती, जगदीशचंद्र माथुर, हरिकृष्ण 'प्रेमी' आदि की गणना वर्तमान के प्रमुख एकांकीकारों में की जाती है।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एकांकी में ________ अंक होते हैं / होता है।

(अ) दो (ब) चार

(स) तीन (द) **एक**

2. नाटक में ________ अंक होते हैं।

(अ) एक (ब) **एक से अधिक**

(स) दो (द) चार

3. साहित्य के दो रूपों में से एक श्रव्य है व दूसरा ________ है।

(अ) **दृश्य** (ब) नृत्य

(स) काव्य (द) हास्य

4. एकांकी में पात्रों की संख्या ________ होती है।

(अ) असीमित (ब) केवल दो

(स) **सीमित** (द) पाँच से कम

5. कौन-सी अवस्था एकांकी की पृष्ठभूमि का निर्माण करती है?

(अ) विकास (ब) **आरंभ**

(स) परिणति (द) चरम-सीमा

6. 'दीपदान' एकांकी के मुख्य पात्र का क्या नाम है?

(अ) **पन्ना** (ब) मोती

(स) हीरा (द) सोना

7. 'कथोपकथन' का पर्यायवाची शब्द कहा जा सकता है–

(अ) चरित्र को (ब) **संवाद को**

(स) भाषा को (द) शैली को

8. कार्य, समय व स्थल की एकता को क्या कहते हैं?

(अ) अंतर्द्वन्द्व (ब) अभिनेयता

(स) उद्देश्य (द) **संकलन-त्रय**

9. 'भारत-दुर्दशा' के रचयिता हैं–

(अ) **भारतेंदु हरिशचंद्र** (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(स) प्रेमचंद (द) जयशंकर प्रसाद

10. भारतेंदु युग में कितने प्रकार के एकांकी लिखे गए?

(अ) चार (ब) दो

(स) **छः** (द) आठ

11. हिंदी एकांकी का बहुमुखी विकास काल किस काल को कहा जाता है?

(अ) प्रसाद युग (ब) **वर्तमान काल**

(स) द्विवेदी युग (द) भारतेंदु युग

12. विष्णु प्रभाकर किस श्रेणी के एकांकीकार हैं?

(अ) सामाजिक (ब) **राजनैतिक**

(स) मानवतावादी (द) पौराणिक

1. दीपदान (डॉ.रामकुमार वर्मा)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'दीपदान' एकांकी की मुख्य पात्र कौन है?

उ०– 'दीपदान' एकांकी की मुख्य पात्र 'पन्ना' है, जो चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा के छोटे पुत्र कुँवर उदयसिंह की धाय है। प्रस्तुत एकांकी की कथा पन्ना के चारों तरफ ही घूमती है, जिसमें पन्ना के साहस, प्रेम, बलिदान, स्वामिभक्ति आदि का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

2. 'दीपदान' उत्सव का आयोजन किसके द्वारा कराया गया और क्यों?

उ०– 'दीपदान' उत्सव का आयोजन चित्तौड़ के तत्कालीन संचालक बनवीर ने कराया था। उसने यह आयोजन चित्तौड़ के सिंहासन के उत्तराधिकारी उदयसिंह की हत्या करने के लिए किया था। बनवीर की योजना थी कि जब सभी उत्सव देखने में लीन रहेंगे तो वह रात्रि के अंधकार में चुपचाप जाकर उदयसिंह की हत्या कर देगा और उसके राजा बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

3. पन्ना ने उदयसिंह को उत्सव में क्यों नहीं भेजा?

उ०– पन्ना को बिना किसी कारण आयोजित किए जाने वाले दीपदान उत्सव के विषय में जानकर किसी षड्यंत्र का आभास होता है, इसलिए वह उदयसिंह को उत्सव में नहीं भेजती।

4. किस कारण बनवीर, उदयसिंह की हत्या कराना चाहता था?

उ०– उदयसिंह चित्तौड़ के महाराणा साँगा का छोटा कुँवर व सिंहासन का उत्तराधिकारी था। बनवीर उसका संरक्षक था। बनवीर सिंहासन प्राप्त करने के लिए उसकी हत्या कराना चाहता था।

5. पन्ना धाय खुद भी 'दीपदान' उत्सव में क्यों नहीं गई?

उ०– बनवीर की कुटिल प्रकृति से पन्ना भलीभाँति परिचित थी। उसे यह आभास हो गया था कि बनवीर कुँवर उदयसिंह को अपने मार्ग से हटाना चाहता है, अत: वह कुँवर उदयसिंह को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से 'दीपदान' उत्सव में नहीं गई।

6. बनवीर द्वारा उदयसिंह के विरुद्ध रचे जाने वाले षड्यंत्र के बारे में पन्ना को कैसे आभास हुआ?

उ०– पन्ना को रावल की पुत्री सोना के व्यवहार और उसके कथनों तथा महल की सेविका सामली द्वारा दी गई सूचना के फलस्वरूप यह आभास हो गया था कि बनवीर उदयसिंह के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है। सामली से ही पन्ना को यह ज्ञात होता है कि अपने भाई विक्रमादित्य की मृत्यु करने के बाद बनवीर यह कह रहा था कि वह उदयसिंह को भी जीवित नहीं छोड़ेगा। उसने बनवीर के सैनिकों द्वारा उदयसिंह के महल को घेरे जाने की सूचना भी पन्ना को दी।

7. पन्ना शैया पर उदयसिंह की जगह पर चंदन को क्यों सुला देती है?

उ०– पन्ना उदयसिंह की बनवीर से रक्षा करने के लिए उदयसिंह को कीरतबारी की टोकरी में लिटाकर महल के बाहर भेज देती है तथा बनवीर को धोखा देने के लिए चंदन को उदयसिंह की शैया पर सुला देती है।

8. पन्ना बनवीर पर कटार से वार क्यों करती है?

उ०– पन्ना बनवीर को धोखा देने के लिए उदयसिंह की शैया पर चंदन को सुला देती है, जब बनवीर सोए हुए चंदन को उदयसिंह समझकर उसकी हत्या करना चाहता है, तब पन्ना उसे ललकारते हुए उस पर कटार से वार करती है।

9. उदयसिंह को बचाने के लिए क्या-क्या उपाय किए जा रहे थे?

उ०– उदयसिंह को बचाने के लिए पन्ना बहुत से उपाय करती है। वह उदयसिंह को सोना के बुलाने पर भी दीपदान उत्सव में नहीं भेजती और सोना को वापस भेज देती है। सामली द्वारा उदयसिंह की हत्या के षड्यंत्र की सूचना मिलने के बाद वह उदयसिंह को कीरतबारी की टोकरी में लिटाकर महल से बाहर सुरक्षित स्थान पर भेज देती है तथा उसके स्थान पर अपने पुत्र चंदन को उसकी शैया पर सुला देती है।

10. इस एकांकी में कीरत का क्या योगदान है?

उ०– 'दीपदान' एकांकी में जूठी पत्तल उठाने वाले कीरतबारी का महत्वपूर्ण योगदान है, वही पन्ना के कहे अनुसार अपनी टोकरी में उदयसिंह को लिटाकर व पत्तलों से छिपाकर महल के बाहर सुरक्षित स्थान पर ले जाता है, जिससे उदयसिंह के प्राणों की रक्षा होती है।

11. स्पष्ट कीजिए कि इस एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है।

उ०– इस एकांकी का शीर्षक दीपदान सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है, क्योंकि एकांकी में सभी नगर निवासी तुलजा भवानी के सामने मयूर पक्ष कुंड में दीप का दान करते हैं तथा धाय माँ पन्ना अपनी स्वामिभक्ति के कारण उदयसिंह को बचाने के लिए अपने कुल के दीपक चंदन का दान करती है तथा बनवीर उदयसिंह के धोखे में चंदन की हत्या कर यमराज के सामने दीपदान करता है। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'दीपदान' एकांकी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'दीपदान' डा.रामकुमार वर्मा का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक एकांकी है। वे हिंदी एकांकी के जनक थे तथा हिंदी साहित्य में 'एकांकी सम्राट' के रूप में जाने जाते थे। दीपदान एकांकी की कथासार संक्षेप में निम्नवत् है—

दीपदान एकांकी की कथा चित्तौड़ की एक घटना पर आधारित है, जिसमें राजपूताना के त्याग-बलिदान का इतिहास चित्रित हुआ है। चित्तौड़गढ़ के महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद चित्तौड़गढ़ के वास्तविक उत्तराधिकारी का प्रश्न उठता है, जो वास्तव में राणा साँगा के छोटे पुत्र कुँवर उदयसिंह थे। परंतु कुँवर उदयसिंह के अल्पव्यस्क होने के कारण राणा साँगा के छोटे भाई पृथ्वीसिंह के दासीपुत्र बनवीर को उदयसिंह के संरक्षक के रूप में चित्तौड़ की गद्दी सौंप दी

जाती है। बनवीर बड़ा महत्वाकांक्षी व दुष्ट था। वह चित्तौड़ पर निरंकुश राज्य करना चाहता था। अत: वह 'मयूर-पक्ष' कुंड में असमय ही 'दीपदान' उत्सव का आयोजन कर उदयसिंह की हत्या का षड्यंत्र रचता है। कुँवर उदयसिंह की संरक्षिका पन्ना धाय, बनवीर की कुटिल प्रवृत्ति से भलीभाँति परिचित थी। अत: वह षड्यंत्र को भाँपकर उदयसिंह को उत्सव में नहीं जाने देती। कुँवर उदयसिंह पन्ना से दीपदान उत्सव में जाने की जिद करते हैं और अंतत: रूठकर बिना कुछ खाए भूमि पर सो जाते हैं। तभी रावल सरूपसिंह की पुत्री सोना उदयसिंह को उत्सव में ले जाने के लिए आती है, किंतु पन्ना उसको फटकारकर भगा देती है। वह सोना से स्पष्ट कहती है कि '' चित्तौड़ रास-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।''

इसके बाद पन्ना का पुत्र चंदन आता है और कुँवर के विषय में पूछता है और पन्ना से अपनी माला ठीक करने के लिए कहता है। तभी बाहर से घबराई हुई सेविका सामली आती है तथा पन्ना को महाराणा विक्रमादित्य की हत्या की सूचना देती है। वह पन्ना को बताती है कि बनवीर को लोगों ने कहते सुना है कि वह कुँवर उदयसिंह को भी जीवित नहीं छोड़ेगा। पन्ना कुँवर उदयसिंह की रक्षा का उपाय सोचते हुए उन्हें लेकर कुंभलगढ़ भाग जाने को कहती है। तब सामली उसे महल को सैनिकों के द्वारा घेरे जाने के बारे में बताती है।

तब जूठी पत्तल उठाने वाला कीरतबारी आता है तथा पन्ना उदयसिंह को महल से बाहर भेज देने की योजना तैयार करती है और उदयसिंह को कीरत की टोकरी में लिटाकर पत्तलों से छिपाकर महल के बाहर भेज देती है तथा उदयसिंह के स्थान पर अपने पुत्र चन्दन को उसकी शैया पर सुला देती है।

कुछ देर बाद बनवीर हाथ में नंगी तलवार लिए उदयसिंह के कमरे में आता है जिस पर रक्त लगा होता है। वह पन्ना को जागीर का प्रलोभन देता है, पर पन्ना अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहती है और बनवीर को फटकारती हुई कहती है- ''राजपूतनी व्यापार नहीं करती महाराज! वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।'' तब क्रोधित बनवीर उदयसिंह के धोखे में चंदन को पन्ना की आँखों के सामने ही मौत के घाट उतार देता है। पन्ना चीखकर मूर्च्छित हो जाती है। बनवीर के इस क्रूर कांड और पन्ना के अपूर्व त्याग-बलिदान के साथ ही एकांकी का कथानक समाप्त हो जाता है।

2. डॉ.रामकुमार वर्मा का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों की विवेचना कीजिए।

उ०- रामकुमार वर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य में 'एकांकी सम्राट' के रूप में जाने जाते हैं। डॉ.रामकुमार वर्मा हिंदी भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, व्यंग्यकार और हास्य कवि के रूप में जाने जाते हैं। रामकुमार वर्मा की हास्य और व्यंग्य दोनों विधाओं में समान रूप से पकड़ है। नाटककार और कवि के साथ-साथ उन्होंने समीक्षक, अध्यापक तथा हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखक के रूप में भी हिंदी साहित्य-सृजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रामकुमार वर्मा एकांकीकार, आलोचक और कवि हैं। इनके काव्य में 'रहस्यवाद' और 'छायावाद' की झलक है।

जीवन परिचय- डॉ.रामकुमार वर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में 15 सितंबर सन् 1905 ई.में हुआ। इनके पिता लक्ष्मीप्रसाद वर्मा डिप्टी कलक्टर थे। वर्मा जी को प्रारंभिक शिक्षा इनकी माता श्रीमती राजरानी देवी ने अपने घर पर ही दी, जो उस समय की हिंदी कवयित्रियों में विशेष स्थान रखती थी। बचपन में इन्हें 'कुमार' के नाम से पुकारा जाता था। रामकुमार वर्मा में प्रारंभ से ही प्रतिभा के स्पष्ट चिह्न दिखाई देते थे। ये सदैव अपनी कक्षा में प्रथम आया करते थे। पठन-पाठन की प्रतिभा के साथ ही साथ रामकुमार वर्मा शाला के अन्य कार्यों में भी काफी सहयोग देते थे। अभिनेता बनने की रामकुमार वर्मा की बड़ी प्रबल इच्छा थी। अतएव इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में कई नाटकों में एक सफल अभिनेता का कार्य किया है। रामकुमार वर्मा सन् 1922 ई.में दसवीं कक्षा में पहुँचे। इसी समय प्रबल वेग से असहयोग की आँधी उठी और रामकुमार वर्मा राष्ट्र सेवा में हाथ बँटाने लगे तथा एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता के रूप में जनता के सम्मुख आए। इसके बाद वर्मा जी ने पुन: अध्ययन प्रारंभ किया और सब परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करते हुए प्रयाग विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम.ए.में सर्वप्रथम आए। रामकुमार वर्मा ने नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। अनेक वर्षों तक रामकुमार वर्मा प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक तथा फिर अध्यक्ष रहे।

हिंदी एकांकी के जनक रामकुमार वर्मा ने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर 150 से अधिक एकांकी लिखीं। भगवतीचरण वर्मा ने कहा था, ''डॉ.रामकुमार वर्मा रहस्यवाद के पंडित हैं। उन्होंने रहस्यवाद के हर पहलू का अध्ययन किया है। उस पर मनन किया है। उसको समझना हो और उसका वास्तविक और वैज्ञानिक रूप देखना हो तो उसके लिए श्री वर्मा का 'चित्ररेखा' सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रंथ होगा।''

रामकुमार वर्मा हिंदी भाषा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा भी है, ''जिस देश के पास हिंदी जैसी मधुर भाषा है, वह देश

अंग्रेजी के पीछे दीवाना क्यों है? स्वतंत्र देश के नागरिकों को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए, हमारी भावभूमि भारतीय होनी चाहिए। हमें जूठन की ओर नहीं ताकना चाहिए।।''

रुचि– डॉ.रामकुमार वर्मा की कविता, संगीत और कलाओं में गहरी रुचि थी। 1921 तक आते–आते युवक रामकुमार, गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गए। उन्होंने 17 वर्ष की आयु में एक कविता प्रतियोगिता में 51 रुपये का पुरस्कार जीता था। यहीं से उनकी साहित्यिक यात्रा आरंभ हुई थी। डॉ.रामकुमार वर्मा ने देश ही नहीं विदेशों में भी हिंदी का परचम लहराया। 1957 में वे मास्को विश्वविद्यालय के अध्यक्ष के रूप में सोवियत संघ की यात्रा पर गए। 1963 में उन्हें नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय ने शिक्षा सहायक के रूप में आमंत्रित किया। 1967 में वे श्रीलंका में भारतीय भाषा विभाग के अध्यक्ष के रूप में भेजे गए। 5 अक्टूबर, सन् 1990 ई.में इस महान एकांकीकार का प्रयाग में निधन हो गया।

कृतियाँ–

काव्य कृतियाँ– अंजलि, चित्तौड़ की चिता, चित्ररेखा, एकलव्य, जौहर, चंद्रकिरण, उत्तरायण, रूपराशि आदि।

एकांकी– बादल की मृत्यु (सर्वप्रथम एकांकी), रेशमी टाई, दीपदान, इंद्रधनुष, बापू, रूपरंग, रिमझिम, चंपक, दस मिनट, मयूर पंख, पृथ्वीराज की आँखें आदि एकांकी इन्हें प्रसिद्धि दिलाने में विशेष सहायक रहे।

3. रामकुमार जी को किन–किन उपाधियों से अलंकृत किया गया?

उ०– डॉ.रामकुमार वर्मा हिंदी की लघु नाट्य परंपरा को एक नया मोड़ देने वाले 'एकांकी सम्राट' के रूप में जाने जाते हैं। रामकुमार वर्मा को नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' पर शोध करने के फलस्वरूप पी–एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। 'प्रयाग विश्वविद्यालय' ने इन्हें एक प्रतिभाशाली छात्र के रूप में सम्मानित करते हुए 'हालैंड मेडिल' से सम्मानित किया। भारत सरकार ने इनको सन् 1963 ई.में 'पद्म–भूषण' उपाधि से विभूषित किया। इनको मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'कालिदास' तथा 'देव' पुरस्कार दिए गए और 'हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग' द्वारा इन्हें 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

4. 'राजपूतनी व्यापार नहीं करती महाराज! वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर' इस कथन के माध्यम से पन्ना के किस चारित्रिक गुण का पता चलता है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'राजपूतनी व्यापार नहीं करती महाराज! वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर' इस कथन के माध्यम से पन्ना के सच्ची क्षत्राणी होने के गुण का पता चलता है। उसमें क्षत्राणियों जैसा अदम्य साहस, असीम त्याग और वीरता है। वह बनवीर की क्रूरता के सामने नतमस्तक नहीं होती और उसे धिक्कारते हुए कहती है– ''धिक्कार है बनवीर! तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म देते ही क्यों न मार डाला।'' वह साहस के साथ बनवीर पर अपनी कटार से प्रहार करती है और उसे हत्यारा बनवीर कहकर संबोधित करती है। वह रावल की पुत्री सोना को भी फटकारती है व कहती है– '' चित्तौड़ रास–रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।''

वह उदयसिंह से भी कहती है–''चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता, कुँवर! जैसे लता में फूल खिलते हैं, वैसे ही यहाँ के वीरों के हाथों में तलवार खिलती है।'' उसमें क्षत्राणियों के समान त्याग का गुण विद्यमान है। वह सोते हुए चंदन को संबोधित करते हुए कहती है– ''आज मैंने भी दीपदान किया है। दीपदान! अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है।'' अत: पन्ना निर्भीक, त्यागी, स्वामिभक्त व सच्ची क्षत्राणी है।

5. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर सोना का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उ०– सोना दीपदान एकांकी की दूसरी प्रमुख पात्र है। उसकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

(अ) अत्यंत सुंदर– सोना रावल सरूपसिंह की अत्यंत रूपवती लड़की है। उसकी आयु 16 वर्ष है। वह कुँवर उदयसिंह के साथ खेलती है तथा आयु में उससे दो वर्ष बड़ी है।

(ब) वाक्पटु एवं शिष्टाचारी– सोना बोलने में निपुण व राजमहल के शिष्टाचार से परिचित है। उसके शिष्टाचार व वाक्पटुता का उस समय पता चलता है जब वह महल में कुंवर उदय सिंह को दीपदान उत्सव के लिए लेने आती है। महल में प्रवेश कर वह पन्ना धाय को प्रणाम करती है और उनसे उदयसिंह के विषय में पूछती है। पन्ना के कहने पर–,'' वे थक गए हैं। सोना चाहते हैं।'' तब वह प्रत्युत्तर देती है, ''सोना चाहते हैं! तो मैं भी तो सोना हूँ।''

(स) सरल स्वभाव– सोना स्वभाव से सरल है। वह राजमहल में होने वाले षड्यंत्रों से अनभिज्ञ है। पन्ना के सम्मुख नृत्य की बात करना, बनवीर द्वारा कही गई बातों को खेल–खेल में पन्ना को बता देना, मयूरपक्ष कुंड उत्सव की बातों का वर्णन करना उसके सरल स्वभाल के ही प्रमाण हैं।

(द) **अस्थिर–** सोना स्वयं को स्थिर नहीं रख पाती। वह भ्रमित-सी दिखाई पड़ती है, क्योंकि वह एक ओर कुँवर उदयसिंह से प्रेम करती है और दूसरी ओर बनवीर के प्रलोभन में आ जाती है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सोना में अल्हड़ कन्या की समस्त विशेषताएँ हैं।

6. 'सामली' के विषय में संक्षिप्त रूप में लिखिए और इस एकांकी में उसके योगदान के बारे में बताइए।

उ०– 'सामली' अंत:पुर की साधारण-सी परिचारिका (सेविका) है। जिसकी आयु 28 वर्ष है। वह कुँवर उदयसिंह के प्रति स्वामिभक्त है। वह कुँवर उदयसिंह से प्रेम करती है व उन्हें चित्तौड़ के महाराज के रूप में देखती है।

सामली का 'दीपदान' एकांकी में महत्वपूर्ण स्थान है। सामली ही पन्ना धाय को बनवीर के षड्यंत्र व महाराणा विक्रमादित्य की हत्या की सूचना देती है। वहीं पन्ना को बताती है कि ''लोगों ने बनवीर को कहते सुना है कि वह कुँवर उदयसिंह को भी सिंहासन का अधिकारी समझकर जीवित नहीं रहने देगा।''

वह पन्ना से कहती है कि सभी सैनिक व सामंत भी उसी के साथ हैं। सामली पन्ना धाय की कुँवर उदयसिंह को महल से बाहर भेजने में मदद करती है। कीरतबारी के आने पर वह पन्ना के आदेशानुसार महल के बाहर सैनिकों की संख्या ज्ञात करती है तथा कीरत को उत्तर दिशा की तरफ से निकलने के लिए कहती है क्योंकि उस दिशा में सैनिकों की संख्या केवल सात है। उसके योगदान से ही कुँवर उदयसिंह के प्राण बचाने में पन्ना सफल होती है। सामली पन्ना को बनवीर के आने पर कुँवर को न पाकर बनवीर के प्रश्न पूछने की स्थिति से अवगत कराती है। पन्ना द्वारा कुँवर उदयसिंह की शैया पर चंदन को सुला देने की बात पर वह दु:खी होते हुए वहाँ से चली जाती है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में सामली का पन्ना की सहायिका के रूप में योगदान अतुलनीय है। सामली के योगदान से ही पन्ना चित्तौड़ के उत्तराधिकारी का संरक्षण करने में सफल रहती है।

7. 'महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है' से लेखन के कहने का क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बन कर बैठ गई है' से लेखक का अभिप्राय यह है कि धाय माँ पन्ना कुँवर उदयसिंह की रक्षा में निश्चल है। उन पर स्वामिभक्ति के कारण किसी प्रलोभन व सुख-दु:ख का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह कुंवर उदयसिंह की सेवा व रक्षा में दिन-रात लीन है, जिसके कारण वह अपने पुत्र चंदन का भी बलिदान कर देती है। पन्ना के महल में उदयसिंह की संरक्षिका के रूप में होने के कारण ही बनवीर उदयसिंह को मारने में असफल रहता है। वह अरावली पर्वत की भाँति ही उदयसिंह को आने वाले तूफानों से बचाती है।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'दीपदान' उत्सव के आयोजन का उद्देश्य था–

(अ) तुलजा भवानी को प्रसन्न करना (ब) **उदयसिंह की हत्या**

(स) बनवीर संगीत-प्रेमी व विलासी प्रवृत्ति का था (द) इनमें से कोई नहीं

2. इस एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' किस कारण से अधिक उपयुक्त है?

(अ) बनवीर उदयसिंह को मारकर दीपदान करता है।

(ब) **पन्ना अपने कर्तव्य के लिए कुल-दीपक का दान करती है।**

(स) चित्तौड़ की स्त्रियाँ नृत्य और गान के साथ दीपदान करती हैं।

(द) उपर्युक्त सभी

3. उदयसिंह को नृत्य दिखाने के लिए ले जाने का सोना इतना आग्रह क्यों करती है?

(अ) वह उदयसिंह को नृत्य दिखाना चाहती है। (ब) वह मन ही मन उदयसिंह से प्रेम करती है।

(स) **वह उदयसिंह को बनवीर के हाथों में सौंपना चाहती है।**

(द) उपर्युक्त सभी

4. बनवीर किस वजह से उदयसिंह को मारना चाहता था?

(अ) क्योंकि वह पन्ना से बैर रखता था। (ब) क्योंकि उदयसिंह सोना के बुलाने पर नहीं गया।

(स) **क्योंकि वह उदयसिंह को मारकर चित्तौड़ का राणा होना चाहता था।**

(द) उपर्युक्त सभी

5. **पन्ना चंदन को उदयसिंह की शय्या पर सुला देती है क्योंकि–**

(अ) उसे आशा नहीं है कि बनवीर चंदन की हत्या करेगा।

(ब) चंदन उस पर सोना चाहता है।

(स) **पन्ना चंदन को उदयसिंह बनाकर बनवीर को धोखा देना चाहती है।**

(द) उपर्युक्त सभी

6. **बनवीर ने चंदन से पहले किसकी हत्या की थी?**

(अ) सामली (ब) कीरतबारी

(स) **विक्रमादित्य** (द) सोना

7. **'एक तिनके ने राज सिंहासन को सहारा दिया है' कथन है–**

(अ) बनवीर का (ब) कीरतबारी का

(स) सामली का (द) **पन्ना का**

8. **जब कीरतबारी अपनी टोकरी में उदयसिंह को ले जा रहा था, तो पन्ना उसे कहाँ मिलने को कहती है?**

(अ) कुंभलगढ़ के दुर्ग के मार्ग पर (ब) **बेरिस नदी के किनारे श्मशान के पास**

(स) बनास नदी के तट पर स्थित शिवालय में (द) कहीं भी नहीं

9. **कीरत उदयसिंह को टोकरी में छिपाकर किले के बाहर ले जाता है क्योंकि–**

(अ) उसे इसके बदले में बड़ा पुरस्कार मिलने की आस है।

(ब) वह उदयसिंह से स्नेह करता है।

(स) **वह राज्यभक्ति की भावना से प्रेरित होकर कुँवर की रक्षा करना चाहता है।**

(द) वह पन्ना के आदेश को अपना धर्म समझता है।

10. **'दीपदान' एकांकी के लिए इसके अतिरिक्त सबसे उपयुक्त अन्य शीर्षक कौन-सा है?**

(अ) हत्यारा बनवीर (ब) त्याग

(स) स्वामिभक्ति (द) **पुत्र का बलिदान**

(घ) आंतरिक मूल्यांकन

विद्यार्थी स्वयं करें।

2. नए मेहमान (उदयशंकर भट्ट)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **विश्वनाथ और रेवती किस कारण से परेशान हैं?**

उ०– विश्वनाथ और रेवती भारत के एक बड़े नगर में रहते हैं और गरमी के कारण परेशान हैं, क्योंकि बड़े नगरों में मकान बहुत छोटे और बंद होते हैं।

2. **किस वजह से विश्वनाथ 'नए मेहमानों' से संतुष्ट नहीं था?**

उ०– विश्वनाथ 'नए मेहमानों' से इसलिए संतुष्ट नहीं था क्योंकि वह मेहमानों को पहचानता नहीं था और नए मेहमानों ने भी अपना परिचय सही ढंग से नहीं दिया था।

3. **'नया मेहमान' वास्तव में कौन है? प्रमाण और तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

उ०– शाब्दिक रूप में 'मेहमान' का आशय उस आगंतुक से होता है, जो बिना बताए ही आ जाए। मेहमान भी दो प्रकार के होते हैं- एक अपने व दूसरे पराए। प्रस्तुत एकांकी में रेवती व विश्वनाथ के घर तीन मेहमान आते हैं—नन्हेमल व बाबूलाल तथा रेवती का भाई। पहले आने वाले मेहमान नन्हेमल व बाबूलाल हैं, जो बिना किसी जान-पहचान के ही रेवती के घर आ जाते हैं और रेवती के लिए परेशानी का कारण बन जाते हैं। उनके किसी प्रकार से घर से चले जाने के बाद घर के नीचे से फिर किसी मेहमान की आवाज आती है। पहले मेहमानों से दु:खी रेवती, इस नए मेहमान की आवाज सुनकर एक बार तो चौंक जाती है कि ''अरे फिर!'' परंतु जब वह देखती है कि आगंतुक उसका भाई है तो वह बहुत खुश होती है और भाई की आवभगत में जुट जाती है। प्रस्तुत एकांकी में रेवती का यह भाई ही 'नए मेहमान' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

4. 'नए मेहमान' एकांकी हास्यप्रधान है या समस्याप्रधान? सकारात्मक उत्तर दीजिए।

उ०– 'नए मेहमान' एकांकी सामाजिक समस्याप्रधान एकांकी है। बड़े नगरों में जगह की समस्या एक प्रधान समस्या बन चुकी है। प्रस्तुत एकांकी में भट्ट जी ने बड़े नगरों में मध्यम वर्ग के लोगों की आवास की समस्या का विकराल रूप उजागर किया है। इसके साथ ही लोगों को पानी, हवा व धूप, महँगाई तथा पड़ोसियों की समस्या भी त्रस्त किए रहती है। इन समस्याओं के कारण बिना बुलाए घर को धर्मशाला समझने वाले और फरमाइश पर फरमाइश करने वाले ऐसे मेहमानों के आगमन पर ये लोग किस प्रकार चिंतित हो उठते हैं, इस तथ्य को भट्ट जी ने अपनी हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली में कुशलता से स्पष्ट किया है।

5. पड़ोसी विश्वनाथ से किस-किस बात की शिकायत करते हैं?

उ०– पड़ोसी विश्वनाथ से उसके मेहमानों द्वारा छत पर गंदा पानी फैलाकर छत गंदी करने तथा खाट बिछाकर लेट जाने की शिकायत करते हैं।

6. आगंतुक के आने पर रेवती की खुशी को स्पष्ट कीजिए।

उ०– आगंतुक रेवती का भाई है। रेवती अपनी भाई से बहुत स्नेह करती है। रेवती भाई के आने पर उससे खबर न देने की शिकायत करती है और उसकी आवभगत में लग जाती है तथा पंखा करती हुई अपने पुत्र प्रमोद से कहती है– 'अरे प्रमोद, जा जल्दी से बर्फ तो ला। मामाजी को ठंडा पानी पिला और देख, नुक्कड़ पर हलवाई की दुकान खुली हो तो.......।'' तथा गरमी में सर दर्द होने पर भी खाना बनाने को तैयार हो जाती है। इस प्रकार से आगंतुक के आने पर रेवती की खुशी का पता चलता है।

7. विश्वनाथ मेहमानों से स्पष्ट परिचय पूछने में क्यों हिचकिचा रहा था?

उ०– विश्वनाथ संकोची स्वभाव का था, अत: वह नवागंतुकों से स्पष्ट परिचय पूछने में हिचकिचा रहा था। साथ ही उसे इस बात का संदेह भी था कि यदि ये लोग उसके परिचित निकले तो कहीं स्पष्ट परिचय पूछना उसके लिए असम्मानजनक न हो जाए।

8. नन्हेमल व बाबूलाल की वाचालता के विषय में अपने विचार लिखिए।

उ०– नन्हेमल व बाबूलाल बड़े वाचाल हैं और हर प्रकार की बात बनाने में माहिर हैं। अपनी वाचालता के फलस्वरूप वे विश्वनाथ को अपना उचित परिचय नहीं देते हैं तथा विश्वनाथ जिस किसी का भी नाम उनके सामने लेता, उसी से वे अपना कोई न कोई संबंध बता देते हैं और अपनी वाचालता से विश्वनाथ को बहकाने का प्रयास करते हैं। अपनी इसी वाचालता के कारण ही वे विश्वनाथ का मेहमान न होते हुए भी घंटाभर उससे अपनी आवभगत कराते हैं।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'नए मेहमान' की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'नए मेहमान' उदयशंकर भट्ट का यथार्थवादी एकांकी है, जिसमें बड़े नगरों (महानगरों) में रहने वाले मध्यम वर्ग की आवास समस्या और कष्टपूर्ण जीवन का सजीव चित्रण किया गया है। एकांकी की कथावस्तु निम्नवत् हैं—

'नए मेहमान' एकांकी का मुख्य पात्र विश्वनाथ है। वह एक बड़े नगर की घनी बस्ती में अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रहता है। उसका मकान बहुत छोटा है। गर्मी का मौसम है और रात के आठ बजे हैं। उसका छोटा बच्चा बीमार है और उसकी पत्नी का गर्मी के कारण बुरा हाल है। उसके मकान की छत बहुत छोटी है जिस पर चारपाई बिछाने की भी पर्याप्त जगह नहीं है। विश्वनाथ की पड़ोसिन बहुत कठोर स्वभाव की है। वह अपनी खाली छत का भी उन्हें प्रयोग नहीं करने देती। इस वजह से विश्वनाथ बहुत दु:खी तथा परेशान है।

जैसे ही विश्वनाथ व उसका परिवार सोने की तैयारी करते हैं वैसे ही बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है। विश्वनाथ दरवाजा खोलता है। दो अपरिचित व्यक्ति बाबूलाल और नन्हेमल घर में प्रवेश करते हैं और घर में जम जाते हैं। वे विश्वनाथ से ठंडे पानी की माँग करते हैं। विश्वनाथ द्वारा उनका परिचय पूछे जाने पर वे उसे बातों में उड़ा देते हैं। विश्वनाथ संकोची स्वभाव के कारण कुछ नहीं कह पाता। विश्वनाथ की पत्नी रेवती खाना बनाने के लिए तैयार नहीं होती और अपने पति से जिद करती है कि इनसे इनका पता— परिचय पूछो। जब विश्वनाथ उनसे साफ-साफ पूछता है तो पता चलता है कि वे भूलवश उसके घर आ गए थे। वास्तव में उन्हें विश्वनाथ के पड़ोस में रहने वाले कविराज रामलाल वैद्य के घर जाना था और वे भूल से उसके घर आ गए थे। इस पर विश्वनाथ के बच्चे उन्हें सही स्थान पर पहुँचाकर आते हैं और दोनों पति-पत्नी चैन की साँस लेते हैं।

जैसे ही विश्वनाथ और रेवती इन दोनों से मुक्त होते हैं वैसे ही रेवती का भाई आ जाता है। अपने भाई के आगमन पर रेवती बहुत प्रसन्न होती है और उसकी आवभगत में लग जाती है। उसे इस बात का दु:ख है कि उसका भाई उनका मकान ढूँढ़ता रहा और बहुत देर बाद सही स्थान पर पहुँचा। वह भाई के बार-बार मना करने पर भी खाना बनाने को तैयार होती है और बच्चों को बर्फ व मिठाई लाने के लिए भेजती है। विश्वनाथ मुस्कुराकर व्यंग्य से कहता है- ''कहो, अब?'' इस पर रेवती कहती है— '' अब क्या-मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।'' इसी बिंदु पर एकांकी का विनोदपूर्ण अंत हो जाता है।

2. 'नए मेहमान' एकांकी की मुख्य स्त्री पात्र कौन है? उसका चरित्रांकन कीजिए।

उ०– 'नए मेहमान' एकांकी की मुख्य स्त्री पात्र विश्वनाथ की पत्नी रेवती है। वह मध्यम वर्ग के परिवार की गृहस्वामिनी का प्रतिनिधित्व करती है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) आवास की समस्या से पीड़ित– रेवती एक मध्यमवर्गीय सामान्य नारी है। उसका छोटा बच्चा बीमार है, मकान छोटा एवं कम हवादार है। वह और उसका बच्चा तेज गर्मी से पीड़ित है। आवास की समस्या से पीड़ित होकर वह झुँझला पड़ती है और कहती है- ''जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना पड़ेगा।''

(ब) पति परायणा एवं सहनशील– अपनी वर्तमान समस्याओं से पीड़ित होते हुए भी वह अपने पति से अत्यंत प्रेम करती है। वह खुद आँगन में लेटकर गर्मी में रात बिताने को तैयार है, परंतु पति को छत पर खुली हवा में सोने को विवश करती है। वह चाहती है कि उसके पति को कोई परेशानी न हो। वह अत्यधिक गर्मी में भी कष्ट उठाकर परिस्थितियों से समझौता कर लेती है। सहनशीलता उसका प्रमुख गुण है।

(स) पड़ोसी के अशिष्ट व्यवहार से पीड़ित– रेवती के प्रति उसके पड़ोसियों का व्यवहार अच्छा नहीं है। वह अपनी पड़ोसन लाला की औरत के विषय में अपने पति से शिकायत भी करती है। विश्वनाथ जब लाला से बात करने को कहता है तो वह कहती है—

'' क्या फायदा? अगर लाला मान भी जाए तो वह दुष्टा नहीं मानेगी।''

(द) तुनकमिजाज और शंकालु– रेवती परिस्थिति के कारण तुनकमिजाज हो गई है। अपरिचित मेहमानों के आने पर वह खाना नहीं बनाती और उनके प्रति शंका प्रकट करती हुई कहती है-''दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, फिर खाना बनाना, इनके लिए और इस समय? आखिर ये आए कहाँ से हैं?

(य) समझदार स्त्री– रेवती एक समझदार स्त्री है। विश्वनाथ संकोच के कारण मेहमानों से उनका परिचय पूछने में झिझकता है, परंतु रेवती एक समझदार स्त्री की भाँति विश्वनाथ को बार-बार उनका सही परिचय पूछने के लिए प्रेरित करती है। आखिर में पता चलता है कि मेहमान भूल से गलत स्थान पर आ गए हैं।

(र) भाई के प्रति स्नेही– रेवती अपने भाई से बहुत स्नेह करती है इसलिए सिर दर्द होते हुए भी वह भाई के आने पर उसकी आवभगत करती है और खाना बनाने को तैयार हो जाती है और कहती है— मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने पति से विपरीत स्वभाव वाली रेवती, आधुनिक महिलाओं की भाँति समझदार गृहिणी है। पारिवारिक परिस्थितियों ने उसके स्वभाव को चिड़चिड़ा बना दिया है। उसके माध्यम से उदयशंकर भट्ट जी ने मध्यमवर्गीय नारी का सही चित्रण किया है।

3. 'नए मेहमान' एकांकी में एकांकीकार का क्या उद्देश्य निहित है?

उ०– 'नए मेहमान' एकांकी उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित एक समस्याप्रधान सामाजिक हास्य एकांकी है, जो महानगरों में रहने वाले मध्यमवर्गीय परिवार का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। इसमें लेखक भट्ट जी ने महानगरों की आवास समस्या को संकेत रूप में उजागर किया है। महानगरों में मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए आवास की समस्या बड़ी विकट है। उन लोगों को छोटे एवं बंद मकानों में रहना पड़ता है, जिसमें प्रकाश तथा हवा का प्रवेश भी संभव नहीं होता।

मेहमानों के आने पर यह समस्या और भी जटिल हो जाती है। सीमित साधनों वाले व्यक्ति जिनके पास एक खुली छत भी नहीं होती, मेहमानों के आने पर किस प्रकार चिंतित हो जाते हैं, इसका प्रस्तुत एकांकी में भट्ट जी ने विश्वनाथ के परिवार के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया है। विश्वनाथ के शब्दों में— ''इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है, मकान है कि भट्टी?''

रेवती के शब्दों में आवास की समस्या इस प्रकार उजागर हुई है- ''घड़े में भी तो पानी ठंडा नहीं होता, हवा लगे तब तो ठंडा हो, जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना होगा।''

4. 'उदयशंकर भट्ट' जी का जीवन परिचय और कृतियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उ०– **जीवन परिचय–** प्रसिद्ध एकांकीकार उदयशंकर भट्ट का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा नगर में 3 अगस्त 1898 को हुआ था। चौदह वर्ष की अवस्था में ही माता–पिता का साया इनके सिर से उठ गया। इनका बाल्यकाल अपनी ननिहाल में व्यतीत हुआ। वहीं इन्होंने संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इसके बाद इन्होंने हिंदी व अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। भट्ट जी ने 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद पंजाब से 'शास्त्री' तथा कलकत्ता से 'काव्य–तीर्थ' की उपाधि भी प्राप्त की। सन् 1923 ई. में ये जीविका की खोज में लाहौर चले गए और वहीं हिंदी और संस्कृत के अध्यापक नियुक्त हो गए।

सन् 1947 ई. में देश विभाजन के बाद भट्ट जी लाहौर छोड़कर दिल्ली चले आए और काफी समय तक आकाशवाणी दिल्ली में 'निदेशक' रहे। सेवा–अवधि के उपरांत आप स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य में संलग्न रहे। आपने नाटक, आलोचना, कहानी तथा उपन्यास आदि विधाओं पर लेखनी चलाई। 22 फरवरी, 1966 ई.में साहित्य जगत की यह धरोहर सदैव के लिए चिरनिद्रा में विलीन हो गई।

इन्होंने अपना साहित्यिक जीवन काव्य–रचना से आरंभ किया। इनकी कविताओं के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं। काव्य के साथ–साथ इन्होंने एकांकी और बड़े नाटक भी लिखे हैं। 1922 ई. से ही इन्होंने नाटकों की रचना प्रारंभ की और आजीवन नाट्य–सृजन में लगे रहे।

कृतियाँ– एक ही कब्र में, दुर्गा, नेता, आज का आदमी, अपनी–अपनी खाट पर, विष की पुड़िया, बड़े आदमी की मृत्यु, परदे के पीछे, नया नाटक, मनु और मानव, दस हजार, वापसी आदि भट्ट जी के प्रमुख एकांकी हैं।

मुक्तिपथ, शंका विजय, विक्रमादित्य इनके ऐतिहासिक नाटक हैं। साहित्य सृजन में आपने नाट्य शैली को अपनाया है। आपके 'नया समाज' नाटक में आधुनिकता की झलक दिखती है।

5. इस एकांकी के प्रमुख पात्र विश्वनाथ का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उ०– 'नए मेहमान' एकांकी का प्रमुख पात्र विश्वनाथ है। वह आधुनिक नगरों में रहने वाले मध्यमवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) उदार व्यक्ति– विश्वनाथ महानगर में रहने वाला एक उदार व्यक्ति है। वह नौकरी करके अपने सीमित साधनों से अपने परिवार का भरण–पोषण करता है। वह उन सभी समस्याओं से ग्रस्त है, जो आधुनिक नगरों में सीमित साधनों वाले व्यक्तियों को सहन करनी पड़ती हैं, किंतु वह उन सबको सरलता के साथ सहता है। वह अपनी पत्नी एवं बच्चों के सुख–दु:ख का पूरा ध्यान रखता है और अपने अपरिचित मेहमानों के आ जाने पर भी झुँझलाता नहीं है।

(ब) मकान की समस्या से पीड़ित– विश्वनाथ बड़े नगर में मकान की समस्या से दु:खी है। वह किराए पर छोटा–सा मकान लेकर अपने परिवार के साथ जीवनयापन कर रहा है। वह दो वर्ष से हवादार, खुले और अच्छे मकान की तलाश में है। वह पड़ोसिन के दुर्व्यवहार को सहन करता हुआ संघर्षशील व्यक्ति की भाँति अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। मकान की समस्या पर प्रकाश डालता हुआ वह कहता है— **''मकान मिलता ही नहीं। आज दो साल से दिन–रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ। ....एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी बच्चों के लिए एक खाट नहीं बिछाने देते।''**

(स) विनम्र एवं संकोची– विश्वनाथ विनम्र एवं संकोची स्वभाव का है। यही कारण है कि देर रात में आए अपरिचित मेहमानों से वह उनका स्पष्ट परिचय भी नहीं पूछ पाता और उनकी सेवा में लग जाता है। पड़ोसियों के निर्दयी और अशिष्ट व्यवहार पर भी वह उनसे कुछ नहीं कहता और क्षमा माँगते हुए कहता है, **''अनजान आदमी से गलती हो ही जाती है। उसे क्षमा कर देना चाहिए। कल से ऐसा नहीं होगा।''**

(द) समझौताप्रिय– विश्वनाथ परिस्थितियों से समझौता करना अच्छी तरह जानता है। नए मेहमानों के आने पर जब उसकी पत्नी रेवती सिर दर्द के कारण खाना बनाने में असमर्थता प्रकट करती है तो वह उससे कुछ कहे बिना बाजार से खाना लाने को तैयार हो जाता है और मेहमानों की चिंता करते हुए अपनी पत्नी से कहता है— **''क्या कहेंगे कि रातभर भूखा मारा, बाजार से कुछ मँगा दो न!''**

(य) अतिथि–सत्कार करने वाला– विश्वनाथ के हृदय में अतिथियों के प्रति सेवाभाव है। अपने सीमित साधनों में भी वह अतिथियों की सेवा करने की भावना रखता है। अपरिचित अतिथियों को भी वह प्रेम से बैठाता है, बर्फ मँगाकर ठंडा पानी पिलाता है, स्नान का प्रबंध करता है और अपनी पत्नी से खाना बनाने के लिए कहता है, –'' कोई भी हो,

जब आए हैं तो जरूर खाना खाएँगे, थोड़ा सा बना लो।'' तथा गंतव्य स्थान का पता लगने पर अपने बच्चों द्वारा उन्हें सही स्थान पर पहुँचा देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्वनाथ सभ्य, सुसंस्कृत, संकोची, विनम्र व्यक्ति है। साधनों का अभाव होते हुए भी अतिथि सेवा का भाव उसके अंदर विद्यमान है।

6. 'नए मेहमान' एकांकी का शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ०– 'नए मेहमान' एकांकी का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है। क्योंकि 'मेहमान' उस आगंतुक को कहा जाता है जो बिना बताए ही आ जाए। प्रस्तुत एकांकी में विश्वनाथ व रेवती के घर तीन मेहमान आते हैं– बाबूलाल, नन्हेमल व रेवती का भाई। जिनमें नन्हेमल व बाबूलाल अपरिचित (पराए) मेहमान हैं तथा रेवती का भाई अपना। एकांकी में ये तीनों ही मेहमान बिना बताए ही रेवती व विश्वनाथ के घर आते हैं। सर्वप्रथम एकांकी में बाबूलाल व नन्हेमल विश्वनाथ के घर आते हैं जो भूल से उनके घर आ जाते हैं तथा जिनके कारण विश्वनाथ व रेवती दुविधा में पड़ जाते हैं। जैसे ही वे विदा लेते हैं एक और नया मेहमान, रेवती का भाई, आ जाता है। जिसे देखकर वे दोनों प्रसन्न हो जाते हैं। इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि यह आने वाले मेहमानों को इंगित करता है।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विश्वनाथ एवं रेवती परेशान हैं–

(अ) वर्षा के कारण (ब) अँधेरे के कारण

(स) सरदी के कारण (द) **गरमी के कारण**

2. विश्वनाथ के पड़ोसी हमेशा उनसे परेशान क्यों रहते थे?

(अ) क्योंकि उनके यहाँ कोई मेहमान नहीं आता था।

(ब) **क्योंकि वे स्वार्थी थे और किसी भी प्रकार की असुविधा सहन नहीं कर सकते थे।**

(स) क्योंकि विश्वनाथ उनके धन को देखकर उनसे ईर्ष्या करता था।

(द) क्योंकि विश्वनाथ के परिवार वाले उन्हें हमेशा तंग करते थे।

3. पड़ोसी विश्वनाथ से किस बात की शिकायत करता है?

(अ) मेहमानों द्वारा छत पर कपड़े फैलाना (ब) मेहमानों द्वारा शोर मचाने के कारण

(स) मेहमानों द्वारा छत पर खाट बिछाना (द) **मेहमानों द्वारा छत पर गंदा पानी फैलाना**

4. विश्वनाथ के दोनों मेहमान–

(अ) **वास्तव में पता भूल गए थे।** (ब) केवल रात बिताना चाहते थे।

(स) विश्वनाथ को ठगना चाहते थे। (द) वे विश्वनाथ के रिश्तेदार थे।

5. विश्वनाथ ने पड़ोसियों को निर्दयी क्यों कहा?

(अ) क्योंकि वे उनकी मुसीबत को देखकर खुश होते थे।

(ब) क्योंकि वे अपनी खाली छत पर उनके बच्चों के लिए खाट नहीं बिछाने देते थे।

(स) क्योंकि उनमें सामाजिकता का भाव नहीं था।

(द) **उपर्युक्त सभी**

6 रेवती नए मेहमानों के लिए खाना नहीं बनाना चाहती; क्योंकि–

(अ) मेहमानों से उसकी आत्मीयता नहीं थी। (ब) रात में खाना बनाना संभव नहीं था।

(स) सचमुच उसके सिर में दर्द था। (द) **उपर्युक्त सभी**

7. मेहमान व आगंतुक के स्वागत में रेवती–

(अ) **भेदभाव करती है।** (ब) दोनों के स्वागत में रुचि नहीं लेती है।

(स) दोनों का स्वागत आदर से करती है। (द) दोनों का स्वागत एक समान भाव से करती है।

8. विश्वनाथ, नन्हेमल और बाबूलाल को पहचानने से इंकार क्यों नहीं कर सका?

(अ) **क्योंकि उसे संदेह था शायद ये दोनों सचमुच ही उसके किसी संबंधी द्वारा भेजे गए हों।**

(ब) क्योंकि उसे मेहमान नाराज न हो जाए, इसका डर था।

(स) क्योंकि उसे उन दोनों की दशा पर दया आ गई।

(द) उपर्युक्त सभी

9. रेवती दूसरे आगंतुक के लिए खाना बनाने को तुरंत तैयार हो जाती है–

(अ) वह स्वार्थी है। (ब) **दूसरा आगंतुक रेवती का भाई था।**

(स) विश्वनाथ के विशेष निर्देश के कारण (द) उपर्युक्त सभी

(घ) आन्तरिक मूल्यांकन

विद्यार्थी स्वयं करें।

3. व्यवहार (सेठ गोविंददास)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एकांकीकार के अनुसार 'व्यवहार' क्या है?

उ०– एकांकीकार के अनुसार भोज में आमंत्रित व्यक्ति जमींदार के सम्मान में जो कुछ भी अर्थात् अधिक से अधिक रुपया-पैसा उपहार स्वरूप जमींदार को देता है, उसे ही व्यवहार कहा जाता है।

2. 'व्यवहार' किस प्रकार का एकांकी है?

उ०– सेठ गोविंददास द्वारा रचित 'व्यवहार' एकांकी ग्रामीण परिवेश में रचित एक सामाजिक और समस्याप्रधान एकांकी है। इस एकांकी में एकांकीकार ने ग्रामीण किसानों व आधुनिक परिवेश में शिक्षित एक किसान-पुत्र के मध्य विचारों की विभिन्नता का चित्रण किया है। इस एकांकी में जमींदारों द्वारा गरीब किसानों के शोषण को न केवल चित्रित किया गया है बल्कि उसका समाधान भी बताया है कि गरीबों का शोषण करने वाले जमींदारों और साधन-संपन्न लोगों को स्वयं आगे बढ़कर इनके कल्याण की पहल करनी चाहिए।

3. 'व्यवहार' एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र कौन है और क्यों?

उ०– 'व्यवहार' एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र क्रांतिचंद्र है। वह आधुनिक परिवेश में शिक्षित एक किसान-पुत्र है, जो जमींदारों की कार्य प्रणाली को भली प्रकार से जानता व समझता है। वह किसानों को उनकी शक्ति से अवगत कराता है तथा शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित करता है तथा किसानों को जमींदार के द्वारा दिए जाने वाले भोज में न जाने के लिए तैयार कर लेता है। ऐसा करने के लिए वह निरर्थक दलीलों का सहारा नहीं लेता, वरन् पुष्ट तार्किक आधार भी देता है। वह एक किसान-पुत्र होने के कारण किसानों के हित को भली प्रकार जानता है और उचित कदम उचित समय पर उठाता है। अत: क्रांतिचंद्र इस एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र है।

4. नर्मदाशंकर की दृष्टि में सभी किसान परिवार सहित भोज में नहीं आने चाहिए, ऐसा आपकी दृष्टि में कहाँ तक उचित है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– नर्मदाशंकर के अनुसार सभी किसान परिवार सहित भोज में नहीं आने चाहिए, यह हमारी दृष्टि में गलत है क्योंकि ऐसा करना किसानों का शोषण करना है और जमींदारों व साधन संपन्न लोगों व किसानों के बीच की कटुता को बढ़ाना है। अत: नर्मदाशंकर का यह दृष्टिकोण उपयुक्त नहीं है। समाज में समानता लाने के लिए जमीदारों व संपन्न लोगों को किसानों व गरीबों के कल्याण के लिए पहल करनी ही चाहिए।

5. एकांकीकार ने 'व्यवहार' एकांकी को कितने दृश्यों में बाँटा है?

उ०– एकांकीकार सेठ गोविंददास ने 'व्यवहार' एकांकी को तीन दृश्यों में बाँटा है। पहले दृश्य में जमींदार रघुराजसिंह व उसके मैनेजर नर्मदाशंकर का किसानों को भोज में बुलाने, कर्ज माफ करने, बिना नजराना लिए जमीन देने आदि पर वार्तालाप का वर्णन है। दूसरे दृश्य में गरीब किसानों की भोज को लेकर पंचायत व चूरामन व उसके शिक्षित पुत्र क्रांतिचंद्र का वार्तालाप तथा क्रांतिचंद्र का शोषण के विरुद्ध किसानों को प्रेरित करने का चित्रण किया गया है तथा तीसरे दृश्य में

किसानों द्वारा भोज का बहिष्कार करने पर नर्मदाशंकर व रघुराजसिंह की प्रतिक्रिया व रघुराजसिंह का जमींदारी की तौक गले से उतारने के निर्णय का चित्रण लेखक ने किया है।

6. 'विश्व प्रेम' के लेखक कौन हैं?

उ०– 'विश्व प्रेम' के लेखक सेठ गोविंददास जी हैं। यह उनका प्रथम नाटक है।

7. 'व्यवहार' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उ०– प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य जमींदारों के असली रूप को उजागर करके, किसानों को उनकी संगठित शक्ति का अनुभव कराके जमींदारों के चंगुल से मुक्त कराना है। जब तक देश के मजदूर-किसान संगठित और शिक्षित नहीं होंगे तब तक इनका शोषण होता रहेगा। एकांकीकार ने किसानों के इस दर्द को पाठकों के सम्मुख विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। एकांकी का उद्देश्य किसानों को जमींदारों के शोषण से बचाना, उन्हें उनकी वास्तविक शक्ति का अनुभव कराना तथा जमींदारों का परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए रघुराजसिंह की भाँति किसानों के लिए कल्याण के आगे बढ़ने को प्रेरित करना है।

8. क्रांतिचंद्र का कहना मानकर किसानों का भोज में न आने का फैसला करना क्या आपको सही लगता है? यह फैसला कहाँ तक सही है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– क्रांतिचंद्र का कहना मानकर किसानों का भोज में न आने का फैसला करना हमें सर्वथा उचित लगता है, क्योंकि इस फैसले के कारण ही जमींदार रघुराजसिंह जमींदारी की तौक को गले से निकालकर किसानों के हित के लिए किसानों जैसा बनकर उनके कल्याण में अपना जीवन व्यतीत करने की सोचता है। रघुराजसिंह समझ जाता है कि किसान अब अन्याय व अत्याचार सहन नहीं करेंगे, वे अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार हैं। अत: किसानों द्वारा भोज का बहिष्कार करना एक उचित कदम है।

9. 'व्यवहार' एकांकी की क्या-क्या विशेषताएँ हैं? प्रकाश डालिए।

उ०– सेठ गोविंददास ने प्रस्तुत एकांकी में एक शिक्षित जमींदार रघुराजसिंह व उसके मैनेजर नर्मदाशंकर व ग्रामीण किसानों व आधुनिक परिवेश में शिक्षित किसान-पुत्र के मध्य विचारों की विभिन्नता का द्वंद्व प्रस्तुत किया है। एकांकी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) **सुसंगठित कथावस्तु–** एकांकी की कथावस्तु सर्वथा सुसंगठित एवं व्यवस्थित है। कहीं पर भी अव्यवस्था दृष्टिगत नहीं होती, जिस कारण पूरी कथा तेजी के साथ आगे बढ़ती है। एकांकी में तीन दृश्य हैं तथा तीनों दृश्यों की कथा परस्पर एकसूत्र में पिरोई गई है। कथानक का कोई भी अंश अलग करना संभव नहीं है।

(ब) **स्वाभाविक विकास–** एकांकी के द्वारा जिस सामाजिक समस्या को प्रस्तुत किया गया है, उसका यहाँ स्वाभाविक विकास दर्शाया गया है। एकांकी में कथानक का प्रारंभ रघुराजसिंह और नर्मदाशंकर के वार्तालाप से होता है। क्रांतिचंद्र व किसानों के वार्तालाप से विकसित होता हुआ कथानक किसानों के द्वारा भोज के निमंत्रण को अस्वीकार कर देने पर चरम सीमा को प्राप्त होता है। किसानों के कल्याण में जीवन व्यतीत करने के रघुराजसिंह के निर्णय पर कथानक समाप्त हो जाता है।

(स) **कौतूहल–** कौतूहल एकांकी का मुख्य गुण है। एकांकी के प्रारंभ से अंत तक कौतूहल बना हुआ है। नर्मदाशंकर की बात पर रघुराजसिंह नाराज होगा या उसकी बात मान लेगा, किसान क्रांतिचंद्र की बात मानेंगे या नहीं तथा किसानों द्वारा भोज का बहिष्कार किए जाने पर जमींदार क्या कदम उठाएगा, इसका कौतूहल एकांकी के समाप्त होने तक बना रहता है।

(द) **संकलन-त्रय–** समय, स्थान और वातावरण की एकता (सामंजस्य) ही संकलन त्रय है। एकांकी में पहला और तीसरा दृश्य रघुराजसिंह के महल तथा दूसरा दृश्य गाँव का है। एकांकी के मंचन में दो दृश्यों के ही विधान की आवश्यकता है जिसके प्रस्तुतीकरण में कोई अस्वाभाविकता प्रकट नहीं होती। अत: संकलन त्रय की योजना में एकांकीकार को पूर्णतया सफलता मिली है।

10. 'व्यवहार' एकांकी में एकांकीकार द्वारा क्या संदेश दिया गया है?

उ०– 'व्यवहार' एकांकी के द्वारा एकांकीकार जमींदार व जमींदारों के वास्तविक स्वरूप को सामने प्रकट करके उन लोगों को संदेश देना चाहता है, जो उनके अंधे भक्त है। क्रांतिचंद्र एक शिक्षित नवयुवक है। वह रघुराजसिंह द्वारा किसानों को भोज में आमंत्रित किए जाने को धोखा बताता है। जब वह रघुराजसिंह का विरोध करता है और किसान उसके सम्मुख जमींदार के

अच्छे कार्यों की दुहाई देते हैं तो क्रांतिचंद्र अपने तर्कों के आधार पर यह सिद्ध कर देता है कि जमींदार ने ये कार्य अपने लाभ के लिए ही किए हैं। एकांकी के द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि जमींदार और किसान के हित विपरीत हैं तथा क्रांतिचंद्र व रघुराजसिंह की सोच भी एक दूसरे के विपरीत है। रघुराजसिंह एक विवेकशील जमींदार है जो अपने पूर्वजों के द्वारा किए गए ग्रामीणों के शोषण को उचित नहीं समझता तथा इसे जारी रखना उसके लिए कठिन है। विचारों के मंथन से वह मानवता के सच्चे स्वरूप को पहचानकर अपनी कार्य प्रणाली बदलने का विचार करता है। एकांकी का मुख्य संदेश यही है कि जमींदारी प्रथा अथवा इस तरह की किसी भी शोषक प्रथा को जड़ से समाप्त करने के लिए मात्र शोषितों का संगठन ही पर्याप्त नहीं है अपितु उन्हें उचित मार्गदर्शन भी मिलना चाहिए। साथ ही शोषक का हृदय परिवर्तन भी आवश्यक है।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'व्यवहार' एकांकी का सारांश लिखिए।

अथवा

'व्यवहार' शीर्षक एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

उ०– सेठ गोविंददास द्वारा रचित 'व्यवहार' एकांकी ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस एकांकी में सेठ गोविंददास ने जमींदार व किसानों के संघर्ष और उससे उपजे अंतर्द्वंद्व तथा जमींदार वर्ग की युवा पीढ़ी को गरीब किसान मजदूरों के हित का चिंतन करते हुए चित्रण किया है। एकांकी तीन दृश्यों में विभाजित है। एकांकी की कथावस्तु निम्नवत है—

प्रथम दृश्य– यह दृश्य रघुराजसिंह के महल की बालकनी से प्रारंभ होता है। रघुराजसिंह गाँव का जमींदार है तथा नर्मदाशंकर उसका मैनेजर है। रघुराजसिंह अपनी बहन के विवाह के उपलक्ष्य में आयोजित भोज में सभी ग्रामीण किसानों को परिवार सहित आमंत्रित करता है। रघुराजसिंह इसके निर्णय को उसका मैनेजर गलत बताता है क्योंकि ऐसा करने से उसे पर्याप्त आर्थिक हानि होगी। रघुराजसिंह के पूर्वज ऐसे अवसरों पर चुने हुए घरों से केवल मर्दों को बुलाते थे। जिससे भोजन कराने में खर्च कम होता था और व्यवहार से (उपहार से) आमदमी अधिक होती थी। नर्मदाशंकर रघुराजसिंह के किसानों के हित में लिए गए कुछ अन्य फैसलों-लगान कम करना, कर्ज माफ करना तथा बिना नजराना लिए जमीन देने को भी गलत बताता है। रघुराजसिंह का मानना है कि किसानों का शोषण करना तथा उनसे व्यवहार लेना अनुचित है।

द्वितीय दृश्य– यह दृश्य गाँव के एक मकान के कोठे से प्रारंभ होता है जहाँ बहुत से किसान बैठे हैं जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के हैं। इन्हीं में 22-23 वर्ष का एक शिक्षित युवक है, जो देखने में किसान नहीं लगता। वह चूरामन नामक किसान का बेटा क्रांतिचंद्र है। उसने गाँव के एक घर में सभी किसान, गाँव के पंचों तथा अन्य ग्रामीणों की एक सभा का आयोजन किया है। जिसका उद्देश्य जमींदार द्वारा दिए गए भोज के आमंत्रण पर निर्णय लेना है कि किसान वहाँ जाएँ या नहीं। क्रांतिचंद्र इस बात से क्षुब्ध है कि निर्णय लेने में देरी क्यों की जा रही है, जबकि दावत का समय नजदीक आता जा रहा है। क्रांतिचंद्र निमंत्रण को अस्वीकार करना चाहता है, क्योंकि उसे स्वीकार करना किसान मजदूरों का अपमान है। क्योंकि वह एक बार अपने पिता के साथ जाकर उस अपमान का अनुभव कर चुका है। सभी किसान इस बात पर सहमत नहीं हो पाते। कुछ किसानों का मानना है कि नहीं जाना चाहिए तथा कुछ का मानना है कि जाना चाहिए। तब क्रांतिचंद्र किसानों को बताता है कि जमींदार किस प्रकार से उन्हें धोखा दे रहा है। जब किसान जमींदार द्वारा किए गए उपकारों की दुहाई देते हैं तो क्रांतिचंद्र अपने तर्कों के द्वारा यह सिद्ध कर देता है कि ये सब कार्य जमींदार ने केवल अपने लाभ के लिए किए हैं। यही बात सबको भोज के निमंत्रण पर भी है।

इस प्रकार क्रांतिचंद्र भोज के निमंत्रण को स्वीकार करने को किसानों का अपमान सिद्ध करते हुए उसे अस्वीकार करने के लिए वहाँ से चला जाता है। सभी किसान स्तब्ध रह जाते हैं।

तृतीय दृश्य– जमींदार रघुराजसिंह की बालकनी से प्रारंभ होता है जहाँ वह बैचेनी से टहल रहा होता है। तभी उसका मैनेजर बदहवास हालत में किसान प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र की चिट्ठी लेकर आता है। पत्र को पढ़कर रघुराजसिंह का सिर शर्म से झुक जाता है क्योंकि यह पत्र किसानों द्वारा भोज निमंत्रण को अस्वीकार करने से संबंधित है। नर्मदाशंकर इसे किसानों की बदमाशी बताता है। यह किसानों द्वारा जमींदारों को बेइज्जत करने वाला कार्य है। रघुराजसिंह निश्चय करते हैं कि उन्हें अभी और बदलाव करने होंगे, जिससे वह किसानों का स्नेह व विश्वास प्राप्त कर सके। नर्मदाशंकर के समझाने पर भी वह जमींदारी की तौक गले से निकालकर किसानों के सच्चे हित में अपना जीवन व्यतीत करने का निर्णय लेता है। यहीं पर एकांकी का समापन होता हैं।

2. एकांकी का शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है? इस बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ०– प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक 'व्यवहार' सभी दृष्टियों से सार्थक है। शास्त्रीय दृष्टि से एक उपर्युक्त शीर्षक में तीन विशेषताओं का होना आवश्यक है- 1.कथानक का संकेतक होना 2.संक्षिप्त होना 3.कौतूहलवर्द्धक होना।

इस दृष्टि से 'व्यवहार' एकांकी के कथानक का संकेतक है। इसके नाम से ही पता चलता है कि इसका कथानक किसी प्रकार के व्यवहार पर आधारित है। वास्तव में एकांकी का प्रारंभ व अंत व्यवहार लेने की कशमकश से होता है। एकांकी में व्यवहार (विवाह आदि अवसरों पर दिया जाने वाला उपहार) ही रघुराजसिंह के व्यवहार को परिवर्तित कर देता है और वह जमींदारी की तौक को अपने गले से निकालकर किसानों का सच्चा हितैषी बनकर अपना जीवन व्यतीत करने का निर्णय करता हैं। 'व्यवहार' एक शब्द का शीर्षक है, अत: संक्षिप्तता की विशेषता भी इसमें उपस्थित है।

एकांकी के प्रांरभ से अंत तक इसमें कौतूहल बना रहता है कि रघुराजसिंह नर्मदाशंकर की बात माने या नहीं, जमींदार रघुराजसिंह व्यवहार लेगा या नहीं, किसान भोज का निमंत्रण स्वीकार करेंगे या नहीं। किसान प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र की चिट्ठी मिलने के बाद भी कौतूहल बना रहा है कि जमींदार रघुराजसिंह क्या निर्णय लेगा। यह कौतूहल एकांकी की समाप्ति पर जमींदार के जमींदारी की तौक को गले से उतारकर फेंकने की बात पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

3. 'सेठ गोविंददास' का जीवन परिचय एवं कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उ०– जीवन परिचय– सेठ गोविंददास हिंदी के अनन्य साधक, भारतीय संस्कृति में अटल विश्वास रखने वाले, कला-मर्मज्ञ एवं विपुल मात्रा में साहित्य-रचना करने वाले, हिंदी के उत्कृष्ट नाट्यकार ही नहीं थे, अपितु सार्वजनिक जीवन में अत्यंत स्वच्छ, नीति-व्यवहार में सुलझे हुए, सेवाभावी राजनीतिज्ञ भी थे।

सेठ गोविंददास का जन्म मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर शहर में राजा गोकुलदास के परिवार में संवत 1953 (सन् 1896) को विजयादशमी के दिन हुआ। राज-परिवार में पले-बढ़े सेठजी की शिक्षा-दीक्षा भी आला दर्जे की हुई। अंग्रेजी भाषा, साहित्य और संस्कृति ही नहीं, स्केटिंग, नृत्य, घुड़सवारी का जादू भी इन पर चढ़ा।

सेठ गोविंददास का पारिवारिक वातावरण भक्तिमय रहा। आपकी कृष्ण के प्रति अटूट श्रद्धा थी। अवसर प्राप्त होते ही धार्मिक उत्सवों पर रास लीलाओं में भाग लेना आपको बहुत पसंद था। इसी से आपमें नाट्य-साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न हुई। तभी गाँधी जी के असहयोग आंदोलन का तरुण गोविंददास पर गहरा प्रभाव पड़ा और वैभवशाली जीवन का परित्याग कर वे दीन-दुखियों के साथ सेवकों के दल में शामिल हो गए तथा दर-दर की खाक छानी, जेल गए, जुर्माना भुगता और सरकार से बगावत के कारण पैतृक संपत्ति का उत्तराधिकार भी गँवाया।

सेठजी ने देवकीनंदन खत्री के तिलस्मी उपन्यासों 'चंद्रकांता' व 'चंद्रकांता संतति' की तर्ज पर 'चंपावती', 'कृष्णलता' और 'सोमलता' नामक उपन्यास लिखे, वह भी मात्र सोलह वर्ष की किशोरावस्था में।

साहित्य में दूसरा प्रभाव सेठजी पर शेक्सपीयर का पड़ा। शेक्सपीयर के 'रोमियो-जूलियट', 'एजयू लाइक इट', 'पेटेक्वीज प्रिंस ऑफ टायर' और 'विंटर्स टेल' नामक प्रसिद्ध नाटकों के आधार पर सेठजी ने 'सुरेंद्र-सुंदरी', 'कृष्णकामिनी', 'होनहार' और 'व्यर्थ संदेह' नामक उपन्यासों की रचना की। इस तरह सेठजी की साहित्य-रचना का प्रारंभ उपन्यास से हुआ। इसी समय उनकी रुचि कविता में बढ़ी। अपने उपन्यासों में तो जगह-जगह उन्होंने काव्य का प्रयोग किया ही, 'वाणासुर-पराभव' नामक काव्य की भी रचना की। सन् 1917 में सेठजी का पहला नाटक 'विश्व प्रेम' छपा। उसका मंचन भी हुआ। सन् 1974 ई.में सेठजी का देहांत हो गया।

प्रमुख एकांकी– सेठ गोविंददास के नाटकों एवं एकांकियों की संख्या सौ से भी ऊपर है। इनके प्रमुख एकांकियों को विभिन्न शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है–

(क) ऐतिहासिक– बुद्ध की एक शिष्या, बुद्ध के सच्चे स्नेही कौन?, नानक की नमाज, तेगबहादुर की भविष्यवाणी, परमहंस का पत्नी प्रेम आदि।

(ख) सामाजिक समस्या प्रधान– स्पर्द्धा, मानव-मन, मैत्री, हंगर-स्ट्राइक, ईद और होली, जाति उत्थान, वह मरा क्यों? आदि

(ग) राजनीतिक– सच्चा कांग्रेसी कौन आदि

(घ) पौराणिक– कृषि यज्ञ इसके अतिरिक्त इनके अन्य प्रमुख एकांकी संग्रह हैं– सप्तरश्मि, एकादशी, पंचभूत, चतुष्पद, आपबीती, जगबीती, मैं, अष्टदश, कर्तव्य, हर्ष, प्रकाश आदि।

4. साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें किस उपाधि से विभूषित किया गया?

उ०– सेठ गोविंददास भारत के स्वतंत्रता सेनानी, सांसद तथा हिंदी के साहित्यकार थे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1961 ई. में पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। भारत की राजभाषा के रूप में वे हिंदी के प्रबल समर्थक थे। सेठ गोविंददास हिंदी के कला मर्मज्ञ एवं विपुल मात्रा में साहित्य रचना करने वाले नाटककार ही नहीं थे अपितु सार्वजनिक जीवन में अत्यंत स्वच्छ, नीति-व्यवहार में सुलझे हुए सेवाभावी राजनीतिज्ञ थे।

5. 'सेठ गोविंददास हिंदी के प्रबल समर्थक थे' स्पष्ट कीजिए।

उ०– हिंदी भाषा की हित चिंता में तन-मन-धन से लीन सेठ गोविंददास हिंदी साहित्य सम्मेलन के अत्यंत सफल सभापति सिद्ध हुए। हिंदी के प्रश्न पर सेठजी ने कांग्रेस की नीति से हटकर संसद में दृढ़ता से हिंदी का पक्ष लिया। वह हिंदी के प्रबल पक्षधर और भारतीय संस्कृति के संवाहक थे। हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए ये जीवनपर्यंत प्रयत्नशील रहे और कालांतर में आपके प्रयासों से हिंदी राष्ट्रभाषा बनी भी। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि सेठ गोविंददास साहित्य और स्वदेश दोनों के एकनिष्ठ सेवक थे तथा हिंदी के प्रबल समर्थक थे।

6. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर नर्मदाशंकर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उ०– नर्मदाशंकर जमींदार रघुराजसिंह के स्टेट का मैनेजर है, जिसकी आयु लगभग 65 वर्ष है। वह 40 वर्षों से रघुराजसिंह के स्टेट का मैनेजर है। जमींदार का हित सोचना ही उसका परम कर्तव्य है। नर्मदाशंकर के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) **जमींदारी प्रथा का समर्थक–** नर्मदाशंकर जमींदारी प्रथा का समर्थक है। वह जानता है कि इस प्रथा का अंत हो जाने पर उसका महत्व खत्म हो जाएगा। इसलिए वह चाहता है कि जमींदार रघुराजसिंह व किसानों के बीच द्वंद्व चलता रहे। तभी उसका महत्व बना रहेगा। इसीलिए वह रघुराजसिंह को किसानों के विरुद्ध भड़काने का प्रयास करता है।

(ब) **जमींदार रघुराजसिंह का शुभचिंतक–** नर्मदाशंकर जमींदार रघुराजसिंह का शुभचिंतक है। वह रघुराजसिंह के किसानों के हित में लिए गए फैसलों; कर्ज माफ करना, लगान कम करना, तथा बिना नजराना लिए जमीन देना का विरोध करता है। जब रघुराजसिंह सभी किसानों को भोज पर परिवार सहित आमंत्रित करता है तो रघुराजसिंह की आर्थिक हानि की ओर इशारा करते हुए वह कहता है-"**किसानों का भोज खर्च का नहीं, आमदनी का कारण होता था, वह अब खर्च का कारण हो जाएगा।**"

(स) **किसानों का विरोधी–** नर्मदाशंकर किसानों का प्रबल विरोधी है। रघुराजसिंह किसानों के हित की जो बात सोचता है उसका वह विरोध करता है तथा उनके लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जिससे रघुराजसिंह के हृदय में उनके लिए दुर्भावना पैदा हो और किसानों के हितों के लिए रघुराजसिंह द्वारा किए गए कार्यों को अनुचित बताते हुए कहता है-"**चोर-चौर मौसेरे भाई, राजा साहब।**"

(द) **अहंकारी–** नर्मदाशंकर एक अहंकारी व्यक्ति है। वह किसानों को हेय दृष्टि से देखता है। किसानों द्वारा भोज बहिष्कार का निर्णय लेने पर वह रघुराजसिंह से कहता है—"**इन दो कौड़ी के किसानों की यह मजाल! इनकी यह हिम्मत! इनका यह साहस, इनकी यह हिमाकत!**"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नर्मदाशंकर एक अहंकारी, किसानों का विरोधी और जमींदारी प्रथा का समर्थक है। उसके हृदय में दया, करुणा, सहानुभूति जैसी कोमल भावनाएँ नहीं हैं। उसमें वे सभी गुण विद्यमान हैं जो शोषण करने वाले व्यक्तियों के सहयोगी में होने चाहिए।

7. रघुराजसिंह किस प्रकार किसानों का सच्चा हित कर सकता है?

उ०– रघुराजसिंह को किसानों का सच्चा हित करने के लिए अपने पूर्वजों के द्वारा अपनाई जाने वाली शोषणपूर्ण कार्य पद्धति को त्यागकर किसानों के हित के लिए कार्य करने होंगे और किसानों को यह विश्वास दिलाना होगा कि वह उनका शत्रु नहीं, बल्कि शुभचिंतक है। किसानों के प्रति उसके पूर्वजों द्वारा किए गए अत्याचारों को उसे समाप्त करना होगा व किसानों के विकास के लिए कार्य करने होंगे। उसे किसानों को यह विश्वास दिलाना होगा कि उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य स्वयं की स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु किसानों के हित के लिए हैं। उसे जमींदारी की तौक को गले से उतारकर किसानों के हित के लिए उनके जैसा बनकर रहना होगा व किसानों को समानता का अधिकार देना होगा और किसानों के हित में निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा, जिससे किसान उस पर विश्वास कर सकें।

8. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर क्रांतिचंद्र के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उ०– क्रांतिचंद्र चूरामन किसान का पुत्र व एक शिक्षित नवयुवक है। वह जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण से भली–भाँति परिचित है। ग्रामीण किसानों का शोषण देखते रहना उसके लिए असहनीय है। इसलिए वह उन्हें मुक्त कराना चाहता है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) साहसी व शिक्षित युवा– क्रांतिचंद्र 22-23 वर्ष का अत्यंत साहसी व शिक्षित युवक है। शिक्षित होने के कारण वह अपना व गाँव का हित–अहित भली प्रकार जानता है और समझता है। वह शिक्षित होने के कारण जमींदारों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों को रोकने का साहस करता है तथा ग्रामीण किसान उसके नेतृत्व को स्वीकार करते हैं और उसकी बातों से सहमत हो जाते हैं।

(ब) स्वतंत्रता का पोषक– क्रांतिचंद्र को किसी के अधीन रहना पसंद नहीं है इसलिए वह अपने नाम के साथ 'प्रसाद' व 'दास' जैसे उपनाम भी नहीं लगाता है। यही कारण है जब उसका पिता उसे 'रेवाप्रसाद' कहकर पुकारता है तो वह क्रोधित हो जाता है व अपने पिता से कहता है– **''मेरा नाम रेवाप्रसाद नहीं है, पिताजी मैंने कई बार आपसे कह दिया, मैं न किसी का प्रसाद हूँ, न किसी का दास।''** वह सभी किसानों को भी अज्ञान के अंधकार से निकालकर प्रकाश में लाकर, उन्हें जमींदार के शोषण से मुक्त कराना चाहता है तभी वह कहता है– **''अंधकार में रहने वाले व्यक्ति को यदि प्रकाश में ले आया जाए तो प्रकाश में लाने वाला कोई भूल नहीं करता।''**

(स) नेतृत्व की क्षमता– शिक्षित होने के कारण क्रांतिचंद्र में किसानों का नेतृत्व करने की क्षमता है। जो किसान रघुराजसिंह को अपना हितैषी समझते थे, उन्हें वह समझाता है कि रघुराजसिंह उन्हें धोखा दे रहा है। वह सभी किसानों को अपने तर्कों द्वारा भोज के बहिष्कार के लिए सहमत कर लेता है।

(द) भूलों से सीखने वाला– क्रांतिचंद्र भूतकाल में की गई भूलों से सीख लेने वाला युवा है, उसका मानना है कि जो लोग भूलों से सीख नहीं लेते, वे अंत में दुर्दशा को प्राप्त होते हैं। वह किसानों को समझाते हुए कहता है कि–**"पर भूल और उस पर भी भूल, भूलों की झड़ियों ने ही तो हमारी यह दशा कर दी है। भूल की बातों में भूल होना सबसे बड़ी भूल है।''**

(य) मानवतावादी– क्रांतिचंद्र मानवता का पोषक है। वह स्वार्थी न होकर परार्थी है। जमींदार द्वारा गरीब किसानों के शोषण को वह सहन नहीं कर पाता। स्पष्ट है कि वह मानवता और समानता में विश्वास रखने वाला है।

(र) निर्भीक– क्रांतिचंद्र एक निर्भीक युवा है। वह सत्य को सत्य कहने में बिल्कुल नहीं डरता है। वह अपने पिता से भी कहता है—**''पिताजी मैं डरता नहीं हूँ, भय से अधिक बुरी वस्तु मै संसार में और कोई नहीं मानता।''** वह जमींदार को डाकू व लुटेरा तक कहता है तथा उसे भेजे जाने वाले पत्र में कठोर भाषा का प्रयोग करता है।

(ल) बुद्धिमान– क्रांतिचंद्र एक बुद्धिमान युवक है। वह जमींदार के द्वारा किसानों के हित में किए जाने वाले कार्यों; जैसे— कर्ज माफ करना, लगान कम देना, बिना नजराना लिए जमीन देना आदि को केवल उसकी स्वार्थसिद्धि का कारण बताता है कि कैसे इन उपायों से जमींदार की आय में वृद्धि हुई है तथा जमींदार द्वारा दिए जाने वाले भोज के बदले दिए जाने वाले व्यवहार से किसानों की आर्थिक क्षति से उन्हें अवगत कराता है।

इस प्रकार क्रांतिचंद्र साहसी, निर्भीक, शिक्षित, बुद्धिमान युवा है जो किसानों को जमींदार के अत्याचारों से मुक्त कराना चाहता है तथा भोज का बहिष्कार कर जमींदार के विरुद्ध संघर्ष की शुरूआत करता है तथा जमींदार को सही मार्ग पर ले आता है। देश को आज ऐसे ही युवकों की आवश्यकता है, जो शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए स्वयं को आगे ला सकें।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'व्यवहार' एकांकी में दावत है–

(अ) क्रांतिचंद्र के जन्मदिन की (ब) नर्मदाशंकर के बेटे के विवाह की

(स) **रघुराजसिंह की बहन के विवाह की** (द) इनमें से कोई नहीं

2. रघुराजसिंह के यहाँ मैनेजर है–

(अ) चूरामन (ब) क्रांतिचंद्र

(स) **नर्मदाशंकर** (द) इनमें से कोई नहीं

3. **चूरामन के पुत्र का नाम है–**

(अ) नर्मदाशंकर (ब) रघुराजसिंह

(स) **क्रांतिचंद्र** (द) इनमें से कोई नहीं

4. **जमींदार रघुराजसिंह ने किसानों के हित में–**

(अ) सड़कें बनवाईं। (ब) पक्के मकान बनवाए।

(स) **लगान माफ कर दिया था।** (द) इनमें से कोई नहीं

5. **घर-पीछे एक आदमी को दावत पर बुलाने का अभिप्राय था–**

(अ) किसानों को अपमानित करना (ब) किसानों को तंग करना

(स) भीड़ को नियंत्रित करना (द) **कम खर्च में अधिक व्यवहार की वसूली करना**

6. **गाँव के किसान रघुराजसिंह द्वारा दिए गए भोज में नहीं गए क्योंकि–**

(अ) वे उसे अपना शत्रु मानते थे। (ब) वे उसको अपमानित करना चाहते थे।

(स) **वे अपने आपको उससे अलग समझते थे।** (द) वे उसका सम्मान नहीं करते थे।

7. **क्रांतिचंद्र के अनुसार स्कूल और कॉलेज क्या करके अपराध नहीं करते–**

(अ) लोगों को बिना काम किए आरामतलब बनाकर (ब) **सच्ची वस्तुस्थिति दिखाकर**

(स) डर के कारण अन्याय और अपमान सहना सिखाकर

(द) इनमें से कोई नहीं

8. **'किसानों का भोज खर्च का नहीं आमदनी का कारण होता था, वह अब खर्च का कारण हो जाएगा।' यह कथन किसका है?**

(अ) **नर्मदाशंकर का** (ब) चूरामन का

(स) क्रांतिचंद्र का (द) रघुराजसिंह का

9. **किसानों ने अपना जनप्रतिनिधि क्रांतिचंद्र को चुना था क्योंकि–**

(अ) वह शहर में नेतागिरी करता था। (ब) वह अपने को बड़ा समझता था।

(स) वह बाहुबली था। (द) **वह शिक्षित नवयुवक था।**

10. **बिना नजराना लिए मुफ्त जमीन देने का क्या परिणाम हुआ?**

(अ) किसान लापरवाह हो गए। (ब) किसान जमींदार के गुलाम हो गए।

(स) **जमींदार की वार्षिक आय में हजारों रुपये की वृद्धि हो गई।**

(द) इनमें से कोई नहीं

(घ) आन्तरिक मूल्यांकन

विद्यार्थी स्वयं करें।

4. लक्ष्मी का स्वागत (उपेंद्रनाथ 'अश्क')

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **रौशन की मन:स्थिति क्या है?**

उ०– रौशन की मन: स्थिति बड़ी खराब है। उसकी पत्नी का देहांत हो चुका है जिससे वह बहुत प्रेम करता था तथा उसका पुत्र डिफ्थीरिया नामक बीमारी से ग्रस्त है और अपने जीवन की अंतिम साँसें ले रहा है। रौशन के माता-पिता उसके दु:ख को नहीं समझते व उसका विवाह कराना चाहते हैं। जिसके कारण वह बहुत दु:खी है।

2. **अरुण किस रोग से पीड़ित है?**

उ०– अरुण डिफ्थीरिया रोग से पीड़ित है। उसे तेज ज्वर है, साँस बहुत कष्ट से आ रही है तथा वह अचेत अवस्था में पड़ा है।

3. **रौशन अरुण को किस डॉक्टर के पास लेकर जाता है?**

उ०– रौशन अरुण को बाजार में डॉक्टर जीवाराम के पास लेकर जाता है।

4. रौशन अपने पिता के कहने पर भी लड़की वालों से आकर क्यों नहीं मिलता है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– रौशन अपने पिता के कहने पर भी लड़की वालों से आकर नहीं मिलता है क्योंकि वह पुनर्विवाह नहीं करना चाहता है और उसका पुत्र अरुण डिफ्थीरिया जैसी भयंकर बीमारी से ग्रस्त है। वह अपने जीवन की अंतिम साँसें ले रहा है, इसलिए रौशन बहुत परेशान व दु:खी है। इसलिए वह अपने पिता के बार-बार कहने पर भी लड़की वालों से आकर नहीं मिलता है।

5. 'लक्ष्मी का स्वागत' भावना प्रधान, मर्मस्पर्शी, सामाजिक एकांकी हैं। इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ०– 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी एक सामाजिक एकांकी है। सामाजिक यथार्थ के घटनाक्रम पर आधारित इसका संपूर्ण कथानक भावनाप्रधान और अत्यंत मर्मस्पर्शी है। एकांकी के संपूर्ण कथानक में एक तरफ रौशन का चरित्र है जो पत्नी वियोग व पुत्र की गंभीर बीमारी के कारण परेशान व दु:खी है। पत्नी के देहांत के कारण वह घोर अवसाद की स्थिति में है। विगत जीवन की याद आते ही उसकी मन:स्थिति अत्यंत व्यथापूर्ण हो जाती है। उसके दु:ख की इस स्थिति में उसका मित्र उसे ढाढ़स बँधाता है, परंतु फिर भी वह भावनात्मक दृष्टि से सामान्य नहीं हो पाता है और उसे अपना वर्तमान जीवन भार लगने लगता है। पत्नी की मृत्यु के एक माह बाद ही उसे एक और दु:खद त्रासदी झेलनी पड़ती है, जब बीमारी के कारण उसका पुत्र मरणासन्न स्थिति में पहुँच जाता है। पुत्र प्रेम के कारण उसकी मनोदशा पागलों जैसी हो जाती है और वह किसी प्रकार अपने पुत्र को बचा लेना चाहता है। रौशन के संवादों से उसकी व्यथा का पूर्ण आभास हो जाता है कि वह कितना दु:खी है। उसका चरित्र हमारे मन को उद्वेलित कर देता है और उसके प्रति करुणा व सहानुभूति की भावना जाग्रत होती है। दूसरी तरफ रौशन के माता-पिता का चरित्र है, जो अत्यंत निर्दयी, दहेजलोभी और कठोर हृदय लोगों में से हैं, जिनकी सभी संवेदनाएँ मर चुकी हैं। वे अपने पुत्र व पोते की दु:खद स्थिति से पूर्णत: उदासीन हैं। उन्हें केवल ऐसी बहू की आवश्यकता है, जो अपने साथ बहुत सारा दहेज लेकर आए। उनका सारा ध्यान केवल इस बात पर है कि रौशन कब विवाह के लिए तैयार हो। उनकी इस मानसिकता के कारण पाठक के मन में उनके प्रति घृणा के भाव उत्पन्न होते हैं।

इस प्रकार एक ओर पत्नी एवं पुत्र से प्रेम और दूसरी ओर धन एवं बहू की लालसा को दर्शाने वाला यह एकांकी भावनाप्रधान व अत्यंत मर्मस्पर्शी है और भारतीय समाज की यथार्थ मानसिकता का स्पष्ट बोध कराता है।

6. 'गिरे हुए मकान की नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है' यह कथन किसका है?

उ०– 'गिरे हुए मकान की नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है' यह कथन रौशन की माँ का है, जो वह रौशन के मित्र सुरेंद्र से कहती है क्योंकि वह रौशन का दूसरा विवाह कराना चाहती है और उसे सामाजिक रीति-रिवाजों की चिंता है। इसीलिए वह सुरेंद्र के सामने रामप्रसाद का उदाहरण देकर रौशन को विवाह के लिए तैयार करने को भी कहती है।

7. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का क्या उद्देश्य है? एकांकीकार को इसकी पूर्ति में कहाँ तक सफलता मिली है? अपने शब्दों में बताइए।

उ०– 'लक्ष्मी का स्वागत' उपेंद्रनाथ 'अश्क' द्वारा रचित पर्याप्त चर्चित एकांकी है। इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य है— पुनर्विवाह की समस्या। रौशन की पत्नी सरला की एक माह पूर्व मृत्यु हो चुकी है और उसके माता-पिता उसका शीघ्र विवाह करा देना चाहते हैं, क्योंकि ''अभी तो चार नाते आते हैं, फिर देर हो गई तो इधर कोई मुँह भी न करेगा।''

प्रमुख उद्देश्य के साथ-साथ कतिपय गौण उद्देश्य भी देखे जा सकते हैं; जैसे- दूषित सामाजिक मान्यताओं व रीति-नीति का चित्रण, मानव की हृदयहीनता व धन-लिप्सा आदि।

इस एकांकी में 'अश्क' जी ने रौशन की माँ के माध्यम से समाज की परंपराओं, रीति-नीति व मान्यताओं का उल्लेख किया है। रौशन के पुनर्विवाह का समर्थन करती हुई वह रोशन से कहती है कि-''तुम्हारे पिता ने भी तो पहली पत्नी की मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था।''

सामाजिक रीति-रिवाजों के मूल में 'मानव की हृदयहीनता और क्रूरता' के दर्शन होते हैं। जब रौशन के माता-पिता उसके पुत्र अरुण की बीमारी की ओर ध्यान न देकर सियालकोट से आने वाले बड़े व्यापारी के रिश्ते के स्वागत में लग जाते हैं। रौशन अपने मित्र सुरेंद्र से स्पष्ट कहता है कि सब लोग अरुण की मृत्यु चाहते हैं। वह डॉक्टर से भी कहता है-''आप नहीं जानते डॉक्टर साहब, ये सब पत्थर दिल हैं।''

मानव की क्रूरता का प्रमुख कारण धन-लिप्सा है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण रौशन के पिता हैं। रौशन के विवाह के लिए बार-बार मना करने पर भी वे अंत में शगुन ले लेते हैं और कहते हैं कि-''घर आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।''

प्रस्तुत एकांकी में 'अश्क' जी ने यथार्थ का सशक्त चित्रण कर मनुष्य की धन-लिप्सा पर कठोर व्यंग्य किया है। इस प्रकार 'लक्ष्मी का स्वागत' एक सोद्देश्य रचना है और एकांकीकार अपने उद्देश्यों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सफल रहा है।

8. 'लक्ष्मी का स्वागत' शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है? क्या यह शीर्षक बिल्कुल सही है? इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ०– 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का शीर्षक रोचक, सटीक एवं कथावस्तु से संबंधित है। एकांकी का संपूर्ण कथानक दहेज में धन प्राप्त करने की मानसिकता पर आधारित है। लक्ष्मी का स्वागत हर घर में होता है, किंतु इस धनरूपी लक्ष्मी के स्वागत में माता-पिता अपनी वास्तविक लक्ष्मी अर्थात् बहू को कैसे भूल जाते हैं, इसका वास्तविक चित्रण इस एकांकी के शीर्षक को सार्थक करता है। धन की लिप्सा के कारण रौशन के माता-पिता उसका दु:ख नहीं समझते और उसके प्रति सहानुभूति रखने की जगह, उसे विवाह के लिए तैयार करने में लगे हुए हैं, क्योंकि नया रिश्ता लाने वाले लोग धनवान हैं और उन्हें अधिक दहेज मिलने की संभावना है। इसलिए वे घर में आती हुई लक्ष्मी का स्वागत करने के लिए अपना संपूर्ण प्रयास करते दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक उपयुक्त एवं सार्थक है।

9. रौशन के पिता के विचारों के संबंध में अपनी सहमति या असहमति पर टिप्पणी लिखिए।

उ०– रौशन के पिता के विचारों से हम पूर्णरूप से असहमत हैं। रौशन का पिता एक स्वार्थी व धन-लोलुप व्यक्ति है। रौशन की पत्नी का देहांत होते ही वह उसके पुनर्विवाह की तैयारी में लग जाता है। रौशन की मन:स्थिति की उसे कोई परवाह नहीं है। उसका पुत्र युवा है। विवाह व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का प्रश्न होता है, अत: इसके निर्णय का अधिकार संतान के पास ही सुरक्षित रहना चाहिए, परंतु रौशन का पिता उसकी भावनाओं से खिलवाड़ करता है और विवाह के विषय में उसकी सहमति को आवश्यक नहीं समझता।

रौशन के पिता में मानवता विद्यमान नहीं है। वह अपने पोते की बीमारी की पूर्णरूप से उपेक्षा करता है और केवल धनी व्यापारी परिवार से शगुन लेने की चिंता में व्यस्त रहता है। भाषी को भारी वर्षा में डॉक्टर के यहाँ जाता देखकर तथा डॉक्टर को आते देख भी उसके मन में अपने पोते के प्रति करुणा के भाव जाग्रत नहीं होते। वह अरुण की मरणासन्न अवस्था में भी रौशन को खरी-खोटी सुनाकर उससे विवाह के लिए 'हाँ' करवाने की कोशिश करता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि रौशन के पिता के विचार पूर्णत: स्वार्थ केंद्रित और अमानवीयता पर आधारित हैं। ऐसे व्यक्ति के विचारों से कोई भी सहृदय व्यक्ति सहमत नहीं हो सकता।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की कथा संक्षेप में लिखिए।

उ०– 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी उपेंद्रनाथ 'अश्क' द्वारा लिखित सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट करने वाली एक सशक्त रचना है। इस एकांकी की कथावस्तु पारिवारिक होते हुए भी दूषित सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं की ओर संकेत करती है और आज के मनुष्य की धन-लोलुपता, स्वार्थ-भावना, हृदयहीनता तथा क्रूरता का यथार्थ रूप प्रस्तुत करती है। एकांकी की कथावस्तु निम्नवत् है— जिला जालंधर के इलाके में मध्यम श्रेणी के मकान के दालान में सुबह के नौ-दस बजे बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। मध्यम श्रेणी परिवार का सदस्य रौशन अपने पुत्र अरुण की बढ़ती बीमारी से बहुत दु:खी है। वह बार-बार अपने पुत्र की नाजुक स्थिति को देखकर घबरा जाता है। उसकी पत्नी सरला का देहांत एक माह पूर्व हो चुका है। उसके दु:ख को वह भूल भी नहीं पाता कि उसका पुत्र डीफ्थीरिया (गले का संक्रामक रोग) से पीड़ित हो गया। उसकी स्थिति प्रतिक्षण बिगड़ती जा रही है। वह अपने भाई भाषी को डॉक्टर को लेने भेजता है। उसका मित्र सुरेंद्र उसे हिम्मत बँधाता है परंतु बाहर के मौसम को देखकर उसका मन डरा हुआ है। वह सुरेंद्र से कहता है कि –"मेरा दिल डर रहा है सुरेंद्र, कहीं अपनी मां की तरह अरुण भी मुझे धोखा न दे जाएगा?" डॉक्टर आकर बताता है कि अरुण की हालत बहुत खराब है। वह इंजेक्शन दे देता है और गले में पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद दवाई की दो चार बूँदे डालते रहने की सलाह देता है। वह रौशन को भगवान पर भरोसा रखने को कहता है। इसी बीच सियालकोट के व्यापारी रौशन के लिए रिश्ता लेकर आते हैं। रौशन की माँ आकर उससे मिलने के लिए कहती है। वह रौशन के मित्र सुरेंद्र से उसे समझाने को कहती है कि वह रौशन को समझाकर ले आए। परंतु सुरेंद्र अरुण की बीमारी के कारण अपनी असमर्थता जताता है। पुत्र-प्रेम में रौशन पागल-सा हो जाता है और अपनी माँ को रिश्ते वालों को वापस लौटा देने को कहता है। रौशन की माँ पुनर्विवाह का समर्थन करते हए उसे रामप्रसाद व उसके पिता का उदाहरण देती है। तभी रौशन का पिता आता है और अरुण की बीमारी को बहानेबाजी बताता है क्योंकि रौशन सियालकोट वालों से नहीं मिलना चाहता और रौशन को आवाज लगाकर सियालकोट वालों से मिलने को कहता है। रौशन के इंकार पर वह शगुन लेने को कहता है कि मै घर आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।

रौशन का पिता उसकी माँ से कहता है कि मैंने पता लगा लिया है कि सियालकोट में इनकी बड़ी भारी फर्म है और इनके

यहाँ हजारों का लेन-देन है। रौशन के पिता शगुन लेने चले जाते हैं और सुरेंद्र रौशन की माँ से दीये का प्रबंध करने को कहता है क्योंकि अरुण संसार से जा रहा है। फानूस टूटकर गिर जाता है। अंत में रौशन के पिता शगुन लेकर माँ को बधाई देने आते हैं। इसी समय अरुण संसार से विदा लेता है और रौशन मृत बालक का शव लिए आता है। रौशन के पिता के हाथ से हुक्का गिर जाता है और माँ चीख मारकर धम्म से सिर थामे बैठ जाती है। सुरेंद्र के संवाद-'' माँजी, जाकर दाने लाओ और दीये का प्रबंध करो'' के साथ एकांकी का समापन होता है।

2. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की स्त्री पात्र (रौशन की माँ) का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उ०– 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में रौशन की माँ प्रमुख पात्रों में से है। वह एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार की नारी है। वह उस महिला वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो अशिक्षित, अहकेंद्रित तथा दकियानूसी प्रौढ़ा है। उसका विचार है कि सरला की मृत्यु के बाद रौशन को शीघ्र विवाह कर लेना चाहिए। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएं हैं—

(अ) रुढ़िवादी एवं व्यावहारिक– रौशन की माँ पूर्णत: रुढ़िवादी और व्यावहारिक है। इसलिए वह रौशन को रामप्रसाद का उदाहरण देकर समझाती है कि उसे भी रामप्रसाद की तरह शीघ्र विवाह कर लेना चाहिए, क्योंकि **''अभी तो चार नाते आते हैं फिर देर हो गई तो इधर कोई मुँह भी न करेगा।''** फिर उसके पिता ने भी पहली पत्नी की मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था।

(ब) वाचाल– रौशन की माँ समय और स्थिति की गंभीरता को न देखते हुए कटु वाक्य बोलती ही रहती है। पोते की गंभीर स्थिति भी उसे बोलने से नहीं रोक पाती। वह अपने भाव निरंतर प्रकट करती रहती है तथा अपना निर्णय पुत्र पर थोपना चाहती है।

(स) दूरदर्शी– रौशन की माँ के कथनों से उसकी दूरदर्शिता प्रदर्शित होती है। वह रौशन का विवाह इसलिए शीघ्र करा देना चाहती है कि यदि देर हो गई तो—**''लोग सौ-सौ लाँछन लगाएँगे और फिर कौन ऐसा क्वाँरा है।''** वह सुरेंद्र से भी रौशन को समझाने को कहती है। सुरेंद्र के कहने पर कि 'तुम्हारा रौशन बिन ब्याहा न रहेगा' पर वह स्पष्ट कहती है कि 'सियालकोट वाले भले आदमी हैं, लड़की अच्छी, सुशील, सुंदर व पढ़ी-लिखी है। इसलिए अच्छा रिश्ता लेने में चूक नहीं करनी चाहिए।'

(द) ताने और व्यंग्य से परिपूर्ण– रौशन की माँ अपने समय और काम की चर्चा करके सदा ताने देने और व्यंग्य करने में लीन दिखाई पड़ती है। उसे अपनी घुट्टी व हकीम की दवाई पर ही विश्वास है। इसलिए डॉक्टर के आने पर वह सुरेंद्र से कहती है—**''हमने तो बाबा, बोलना ही छोड़ दिया है। ये डॉक्टर जो न करें, थोड़ा है।''**
बच्चे की बीमारी पर वह कहती है, **अरे जरा ज्वर है, छाती जम गई होगी। बस, मैं घुट्टी दे देती तो ठीक हो जाता, पर मुझे कोई हाथ लगाने दे तब न! हमें तो वह कहता है, बच्चे से प्यार ही नहीं।''**

(य) अनिश्चित मानसिकता– रौशन की माँ अनिश्चित मानसिकता की महिला है। सियालकोट वालों को देखकर वह खुश होती है। वह रौशन को बुलाकर विवाह के लिए स्वीकृति देने के लिए समझाती है, परंतु रौशन के क्रोध करने पर वह कहती है-**''हम तुम्हारे ही लाभ की बात कर रहे हैं।''** बच्चे की बिगड़ती स्थिति को देखकर वह चिंतित हो जाती है। वह रौशन के पिता से कहती है- **'' वह तो बात भी नहीं सुनता, जाने बच्चे की तबियत बहुत खराब है।''** उसे दूसरी चिंता रिश्ते वालों की होती है। वह कहती है-**''बहू की बीमारी का पूछते होंगे।'''' बच्चे को पूछते होंगे।''** अरुण की मृत्यु पर वह 'मेरा लाल' कहकर और चीख मारकर सिर थामे धम से बैठ जाती है।

(र) चरित्र में स्वाभाविकता– रौशन की माँ के चरित्र में शुरू से अंत तक स्वाभाविकता विद्यमान है। घर की बड़ी-बूढ़ी महिला जिस स्वभाव की होती है और जैसी बातचीत करती है, रौशन की माँ उसका अनुपम उदाहरण है।
निष्कर्ष रूप में रौशन की माँ का चरित्र प्रभावशाली एवं परिस्थितियों के अनुरूप चित्रित किया गया है। एकांकीकार ने माँ के चरित्र में मनौवैज्ञानिक दृष्टि से यथार्थता व स्वाभाविकता का समावेश किया है।

3. उपेंद्रनाथ अश्क जी का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

उ०– जीवन परिचय– हिंदी के समर्थ नाटककार उपेंद्रनाथ 'अश्क' का जन्म 14 दिसंबर सन् 1910 ई.को पंजाब के जालंधर नामक नगर के एक मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। अश्क जी का प्रारंभिक जीवन गंभीर समस्याओं से ग्रस्त रहा। आप गंभीर रूप से अस्वस्थ रहे और राजयक्ष्मा जैसे रोग से संघर्ष किया।
जालंधर में प्रारंभिक शिक्षा लेते समय 11 वर्ष की आयु से ही वे पंजाबी में तुकबंदियाँ करने लगे थे। कला स्नातक होने के बाद उन्होंने अध्यापन का कार्य शुरू किया तथा विधि की परीक्षा विशेष योग्यता के साथ पास की। अश्क जी ने अपना

साहित्यिक जीवन उर्दू लेखक के रूप में शुरू किया था किंतु बाद में वे हिंदी के लेखक के रूप में ही जाने गए। 1932 में मुंशी प्रेमचंद की सलाह पर उन्होंने हिंदी में लिखना आरंभ किया। 1933 में उनका दूसरा कहानी संग्रह 'औरत की फितरत' प्रकाशित हुआ, जिसकी भूमिका मुंशी प्रेमचंद ने लिखी। उनका पहला काव्य संग्रह 'प्रात: प्रदीप' 1938 में प्रकाशित हुआ। बंबई प्रवास में आपने फिल्मों की कहानियाँ, पटकथाएँ, संवाद और गीत लिखे, तीन फिल्मों में काम भी किया किंतु चमक-दमक वाली जिंदगी उन्हें रास नहीं आई। 19 जनवरी 1996 को अश्क जी चिरनिद्रा में लीन हो गए।

प्रकाशित रचनाएँ–

उपन्यास– गिरती दीवारें, शहर में घूमता आईना, गर्म राख, सितारों के खेल आदि

कहानी संग्रह– सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ, जुदाई की शाम के गीत, काले साहब, पिंजरा आदि

नाटक– लौटता हुआ दिन, बड़े खिलाड़ी, जय-पराजय, अलग-अलग रास्ते आदि

एकांकी संग्रह– अश्क जी द्वारा लिखित एकांकियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) सामाजिक व्यंग्य– लक्ष्मी का स्वागत, अधिकार का रक्षक, पापी, मोहब्बत, विवाह के दिन, जोंक, आपस का समझौता, स्वर्ग की झलक, क्रॉसवर्ड पहेली आदि।

(ख) प्रतीकात्मक तथा सांकेतिक– अंधी गली, चरवाहे, चुंबक, चिलमन, मैमूना, देवताओं की छाया में, चमत्कार, सूखी डाली, खिड़की आदि।

(ग) प्रहसन तथा मनोवैज्ञानिक– मुखड़ा बदल गया, अंजो दीदी, आदिमार्ग, भँवर, तूफान से पहले, कैसा साब कैसी आया, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, सयाना मालिक, बतसिया, जीवन साथी, साहब को जुकाम है आदि।

काव्य– एक दिन आकाश ने कहा, प्रात: प्रदीप, दीप जलेगा, बरगद की बेटी, उर्म्मियाँ आदि

संस्मरण– मंटो मेरा दुश्मन, फिल्मी जीवन की झलकियाँ

आलोचना– अन्वेषण की सहयात्रा, हिंदी कहानी-एक अंतरंग परिचय

4. कितनी आयु में उपेंद्र जी ने पंजाबी में तुकबंदियाँ शुरू कर दी थी?

उ०– उपेंद्रनाथ 'अश्क' जी ने सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व प्रतीकात्मक एकांकियों का सृजन किया है। अश्क जी का जन्म जालंधर नामक नगर में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करते हए 'अश्क' जी ने जालंधर में 11 वर्ष की आयु से ही पंजाबी में तुकबंदियाँ करनी शुरू कर दी थी। यहीं से उपेंद्र जी का साहित्य सफर शुरू हुआ। अश्क जी ने साहित्य की सभी विधाओं में लिखा।

5. उपेंद्र जी को किस-किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

उ०– उपेंद्र जी हिंदी साहित्य के महान लेखक थे। इन्हें 1965 ई. में 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1972 ई. में अश्क जी को 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया तथा सन् 1974 ई. में हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वारिधि' से पुरस्कृत किया गया।

6. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में किस पात्र का चरित्र आपकी दृष्टि में अधिक अच्छा है? उसके चारित्रिक गुणों को अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के मुख्य पात्र रौशन का चरित्र हमारी दृष्टि में अधिक अच्छा प्रतीत होता है। वह एक निर्दयी परिवार का स्नेही सदस्य है। जिसका पुत्र डिफ्थीरिया से पीड़ित है। इसकी पत्नी की एक माह पूर्व मृत्यु हो चुकी है। इसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) दु:खी व निराश– रौशन अपने पुत्र अरुण की बीमारी से अत्यधिक खिन्न एवं निराश है। बच्चे का बुखार से गर्म शरीर, लाल आँखें, रुकती हुई साँसें उसे बहुत दु:खी कर रहे हैं। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद वह पुत्र में ही पत्नी को देखता है। वह अरुण की गिरती तबियत को देखकर दु:खी होता हुआ सुरेंद्र से कहता है,-'' **यह मामूली ज्वर नहीं है, गले का कष्ट साधारण नहीं........मेरा दिल डर रहा है सुरेंद्र, कहीं अपनी माँ की तरह अरुण भी तो मुझे धोखा न दे जाएगा।''**

(ब) भावुक व स्नेहशील– रौशन भावुक व कोमल हृदय वाला युवक है। उसे अपनी पत्नी से बहुत प्रेम था। पत्नी की मृत्यु से परेशान, दूसरे विवाह की बात सुनकर वह बहुत व्यथित हो जाता है।

वह सुरेंद्र से कहता है—''जो मर जाती है, वह भी किसी की लड़की होती है, किसी के लाड़-प्यार में पली होती है,

फिर..'' अपनी पत्नी के बाद वह अपने पुत्र को माँ के समान पूर्ण प्रेम, सुरक्षा व आत्मीयता देता है। उसकी बीमारी में वह उसकी देखभाल बड़ी सावधानी व तत्परता से करता है। अरुण की बीमारी में जब डॉक्टर व सुरेंद्र भगवान पर भरोसा रखने को कहते हैं, तब वह कहता है–''**मुझे उस पर कोई विश्वास नहीं रहा। उसका कोई भरोसा नहीं– निर्मम और क्रूर। उसका काम सताए हुओं को और सताना है, जले हुओं को और जलाना है।**''

(स) माता-पिता द्वारा शासित– रौशन एक समझदार युवक है, किंतु वह अपने माता–पिता को अपनी मनमानी करने से नहीं रोक पाता है। वह पुनर्विवाह नहीं करना चाहता, किंतु उसके माता–पिता उसकी इच्छा की कोई परवाह नहीं करते। क्योंकि वे जानते हैं कि रौशन कोमल हृदय एवं संवेदनशील है। वह उनकी बातों के विरोध का साहस नहीं करेगा।

(द) मानवीय गुणों से पूर्ण– रौशन में सभी मानवीय गुण विद्यमान हैं। रौशन के माता–पिता जितने दकियानूसी, लोभी व कठोर हैं, वह उतना ही अधिक दयावान, प्रगतिशील व संवेदनशील है। वह अपने पुत्र से बहुत प्रेम करता है तथा अपनी पत्नी को भी बार–बार याद करता है। वह अपने पिता होने के फर्ज को पूरी निष्ठा से निभाता है। उसकी माँ विवाह के लिए पिता का उदाहरण देने पर वह कठोर शब्द कहते हुए रुक जाता है तथा कहता है— ''**वे................माँ, जाओ, मैं क्या कहने लगा था।**''

(य) तार्किक– रौशन एक तर्कशील युवा है। अपनी माँ द्वारा रामप्रसाद का उदाहरण दिए जाने पर वह तर्क देता है– "**तुम रामप्रसाद से मुझे मिलाती हो! अनपढ़, अशिक्षित, गँवार! उसके दिल कहाँ है? महसूस करने का माद्दा कहाँ है? वह जानवर है।**''

(र) अविचल एवं दृढ़– रौशन अपने विचारों व निर्णयों में अविचल एवं दृढ़ रहने वाला है। माँ के बार–बार कहने पर भी वह सियालकोट वालों के रिश्ते का समर्थन नहीं करता और उनके सामने नहीं जाता। वह माँ से कहता है– ''**उनसे कहो–जहाँ से आए हैं, वहीं चले जाएँ।**'' इतना ही नहीं पिता के बुलाने परभी वह कहता है–''**मेरे पास समय नहीं है!......मैं नहीं जा सकता।**''

(ल) परंपरागत मान्यताओं का विरोधी– रौशन को परंपरागत नीति–रीति अथवा मान्यताओं में कोई विश्वास नहीं है। सुरेंद्र के विवाह के बारे में कहने पर कि यह तो दुनिया की रीत है वह कहता है,–''**दुनिया की रीत इतनी निष्ठुर, इतनी निर्मम, इतनी क्रूर?**'' बच्चे की बीमारी में भी उसे माँ की घुट्टी पर जरा भी यकीन नहीं है वह तो आजकल की चिकित्सा पद्धति पर विश्वास करता है।

वस्तुत: रौशन शिक्षित युवक होने के साथ–साथ समझदार, भावुक, आदर्श पिता, सज्जन पति, विवेकी, सभ्य तथा दूषित मान्यताओं का विरोधी है। इसके द्वारा 'अश्क' जी ने समाज की परंपरागत मान्यताओं के प्रति विद्रोह प्रदर्शित किया है।

7. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

उ०– यह एकांकी उपेंद्रनाथ 'अश्क' की एक सामाजिक एकांकी है। इस एकांकी में इन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परंपराओं का सहारा लेकर मनुष्य की अपनी स्वार्थ सिद्धि को चित्रित किया है।

(अ) कथावस्तु– प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु जिला जालंधर के एक मध्यमवर्गीय परिवार की है। कथावस्तु का प्रसार मुख्य पात्र रौशन के विधुर होने तथा उसके पुत्र अरुण की गंभीर बीमारी से आरंभ होकर उसकी मृत्यु के बाद उसके नए विवाह के प्रस्ताव की स्वीकृति तक होता है। जो पाठकों को मर्मस्पर्शी पीड़ा से भर देता है।

(ब) स्वाभाविक विकास– कथा का स्वाभाविक विकास होता है। जिस पुनर्विवाह की समस्या को एकांकीकार ने उठाया है उसे एक दूषित सामाजिक मान्यता बनाकर प्रस्तुत किया गया है। कथा का आरंभ रौशन की पत्नी–वियोग के कारण दु:खद स्थिति तथा पुत्र की बीमारी की चिंता से होता है। अपने पुत्र के प्रति इधर रौशन की चिंता का बढ़ना व दूसरी ओर उसके माता–पिता के उसके नए विवाह के तीव्रतर प्रयासों से कथा विकसित होती है।

(स) चरम सीमा– डॉक्टर के प्रयासों के उपरांत भी अरुण की बिगड़ती हुई हालत और उसकी स्थिति की उपेक्षा कर उसके दादा–दादी का उसके पिता के विवाह पर विचार–विमर्श करना इस एकांकी की चरमसीमा है।

(द) अंत– अंत में अरुण मर जाता है तथा उसके दादा–दादी उसके पिता के विवाह का शगुन लेकर खुशी से फूले नहीं समाते। दहेजरूपी लोभ के प्रति मानवता की इस संवेदन–शून्यता की कल्पना भी पाठक को असहय होती है और इस घृणित सत्य को पाठक की आत्मा यथार्थरूप में परख लेती है।

(य) सरल भाषा व संवाद– एकांकी में छोटे संवाद व सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। अभिनेयता की दृष्टि से यह उपयुक्त है, जिससे अभिनेताओं को विचार सम्प्रेषण में कोई परेशानी न हो। कहीं-कहीं रौशन व माँ के कथन बड़े अवश्य हैं, जो परिस्थिति के अनुरूप हैं।

(र) संकलन-त्रय– समय, स्थान और कार्य (संकलन-त्रय) का निर्वाह सुंदर ढंग से किया गया है। 'अश्क' जी ने एकांकी के प्रारंभ में ही बता दिया है कि— स्थान जालंधर के इलाके में मध्यम श्रेणी के मकान का दलान **समय**- सुबह के नौ-दस बजे, **कार्य-** बच्चे की बीमारी व पिता के द्वारा विधुर पुत्र के विवाह की तैयारी।

अत: एकांकी संघटन की दृष्टि से यह एक सफल एकांकी है। यह एकांकी मंच और रेडियों दोनों के लिए उपयुक्त है। इस पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव है, जिसका कथानक सहज, यथार्थवादी व प्रभावशाली तथा अंत दु:खांत है।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. रौशन का पुत्र किस रोग से पीड़ित था?

(अ) मलेरिया (ब) तपेदिक

(स) **डिफ्थीरिया** (द) पेचिश

2. रौशन के माता-पिता उसकी दूसरी शादी करना चाहते थे; क्योंकि–

(अ) **अच्छा खासा दहेज मिल सके** (ब) मान-सम्मान मिल सके

(स) बीमार बच्चे की देखभाल हो सके (द) इनमें से कोई नहीं

3. रौशन दूसरी शादी के लिए तैयार नहीं था; क्योंकि–

(अ) उसके माता-पिता बीमार थे। (ब) उसका पुत्र बीमार था।

(स) **वह अपनी पत्नी से प्यार करता था।** (द) घर आती लक्ष्मी से उसे कोई मोह नहीं था।

4. रौशन की माँ के कहने पर भी सुरेंद्र, रौशन से उसके पुनर्विवाह की बात नहीं करता; क्योंकि–

(अ) वह स्वयं अपना विवाह करना चाहता है। (ब) वह नहीं चाहता कि रौशन का पुनर्विवाह हो।

(स) **सुरेंद्र अपने मित्र के दर्द को समझता है।** (द) उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य

5. रौशन के पिता, पुत्र के विरोध करने पर भी शगुन लेने को राजी क्यों हो गए?

(अ) उन्हें अपने पुत्र से बहुत ज्यादा प्यार था। (ब) पैसा ही उनके लिए सर्वोपरि था।

(स) बच्चे के पालन-पोषण हेतु माँ की जरूरत थी। (द) **उनकी संवेदनाएँ मर चुकी थीं।**

6. माँ के अनुसार सियालकोट के व्यापारी रौशन के लिए किस दिन अपनी लड़की का शगुन लेकर आए थे?

(अ) पिछले मंगलवार को (ब) **जब सरला का चौथा हुआ था।**

(स) फुलेरा दूज के दिन (द) उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य

(घ) आन्तरिक मूल्यांकन

विद्यार्थी स्वयं करें।

5. सीमा रेखा (विष्णु प्रभाकर)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी का मूल उद्देश्य लिखिए।

उ०– 'सीमा-रेखा' एकांकी का मूल उद्देश्य एक राष्ट्रीय समस्या है। लेखन ने इसी समस्या को उद्घाटित कर जनता में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है। लेखक ने एकांकी के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के अभाव में जनतंत्र में उत्पन्न विसंगति के कारण जनता और सरकार की क्षति, जिसे हम अलग-अलग समझते हैं, को देश की क्षति बताया है। जब देश में जनतंत्र होता है तो जनता व सरकार की क्षति अलग-अलग नहीं होती है, वह क्षति संपूर्ण देश की होती है। एकांकीकार ने सरकार, नेताओं, पुलिस का जनता के साथ संबंध व व्यवहार और उनसे उत्पन्न समस्या का चित्रण किया है। नेताओं द्वारा सरकार व जनता के बीच बनाई गई विभाजक रेखा को समाप्त करना इस एकांकी का मूल उद्देश्य है।

2. 'सीमा-रेखा' एकांकी में कौन-सी 'सीमा-रेखा' दर्शाई गई है?

उ०– 'सीमा-रेखा' एकांकी एक राष्ट्रीय समस्या पर आधारित एकांकी है। इस एकांकी में जनता व सरकार के बीच की विभाजक रेखा को दर्शाया गया है, जो रेखा जनता द्वारा चुने गए नेताओं ने अपने और जनता के बीच खींच ली है। जिसके कारण

उपमंत्री शरतचंद्र दंगा होने पर जनता के बीच जाने से कतराते हैं। अंत में वह इस बात को स्वीकार करते हैं कि **''जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक-रेखा नहीं होती।''**

3. विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली क्यों नहीं चलवाता है?

उ०– विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली इसलिए नहीं चलवाता है क्योंकि उसके द्वारा पहले चलवाई गई गोली से 20 लोग घायल हो जाते हैं, व पाँच लोग मर जाते हैं। मरने वाले लोगों में विजय का 10 वर्षीय भतीजा अरविंद भी होता है। सरकार द्वारा चलाई गई गोली की सभी लोग निंदा करते हैं। अरविंद की मौत का प्रायश्चित करने के लिए विजय गोली नहीं चलवाता और वह भीड़ को समझाकर उसे शांत करना चाहता है।

4. अन्नपूर्णा पुलिस द्वारा गोली चलाया जाना क्यों उचित मानती है?

उ०– अन्नपूर्णा पुलिस द्वारा गोली चलाना इसलिए उचित मानती है क्योंकि अगर पुलिस गोली न चलाती तो जनता अनियंत्रित होकर सारे शहर को बर्बाद कर देती। जिससे अपार धन की क्षति होती। पुलिस ने यह कदम सोच समझकर ही उठाया होगा। इसलिए वह पुलिस का यह कदम उचित समझती है।

5. 'सीमा-रेखा' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उ०– प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक सार्थक, उपयुक्त एवं सोद्देश्य है। यह शीर्षक कथानक की मूल संवेदना को प्रकट करता है। एकांकी के प्रारंभ में अरविंद की और अंत में विजय और सुभाष की मृत्यु से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है। एकांकी में विजय को सरकार की क्षति तथा अरविंद व सुभाष को जनहित में अपना बलिदान करनेवाले पात्रों के रूप में चित्रित किया गया है। जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों ने अपने और जनता के बीच जो रेखा खींच ली है, वह अनुचित है। इसी कारण उपमंत्री शरतचंद्र जनता के बीच जाने से कतराते हैं, जबकि जनता ने उन्हें अपने हित के लिए ही चुना है। इसी कारण सविता शरतचंद्र पर व्यंग्य करती हुई कहती है-**''जो एक दिन जनता के आँखों के तारे थे, वे आज जनता के सामने पुलिस के पहरे में जाते हैं।''**

अंत में शरतचंद्र इस बात को स्वीकार करते हैं कि जनतंत्र में जनता और सरकार के बीच सीमा-रेखा नहीं होती। वस्तुत: शरतचंद्र के इस कथन की सत्यता को अनुभूत कराने के उद्देश्य से ही एकांकी की रचना हुई है। दूसरे शब्दों में जनता व सरकार के बीच की सीमा-रेखा को समाप्त करने के उद्देश्य से इस एकांकी की रचना की गई है।

6. 'आवारा मसीहा' और 'पंखहीन' किसकी कृतियाँ हैं?

उ०– 'आवारा मसीहा' और 'पंखहीन' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित कृतियाँ हैं। जिनमें 'आवारा मसीहा' एक जीवनी व 'पंखहीन' एक आत्मकथा है जिसे तीन भागों में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया।

7. विष्णु प्रभाकर के बचपन का नाम क्या था?

उ०– विष्णु प्रभाकर के बचपन का नाम विष्णु दयाल था।

8. विष्णु जी के नाम के आगे 'प्रभाकर' कैसे जुड़ा?

उ०– विष्णुजी ने हिंदी की 'प्रभाकर' परीक्षा उत्तीर्ण की थी। यह डिग्री इनके नाम के साथ ऐसी जुड़ी कि इनका नाम ही विष्णु प्रभाकर हो गया।

9. प्रभाकर जी ने अपनी वसीयत में क्या इच्छा व्यक्त की थी?

उ०– विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी वसीयत में अपने संपूर्ण अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की थी। अत: 19 अप्रैल, 2009 में इनकी मृत्यु के बाद उनका अंतिम संस्कार नहीं किया गया, बल्कि उनके पार्थिव शरीर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को सौंप दिया गया।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

उ०– 'सीमा-रेखा' एकांकी विष्णु प्रभाकर जी द्वारा रचित राष्ट्रीय चेतना प्रधान एकांकी है। लेखक का मत है कि जनतंत्र के वास्तविक स्वरूप में दिन-प्रतिदिन विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। जिसके कारण राष्ट्रीय हित की निरंतर हत्या हो रही है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में होने वाले आंदोलनों में राष्ट्रीय संपत्ति की हानि चिंता का विषय बन गई है। प्रभाकर जी ने इस समस्या को ही अपनी एकांकी की कथावस्तु बनाया है। इसमें उन्होंने चार भाइयों के रूप में स्वतंत्र भारत के चार वर्गों के प्रतिनिधियों के द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। एकांकी में विभिन्न घटनाओं के माध्यम से इस बात को भी सिद्ध किया गया है कि जनतंत्र में सरकार व जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती। एकांकी की कथावस्तु निम्नवत हैं—

एकांकी का आरंभ उपमंत्री शरतचंद्र की बैठक से होता है। जहाँ उन्हें टेलीफोन पर शहर में झगड़े व पुलिस द्वारा उग्र भीड़ पर गोली चलाने की सूचना मिलती है। तभी उनकी पत्नी अन्नपूर्णा बाहर से घबराई हुई आती है। उपमंत्री शरतचंद्र पुलिस

द्वारा गोली चलाने का कोई ठोस कारण बताते हुए इसका समर्थन करते हैं। चौथे भाई सुभाष की पत्नी सविता पुलिस के इस कृत्य को अनुचित बताती है परंतु शरतचंद्र के बड़े भाई लक्ष्मीचंद्र पुलिस के इस कार्य को उचित बताते हैं। फोन पर शरतचंद्र को सूचना मिलती है कि गोलीबारी में 20 लोग घायल हुए व पाँच लोग मारे गए हैं। घायलों को अस्पताल पहुँचा दिया गया है। तभी पुलिस कप्तान विजय जो कि शरतचंद्र व लक्ष्मीचंद्र का भाई है, वहाँ आता है व अपने कार्य को उचित बताता है क्योंकि जनता को कानून अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं है।

इसी बीच सुभाष आता है। वह एक जन नेता है और उक्त तीनों का भाई है। वह पुलिस द्वारा किए गए गोलीकांड की निंदा करता है और स्वतंत्र भारत में गोली चलाना जुर्म मानता है। वह उपमंत्री शरतचंद्र से निवेदन करता है कि इस घृणित कार्य के लिए उत्तरदायी पुलिस अधिकारी को मुअत्तिल किया जाए व इसकी जाँच कराई जाए। सुभाष व सविता पुन: कहते हैं कि जनतंत्र का अर्थ ही जनता का राज्य है।

तभी वहाँ लक्ष्मीचंद्र की पत्नी तारा विक्षिप्त अवस्था में आती है और सूचना देती है कि उसका पुत्र अरविंद पुलिस की गोली का शिकार हो गया है। अब लक्ष्मीचंद्र इसे पुलिस की क्रूरता बताते हैं और विजय पागल-सा हो जाता है। तभी भीड़ के अनियंत्रित होकर आगे बढ़ने की सूचना मिलती है। विजय, शरतचंद्र और सुभाष भीड़ को नियंत्रित करने के लिए जाते हैं। विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर देता है तथा सुभाष शरतचंद्र को भीड़ को समझाने के लिए बुलाने आता है। शरतचंद्र व सुभाष दोनों जाते हैं। सविता भी उनके साथ जाती है। सविता अन्नपूर्णा से कहती है कि सरकार के लोगों को मंत्रिमंडल की बैठक करने के बजाय जनता के बीच जाना चाहिए। विजय की पत्नी उमा अरविंद की मौत पर दु:खी होती है। विजय के अनियंत्रित भीड़ पर गोली न चलाने के परिणामस्वरूप विजय व सुभाष असामाजिक तत्वों के हमले में कुचलकर मारे जाते हैं और शरतचंद्र घायल हो जाते हैं। सारा वातावरण करुणा और गंभीरता से परिपूर्ण हो जाता है। भीड़ शांत हो जाती है। तीनों के शव बैठक में लाकर रख दिए जाते हैं। शरतचंद्र, अरविंद व सुभाष को जनता की क्षति और विजय को सरकार की क्षति बताते हैं। अन्नपूर्णा इसको अपने घर की क्षति बताती है। इस पर सविता इसे देश की क्षति बताती है। वह कहती है–**''देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।''**

शरतचंद्र उसकी बात का समर्थन करते हुए कहता है वास्तव में यह सारे देश की क्षति है। जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक-रेखा नहीं होती।

2. 'सीमा-रेखा' एकांकी का परिचय देते हुए एकांकीकार के मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'सीमा-रेखा' एकांकी विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित राष्ट्रीय समस्या पर आधारित है। एकांकी के चार प्रमुख पात्र लक्ष्मीचंद्र (व्यापारी), शरतचंद्र (उपमंत्री), विजय (पुलिस कप्तान), सुभाष (जन नेता) स्वतंत्र भारत के चार वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एकांकीकार ने एक ही परिवार के चार भाइयों के संघर्ष को चार वर्गों का प्रतिनिधि बनाकर प्रस्तुत किया है। इनके माध्यम से एकांकीकार ने अलग-अलग वर्ग की अलग-अलग सोच को निरूपित किया है।

एकांकीकार का प्रमुख उद्देश्य सरकार, पुलिस और नेताओं के जनता के साथ संबंधों, व्यवहारों और इनसे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण करना है। जनतंत्र में उत्पन्न अनेक विसंगतियों का अनुभव कराकर वह यह स्पष्ट करना चाहता है कि राष्ट्रहित की अवहेलना करके कोई अपना भला नहीं कर सकता। एकांकीकार यह भी स्पष्ट करना चाहता है कि जनतंत्र में सरकार का अस्तित्व जनता से और जनता का अस्तित्व सरकार से है, इन्हें एक-दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। सरकार को जनता के हित के लिए आत्मबलिदान के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। आज सरकार व जनता के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है, जिसे सरकार के लोगों द्वारा खत्म कर देनी चाहिए क्योंकि जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई सीमा-रेखा नहीं होती है। आज जनता को अपनी माँगों के लिए आंदोलन करने पड़ते हैं, जिसे नियंत्रित करने के लिए सरकार को लाठीचार्ज व गोली चलानी पड़ती है, जिसमें बेकसूर लोग मारे जाते हैं। सरकार को ऐसे कार्य करने चाहिए, जिससे जनता की आवाज सरकार तक पहुँच जाए व उसे आंदोलन न करने पड़े। एकांकीकार का मूल उद्देश्य इसी समस्या को उजागर करके सरकार के नेताओं व जनता के बीच की बढ़ती दूरी को समाप्त करना है।

3. कथा संगठन की दृष्टि से 'सीमा-रेखा' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

उ०– 'सीमा-रेखा' विष्णु प्रभाकर की एक राष्ट्रीय चेतनाप्रधान एकांकी है। इसकी कथावस्तु आज के लोकतंत्र की विसंगतियों के बीच से ली गई है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में आंदोलन व राष्ट्रीय संपत्ति की हानि चिंता का विषय बन चुकी है। कथावस्तु का संगठन एक ही परिवार के चार भाइयों के स्वार्थ-संघर्ष से हुआ है। चारों भाई अलग-अलग वर्गों के प्रतिनिधि हैं तथा उनकी सोच भी अलग-अलग है।

(अ) आरंभ– कथावस्तु का आरंभ उपमंत्री शरतचंद्र की बैठक से होता है। उन्हें फोन पर आंदोलनकारियों की बेकाबू भीड़ पर पुलिस द्वारा गोली चलाने की सूचना मिलती है। जिसमें उनके बड़े भाई का 10 वर्षीय पुत्र अरविंद मारा जाता है। उन्हें 20 लोगों के घायल व 5 लोगों के मारे जाने की सूचना मिलती है।

(ब) **स्वाभाविक विकास–**अरविंद की मृत्यु व भीड़ के अनियंत्रित होने के साथ कथानक का विकास होता है। जिससे सरकार, पुलिस, विपक्ष व जनता के बीच का संघर्ष सामने आता है। पुलिस कप्तान विजय और जननेता सुभाष भीड़ को नियंत्रित करने के लिए जाते हैं।

(स) **चरम सीमा–**विजय और सुभाष भीड़ को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। विजय भीड़ पर गोली चलाने का आदेश नहीं देता। भीड़ संतुलन खो बैठती है। वह 'अरविंद कहाँ है' चिल्लाता है। विजय भीड़ से कहता है— 'मैने अरविंद को मारा है, तुम मुझसे इसका बदला लो'। विजय और सुभाष दोनों बेकाबू भीड़ में कुचलकर मारे जाते हैं। यही पर एकांकी की चरम सीमा है।

(द) **अंत–** एक ही परिवार के तीन लोगों की मृत्यु से भीड़ शांत हो जाती है। इन तीनों की मृत्यु एक घर की नहीं राष्ट्र की क्षति है। अंत में एकांकी यही संदेश देता है कि, "**जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच विभाजक रेखा नहीं होती।**"

(य) **भाषा-शैली–** एकांकी की भाषा सरल, सरस, व्यावहारिक एवं वातावरण के अनुकूल है। उर्दू के शब्दों के प्रयोग से इसमें स्वाभाविकता व गतिशीलता उत्पन्न हो गई है। संवाद सरल, संक्षिप्त व कथा के अनुरूप हैं। संवादों के द्वारा एकांकीकार ने पात्रों के मनोभावों को सफलतापूर्वक व्यक्त किया है। एकांकी में आवश्यकता के अनुरूप भावात्मक, विचारात्मक, संवादात्मक आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है।

(र) **संकलन-त्रय–** एकांकी में स्थान, समय तथा कार्य (संकलन-त्रय) का सुंदर संकलन है। संपूर्ण एकांकी का कथानक उपमंत्री शरतचंद्र की बैठक में कुछ समय में घटित हो जाता है। अन्य घटनाएँ सूचना के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। एकांकी में प्रस्तुत सभी घटनाएँ एक दूसरे से संबंधित हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'सीमा-रेखा' एकांकी कला की दृष्टि से पूर्ण रूप से सफल है। एकांकी के सभी तत्वों का इस एकांकी में निर्वाह किया गया है।

4. 'सीमा-रेखा' एकांकी के उस पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए, जिसने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है।

उ०– 'सीमा-रेखा' एकांकी में हमें सविता के पात्र ने सबसे अधिक प्रभावित किया है। वही इस एकांकी की मुख्य स्त्री पात्र व सर्वोत्कृष्ट पात्र भी है, जो देश-प्रेम व जन कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। वह जननेता सुभाष की पत्नी है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(अ) **जनता की प्रवक्ता–** सविता अपने पति सुभाष की भाँति ही जनता की प्रवक्ता है। वह सरकार के सामने जनता की वकालत करती है। वह जनतंत्र को जनता का राज बताते हुए शरतचंद्र से कहती है— "**आप निरंकुश होते जा रहे हैं। आप अपने को शासक मानने लगे हैं। आप भूल गए हैं कि जनता-राज में शासक कोई नहीं होता। सब सेवक होते हैं।**"

(ब) **उदार हृदया नारी–** सविता करुणा, परोपकार एवं त्याग के भावों से ओत-प्रोत नारी है। वह सभी के प्रति समानता का भाव रखती है। अहंकार, स्वार्थ जैसे दुर्गुण उसमें दिखाई नहीं देते हैं।

(स) **निर्भीक एवं स्पष्टवादी–** सविता निर्भीक एवं स्पष्टवादी महिला है। वह उचित बात कहने में डरती नहीं है। वह प्रत्येक स्थिति का निर्भीकता से सामना करती है। वह पुलिस को गोली चलाने के आदेश का समर्थन करने वाले अपने ज्येष्ठ लक्ष्मीचंद्र एवं शरतचंद्र का विरोध करती है। वह कहती है कि-" इसका अर्थ यह नहीं कि पत्थर के जवाब में गोली चला दी जाए! गोली उन्हें आत्मरक्षा के लिए नहीं दी जाती, जनता की रक्षा के लिए दी जाती है।" भीड़ के अनियंत्रित हो जाने की सूचना पाकर वह भी बाहर निडरता के साथ जाती है।

(द) **क्रांतिकारी-विचार–** वह अपने पति की भाँति ही क्रांतिकारी विचारों की महिला है और जन आंदोलन का समर्थन करती है। उसमें देशभक्ति कूट-कूटकर भरी है। वह कहती है—"हम स्वतंत्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक हैं। हम इंसान हैं।"

(य) **विवेकशील–** सविता एक विचारशील व विवेकशील स्त्री है और हर पक्ष पर सूक्ष्मता के साथ विचार करने में सक्षम है। सत्य बात कहने में वह संकोच नहीं करती और अपनी बात दृढ़तापूर्वक कहती है।

(र) **धैर्यवान् एवं देशभक्त–** सविता एक धैर्यशील स्त्री है। उसे अपने देश से प्रेम है, उसकी दृष्टि में देश सर्वोपरि है। वह इसके प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करती है। वह अपने पति व पारिवारिक जनों की मृत्यु को देश की क्षति बताती है और लेशमात्र भी विचलित नहीं होती। वह कहती है-"देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।"

इस प्रकार सविता के चरित्र के गुण किसी भी नारी के लिए अनुकरणीय हैं, जो दृढ़ता के साथ अपने राष्ट्र के प्रति पूर्णरूप से समर्पित है।

5. विष्णु प्रभाकर के जीवन एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– **जीवन परिचय–** विष्णु प्रभाकर हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक के रूप में विख्यात हुए। उनका जन्म 21 जून, 1912 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर गाँव में हुआ था। उनके पिता दुर्गा प्रसाद धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे और उनकी माता महादेवी पढ़ी-लिखी महिला थी, जिन्होंने अपने समय में पर्दा प्रथा का विरोध किया था। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई। बाद में वे अपने मामा के घर हिसार चले गए, जो तब पंजाब प्रांत का हिस्सा था। घर की माली हालत ठीक नहीं होने के चलते वे आगे की पढ़ाई ठीक से नहीं कर पाए और गृहस्थी चलाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी करनी पड़ी। चतुर्थवर्गीय कर्मचारी के तौर पर काम करते समय उन्हें प्रतिमाह 18 रुपये मिलते थे, लेकिन मेधावी और लगनशील विष्णु ने पढ़ाई जारी रखी।

पंजाब विश्वविद्यालय से बी.ए.और फिर हिंदी की 'प्रभाकर' परीक्षा उत्तीर्ण की। यही डिग्री इनके नाम के साथ ऐसी जुड़ी कि इनका नाम ही 'विष्णु प्रभाकर' हो गया। इनका आरंभिक नाम 'विष्णु दयाल' था।

विष्णु प्रभाकर पर महात्मा गाँधी के दर्शन और सिद्धांतों का गहरा असर पड़ा। इसके चलते ही उनका रुझान कांग्रेस की तरफ हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के महासमर में उन्होंने अपनी लेखनी का भी एक उद्देश्य बना लिया, जो आजादी के लिए सतत संघर्षरत रही। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचंद, यशपाल, जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे महारथियों के सहयात्री रहे, लेकिन रचना के क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान रही।

विष्णु प्रभाकर ने पहला नाटक 'हत्या के बाद' नामक शीर्षक से लिखा। हिसार में नाटक मंडली में भी काम किया और बाद के दिनों में उन्होंने लेखन को ही अपनी जीविका बना लिया। आजादी के बाद वे नई दिल्ली आ गए और सितंबर 1955 में आकाशवाणी में नाट्य निर्देशक के तौर पर नियुक्त हो गए, जहाँ उन्होंने 1957 तक काम किया।

विष्णु प्रभाकर ने अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। 1931 में 'हिंदी मिलाप' में पहली कहानी दीवाली के दिन छपने के साथ ही उनके लेखन का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह आठ दशकों तक निरंतर चलता रहा। नाथूराम शर्मा प्रेम के कहने से वे शरतचंद्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' लिखने के लिए प्रेरित हुए, जिसके लिए वे 'शरतचंद्र' को जानने के लगभग सभी स्रोतों, जगहों तक गए, बांग्ला भी सीखी और जब यह जीवनी छपी तो साहित्य में विष्णु जी की धूम मच गई। कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, बाल साहित्य सभी विधाओं में प्रचुर साहित्य लिखने के बावजूद 'आवारा मसीहा' उनकी पहचान का पर्याय बन गई। बाद में 'अर्धनारीश्वर' पर उन्हें बेशक साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला हो, किंतु 'आवारा मसीहा' ने साहित्य में उनका मुकाम अलग ही रखा।

विष्णु प्रभाकर ने अपनी वसीयत में अपने संपूर्ण अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की थी। अत: 19 अप्रैल, 2009 में इनकी मृत्यु के बाद उनका अंतिम संस्कार नहीं किया गया, बल्कि उनके पार्थिव शरीर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को सौंप दिया गया।

प्रमुख कृतियाँ–

उपन्यास– ढलती रात, स्वप्नमयी, अर्धनारीश्वर, धरती अब भी घूम रही है, क्षमादान, दो मित्र, पाप का घड़ा, होरी आदि

नाट्य रचनाएँ– हत्या के बाद, नवप्रभात, डॉक्टर, प्रकाश और परछाइयाँ, बारह एकांकी, अशोक, अब और नहीं, टूटते परिवेश, इंसान और अन्य एकांकी, नए एकांकी, डरे हुए(एकांकी संग्रह) आदि

कहानी संग्रह– संघर्ष के बाद, मेरा वतन, खिलौने, आदि और अंत

आत्मकथा– 'पंखहीन' नाम से उनकी आत्मकथा तीन भागों में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

जीवनी– आवारा मसीहा।

यात्रा वृत्तांत्– ज्योतिपुँज हिमालय, जमुना-गंगा के नैहर में

6. विष्णु जी को किन-किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उ०– विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। विष्णु जी को भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। उनके उपन्यास 'अर्धनारीश्वर' के लिए

इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार इत्यादि प्रदान किए गए।

7. अरविंद, सुभाष और विजय की मृत्यु को अन्नपूर्णा, सविता व शरत किस रूप में देखते हैं?

उ०– गोलीकांड और तत्पश्चात् भीड़ द्वारा कुचले जाने से हुई अरविंद, सुभाष और विजय की मृत्यु को अन्नपूर्णा, सविता और शरत अलग-अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। इनकी मृत्यु अन्नपूर्णा के लिए केवल अपने परिवार की क्षति प्रतीत होती है, जबकि शरतचंद्र, अरविंद और सुभाष को जनता की क्षति तथा विजय को सरकार की क्षति मानते हैं, जबकि सविता इनकी मौत को सारे देश की क्षति मानती है। वह कहती है–"**यह उनकी नहीं सारे देश की क्षति है, देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।**"

अंत में शरतचंद्र भी उसकी बात का समर्थन करते हुए इसे देश की क्षति बताते हैं क्योंकि "**जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक-रेखा नहीं होती है।**"

8. उग्र भीड़ को कानून अपने हाथ में लेना चाहिए अथवा नहीं, इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ०– उग्र भीड़ को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए क्योंकि जनतंत्र में जनता का शासन होता है। जनता के चुने हुए प्रतिनिधि ही सरकार में होते हैं। जनता को उनके माध्यम से ही अपनी बात को सरकार तक पहुँचानी चाहिए। यदि आंदोलन करना आवश्यक है तो उसे शांतिपूर्वक करना चाहिए। उसके लिए कानून को अपने हाथ में लेकर उसका उल्लंघन नहीं करना चाहिए। जनता द्वारा कानून का उल्लंघन करने पर देश को अपार क्षति पहुँचती है। यह क्षति जन, धन दोनों रूपों में होती है। प्रस्तुत एकांकी 'सीमा-रेखा' में भी इसी प्रकार की समस्या का वर्णन है। पुलिस राष्ट्रीय संपत्ति को हानि से बचाने के लिए ही गोली चलाती है, जिसमें 5 लोग मारे जाते हैं, जिनमें 10 वर्ष का बेकसूर बच्चा भी होता है। अत: जनता के उग्र हो जाने पर उनके चुने हुए प्रतिनिधियों को उनके बीच में जाकर उसे समझाना चाहिए तथा उसे कानून को हाथ में लेकर लूटपाट, उपद्रव आदि करने से रोकना चाहिए। यदि जनता के प्रतिनिधि सरकार व जनता के बीच सेतु का कार्य करने लगें, तो जनता को आंदोलन की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। भीड़ द्वारा कानून को हाथ में लेने पर केवल देश को क्षति होती है। अत: भीड़ को ऐसा नहीं करना चाहिए।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. इस एकांकी में उठाई गई समस्या किससे संबंधित है?

(अ) परिवार से (ब) **राष्ट्र से**

(स) विद्यार्थियों से (द) इन सभी से

2. इस एकांकी का शीर्षक 'सीमा-रेखा' है; क्योंकि–

(अ) चारों भाइयों के स्वार्थ की अलग-अलग सीमा रेखा है।

(ब) गोली कांड और हत्या; अधिकार और अराजकता की सीमा रेखा है।

(स) जनतंत्र में जनता और सरकार में सीमा रेखा नहीं होती।

(द) **उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।**

3. इस एकांकी के चारों भाइयों और उनकी पत्नियों के विचार एक दूसरे से भिन्न हैं; क्योंकि–

(अ) उनमें आपस में प्रेम नहीं है। (ब) वे एक दूसरे का विरोध करते हैं।

(स) सभी स्वतंत्र चिंतन में विश्वास करते हैं (द) **पेशे के अनुसार उनके अलग-अलग स्वार्थ हैं।**

4. 'जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक-रेखा नहीं होती है' किसका कथन है?

(अ) लक्ष्मीचंद्र का (ब) विजय का

(स) सविता का (द) **शरतचंद्र का**

5. कप्तान विजय ने भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर दिया, क्योंकि–

(अ) **भीड़ पर गोली न चलाकर वह उसे समझाकर शांत करना चाहता था।**

(ब) वह अरविंद की मृत्यु का प्रायश्चित करना चाहता था।

(स) भीड़ पर गोली चलाने के कारण उसे मुअत्तिल हो जाने का डर था।

(द) उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य हैं।

(घ) आंतरिक मूल्यांकन

विद्यार्थी स्वयं करें।